स्वाध्याय स्वमन्थन स्वावलम्बन

उ.प्र. राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

BLIS-05

पुस्तकालय सूचीकरण प्रायोगिक

थम खण्ड : ए0ए0सी0आर0-2 द्वारा सूचीकरण भाग-1

द्वितीय खण्ड : ए0ए0सी0आर0-2 द्वारा सूचीकरण भाग-2

तीय खण्ड : क्लासीफाइड कैटलाग कोड द्वारा सूचीकरण भाग-1

तुर्थ खण्ड : क्लासीफाइड कैटलाग कोड द्वारा सूचीकरण भाग-2

शान्तिपुरम् (सेक्टर-एफ), फाफामऊ, इलाहाबाद-211013

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

BLIS-05

पुस्तकालय सूचीकरण प्रायोगिक

खण्ड-1

ए.ए.सी.आर.-2R द्वारा सूचीकरण : भाग -एक

इकाई -1 5

ए.ए.सी.आर.-2 R का परिचय, संलेखों के प्रकार एवं संरचना

(Introduction to A.A.C.R.-2R, Types of Entries and their structure)

इकाई -2 32

एकल व्यक्तिगत लेखक द्वारा रचित पुस्तकों का सूचीकरण

(Cataloguing of Books by Single Personal Author)

इकाई -3 51

संयुक्त व्यक्तिगत लेखकों द्वारा रचित पुस्तकों का सूचीकरण

(Cataloguing of Books by Joint Personal Authors)

इकाई -4 76

सम्पादकीय निर्देशन में रचित पुस्तकों का सूचीकरण

(Cataloguing of Books under Editorial Direction)

इकाई -5 87

बहुखण्डीय ग्रन्थों का सूचीकरण

(Cataloguing of Multivolumed Books)

खण्ड-1 : ए.ए.सी.आर.-2R द्वारा सूचीकरण : भाग-एक

प्रस्तावना -

प्रस्तुत खण्ड में आपको पुस्तकालय सूचीकरण के व्यवहारिक ज्ञान से परिचित कराया गया है। प्रयोगात्मक सूचीकरण के लिये समय-2 पर विद्वानों द्वारा अनेक सूची संहिताओं का निर्माण किया गया परन्तु सूचीकरण में एकरूपता लाने हेतु अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ए.ए.सी.आर. - द्वितीय संस्करण ही मानक सूचीसंहिता है जो कम्प्यूटरीकृत सूचीकरण के लिये भी सर्वथा उपयुक्त है।

इस खण्ड के भाग-1 में ए.ए.सी.आर.-2 की संरचना, नियमों की प्रकृति की चर्चा करने के उपरान्त विभिन्न प्रकार के संलेखों की रचना तथा प्रत्येक संलेखों के अनुच्छेदों के उपकल्पना के शब्दों व निरूपण द्वारा समझाने का प्रयास किया गया है। इस भाग में एकल व्यक्तिगत लेखक तथा संयुक्त (दो,तीन तथा तीन से अधिक) व्यक्तिगत लेखकों द्वारा स्थित पुस्तकों के सूचीकरण से संबन्धित समस्त सिद्धान्तों को संक्षेप में उदाहरणों सहित वर्णन करने के पश्चात पर्याप्त संख्या में ग्रन्थों के सूचीकरण की प्रविष्टियाँ निर्मित की गई तथा प्रत्येक प्रकार के प्रस्ताव अभ्यास हेतु ग्रन्थों के मुख पृष्ठ दिये हैं। इकाई - 4 में सम्पादकीय निर्देशन में निर्मित ग्रन्थों के सूचीकरण की विधि उदाहरणों सहित समझाने का प्रयास किया गया है। अन्त में बहुखण्डीय ग्रन्थों के सूचीकरण से सम्बन्धित प्रत्येक पक्ष की व्याख्या करके तत्पश्चात् उदाहरणों द्वारा स्पष्ट करने का प्रयास किया गया। प्रत्येक प्रकार के ग्रन्थ के सूचीकरण के हल किये गये मुख पृष्ठों के साथ-साथ अभ्यास के लिये मुखपृष्ठ देने का यह आशय है कि विद्यार्थी विषय को समझने के बाद स्वयं भी सूचीकरण करने का प्रयास करें।

प्रयास किया गया है कि यथासंभव विषय को सुग्राही बनाया जा सके। ग्रन्थालय सूचीकरण प्रयोगात्मक विषय में सूक्ष्म सूचनाओं के विवरण व उपकल्पनाा का अत्यधिक महत्व है। अतः परिशुद्धता पर विशेष ध्यान दिया गया है।

आशा है इन इकाईयों के अध्ययन से बी.एल.आई.एस.सी. के विद्यार्थियों को ग्रन्थालय सूचीकरण विषय की जटिलताओं को समझने में सहायता मिलेगी। पाठ्यक्रम में पुस्तकों के आख्या पृष्ठ (Title Page) स्वनिर्मित है जिसका उद्देश्य शिक्षार्थियों को प्रायोगिक ज्ञान प्रदान करना है।

इकाई - 1 : ए०ए०सी०आर- 2R का परिचय, संलेखों के प्रकार एवं संरचना (Introduction to A.A.C.R.-2R, Types of Entries and their Structure)

संरचना

1.0 उद्देश्य

1.1 ए०ए०सी०आर-2 (संशोधित) का परिचय

1.2 ए०ए०सी०आर-2 (संशोधित) की रूपरेखा

1.3 ग्रंथालयों के आकार के आधार पर विवरण के स्तर

1.3.1 प्रथम स्तरीय विवरण

1.3.2 द्वितीय स्तरीय विवरण

1.3.3 तृतीय स्तरीय विवरण

1.4 सूची पत्रक की संरचना

1.5 संलेखों के प्रकार एवं संरचना

1.5.1 मुख्य संलेख की संरचना

1.5.2 इतर संलेखों की संरचना

1.5.3 संदर्भ संलेखों की संरचना

1.6 विषय शीर्षक

1.6.1 सीयर्स लिस्ट ऑफ सब्जेक्ट हेडिंग्स

1.7 विस्तृत अध्ययन हेतु ग्रन्थसूची

1.0 उद्देश्य (Objective of the Unit)

इस इकाई के निम्नलिखित उद्देश्य हैं :-

1- ए०ए०सी०आर-2 (संशोधित) का परिचय देकर सूची संहिता की संरचना से परिचित कराना।

2- ए०ए०सी०आर-2 (संशोधित) के विवरण के विभिन्न स्तरों से परिचित कराना

3- ए०ए०सी०आर-2 (संशोधित) के विभिन्न संलेखों (मुख्य संलेख एवं इतर संलेखों) की संरचना से अवगत कराना।

1.1 ए॰ए॰सी॰आर॰ 2 (संशोधित) का परिचय (Introduction to AACR-2R)

एंग्लो अमेरिकन कैटलॉगिंग रूल्स का जन्म 1967 में हुआ। इसके प्रकाशन में मुख्यतया अमेरिकन लाइब्रेरी एसोसिऐशन, लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस, ब्रिटिश लाइब्रेरी एसोसिएशन एवं कनाडियन लाइब्रेरी एसोशिएशन का प्रमुख योगदान रहा है। इसका द्वितीय संस्करण 1978 में एंग्लो अमेरिकन कैटलागिंग रूल्स-2 के नाम से प्रकाशित हुआ। अन्तर्राष्ट्रीय प्रसूचीकरण नियमावली के रूप में इसे वर्ष 1981 में मान्यता मिली। इसका वर्तमान स्वरूप ए॰ए॰सी॰आर॰-2 (संशोधित) (A.A.C.R.-2R) का निर्माण अमेरिकन लाइब्रेरी एसोसिएशन, आस्ट्रेलियन कमेटी आन कैटलागिंग, ब्रिटिश लाइब्रेरी, कनाडियन कमेटी ऑफ केटलॉगिंग, लाइब्रेरी एसोसिएशन एवं लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस की संयुक्त स्टीयरिंग कमेटी फार रिवीजन ऑफ ए॰ए॰सी॰आर॰ द्वारा किया गया। इसे माइकल गॉरमेन तथा पॉल डब्लू विंकलर द्वारा संपादित किया गया।

1.2 ए॰ए॰सी॰आर॰ 2 (संशोधित) की रूपरेखा

इस प्रसूचीकरण संहिता में दो भाग हैं।

प्रथम भाग : विवरण के अन्तर्गत निम्नलिखित अध्यायों में विभिन्न प्रकार की पाठ्य सामग्री के प्रसूचीकरण हेतु नियमों का विस्तार से उल्लेख किया गया है। महत्वपूर्ण है कि इस भाग में उल्लिखित सभी नियम अन्तर्राष्ट्रीय मानक ग्रन्थपरक विवरण-सामान्य (International Standard Bibliographic Description-General) पर आधारित है। अध्यायों का विवरण निम्नवत् है-

अध्याय-1 विवरण के सामान्य नियम (General Rules for Description)

अध्याय-2 ग्रन्थ, पुस्तिकाएँ एवं मुद्रित पन्ने (Books, Pamphlets and Printed sheets)

अध्याय-3 मानचित्र सम्बन्धी सामग्री (Cartographic materials)

अध्याय-4 पाण्डुलिपियाँ (Manuscripts)

अध्याय-5 संगीत (Music)

अध्याय-6 ध्वनि अभिलेख (Sound Recording)

अध्याय-7 चलचित्र एवं वीडियो रिकार्डिंग्स (Motion pictures and video

recordings)

अध्याय-8 लेखाचित्रीय सामग्री (Graphic material)

अध्याय-9 कम्प्यूटर फाइल्स (Computer Files)

अध्याय-10 त्रिविमीय शिल्प तथ्य (Three dimentional artefacts relia)

अध्याय-11 सूक्ष्म सामग्री (Microforms)

अध्याय-12 क्रमिक प्रकाशन (Serials)

अध्याय-13 विश्लेषण (Analysis)

द्वितीय भाग में प्रलेखों के संलेखों को प्रस्तुत करने के लिए शीर्षकों (Headings), एकरूप आख्यायों (Uniform titles) तथा प्रतिनिर्देशों (Reference) से सम्बन्धित नियमों को प्रस्तुत किया गया है। जिन्हें अध्याय 21-26 में उल्लिखित किया गया है। जो निम्नवत् है—

अध्याय-21 खोज बिन्दुओं का चयन (Choice of Access points)

अध्याय-22 व्यक्तियों हेतु शीर्षक (Headings for persons)

अध्याय-23 भौगोलिक नाम (Geographic Names)

अध्याय-24 समष्टि निकायों के शीर्षक (Headings for Corporate Bodies)

अध्याय-25 एकरूप आख्यायें (Uniform titles)

अध्याय-26 प्रतिनिर्देश (References)

उपरोक्त दोनों भागों में नियमों का व्यवस्थापन सामान्य से विशिष्ट के अनुक्रम में किया गया है। विशिष्ट नियमों के अभाव में सामान्य नियम का ही अनुपालन किया जाता है।

सूची संहिता के अन्त में चार परिशिष्टों का उल्लेख किया गया है जो निम्नलिखित है :-

परिशिष्ट ए : बड़े अक्षरों का प्रयोग (Captilization)

परिशिष्ट बी : संकेताक्षर (Abbreviation)

परिशिष्ट सी : संख्यावाद (Numerals)

परिशिष्ट डी : परिभाषिक शब्दावली (Glossory)

1.3 ग्रन्थालयों के आकार के आधार पर विवरण के स्तरः (Levels of description according to the size of libraries)

ए॰ए॰सी॰आर॰-2 (संशोधित) में पुस्तकालयों के तीन स्तरीय आकार-छोटे, मध्यम एवं विशाल पुस्तकालयों हेतु विवरणात्मक प्रसूचीकरण के लिए अलग-अलग त्रिस्तरीय विवरण प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय का उल्लेख किया गया है।

1.3.1 प्रथम स्तरीय विवरण (First level of description)

नियम संख्या 1.0D1 के अनुसार छोटे पुस्तकालयों के उपयोगकर्ताओं की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए संक्षिप्त प्रसूचीकरण का उल्लेख है। इसमें ग्रन्थ की पहचान के लिए ग्रन्थ हेतु संक्षिप्त संलेख निर्मित किया जाता है। इसमें केवल मुख्य आख्या को ही सम्मिलित किया जाता है तथा अन्य प्रकार की आख्याओं का उल्लेख नहीं किया जाता है। यदि दायित्व कथन क्षेत्र में दी जाने वाली सूचना शीर्षक के समान है तो उसे भी दायित्व कथन क्षेत्र में नहीं लिखा जाता। संस्करण विवरण का उल्लेख तो किया जाता है परन्तु संस्करण विशेष से सम्बन्धित दायित्व कथन का उल्लेख नहीं किया जाता है। पुस्तक के भौतिक स्वरूप से सम्बन्धित सूचनाएं संक्षिप्त रूप में दी जाती है। इसे निम्न प्रकार से अधिक स्पष्ट किया जा सकता है।

Title proper/first statement of responsibility, if different from main entry heading in form or number or it there is no main entry heading. — Edition Statement— Material (or type of publication) specific details. — First publisher, etc., date of publication etc.- Extent item,- Note(s). — Standard number.

1.3.2 द्वितीय स्तरीय विवरण (Second level of description)

नियम संख्या 1.0D2 में इस स्तर के विवरण के अन्तर्गत प्रथम स्तर में दी जाने वाली सूचनाओं के अतिरिक्त मुख्य आख्या (Main Title) के बाद सामान्य सामग्री पद (General Material Designation), समानान्तर आख्या (Parall Title) तथा अन्य सभी आख्याओं की सूचना दी जाती है। इस विवरण के अन्तर्गत सभी प्रकार के दायित्व कथन (Responsibility) को सम्मिलित किया जाता है। इसके अतिरिक्त संस्करण विवरण (Edition Statement) के बाद यदि विशिष्ट संस्करण का दायित्व कथन है तो उसका भी उल्लेख किया जाता है। भौतिक विवरण क्षेत्र (Physical Description

Area) में सभी सूचनाओं का नियमानुसार अंकन किया जाता है। टिप्पणी (Note) सम्बन्धी सूचनाएं भी इसमें दी जाती है तथा मानक संख्या (Standard Number) का भी उल्लेख किया जाता है। इसे निम्न प्रकार से अधिक स्पष्ट किया जा सकता है।

Second level of Description :

Title proper (General material desigination) = Parallel title : Other little information / first statement of responsibility; each subsequent statement of responsibility. - Edition statement / first statement of responsibility relating to the edition. — Material (or type of publication specific details). — First place of publication, etc. : first publisher, etc, date of publication, etc.-Extent of item : Other physical details, dimension. — (Title proper of series / statement of responsibility relating to series, ISSN of series; numbering within the series. Title of sub series; ISSN of subseries; numbering with subseries). — Note(s)- Standard number.

1.3.3 तृतीय स्तरीय विवरण (Third level of description)

नियम संख्या 1.0D3 में तृतीय स्तरीय विवरण विशाल एवं शोध ग्रन्थालयों के उपयोगकर्ताओं की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए दिया गया है।

ग्रन्थालयों के स्वरूप (छोटा, मध्यम एवं विशाल) प्रकार एवं उपयोगकर्ताओं की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए ग्रथांलय सूची के विवरण का निर्धारण किया जाता है। अधिकांशतया ग्रन्थालयों में द्रितीय स्तर विवरण का ही प्रयोग किया जाता है और उसी के अनुसार संलेखों (entires) का निर्माण किया जाता है। विद्यार्थियों को प्रायोगिक सूचीकरण की दृष्टि से द्रितीय स्तर विवरण के अनुसार ही संलेखों का निर्माण इस स्वअध्ययन सामग्री में किया गया है।

1.4 सूची पत्रक की संरचनाः (Structure of catalogue card)

सूची पत्रक का मानकीकृत आकार 12.5× 7.5 (5"×3") सेन्टीमीटर होता है। एक पत्रक पर एक ही संलेख का निर्माण किया जाता है। सूची पत्रक की बनावट को निम्नानुसार समझा जा सकता है।

1. **अग्ररेखा (Leading line)** : सूची पत्रक पर दी गई क्षैतिज रेखा/पड़ी रेखा को अग्ररेखा करते हैं यह लाल स्याही से बनी होती है।
2. **तीन काल्पनिक रेखायें (Three imaginary lines)** : अग्ररेखा के ऊपर तीन काल्पनिक रेखाओं का स्थान रिक्त रहता है। इतर प्रविष्टियों को बनाते

समय उनके शीर्षक काल्पनिक पंक्ति पर द्वितीय उर्ध्व रेखा से प्रारम्भ करते हुए अंकित किये जाते हैं।

3. **प्रथम उर्ध्व रेखा (First Indention) :** प्रथम उर्ध्व रेखा/खड़ी रेखा सूची पत्रक के बाएं किनारे से प्रारम्भ कर 8 अक्षरों की दूरी पर होती है जो लाल स्याही से अंकित होती है।

4. **द्वितीय उर्ध्व रेखा (Second Indention) :** यह सूची पत्रक पर प्रथम उर्ध्व रेखा के बाद चार अक्षरों का स्थान छोड़कर होती है तथा लाल स्याही से अंकित होती है।

5. **तृतीय काल्पनिक उर्ध्व रेखा (Third Imaginary Indention) :** सूची पत्रक पर इसका स्थान द्वितीय उर्ध्व रेखा के बाद दो अक्षरों का स्थान छोड़कर काल्पनिक रूप से होता है। इसे सूची पत्रक पर दर्शाया नहीं जाता एवं आवश्यकतानुसार इस रेखा की कल्पना की जाती है।

6. **बाँया हाशिया (Left margin) :** सूची पत्रक पर बायें किनारे से लेकर प्रथम उर्ध्व रेखा तक बाँया हाशिया कहलाता है। बायें किनारे से प्रथम उर्ध्व रेखा की बीच में आठ अक्षरों का स्थान होता है।

7. **छिद्र (Hole) :** सूची पत्रक के नीचे की ओर मध्य में छिद्र होता है। सूची पत्रकों को कैटलॉग कैबिनेट में रखते समय इस छिद्र के बीच से एक छड़ डाल कर पत्र को सुरक्षित रखा जाता है।

नीचे दिये गये रेखा चित्र के माध्यम से सूची पत्रक की बनावट को अधिक स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है।-

सूची पत्रक की संरचना (Structure of Catalogue card)

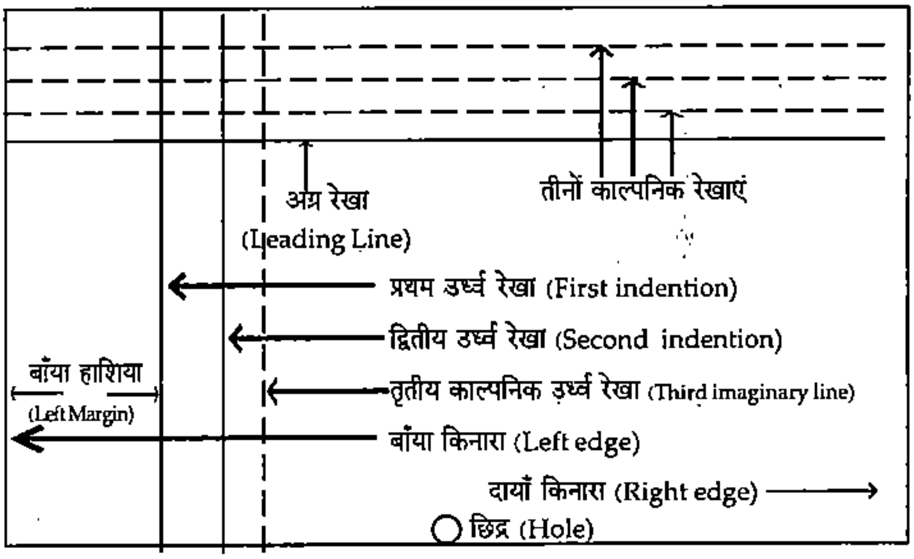

1.5 संलेख के प्रकार एवं संरचना (Structure and Types of Entries)

ए॰ए॰सी॰आर॰-2 संशोधित के अनुसार निम्नलिखित प्रकार के संलेख (Entries) का निर्माण किया जाता है।

1. मुख्य संलेख (Main Entry)
2. इतर संलेख (Added Entry)
3. निर्देश संलेख (Reference Entry)

उपरोक्त तीनों प्रकार के संलेखों को नीचे दी गई तालिका द्वारा सुगमता से समझा जा सकता है।

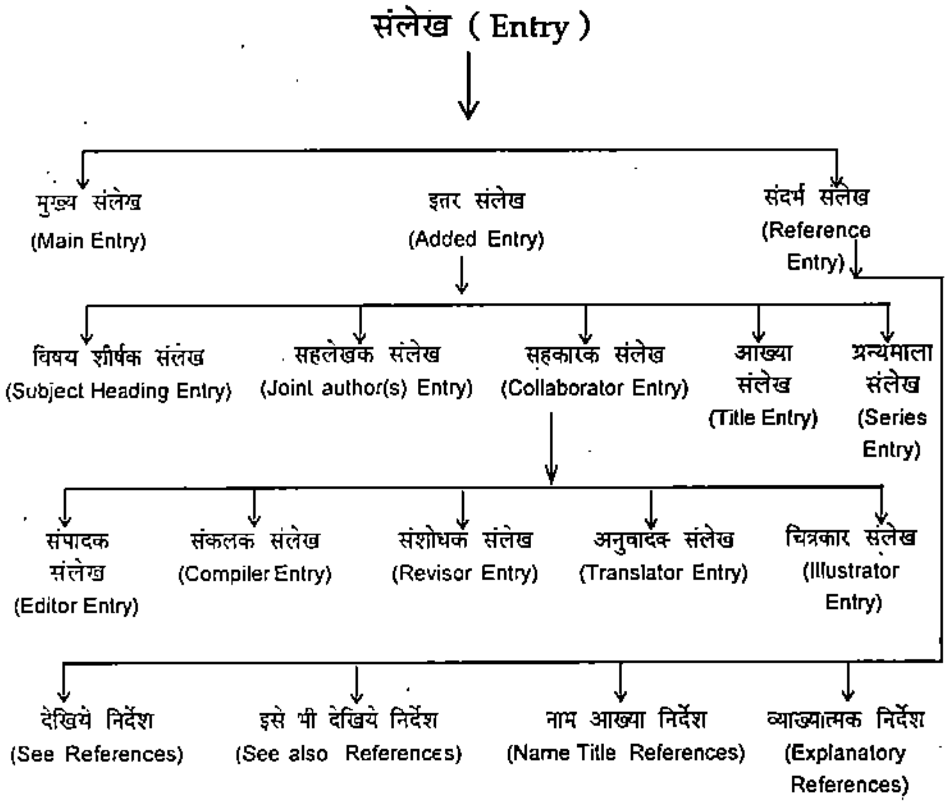

1.5.1 मुख्य संलेख की संरचना (Structure of main Entry)

ए॰ए॰सी॰आर॰-2 संशोधित के नियमानुसार सूची पत्रक पर निर्मित किये जाने वाले मुख्य संलेख में निम्नलिखित भाग होते हैं।

1. क्रामक अंक अनुच्छेद (Call Number Section)
2. शीर्षक अनुच्छेद (Heading Section)
3. आख्या एवं दायित्व कथन अनुच्छेद (Title and Statement of Re-

sponsibility Section)

4. संस्करण अनुच्छेद (Edition Section)
5. प्रकाशन वितरण अनुच्छेद (Publication Distribution Section)
6. भौतिक विवरण अनुच्छेद (Physical Description Section)
7. ग्रन्थमाला अनुच्छेद (Series Section)
8. टिप्पणी अनुच्छेद (Note Section)
9. अन्तर्राष्ट्रीय ग्रन्थ संख्या अनुच्छेद (International Standard Book Number (ISBN) Section)
10. संकेत अनुच्छेद (Tracing Section)
11. परिग्रहण संख्या अनुच्छेद (Accession Number Section)

उपरोक्त समस्त अनुच्छेदों का विस्तृत विवरण निम्नवत् हैः

1. क्रामक अंक अनुच्छेद (Call Number Section) :

एंग्लो अमेरिकन कैटलागिंग रूल्स-2 संशोधित के मुख्य संलेख का यह प्रथम अनुच्छेद है। क्रामक अंक की सूचना पुस्तक के आख्या पृष्ठ के पीछे दी हुई होती है। यह अनुच्छेद तीन सूचनाओं से मिलकर बनता है।

(a) वर्ग संख्या (Class number)

(b) ग्रन्थ संख्या (Book number)

(c) संग्रह संख्या (Collection number)

क्रामक अंक की सूचना सूची पत्रक के बायें हाशिए में अग्र रेखा (leading line) के ऊपर पहले वर्ग संख्या उसके नीचे ग्रन्थ संख्या का उल्लेख करते हैं। संग्रह संख्या यदि दी हुई होती है तो उसे वर्ग संख्या के ऊपर वाली रेखा अर्थात् द्वितीय काल्पनिक रेखा पर ग्रन्थ की तरह ही लिखते हैं। सामान्यतया विद्यार्थियों को परीक्षा की दृष्टि से संग्रह संख्या का उल्लेख नहीं करना है। इस तरह से क्रामक अंक के रूप में वर्ग संख्या एवं ग्रन्थ संख्या का ही उल्लेख समझना विद्यार्थियों के लिए प्रासंगिक है। निम्न उदाहरण के माध्यम से इसे सूची पत्रक में किस तरह से दर्शाया जाता है। अधिक सुस्पष्ट किया जा सकता है :

उदाहरण - American Music in the Twentieth Century
bu Kyle Gan

Call No. 780.973 GAN

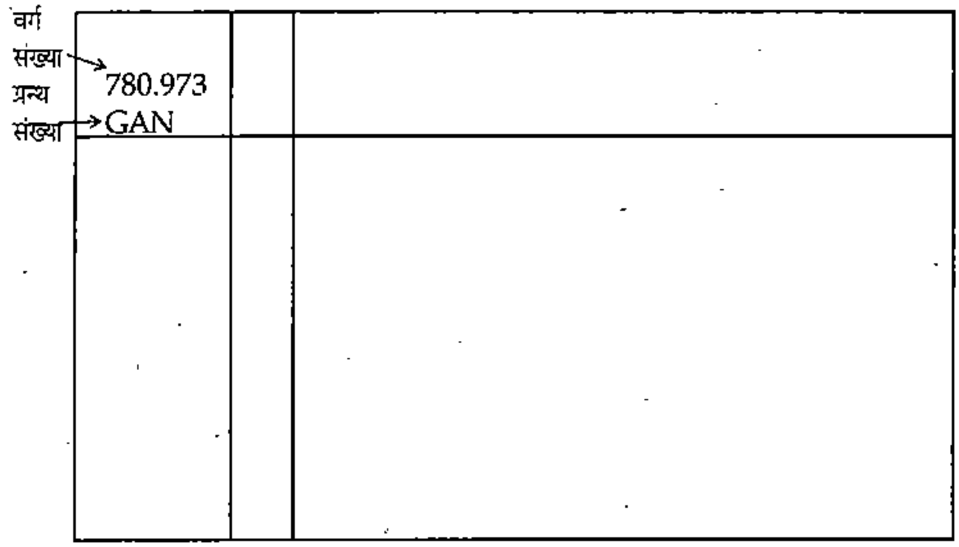

2. **शीर्षक अनुच्छेद (Heading Section) :**

इस अनुच्छेद में ग्रन्थ लेखन के लिए दायित्व विवरण का उल्लेख किया जाता है। मुख्यतः इसमें ग्रन्थ के लेखक के नाम का उल्लेख किया जाता है। यह सूचना अग्र रेखा पर प्रथम उर्ध्व रेखा से प्रारम्भ होती है तथा यदि यह सूचना अग्र रेखा पर पूर्ण नहीं होती तो उसकी अनुवर्ती सूचना को अगली पंक्ति पर तृतीय काल्पनिक उर्ध्व रेखा से अंकित किया जाता है। सूचीकरण की दृष्टि से लेखक के नाम में तीन भाग होते हैं।

(क) प्रविष्टि पद (Entry element) : इसके अन्तर्गत सबसे पहले लेखक का कुल नाम लिखते हैं। तत्पश्चात् चिन्ह के रूप में कामा (,) का प्रयोग करते हैं

(ख) गौण पद (Secondary element) : प्रविष्टि पद के पश्चात् कामा, (,) लगाकर लेखक का व्यक्तिगत नाम लिखा जाता है। उसके पश्चात् योजक चिन्ह के रूप में पुनः कामा (,) प्रयोग किया जाता है।

(ग) व्यष्टिकारक पद (Indivisulising element) : गौण पद के उपरान्त कामा (,) लगाकर यदि लेखक का जन्म एवं मृत्यु वर्ष दिया है तो लेखक का जन्म वर्ष उसके पश्चात् योजक चिन्ह के रूप में - (हाइफन) लगाकर मृत्यु वर्ष दोनों का उल्लेख कर (फुल स्टाप) लगाया जाता है। परन्तु यदि जन्म मृत्यु वर्ष का उल्लेख नहीं है तो गौण पद के उपरान्त (फुल स्टाप) नहीं लगाया जाता है। केवल जन्म वर्ष का उल्लेख होने की स्थिति में जन्म वर्ष का उल्लेख कर-(हाइफन) लगा दिया जाता है जो इस बात का प्रतीक है या तो लेखक जीवित है अथवा लेखक का मृत्यु वर्ष ज्ञात नहीं है। यह सूचना को सामान्य अक्षरों में लिपिबद्ध किया जाता है। इस अनुच्छेद को सूची पत्रक पर निम्न उदाहरण के माध्यम से और सुस्पष्ट किया जा सकता है।

उदाहरण - Building Trust by Ralpha Mathew Goldman (1876-1940)

	Goldman, Ralpha Mathew, 1876-1940.	

3. **आख्या एवं दायित्व कथन अनुच्छेद (Title and Statement of Responsibility Section) :**

द्वितीय अनुच्छेद की समाप्ति के पश्चात् अगली पंक्ति पर द्वितीय उर्ध्व रेखा से यह अनुच्छेद प्रारम्भ होता है तथा अनुवर्ती सूचना अगली पंक्ति पर प्रथम उर्ध्व रेखा से प्रारम्भ करते हुए अंकित की जाती है।

(1) आख्या (Title) : इस अनुच्छेद के अन्तर्गत तीन प्रकार की आख्या (Title) का उल्लेख किया जाता है।

(क) मुख्य आख्या (Title Proper) : इसके अन्तर्गत पुस्तक के मुख्य आख्या का उल्लेख करते हैं।

उदाहरण - Introduction to Public Administration

		Introduction to Public Administration

(ख) समानान्तर आख्या (Parallel Title) :

सामान्तर आख्या सामान्यतया मुख्य आख्या का दूसरी भाषा में अनुवाद होता है। मुख्य आख्या के पश्चात् योजक चिन्ह = (बराबर का चिन्ह) लगाकर सामान्तर आख्या का उल्लेख उसी भाषा में किया जाता है जिस भाषा में वह पुस्तक में अंकित है।

उदाहरण - Introduction to Public Administration—लोक प्रशासन परिचय

		Introduction to Public Administration = लोक प्रशासन परिचय

(ग) उप आख्या (Sub Title) :

उप आख्या को मुख्य आख्या/सामानान्तर आख्या के पश्चात् लिखने के पूर्व योजक चिन्ह के रूप में : (कोलन) का प्रयोग किया जाता है। यह सूचना पुस्तक के मुख्य पृष्ठ पर जिस रूप में दी हुई होती है उसी रूप में लिखी जाती है। इसे निम्नलिखित उदाहरण के माध्यम से अधिक स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है :-

उदाहरण - Introduction to Public Administration—लोक प्रशासन परिचय :

		Central and State Government
		Introduction to Public Administration = लोक प्रशासन परिचय : Central and State Government

(2) दायित्व कथन : मुख्य आख्या/समानान्तर आख्या / उप आख्या का उल्लेख करने के पश्चात् दायित्व कथन का उल्लेख करने के पूर्व योजक चिन्ह के रूप में तिरक्षी रेखा (/) (diagonal slash) का प्रयोग किया जाता है। दायित्व कथन का उल्लेख उसी क्रम में किया जाता है जिस क्रम में आख्या पृष्ठ (Title Page) पर वह अंकित रहता है। इस प्रकार तिरक्षी रेखा के प्रयोग के उपरान्त ग्रन्थ लेखन के लिए सर्व प्रमुख दायित्व लेखक का होता है। इसलिए उसके नाम का उल्लेख सामान्य शैली में किया जाता है। परन्तु यदि लेखक के साथ ही किसी सहकारक (Collaborator) का भी आख्या पृष्ठ पर उल्लेख है तो लेखक के नाम के उपरान्त; (Semicolon) लगाकर सहकारक के पद का सम्बोधन करते हुए उसके नाम का भी उल्लेख सामान्य शैली में किया जाता है। इसे निम्न उदाहरण से स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है:

उदाहरण - Theoritical Astronomy by Raghunath Jha,
Edited by Mohan Trivedi

		Theoritical Astronomy/ by Raghunath Jha; edited
	by	Mohan Trivedi

(4) संस्करण अनुच्छेद (Edition Section) :

आख्या एवं दायित्व कथन अनुच्छेद के पश्चात् .— (full stop space dash space) का चिन्ह लगाकर पुस्तक के संस्करण का उल्लेख निम्नवत् शैली में किया जाता है।

उदाहरण —

पुस्तक में दी गई सूचना	**सूची पत्रक में लिखने की शैली**
First Edition	उल्लेख नहीं करते

Second Edition	2nd ed
Third Edition	3rd ed.
Fourth revised edition	4th rev. ed.

ENGLISH POETRY

By

A. N. Dwivedi

Third edition

		English poetry/ by A. N. Dwivedi. – 3rd rev. ed.

5) प्रकाशन वितरण अनुच्छेद (Publication Distribution Section) :

संस्करण अनुच्छेद का उल्लेख करने के पश्चात् पुनः.— (full stop space dash space) लगाकर प्रकाशन वितरण अनुच्छेद का उल्लेख किया जाता है। इस अनुच्छेद में तीन सूचनाएं अंकित की जाती है।

(क) प्रकाशन/वितरण के स्थान का नाम

(ख) प्रकाशक/वितरक का नाम

(ग) प्रकाशन/ वितरण का वर्ष

प्रकाशन/वितरण स्थान के पश्चात् कोलन (:) योजक् चिन्ह लगाकर प्रकाशक/वितरक का नाम उसके पश्चात् कामा (,) योजक चिन्ह लगाकर प्रकाशन/वितरण वर्ष का उल्लेख किया जाता है।

टिप्पणी : तीसरा अनुच्छेद द्वितीय उर्ध्व रेखा से प्रारम्भ होकर अनुवर्ती पंक्तियाँ प्रथम उर्ध्व रेखा से वापस पाँचवें अनुच्छेद तक होगी। इस प्रकार तीसरा चौथा एवं पाँचवा अनुच्छेद एक ही पैराग्राफ के रूप में अंकित किया जायेगा तथा एक अनुच्छेद को दूसरे

अनुच्छेद से अलग करने के लिए विभाजक के रूप में डॉट, स्पेस, डैश स्पेस (.–) योजक चिन्ह का प्रयोग किया जायेगा।

उदाहरण

MARKETING PLANS

By

Waren J. Keegan

Fourth edition

Butter worth, Bostan 1997

	.–B	Marketing plans/by Waren J. Keegan.–4th ed. ostan : Butter worth, 1997.

(6) भौतिक विवरण अनुच्छेद (Physical Description Section) :

पाँचवे अनुच्छेद की समाप्ति के पश्चात् अगली पंक्ति पर द्वितीय उर्ध्व रेखा से यह अनुच्छेद प्रारम्भ होता है। इसमें पुस्तक के भौतिक स्वरूप से सम्बन्धित निम्न तीन तत्वों का उल्लेख किया जाता है।

(अ) पृष्ठांकन (Pagination) : इस भाग में सर्वप्रथम पुस्तक के पृष्ठांकन की सूचना दी जाती है। जिसमें प्रारम्भिक पृष्ठ का उल्लेख लघु रोमन (Small Roman) में तथा मुख्य पृष्ठ का उल्लेख इंडो अरैबिक अंकों में निम्न प्रकार से किया जाता है।

पुस्तक में दी गई सूचना	**सूची पत्रक में लिखने की शैली**
280 पृष्ठ	280 p.
12 प्रारम्भिक पृष्ठ एवं 415 मुख्य पृष्ठ	xii, 415 p.

(ब) चित्रित सामग्री (Illustrative matter) : पृष्ठांकन विवरण के बाद यदि पुस्तक में चित्र वर्णन का भी उल्लेख है तो योजक चिन्ह कोलन (:) लगाकर ill का प्रयोग करते हैं।

(स) आकार (Size) : भौतिक विवरण अनुच्छेद में पृष्ठांकन एवं चित्र सामग्री का उल्लेख करने के पश्चात् आकार (size) वर्णन के लिए योजक चिन्ह सेमी कोलन (;) का प्रयोग किया जाता है। संलेख में सामान्यतया ग्रन्थ की ऊँचाई को सेन्टीमीटर में अंकित किया जाता है। यदि ग्रन्थ की ऊँचाई मिलीमीटर में दी हुई है तो उसे सेन्टीमीटर के अगले अंक में पूर्ण करके लिखा जाता है। सूची पत्रक पर इस सूचना का उल्लेख निम्नवत् किया जाता है :-

पुस्तक में दी गई सूचना	**सूची पत्रक में लिखने की शैली**
22 सेन्टीमीटर	;22cm.
19.9 सेन्टीमीटर	; 20 cm
14×18 सेन्टीमीटर	; 18 cm

इस प्रकार निम्न उदाहरण के माध्यम से भौतिक विवरण क्षेत्र को अधिक स्पष्ट समझा जा सकता है।

उदाहरण —

पृष्ठ विवरण	**आकार**
20 प्रारम्भिक पृष्ठ	16× 20 सेन्टीमीटर
210 मुख्य पृष्ठ	
8 चित्र वर्णन	

		xx, 210p.:8ill; 20cm

(7) ग्रन्थमाला अनुच्छेद (Series Section) :

भौतिक विवरण की समाप्ति के पश्चात् फुल स्टाप स्पेस डैस (.–) योजक चिन्ह लगाकर गोल कोष्ठक () के अन्तर्गत ग्रन्थमाला विवरण का उल्लेख होता है। सर्वप्रथम ग्रन्थमाला के मुख्य नाम का उल्लेख करते हैं तथा यदि ग्रन्थमाला के नाम के साथ दायित्व कथन (संपादक) का भी उल्लेख है तथा ग्रन्थमाला की पहचान के लिए आवश्यक है, तो दायित्व कथन का उल्लेख diagonal slash (/) लगाकर करते हैं। सामान्यतः ग्रन्थमाला के दायित्व कथन (सम्पादक) का उल्लेख ए॰ए॰सी.आर.-2 संशोधित के नियमानुसार नहीं किया जाता है। ग्रन्थमाला के नाम का उल्लेख करने के पश्चात् यदि संख्या अथवा वर्ष का उल्लेख है तो उसके अंकित करने के पूर्व योजक चिन्ह के रूप में सेमी कोलन (;) का प्रयोग किया जाता है। निम्न उदाहरण से इसे और स्पष्ट किया जा सकता है।

उदाहरण —

पृष्ठ	–	12 + 240
चित्र वर्णन	–	10 रंगीन चित्र
आकार	–	20 सेन्टीमीटर
ग्रन्थमाला	–	Medical progress series no. 4

xii, 240p.:10 col. ill; 20 cm .—(Medical Progress Series; no.4)

टिप्पणी : छठाँ एवं सातवाँ अनुच्छेद द्वितीय उर्ध्व रेखा से प्रारम्भ होकर एक ही पैराग्रॉफ में लिखा जाता है तथा अनुवर्ती पंक्तियाँ प्रथम उर्ध्व रेखा से वापस की जाती है। छठवें एवं सातवें अनुच्छेद के मध्य विभाजेक के रूप में फुल स्टाप, स्पेस, डैस, स्पेस (.–) योजक चिन्ह प्रयुक्त होता है।

(8) टिप्पणी अनुच्छेद (Note Section) :

ग्रन्थमाला विवरण की समाप्ति के पश्चात् अगली पंक्ति पर द्वितीय उर्ध्व रेखा से इस अनुच्छेद के अन्तर्गत पुस्तक से सम्बन्धित वह सूचना जो पहले के अनुच्छेदों में वर्णित नहीं हो सकी है परन्तु उपयोगकर्ता की दृष्टि से महत्वपूर्ण है, उनका उल्लेख किया जाता है। उदाहरण के तौर पर सूचनायें निम्न प्रकार की हो सकती है।

(क) मुख्य आख्या का स्रोत (Source of Title proper)

(ख) आख्या में विभिन्नता (Variation in title)

(ग) पुस्तक प्रकाशन का इतिहास (History of book publication)

(घ) विषय वस्तु (Contents)

(ङ) वांग्ङमयी एवं अनुक्रमणी टिप्पणी (Bibliographic and Index note)

उदाहरण

MUGHAL HISTORY

By

Dr. R. S. Rana

Note : Previously it was published by the title Mughal Saltant

		Previously it was published by the title Mughal Saltanat

9. अन्तर्राष्ट्रीय मानक ग्रन्थ संख्या अनुच्छेद [(International Standard Book Number (ISBN)] Section : टिप्पणी अनुच्छेद की समाप्ति के पश्चात् अगली पंक्ति पर द्वितीय उर्ध्व रेखा से ISBN का उल्लेख निम्नानुसार किया जाता है।

उदाहरण —

ISBN 978 - 81 - 7000 - 567 - 4

		ISBN:978 - 81 - 7000 - 567 - 4

10. संकेत अनुच्छेद (Tracing Section) :

ISBN अनुच्छेद की समाप्ति के पश्चात् अगली पंक्ति पर द्वितीय उर्ध्व रेखा से यह अनुच्छेद प्रारम्भ होता है तथा अनुवर्ती पंक्तियाँ आवश्यकतानुसार प्रथम उर्ध्व रेखा से वापस होती है। प्रथमतः अरबी अंक 1 का प्रयोग कर विषय शीर्षक (Subject heading) जिसे Sears List of Subject Headings के द्वारा प्राप्त किया जाता है, का उल्लेख किया जाता है। उसके पश्चात् रोमन अंक I प्रयोग कर संयुक्त लेखक (Joint author) के नाम का उल्लेख किया जाता है। तद्श्चात् अगले रोमन अंक का प्रयोग कर सहकारक (Collaborator) यदि कोई है तो उसके नाम का उल्लेख करते हैं। उसके पश्चात् अगले रोमन अंक का प्रयोग कर Title एवं अगले रोमन अंक का प्रयोग कर यदि ग्रन्थमाला विवरण है तो series का उल्लेख करते हैं।

उदाहरण —

	III.	1. Subject Heading I. Jt. author II. Collaborator Title IV. Series

11. परिग्रहण संख्या अनुच्छेद (Accession Number Section) :

यह सूची पत्रक पर बायें हाशिये में अग्र रेखा के नीचे चतुर्थ पंक्ति पर अंकित किया जाता है। इसे निम्न उदाहरण से समझा जा सकता है।

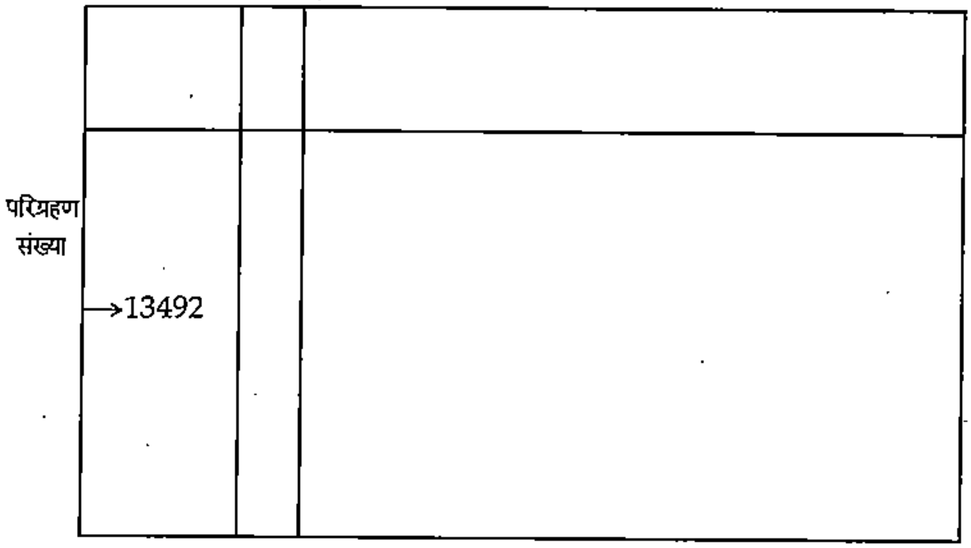

नीचे दिये गये उदाहरण के माध्यम से मुख्य संलेख के समस्त अनुच्छेदों का सूचीपत्रक पर अंकन अधिक स्पष्टता के साथ समझा जा सकता है।

उदाहरण

AMERICAN MUSIC IN THE TWENTIETH CENTURY

Theory and Practice

By

Kyle Gaun

Robert Goldsmith

Edited by

John Patrick

Ed-4

CHICAGO

Sehrimer Books

1997

Other Information :-

Call No.	-	780.973 GAN
Acc. No.	-	24693
Pages	-	12 + 220

Size	-	24 cm
ISBN	-	002 - 884 - 6554
Series	-	Musical Series, 4
Note • Index on Page	-	210 - 220
• 4 Coloured illustrations		

780.973 GAN	Gaun, Kyle	
24693	American Music in the twentieth century : Theory and Practice / by Kyle Gaun and Robert Goldsmith; edited by John Patrick--4th ed.-- Chicago : Schrimer Books, 1997. xii, 220p. : 4 col. ill.; 24 cm.-- (Musical series; no.4) Index on page 210 - 220 ISBN: 002 - 864 - 6554 1. Music - American I. Goldsmith, Robert II. Patrik, John. III. Title IV. Series	

1.5.2 इतर संलेखों की संरचना (Structure of Added Entries) :

AACR-2 संशोधित में इतर संलेख का निर्माण अत्यन्त ही सुविधाजनक और सरल है। समस्त प्रकार के इतर संलेखों का निर्माण करते समय मुख्य संलेख के दो अनुच्छेदों - क्रामक अंक अनुच्छेद एवं शीर्षक अनुच्छेद अग्र रेखा (Leading line) पर ज्यों का त्यों अंकित किये जाते हैं। इसके अतिरिक्त शीर्षक अनुच्छेद अंकित करने के पश्चात् अगली पंक्ति पर द्वितीय उर्ध्व रेखा से Rest as in the main entry निर्देशक पद (Directing term) का उल्लेख किया जाता है।

ए॰ए॰सी॰आर॰-2 संशोधित में उपयोगकर्ताओं द्वारा अन्य अभिगमों (Approaches) की पूर्ति हेतु वर्णानुक्रमिक सूची (Alphabtical Catalogue) के अन्तर्गत निम्न प्रकार के इतर संलेखों के निर्माण का प्राविधान है।

1. विषय शीर्षक इतर संलेख (Subject Heading Added Entry)
2. संयुक्त लेखक इतर संलेख (Jt. Author Added Entry)
3. सहकारक इतर संलेख (Collaborator Added Entry)
   3.1 संपादक इतर संलेख (Editor Added Entry)
   3.2 अनुवादक इतर संलेख (Translator Added Entry)

3.3 संशोधनकर्ता इतर संलेख (Reviser Added Entry)

3.4 संकलक इतर संलेख (Compiler Added Entry)

3.5 चित्रकार इतर संलेख (Illustrator Added Entry)

4. आख्या इतर संलेख (Title Added Entry)

5. ग्रंथमाला इतर संलेख (Series Added Entry)

निम्नलिखित उदाहरणों के माध्यम से उपरोक्त प्रकार के सभी इतर संलेखों को अधिक स्पष्टता के साथ समझा जा सकता है :

इतर संलेखों की संरचना (Structure of Added Entries)

1. **विषय शीर्षक इतर संलेख (Subject Heading Added Entry)**

		MUSIC - AMERICAN
780.973 GAN	Gaun, Kyle	
		Rest as in the main entry

2. **संयुक्त लेखक इतर संलेख (Joint Author Added Entry) :**

		Gold Smith, Robert
980.973 GAN	Gaun, Kyle	
		Rest as in the main entry

3. **सहकारक (सम्पादक) इतर संलेख (Collaborator (Editor) Added Entry) :**

780.973 GAN	Gaun, Kyle	Patrick, John
		Rest as in the main entry

4. **आख्या इतर संलेख (Title Added Entry) :**

980.973 GAN	Gaun, Kyle	American Music in Twentieth Century
		Rest as in the main entry

5. **ग्रन्थमाला इतर संलेख (Series Added Entry) :**

980.973 GAN	Gaun, Kyle	Musical Series; no.4.
		Rest as in the main entry

1.5.3 संदर्भ संलेखों की संरचना (Structure of Added Entries) :

संदर्भ संलेख उपोगकर्ताओं को एक शीर्षक से दूसरे शीर्षक की ओर निर्दिष्ट करने वाला संलेख है। ए॰ए॰सी॰आर॰-2(आर॰) के अनुसार संदर्भ संलेख का कार्य एक शीर्षक से दूसरे शीर्षक की ओर निर्दिष्ट करना है। जिससे उपयोगकर्ता को सम्बन्धित अथवा अतिरिक्त सामग्री प्राप्त करने में सुविधा हो क्योंकि जिस शीर्षक के अन्तर्गत संलेख को प्रस्तुत किया गया होता है, उपयोगकर्ता उससे परिचित हो सकते हैं तथा नहीं भी हो सकते। ए॰ए॰सी॰आर॰-2(आर.) के नियम संख्या 26.0 के अनुसार निर्देश निम्नलिखित प्रकार के होते हैं :-

(क) देखिये निर्देश (See reference)

(ख) इसे भी देखिये निर्देश (See also reference)

(ग) नाम-आख्या निर्देश (Name - Title reference)

(घ) व्याख्यात्मक निर्देश (Explanatory reference) एवं

(ङ) देखिए एवं इसे भी देखिये निर्देश (See and See Also reference)

यह निर्देश उपयोगकर्ताओं व्यक्ति/समष्टि निकाय, रचना की उपआख्या, विषय या ग्रन्थमाला के नाम से उस नाम की ओर इंगित करता है जिस नाम से संलेख निर्मित किया जाता है। संलेख में अग्ररेखा (Leading line) पर उसे अंकित किया जाता है। जिससे ढूढ़ने की सम्भावना रहती है तथा देखिए (See) संदर्भ के बाद उस नाम को नियमानुसार अंकित किया जाता है जिस नाम से संलेख बनाया गया है। 'देखिए' संदर्भ में उपयोगकर्ता संदर्भित में संलेख को देखने के लिए बाध्य है जबकि इसे भी देखिये (see

also) निर्देश में लचीलापन है अर्थात् उपोगकर्ता की यदि आवश्यकता होगी तभी इस निर्देशों को मानेगा।

उदाहरण —

देखिये निर्देश

(See Reference)

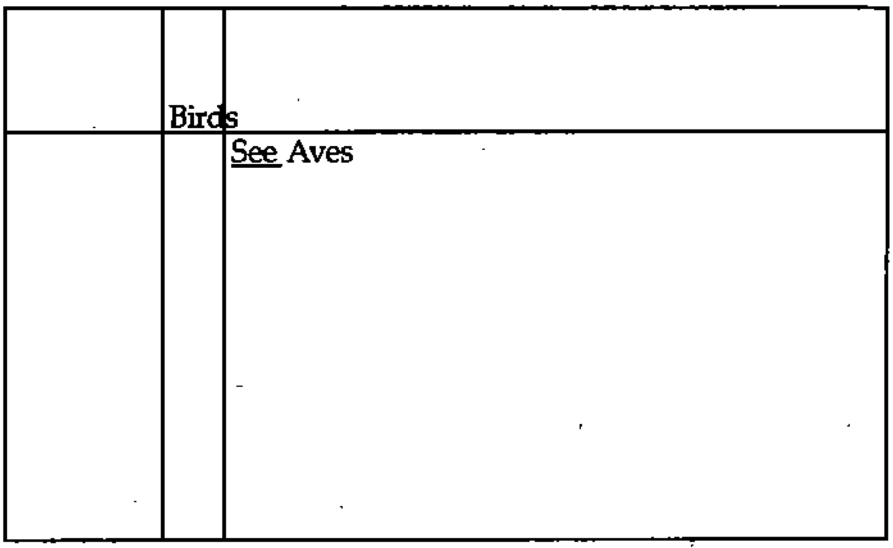

इसे भी देखिये निर्देश

(See also Reference)

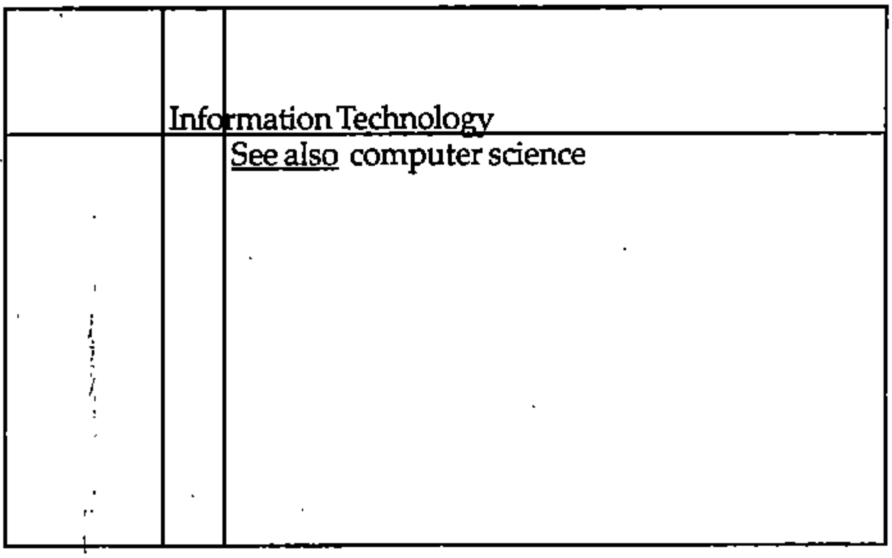

(ग) नाम आख्या निर्देश (Name Title Reference) : ऐसी आख्या जो व्यक्ति अथवा समष्टि निकाय के शीर्षक के अन्तर्गत बनाई गई है उसके लिए 'इसे देखिये' या 'इसे भी देखिये' संलेख बनाये जाँय तो इन्हें नाम आख्या निर्देश के रूप में जाना जाता है।

उदाहरण —

Gupta, R.C.	
	See Gupta, Ramu

उपरोक्त उदाहरण में शीर्षक (Title) के बाद के संस्करण (Ramu Gupta) के नाम से प्रकाशित हुये हैं।

(घ) व्याख्यात्मक निर्देश (Explanatory Reference) :

ए॰ए॰सी॰आर-2 संशोधित के नियम संख्या 26.2 डी॰1 के अनुसार जब अधिक विस्तृत निर्देश की आवश्यकता होती है तो निम्न प्रकार से व्याख्यात्मक निर्देश निर्मित किये जाते हैं।

उदाहरण —

Rao, Sita	
	For works of this author written in collaboration with Gita Rao See Two sisters.

	Rao, Gita	
	with Sita Rao See Two sisters.	For works of this author written in collaboration

1.6 विषय शीर्षक (Subject Headings) :

उपयोगकर्ता द्वारा पुस्तकालय में पाठ्य सामग्री खोजने के लिए विषय अभिगम (Subject Approach) का भी प्रयोग किया जाता है। विषय शीर्षक से तात्पर्य विषय को अभिव्यक्त करने वाला शब्द अथवा शब्द समूह जिसके अन्तर्गत शीर्षक के रूप में उस विषय से सम्बन्धित समस्त कृतियों की संलेख सूची अथवा ग्रन्थ संदर्भ सूची का बोध होता है।

उपयोगकर्ता की विषय अभिगम की सम्पूर्ति हेतु सूचीकार (Cataloguer) को विषय शीर्षक निर्माण के लिए विषय शीर्षक सूचियों का उपयोग करना होता है। विषय शीर्षक निर्माण हेतु दो विषय शीर्षक सूचियाँ प्रमुखतया प्रचलन में है।

(अ) लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस लिस्ट ऑफ सब्जेक्ट हेडिंग्स (LCHS)

(ब) सीयर्स लिस्ट ऑफ सब्जेक्ट हेडिंग्स (SLSH)

उपरोक्त दोनों सूचियों में शैक्षणिक ग्रन्थालयों के लिए सामान्यता सीयर्स लिस्ट ऑफ सब्जेक्ट हेडिंग्स का प्रयोग अधिक लोकप्रिय है।

1.6.1 सीयर्स लिस्ट ऑफ सब्जेक्ट हेडिंग्स (SLSH) :

इस विषय शीर्षक सूची को Mini Erl Sears द्वारा संकलित किया गया है। इसका वर्तमान संस्करण 18वाँ है जिसका प्रकाशन 2004 में हुआ। इसके सम्पादक Joseph Miller एवं सह सम्पादक John Goodsell है।

इस सूची का मुख्य उद्देश्य किसी विशिष्ट विषय से सम्बन्धित पुस्तक को उसका विषय शीर्षक प्रदान करना है। जिससे कि पाठक द्वारा विषय अधिगम की पूर्ति हो सके।

इस सूची में समाहित सभी विषय शीर्षकों का व्यवस्थापन वर्णानुक्रम (Alphabetical Order) में शब्दकोष की तरह A-Z तक है। संरचना की दृष्टि से इसके अन्तर्गत निम्नलिखित संकेत (Symbols) का प्रयोग किया गया है।

UF	=	Used for (के लिए)
SA	=	See Also (देखे भी)
BT	=	Broader Term (व्यापक पद)
NT	=	Narrow Term (सीमित पद)
RT	=	Related Term (सम्बन्धी पद)

इसके अन्तर्गत कुछ शीर्षक मोटे काले आकार के अक्षरों (Black-Bold face type letters) में दिये गये हैं। जिनका विषय शीर्षक बनाने के लिए प्रयोग किया जाता है। जो शीर्षक हल्के अक्षरों (light face type) में दिये गये हैं उनका प्रयोग विषय शीर्षक बनाने के लिए नहीं किया जाता है।

1.7 विस्तृत अध्ययन हेतु ग्रन्थ सूची (Bibliography) :

1. Joint steering committee for revision of A.A.C.R. : Anglo-American Cataloguing Rules. 2nd ed. 1998 rev. Edited by Michael Groman and Paul W. Winkler, Canadian Library Association, 1988.
2. Krishna Kumar, Introduction to A.A.C.R.-2., Delhi, Vikas, Latest Edition.
3. सूद, एस॰ पी॰ क्रियात्मक सूचीकरण : ए॰ए॰सी॰आर॰-2 जयपुर, राज पब्लिशिंग हाउस, 2002 ।
4. गौतम, जे॰ एन॰ प्रैक्टिकल मैनुअल ऑफ ए॰ए॰सी॰आर॰-2 एसोसियेटंड पब्लिशिंग हाउस, 2011।

इकाई -2 : एकल व्यक्तिगत लेखक द्वारा रचित पुस्तकों का सूचीकरण (Cataloguing of Books by Single Personal Authors)

संरचना

2.0 उद्देश्य
2.1 एकल व्यक्तिगत लेखक से तात्पर्य
2.2 एकल व्यक्तिगत लेखक हेतु शीर्षक के वरण एवं उपकल्पन के नियम
2.3 सूचीकृत उदाहरण
2.4 अभ्यास हेतु मुखपृष्ठ
2.5 विस्तृत अध्ययनार्थ ग्रंथ सूची

2.0 उद्देश्य

इस इकाई के निम्नलिखित उद्देश्य हैं :-

1- एकल व्यक्तिगत लेखक से शिक्षार्थियों को अवगत कराना।

2- एकल व्यक्तिगत लेखक के शीर्षक का वरण एवं उपकल्पन हेतु नियमों से अवगत कराना

3- उदाहरण के माध्यम से एकल व्यक्तिगत लेखकों द्वारा रचित पुस्तकों को सूचीकृत करने की विधि को सरलता से समझाना।

2.1 एकल व्यक्तिगत लेखक से तात्पर्य

जब किसी ग्रन्थ में वर्णित समाहित तथ्यों एवं विचारों की अभिव्यक्ति की जिम्मेदारी मात्र एक व्यक्ति पर ही होती है तो उसको एकल व्यक्तिगत लेखक कहते हैं। प्रायोगिक सूचीकरण की दृष्टि से लेखक अत्यन्त ही महत्त्वपूर्ण है साथ ही उपयोगकर्ता द्वारा पुस्तकों की खोज हेतु यह प्रमुख अभिगम है। लेखक ही पुस्तक की विषय परक सूचना के लिए जिम्मेदार होता है। लेखक के रूप में एक लेखक, एक से अधिक लेखक सहकारक एवं समष्टि निकाय हो सकते हैं। प्रस्तुत अध्याय में हम एकल व्यक्तिगत लेखक के द्वारा लिखी हुई पुस्तकों के सूचीकरण के सन्दर्भ में नियमानुसार विवरण प्रस्तुत करेंगे।

2.2 एकल व्यक्तिगत लेखक हेतु शीर्षक के वरण एवं उपकल्पन के नियम

सूचीकरण के सामान्य नियमानुसार शीर्षक अनुच्छेद में लेखक के नाम के पूर्व आने वाले आदरसूचक, पदवीधारक अथवा अलंकरण पद को विलुप्त कर दिया जाता है। उदाहरणार्थ :

(अ) Dr. Ramesh Kumar Sharma

को

Sharma, Ramesh Kumar

(ब) Smt. Neera Chaudhari को

Chaudhari, Neera

प्रसूचीकरण करते समय लेखक के नाम में प्रविष्ट पद (entry element) का चयन करने के लिए सामान्य नियम है कि नियम संख्या 22.5A1 के अनुसार लेखक के नाम में कुल नाम यदि है तो कुलनाम को ही प्रविष्टि पद (entry element) के रूप में प्रयोग किया जायेगा।

Ramesh Kumar Joshi को

Joshi, Ramesh Kumar के रूप में

किसी भी लेखक के नाम में सामान्यतः दो या तीन भाग होते हैं। अन्तिम भाग को पारिवारिक नाम या कुलनाम की संज्ञा दी जाती है। सूचीकरण में कुल नाम को ही प्रविष्टि पद बनाया जाता है। अधोलिखित उदाहरण से प्रविष्टि पद को स्पष्ट किया जा सकता है।

नाम	सूचीकरण के उपकल्पन
Warner Patrick Stark	Stark, Warner Patrick
Waren J. Keegan	Keegan, Waren J.
Ralph M. Goldman	Goldman, Ralph M.
Kiran Bedi	Bedi, Kiran

कुछ पाश्चात्य नाम ऐसे होते हैं जिसमें यौगिक कुल नाम होता है। यौगिक

कुलनाम भी दो प्रकार के होते हैं। उन्हें निम्न उदाहरण के माध्यम से सूचीपत्रक में कैसे उपकल्पित किया जायेगा इसका उल्लेख निम्नवत् है।

नाम	सूचीकरण के उपकल्पन
Malcolm Mc Donald	Mc Donald, Malcolm
Sim We-Lu	We-Lu, Sim

भारतीय लोगों के नाम के सन्दर्भ में नियम संख्या 22.25 में उल्लेख है यदि लेखक का जन्म 19वीं शताब्दी के मध्य से पहले हुआ है तो ऐसे व्यक्तियों के नाम के प्रथम शब्द को प्रविष्ट पद बनाने की अनुशंसा है जैसे पाणिनि आर्यभट्ट आदि।

भारतीय सिख नामों के लिए यदि उसमें सिंह जुड़ा हुआ है तो उसे कुलनाम न मानते हुए नाम को सीधे-सीधे उपकल्पित किया जाता है जैसे-

नाम	सूचीकरण
करतार सिंह	करतार सिंह

2.3 सूचीकृत उदाहरण

उदाहरण

(एकल व्यक्तिगत लेखक)

Building Trust

An Introduction to Peacekeeping and Arms Control

RALPH M. GOLDMAN

ASHGATE PUBLISHERS

HAMPSHIRE, UK

1997

OTHER INFORMATION

CALL NO.	341.733 GOL
ACC NO.	94126
PAGES	357p
SIZE	26 cm
ISBN	18-85219-875

मुख्य संलेख (Main Entry)

341.733 GOL	Goldman, Ralph M.
	Building Trust : an Introduction to Peacekeeping and arms control/by Ralph M. Goldman .- Hampshire, V.K. : Ashgate Publishers, 1997
94126	357p.; 26cm
	ISBN: 18-85219-875
	1. International relation I. Title
	O

विषय इतर संलेख (Subject - Added Entry)

	INTERNATIONAL RELATIONS
341.733 GOL	Goldman, Ralph M.
	Rest as in the main entry.
	O

आख्या इतर संलेख (Title Added Entry)

	Building Trust
341.733 GOL	Goldman, Ralph M.
	Rest as in the main entry.
	O

विषय संदर्भ संलेख (Subject Reference Entry)

	ARMS CONTROL	
		See INTERNATIONAL RELATIONS

	PEACE MOVEMENT	
		See INTERNATIONAL RELATIONS

महत्वपूर्ण बातें -

(1) मुख्य संलेख के शीर्षक (Heading) अनुच्छेद में लेखक के नाम को 22.43 के अनुसार उपकल्पित किया गया है।

(2) आख्या एवं दायित्व कथन अनुच्छेद में आख्या के बाद उप आख्या लिखते समय इसे : चिन्ह द्वारा अलग करते हुए इसका पहला अक्षर छोटा लिया गया है।

(3) इतर संलेख - आख्या में नियमानुसार उप आख्या (Subtitle) का प्रयोग नहीं किया गया है।

(4) इतर संलेख-विषय को Sears List of Subject Headings के अनुसार RT (Related term) सम्बन्धित पद के अनुरूप बनाया गया है।

उदाहरण 2

(एकल व्यक्तिगत लेखक एवं ग्रन्थमाला)

Marketing Plans that Work
Targeting Growth and Profitability

Malcolm Mc Donald

Management new book series. Edited by waren J. Keegan No. 8

BUTTERWORTH - HEINEMANN
BOSTON
1997

OTHER INFORMATION

CALL NO.	658.802 MCD
ACC NO.	43126
PAGES	236p
SIZE	24 cm
ISBN	0750698284

मुख्य संलेख (Main Entry)

658.802 MCD	Mc Donald, Malcolm
43126	Marketing plans that work targeting growth and profitability/ by Malcolm Mc Donald.-Bostan : Butterworth - Heinemann,1997 236p.; 24cm .- (Management new book series; no. 8) ISBN: 0750698284 1. Business I. Title II. series O

विषय इतर संलेख (Subject Added Entry)

658.802 MCD		BUSINESS. Mc Donald, Malcolm.
		Rest as in the main entry. O

आख्या इतर संलेख (Title Added Entry)

858.802 MDC		Marketing plans that work targeting growth and profitability. Mc Donald, Malcolm
		Rest as in the main entry. O

ग्रन्थमाला इतर संलेख (Series Added Entry)

858.802 MDC		Management new book series ; no. 8. Mc Donald, Malcolm.
		Rest as in the main entry. O

महत्वपूर्ण बातें -

(1) मुख्य संलेख के ग्रन्थमाला अनुच्छेद में सूचना नियमानुसार अंकित है। ए.ए.सी.आर.-2 संशोधित में ग्रन्थमाला के सम्पादक को मुख्य संलेख में अंकित नहीं किया जाता। तद्नुसार इससे इतर संलेख भी नहीं बनाये जाते।

(2) इतर संलेख - आख्या में आख्या यदि एक पंक्ति पर नहीं समाहित होती तो अनुवर्ती सूचना अगली पंक्ति पर तृतीय काल्पनिक रेखा से अंकित की जाती है।

(3) इतर संलेख-विषय में Sears list of Subject Heading के BT व्यापक पद (Border Term) के अनुसार विषय Business का उल्लेख किया गया है। क्योंकि (Marketing) विषय आख्या का प्रथम शब्द है इसलिए उसका प्रयोग न करके व्यापक पद BT प्रयोग में लाया गया है।

उदाहरण 3

(एकल व्यक्तिगत लेखक के साथ सहकारक)

Speeding the Net

The Inside Story of Netscape and How it Challenged Microsoft

by

JOSHUA QUITTNER

Edited by

MICHELLE SLATALLA

ATLANTIC MONTHLY PRESS

BERKELEY

1998

OTHER INFORMATION

CALL NO.	004.67 QUI
ACC NO.	24612
PAGES	xi, 323 p
SIZE	24 cm
ISBN	08-71137-097

Note : Index on page no. 320-323

मुख्य संलेख

004.67 QUI	Quittner, Joshua.	
		Speeding the net : the inside story of netscap and how it challenged Microsoft / by Joshua Quittner; edited by Michelle Slatalla .– Berkeley : Atlantic Monthly Press, 1998.
24612		xi, 323p; 24cm
		Index on page no. 320-323. ISBN: 08-71137 - 097
		1. Internet I. Slatalla, Michelle II. Title
		○

विषय इतर संलेख (Subject Added Entry)

		INTERNET
004.67 QUI	Quittner, Joshua.	
		Rest as in the main entry.
		○

सहकारक (संपादक) इतर संलेख (Editor Added Entry)

		Slatalla, Michelle
004.67 QUI	Quittner, Joshua.	
		Rest as in the main entry.
		○

आख्या इतर संलेख (Title Added Entry)

004.67 QUI		Speeding the net. Quittner, Joshua
		Rest as in the main entry. O

विषय संदर्भ संलेख (Subject Reference Entry)

	COMPUTER NETWORK	
		See INTERNET O

महत्वपूर्ण बातें -

(1) मुख्य संलेख में टिप्पणी अनुच्छेद के अन्तर्गत Index की सूचना प्रदान की गई है।

(2) नियमानुसार संपादक के लिए इतर संलेख का निर्माण किया गया है।

(3) अन्य सभी इतर संलेख नियमानुसार बनाये गये हैं।

(4) Sears List of Subject Headings के निर्देशानुसार विस्तृत पद BT के अनुसार Computer Networks हेतु संदर्भ संलेख-विषय का निर्माण किया गया है।

उदाहरण 4

(एकल व्यक्तिगत लेखक - दो सहकारक के साथ)

Introduction to Inorganic Chemistry

by

Dr. Arun Shukla

Associate Professor, University of Allahabad, Allahabad

Edited by

Prof. J. D. Pandey and Prof. I.C. Shukla

Edition 6

SCIENCE PUBLISHERS

VARANASI - 2010

OTHER INFORMATION

CALL NO.	546 SHU
ACC. NO.	99346
PAGES	8, 336
SIZE	14 x 17.6 cm
ISBN	81-76600 - 572

Note : 10 coloured illustrations

मुख्य संलेख (Main Entry)

546 SHU	Shukla, Arun
99346	Introduction to Inorganic Chemistry/ by Arun Shukla; edited by J.D. Pandey and I.C. Shukla.-6th ed.- Varanasi : Science Publisher, 2010. viii, 336p. : 10 col. ill; 18 cm. ISBN: 81.76600-572 1. Chemistry-Inorganic I. Pandey, J.D. II. Shukla, I.C. III. Title O

विषय शीर्षक इतर संलेख (Subject Heading Added Entry)

546 SHU	Shukla, Arun.	CHEMISTRY- INORGANIC
		Rest as in the main entry.
		O

सहकारक इतर संलेख (संपादक-1) Collaborator (Editor-1) Added Entry

546 SHU	Shukla, Arun.	Pandey, J. D.
		Rest as in the main entry.
		O

सहकारक इतर संलेख (संपादक-2) Collaborator (Editor-2) Added Entry

546 SHU	Shukla, Arun.	Shukla, I.C.
		Rest as in the main entry.
		O

आख्या इतर संलेख (Title Added Entry)

546 SHU	Shukla, Arun.	Introduction to Inorganic Chemistry
		Rest as in the main entry.

महत्वपूर्ण बातें -

(1) मुख्य संलेख - में नियमानुसार लेखक के नाम के पूर्व का पदनाम विलुप्त कर दिया गया है साथ ही उनका कार्यालयी पद तथा संस्था के नाम से भी सूचीकार का कोई सम्बन्ध नहीं है।

(2) मुख्य संलेख - में दायित्व कथन क्षेत्र के अन्तर्गत लेखक के नाम के पश्चात ; (सेमी कोलन) योजक चिन्ह लगाते हुए पहले सम्पादक का नाम and दूसरे संपादक के नाम का उल्लेख नियमानुसार किया गया है। साथ ही इन दोनों संपादकों के नाम का उल्लेख संकेत अनुच्छेद में उसी क्रम में आयेगा जिस क्रम में वे आख्या पृष्ठ पर अंकित है।

(3) भौतिक विवरण क्षेत्र के अन्तर्गत पृष्ठ वर्णन के पश्चात् योजक चिन्ह : (कोलन) लगाकर चित्र वर्णन हेतु 10.Col. ill का प्रयोग किया गया है।

2.4 अभ्यास हेतु मुख पृष्ठ

मुख 1

(एकल व्यक्तिगत लेखक)

The Age of God-Kinds
Time Frame 3000-1500 B.C.

By
Ellen Kittle

Alexandria, VA
Time - Life Books
1997

OTHER INFORMATION

CALL NO.	909 AGE
ACC. NO.	73524
PAGES	xii, 178p
SIZE	29 cm
ISBN	08-09464-004

उदाहरण 2

(एकल व्यक्तिगत लेखक-सहकारक एवं ग्रंथमाला सहित)

Living with China : US China Relations in the Twenty-First Century

By

Ezra F. Vogel

Second Edition

Revised by

Alexander O Stern

New York

Norton Publishing House

1987

OTHER INFORMATION

CALL NO.	327.73051 LIV
ACC. NO.	43326
PAGES	xii, 336p
SIZE	24 cm
ISBN	08-09464-004

Note : Norton Series in International Relations XI

उदाहरण 3

(एकल व्यक्तिगत लेखक एवं दो विभिन्न प्रकार के सहकारक)

Daughter of Africa : An International Anthology Words and Writing By Women of African Descent From the Ancient Egyptian to the Present

By
MARGARET BUSBY

(Second Revised Edition)
Revised by
Arnold Sommerfield

Illustrated by
Mary A. Syndem

NEW YORK
PANTHEON BOOKS
1992

OTHER INFORMATION

CALL NO.	808.8 DAU
ACC. NO.	74612
PAGES	xi, 1089 p
SIZE	24 cm
ISBN	06-79416-34X

उदाहरण 4

(योजकीय कुलनाम वाला एकल व्यक्तिगत लेखक एवं ग्रंथमाला)

Henry James's Last Romance : Making Sense of the Past and the American Scene

By

Cecil Day - Lewis

CAMBRIDGE UNIVERSITY PRESS
CAMBRIDGE
1997

OTHER INFORMATION

CALL NO.	813.4 JAM
ACC. NO.	24691
PAGES	275 p
SIZE	24 cm
ISBN	0-521-563380

Note : Cambridge Paper back Book Series
Edited by Elsa Engarvi - Havio. No. 6

उदाहरण 5

(एकल व्यक्तिगत लेखक एवं दो भिन्न प्रकार के सहकारक)

एकल व्यक्तिगत लेखक द्वारा रचित पुस्तकों का सूचीकरण

Early Communication Skills for Children with Down's Syndrome : A Guide for Parents and Professionals

Fourth Revised Edition

By
LIBBY KUMIN

Revised by
John d. Craft

Illustrated by
Marlin K. Gowing

WOODBINE HOUSE
BETHESDA, MD
2003

OTHER INFORMATION

CALL NO.	618.928 KUM
ACC. NO.	62164
PAGES	xiii, 368 p
SIZE	27 cm
ISBN	18-9062-7275

2.5 विस्तृत अध्ययनार्थ ग्रन्थ सूची

1. IGNOU : A.A.C.R.-2 Rev.-Part 2 (BLIS Course Material).

2. Joint Steering Committee for Revision of A.A.C.R.-2nd rev.ed., 1998. Edited by ichael Gorman and Paul W. Winkler, Ottawa, Canadian Library Association, 1998.

3. गौतम, ज़े. एन, एवं निरन्जन सिंह : एडवान्स कैटलागिंग, आगरा, वाई.के. पब्लिशर्स, 1998

4. सूद, एस. पी. : क्रियात्मक सूचीकरण ए.ए.सी.आर.-2, जयपुर, राज पब्लिशिंग हाउस, 2002

5. वर्मा , ए. के. : प्रयोगात्मक ए.ए.सी.आर.-2, रामपुर, सेन्ट्रल बुक हाउस, 1998

इकाई -3 : संयुक्त व्यक्तिगत लेखकों द्वारा रचित पुस्तकों का सूचीकरण (Cataloguing of Books by Joint Personal Authors)

संरचना

3.0 उद्देश्य

3.1 संयुक्त व्यक्तिगत लेखकों का अर्थ एवं परिभाषा

3.2 संयुक्त व्यक्तिगत लेखकों के शीर्षक का वरण एवं उपकल्पन

3.3 सूचीकृत उदाहरण

- 3.3.1 दो व्यक्तिगत लेखक
- 3.3.2 तीन व्यक्तिगत लेखक
- 3.3.3 तीन से अधिक व्यक्तिगत लेखक

3.4 अभ्यास हेतु मुखपृष्ठ

3.5 विस्तृत अध्ययनार्थ ग्रंथ सूची

3.0 उद्देश्य

इस इकाई के निम्नलिखित उद्देश्य हैं :-

1- संयुक्त व्यक्तिगत लेखक का अर्थ स्पष्ट कर परिभाषित करना।

2- संयुक्त व्यक्तिगत सहलेखकों के प्रकारों को निष्पादित कर उनके वरण एवं उपकल्पन के नियमों की विवेचना करना।

3.1 संयुक्त व्यक्तिगत लेखकों का अर्थ एवं परिभाषा (Meaning and Definition of Joint Personal Authors)

जब किसी ग्रन्थ की रचना दो या दो से अधिक व्यक्तिगत लेखकों द्वारा की जाती है तो उन्हें व्यक्तिगत सहलेखक की संज्ञा दी जाती है। सूचीकरण की भाषा में ऐसे लेखकों के लिए Joint Authorship अथवा Shared authorship अथवा Multiple authorship का भी नाम दिया जाता है। A.A.C. R-2 संशोधित के नियम 21.6A के अन्तर्गत इस प्रकार की कृतियों के सूचीकरण हेतु विस्तृत रूप में चर्चा की गई है।

ए.ए.सी.आर-2 संशोधित में संयुक्त व्यक्तिगत लेखकों को निम्न प्रकार से परिभाषित किया गया है "वह व्यक्ति जो ऐसे ग्रन्थ की रचना के लिए एक अथवा अधिक व्यक्तियों के साथ सहयोग करता है, जिसमें प्रत्येक सहयोगी का कार्य स्वागत योग्य होता है।"

3.2 संयुक्त व्यक्तिगत लेखकों के शीर्षक का वरण एवं उपकल्पन (Choice and Rendering of Joint Personal Authors)

ए.ए.सी.आर-2 संशोधित में संयुक्त व्यक्तिगत लेखकों द्वारा रचित पुस्तकों को सूचीकरण की दृष्टि से दो भागों में विभक्त किया गया है :-

(अ) प्रमुख दायित्व का संकेत (Principle Responsibility Indicated)

(ब) प्रमुख दायित्व के संकेत का अभाव (Principle Responsibility not indicated)

उपरोक्त दोनों भागों को विस्तृत रूप से निम्न प्रकार से अधिक स्पष्ट किया जा सकता है :-

(अ) प्रमुख दायित्व का संकेत :-

ए.ए.सी.आर-2 संशोधित के नियम सं0 21.6B के अनुसार यदि एक से अधिक लेखक संयुक्त रूप से पुस्तक लेखन के लिए जिम्मेदार हैं और आख्या पृष्ठ पर एक लेखक के नाम को काले गहरे अक्षर (Black & Bold) में उल्लिखित किया गया है। यद्यपि के दोनों लेखकों के नाम के क्रम में भले ही वह लेखक नीचे के क्रम में हो परन्तु उसके नाम लिखने की शैली के आधार पर उसे विशिष्टता प्रदान की गई है तो उसे ही प्रमुख लेखक मानते हुए शीर्षक का निर्माण उसी के नाम के अन्तर्गत किया जायेगा। उदाहरण स्वरूप :-

Theory of Classification

by

Dr. S. K. Sharma

and

PROF. JAI RAM GHOSH

उपरोक्त उदाहरण में दो लेखक दिये गये हैं परन्तु नीचे के लेखक के नाम को आख्या पृष्ठ पर प्रस्तुतीकरण के आधार पर विशिष्टता प्रदान की गई है अतः नियमानुसार JAIRAM GHOSH के नाम से मुख्य संलेख के शीर्षक का निर्माण होगा तथा दूसरे लेखक S. K. Sharma के नाम से इतर संलेख संयुक्त लेखक के अन्तर्गत निर्मित किया जायेगा।

(ब) प्रमुख दायित्व के संकेत का अभाव :-

ए.ए.सी.आर-2 संशोधित के नियम संख्या 21.6C के अनुसार यदि किसी पुस्तक की रचना में एक से अधिक सहलेखक हैं और उनमें से किसी भी लेखक का आख्या पृष्ठ पर लेखन के आधार पर प्रमुख लेखक का दायित्व स्पष्ट नहीं हो रहा है तो ऐसी स्थिति में लेखकों के नाम के क्रम में जो सर्वप्रथम है उसी के नाम से पुस्तक के मुख्य संलेख के शीर्षक अनुच्छेद का निर्माण किया जायेगा तथा दूसरे लेखक के द्वारा इतर संलेख संयुक्त लेखक का निर्मित किया जायेगा।

उदाहरणार्थ -

Book of Botany

by

Nirmal Khatri

and

Komal Pandey

उपरोक्त उदाहरण में दोनों ही लेखकों का नाम एक जैसी शैली में लिखा गया अतः नियमानुसार प्रथम लेखक Nirmal Khatri के अन्तर्गत मुख्य संलेख के शीर्षक का निर्माण किया जायेगा एवं Komal Pandey के नाम से संयुक्त लेखक इतर संलेख का निर्माण किया जायेगा।

3.3 सूचीकृत उदाहरण (Catalogued Examples)

3.3.1 दो व्यक्ति लेखक : प्रमुख दायित्व के संकेत का अभाव

उदाहरण 1

The People vs. Big Tobacco : How the States took on the Cigarette Gaints

By
Carrick Mallenkamp
Adam Levy

Bloomberg Press
Willingston, UT
1998

OTHER INFORMATION

CALL NO.	346. 73038 PEO
ACC. NO.	64312
PAGES	xi, 334 p.
SIZE	26 cm
ISBN	15-76600-572

मुख्य संलेख (Main Entry)

346.73038 PEO	Mollenkamp, Carrick.
64312	The people vs. big tobacco :how the States took on the cigarette giants/by Carrick Mollenkamp and Adam Levy.- Willingston: Bloomberg Press, 1998. xi, 334p.; 26 cm ISBN : 15-76600-572 1. Tobacco habit I. Levy, Adam II. Title O

विषय इतर संलेख (Subject Added Entry)

346.73038 PEO		TOBACCO HABIT Mollenkamp, Carrick.
		Rest as in the main entry. O

सहलेखक इतर संलेख (Joint Author Added Entry)

346.73038 PEO		Levy, Adam. Mollenkamp, Carrick.
		Rest as in the main entry. O

आख्या इतर संलेख (Title Added Entry)

346.73038 PEO		The people vs big tobacco Mollenkamp, Carrick
		Rest as in the main entry. O

महत्वपूर्ण बातें -

(1) पुस्तक के आख्या पृष्ठ पर दो सहलेखकों के नाम दिये गये हैं, परन्तु शैली की दृष्टि से किसी भी लेखक का मुख्य दायित्व स्पष्ट नहीं हो रहा है ऐसी स्थिति में नियमानुसार प्रथम लेखक के नाम के अन्तर्गत शीर्षक अनुच्छेद का निर्माण किया गया है।

(2) नियम से 21.30A के अनुसार दूसरे सहलेखक के नाम से इतर संलेख संयुक्त लेखक का निर्माण किया गया है।

(3) उत्तरदायित्व क्षेत्र में दोनों लेखकों का नाम उसी क्रम में लिखा गया है जिस क्रम में आख्या पृष्ठ पर अंकित है एवं दोनों लेखकों के नाम को and योजक शब्द द्वारा जोड़ा गया है।

उदाहरण 2

(दो व्यक्तिगत लेखक-प्रमुख दायित्व का संकेत)

Mathematical Methods of Quantum Optics

By
George Friedman
JOHN BAKER

Edited by
Colin Chapman
Edition - 3rd

SPRINGER
London
2010

OTHER INFORMATION

CALL NO.	535. 201 BAK
ACC. NO.	12945
PAGES	ix, 440
SIZE	20.3 cm

मुख्य संलेख (Main Entry)

535.201 BAK	Baker, John.	
		Mathematical methods of quantum optics / by George Friedman and John Baker; edited by Colin Chapman. - 3rd ed.- London : Springer, 2010
24612		ix, 440p.; 21 cm
		1. Quantum optics - Mathematics I. Friedman, George II Chapman, Colin III. Title
		O

विषय इतर संलेख (Subject Added Entry)

		QUANTUM OPTICS - MATHEMATICS
535.201 BAK	Beaker, John.	
		Rest as in the main entry.
		O

सहलेखक इतर संलेख (Joint Author Added Entry)

		Friedman, George.
535.201 BAK	Beaker John.	
		Rest as in the main entry.
		O

संपादक इतर संलेख (Editor Added Entry)

535-201 BAK		Chapman, Colin. Beaker, John.
		Rest as in the main entry. O

आख्या इतर संलेख (Title Added Entry)

535.201 BAK		Mathematial methods of quantum optics. Beaker, John.
		Rest as in the main entry. O

महत्वपूर्ण बातें -

(1) पुस्तक के आख्या पृष्ठ पर दो सहलेखकों का उल्लेख है जिनमें दूसरे सहलेखक के नाम के उल्लेख की मुद्रण शैली अलग है। इस प्रकार नियम संख्या 21.601 के अनुसार मुख्य लेखक के रूप में द्वितीय सहलेखक को मानते हुए उसके नाम से शीर्षक अनुच्छेद का निर्माण किया गया है एवं दायित्व कथन क्षेत्र में आख्या पृष्ठ पर जिस क्रम में लेखक के नाम का उल्लेख है उसी क्रम में सामान्य शैली में प्रथम लेखक का नाम and द्वितीय लेखक के नाम का उल्लेख किया गया है।

(2) नियम संख्या 21.30A1 के अनुसार दूसरे सहलेखक के नाम से इतर संलेख-सहलेखक का निर्माण किया गया है।

(3) नियम संख्या 2.5D1 के अनुसार ग्रन्थ के आकार (ऊंचाई) दशमलव भिन्न (20.3 सेमी) रूप में दी गई है तो उसे अगले सेन्टीमीटर अंक में पूर्ण करके (21सेमी) उल्लिखित किया गया है।

3.3.2 तीन व्यक्तिगत लेखक :

जब किसी पुस्तक के आख्या पृष्ठ पर तीन लेखकों का उल्लेख हो तो सूचीकरण के दृष्टि से नियमानुसार दो स्थितियाँ प्रकट होती हैं।

(अ) यदि तीनों लेखकों के नामों का उल्लेख मुद्रण शैली की दृष्टि से एक जैसा हो तो ऐसी स्थिति में प्रथम लेखक के नाम से शीर्षक अनुच्छेद का निर्माण किया जाता है एवं दायित्व कथन अनुच्छेद में आख्या पृष्ठ पर जिस क्रम में तीनों लेखकों का उल्लेख है उसी क्रम में प्राकृतिक शैली में प्रथम लेखक का नाम, (कामा) द्वितीय लेखक का नाम and तृतीय लेखक के नाम का उल्लेख करते हैं। द्वितीय एवं तृतीय लेखक के नाम से अलग-अलग इतर संलेख-सहलेखक का निर्माण करते हैं।

उदाहरण - 3

(तीन व्यक्तिगत लेखक-प्रमुख दायित्व का संकेत का अभाव)

X-ray Radiation of highly charged ions

By

Henrich F Beyer

H. J. Kluge

V. P. Shevelko

Edition - 3rd

London, Springer 2009

OTHER INFORMATION

CALL NO.	539.722 BEY
ACC. NO.	29956
PAGES	xii, 240
SIZE	20 cm

Note : Springer series on atomic, optical and plasma physics No. 19.

मुख्य संलेख (Main Entry)

539.722 BEY	Beyer, Henrich F.
23956	X-ray radiation of highly charged ions / by Henrich F. Byer, H. J. Kulge, and V. P. Shevelko. - 3rd ed.-London : Springer, 2009. xii, 240p.; 20 cm. - (Springer series on atomic, optical and plasma physics; no. 19). 1. Radiation I. Kluge, H.J. II. Shevelko, V. P. III. Title IV. series.

विषय इतर संलेख (Subject Added Entry)

539.722 BEY	RADIATION Beyer, Henrich F.
	Rest as in the main entry.

सहलेखक इतर संलेख (Collaborator Added Entry)

539.722 BEY	Kluge, H. J. Beyer, Henrich F.
	Rest as in the main entry.

सहलेखक इतर संलेख (Collaborator Added Entry)

539.722 BEY		Shevelko, V. P. Beyer, Henrich F.
		Rest as in the main entry. ○

आख्या इतर संलेख (Title Added Entry)

539.722 BEY		X-ray radiation of highly charged ions Beyer, Henrich F.
		Rest as in the main entry. ○

ग्रन्थमाला इतर संलेख (Series Added Entry)

539.722 BEY		Springer series on atomic, optical and plasma physics; no. 19. Beyer, Henrich F.
		Rest as in the main entry. ○

महत्वपूर्ण बातें -

(1) नियम संख्या 1.6 के अनुसार ग्रन्थमाला का उल्लेख किया गया है तथा इतर संलेख-ग्रन्थमाला का निर्माण करते समय अग्र रेखा के ऊपर जब ग्रन्थमाला का उल्लेख एक पंक्ति पर नहीं हो पाता तो अनुवर्ती पंक्तियाँ तृतीय काल्पनिक रेखा से वापस की गई हैं।

(ब) जब पुस्तक में तीन लेखकों का उल्लेख है तथा कोई एक लेखक भले ही क्रम में नीचे हो परन्तु मुद्रण शैली की दृष्टि से विशिष्ट दिखे तो ऐसे लेखक को प्रमुख लेखक के रूप में नियमानुसार मानते हुए शीर्षक अनुच्छेद का निर्माण इसी लेखक के अन्तर्गत किया जाता है। परन्तु दायित्व कथन क्षेत्र में हम लेखकों के नाम का उल्लेख आख्या पृष्ठ पर दिये गये क्रमानुसार ही - पहले लेखक का नाम, (कामा) दूसरे लेखक का नाम and तीसरे लेखक का नाम लिखते हैं। साथ ही शीर्षक अनुच्छेद में उल्लिखित लेखक के अतिरिक्त शेष दोनों लेखकों के नाम से इतर संलेख-सहलेखक का निर्माण करते हैं।

उदाहरण - 4

(तीन व्यक्तिगत लेखक-प्रमुख दायित्व का संकेत)

Meta Cognition and Human Performance

By

D. L. Forrest Pressley

G. E. MACKINON

T. Gary Waller

4th Edition

1985

Academic Press

New York

OTHER INFORMATION

CALL NO.	153 MAC
ACC. NO.	133926
PAGES	xiii, 280
SIZE	21 cm

Note : Originaly published by Macmillan, London in 1962.

मुख्य संलेख (Main Entry)

153 MAC	Mackinon, G.E.
133926	Meta cognition and human performance / by D.L. Forrest Pressley, G. E. Mackinon and T. Gary Waller. - 4th ed. - New York : Academic Press, 1985. viii, 280p., 21 cm Originally published by Macmillan, London in 1962. 1. Cognitive styles. I Pressley, D.L. Forrest II. Waller, T. Gary III Title ○

विषय इतर संलेख (Subject Added Entry)

153 MAC	COGNITIVE STYLES Mackinon, G.E.
	Rest as in the main entry. ○

सहलेखक इतर संलेख (Joint Author Added Entry)

153 MAC	Pressley, D. L. Forrest Mackinon, G.E.
	Rest as in the main entry. ○

सहलेखक इतर संलेख (Joint Author Added Entry)

153 MAC		Waller, T. Gary Mackinon, G.E.
		Rest as in the main entry.

आख्या इतर संलेख (Title Added Entry)

153 MAC		Meta cognition and human performance Mackinon, G.E.
		Rest as in the main entry.

महत्वपूर्ण बातें -

(1) नियम संख्या 21.6B1 के निर्देशानुसार आख्या पृष्ठ पर दिये गये तीन लेखकों के नाम में क्रम संख्या-2 पर अवस्थित लेखक का नाम मुद्रण शैली की दृष्टि से प्रमुख लेखक के रूप में स्पष्ट होता है। अतः शीर्षक अनुच्छेद का निर्माण प्रमुख लेखक के नाम से किया गया है एवं दायित्व कथन क्षेत्र में तीनों लेखकों का नाम आख्या पृष्ठ के क्रमानुसार अंकित किया गया है। शीर्षक अनुच्छेद में प्रयुक्त लेखक के नाम के अतिरिक्त शेष दोनों लेखकों के नाम से इतर संलेख-सहलेखक का निर्माण किया गया है।

(2) टिप्पणी अनुच्छेद में नियम संख्या 1.7A3 के अनुसार पुस्तक में प्रकाशन का इतिहास का उल्लेख किया गया है।

3.3.3 तीन से अधिक व्यक्तिगत लेखक

एंग्लो अमेरिकन कैटलागिंग रूल्स-2 संशोधित के नियम संख्या 21.6C2 में तीन से अधिक लेखकों के द्वारा रचित पुस्तकों के सूचीकरण में सम्बन्ध में निम्नलिखित नियमों का उल्लेख किया गया है।

क. प्रमुख लेखक का बोध नहीं

(अ) यदि तीन से अधिक लेखकों के बीच में मुद्रण शैली की दृष्टि से किसी प्रमुख लेखक का बोध नहीं होता तो ऐसी स्थिति में शीर्षक अनुच्छेद का निर्माण आख्या के अन्तर्गत किया जायेगा।

(ब) शीर्षक का निर्माण जब आख्या के अन्तर्गत होता है तो प्रकाशन वितरण अनुच्छेद तक निलम्बी शीर्षक (hanging indention) का प्रयोग किया जाता है तात्पर्य शीर्षक अनुच्छेद की अनुवर्ती पंक्तियाँ द्वितीय उध्वरिखा से वापस की जाती है।

(स) दायित्व कथन क्षेत्र में शीर्षक विवरण के पश्चात / लगाकर पहले लेखक के नाम का उल्लेख कर ... (three dots) और [et. al.] का प्रयोग करते हैं।

(द) संकेत अनुच्छेद में पहले लेखक के नाम से इतर संलेख लेखक का निर्माण करते हैं एवं चूंकि आख्या से शीर्षक का निर्माण हुआ रहता है, इसलिए संकेत अनुच्छेद में इतर संलेख आख्या का निर्माण नहीं किया जाता और न ही इतर संलेख को बनाया जाता है।

उदाहरण-5

(तीन से अधिक व्यक्तिगत लेखक, प्रमुख दायित्व के संकेत का अभाव)

The Intelligence Edge : How to Profit in the Information Age

By

Estell Lentin
Karen Mcmahon
Robert - Henary
Meredith Friedman

Victoria B.C. Crown Publication Canada, 1997.

OTHER INFORMATION

CALL.NO.	658.47 INT
ACC. NO.	34669
PAGES	xi, 276
SIZE	22 cm
ISBN	06-09600 - 753

मुख्य संलेख (Main Entry)

658.47 INT	The	intelligence edge : how to profit in the informa-
		tion age / by Estell Lentin... [et.al.] .-Victoria, B.C., Canada: Crown Publication, 1997.
34669		xi, 276p.; 22 cm
		ISBN 06-09600-753
		1. Profit - Management I. Lentin, Estell
		○

विषय इतर संलेख (Subject Added Entry)

		PROFIT-MANAGEMENT
658.47 INT	The	intelligence edge
		Rest as in the main entry.
		○

सहलेखक इतर संलेख (Joint Author Added Entry)

		Lentin, Estel
658.47 INT	The	intelligence edge
		Rest as in the main entry.
		○

महत्वपूर्ण बातें -

(1) नियम संख्या 1.4C3 के नियमानुसार यदि आख्या पृष्ठ पर प्रकाशन वितरण स्थान पर शहर के साथ देश के नाम का भी उल्लेख तो शहर, (कामा) देश दोनों का उल्लेख प्रकाशन वितरण अनुच्छेद में किया जाता है।

2) नियमानुसार ISBN अनुच्छेद में ISBN का उल्लेख किया गया है।

3) अन्य इतर संलेख पूर्व वर्णित नियमानुसार निर्मित किये गये हैं।

ख) प्रमुख लेखक का बोध

यदि किसी पुस्तक में तीन से अधिक सह लेखक हैं एवं उनमें से किसी एक ोखक का नाम मुद्रण शैली के आधार पर विशिष्ट प्रतीत होता हो तो उसे प्रमुख लेखक ी कृति माना जाता है। ऐसी स्थिति में नियम संख्या 21.6B1 के अनुसार मुख्य संलेख ा निर्माण प्रमुख लेखक के अन्तर्गत किया जाता है साथ ही नियम संख्या 1.1F5 के ानुसार दायित्व कथन अनुच्छेद में पहले सहलेखक के नाम के पश्चात ... (three ots) लगाकर वर्गाकार कोष्ठक में [et.al.] लिखा जाता है।

उदाहरण - 6

(तीन से अधिक व्यक्तिगत लेखक-प्रमुख दायित्व का संकेत)

Plant Resources for food

By

Robert Henary

Richard Alken

JUDITH MILNER

Jackies Batman

Edited by

Dana L. Stuchul

2nd Edition

London, Earthscan, 2009

THER INFORMATION

CALL NO.	580 MIL
ACC. NO.	5296
PAGES	xii, 180
SIZE	22 cm

Note : Contains illustration

मुख्य संलेख (Main Entry)

580 MIL	Milner, Judith.
5296	Plant resource for food / by Robert Henary ... [et. al.]; edited by Dana L. Stuchul .- 2nd ed.- London : Earthscan, 2009. xii, 180 p : ill; 22cm. 1. Plants I. Henary, Robert II Stuchul, Dana L. III. Title ○

विषय इतर संलेख (Subject Added Entry)

580 MIL	PLANTS Milner, Judith.
	Rest as in the main entry. ○

सहलेखक इतर संलेख (Joint Author Added Entry)

580 MIL	Henary, Robert Milner, Judith
	Rest as in the main entry. ○

सम्पादक इतर संलेख (Editor Added Entry)

580 MIL		Stuchul, Dana L. Milner, Judith.
		Rest as in the main entry. O

आख्या इतर संलेख (Title Added Entry)

580 MIL		Plant Resources for Food. Milner, Judith.
		Rest as in the main entry. O

3.4 अभ्यास हेतु मुख्य पृष्ठ

मुख पृष्ठ - 1
(दो संयुक्त व्यक्तिगत लेखक)

Getting Prices Right
The Debate Over the Consumer Price Index

DEAN BAKER

M. E. SHARPE

UNIVERSITY OF CHICAGO
CHICAGO
1998

OTHER INFORMATION

CALL NO.	338.528 BAK
ACC. NO.	34691
PAGES	190 p
SIZE	25 cm
ISBN	076-5602-223

मुख पृष्ठ -2

(दो संयुक्त व्यक्तिगत लेखक ग्रंथमाला सहित)

Customer Connections
New Strategies for Growth

ROBERT E. WAYLAND
PAUL M. COLE

HARVARD BUSINESS SCHOOL PRESS
BOSTON
1997

OTHER INFORMATION

CALL NO.	658.812 WAY
ACC. NO.	62431
PAGES	xii, 265 p
SIZE	24 cm
ISBN	08-75847-994

Note : New Paparback Book Series No. 12

मुख पृष्ठ -3

(दो संयुक्त व्यक्तिगत लेखक ग्रंथमाला सहित)

The Phenomenon of Man

PIERRE TEILHARD CHARDIN
JULIAN HUXLEY

TRANSLATION BY
BERNARD WALL

NEW YORK
HARPER
1965

OTHER INFORMATION

CALL NO.	113 TEI
ACC. NO.	43461.
PAGES	320 p
SIZE	21 cm
ISBN	43-1246-3217

मुख पृष्ठ -4

(दो संयुक्त व्यक्तिगत लेखक - प्रमुख दायित्व संकेत के साथ)

Applying Telecommunication and Technology from Global Business Perspective

Marc S. Boyee

OLIVE D. CHURCH

HAWORTH PRESS
BINGHAMTON, NY
1997

OTHER INFORMATION

CALL NO.	658.84 ZAJ
ACC. NO.	74126
PAGES	xi, 378 p
SIZE	26 cm
ISBN	07-89001-152

मुख पृष्ठ -5

(तीन संयुक्त व्यक्तिगत लेखक)

Standards for Our Schools

How to set them, Measure them and Reach them

MARC S. TUCKER
JUDY B. CODDING
JOHN. HARTE

JOSSEY - BASS PUBLICATION
COLUMBIA, SOUTH CAROLINA
1998

OTHER INFORMATION

CALL NO.	379.158 TUC
ACC. NO.	46123
PAGES	xi, 349 p
SIZE	24 cm
ISBN	07-87938-947

मुख पृष्ठ -6

(तीन संयुक्त व्यक्तिगत लेखक - प्रमुख लेखक संकेत के साथ)

Multiculturalism and American Democracy

ARTHUR M. MELZER

JERRY WEINBERGER

AND

M. RICHARD ZINMAN

UNIVERSITY PRESS KANSAS
KANSAS
1998

OTHER INFORMATION

CALL NO.	305.8 MUL
ACC. NO.	36343
PAGES	viii, 237 p
SIZE	24 cm
ISBN	07-00608-826

मुख पृष्ठ -7

(तीन संयुक्त व्यक्तिगत लेखक - सहकारक के साथ)

What are they Teaching our Children?

MEL GABLER

NORMA GABLER

WITH

JAMES C. HEFLEY

Edited by

ALAN HANEY

VICTOR BOOKS
WHEATON, III
1985

OTHER INFORMATION

CALL NO.	379.156 GAB
ACC. NO.	474921
PAGES	192 p
SIZE	22 cm
ISBN	08-96933-628 (pbk)

मुख पृष्ठ - 8

(तीन से अधिक संयुक्त व्यक्तिगत लेखक)

Change at Work

By

PETR CAPPELLI
ROCER E. BUSTEIN
ROBERT K. COOPER
JOHN HATRE

OXFORD UNIVERSITY PRESS
NEW YORK
1997

OTHER INFORMATION

CALL NO.	658.406 CHA
ACC. NO.	73216
PAGES	xii, 270 p
SIZE	24 cm
ISBN	0-193-4-03276

मुख पृष्ठ - 9

(तीन से अधिक संयुक्त व्यक्तिगत लेखक - प्रमुख लेखक संकेत के साथ)

Apes, Language and the Human Mind

BY

Sue Savage-Rumbaugh
Stuart G. Shanker
Talbot J. Taylor
HENRY KISSINGS

NEW YORK
OXFORD UNIVERSITY PRESS
1998.

OTHER INFORMATION

CALL NO.	599.88 APE
ACC. NO.	56431
PAGES	244 p
SIZE	25 cm
ISBN	01-95109-864

मुख पृष्ठ - 10

(तीन से अधिक संयुक्त व्यक्तिगत लेखक सहकारक के साथ)

The Language of Learning

A Guide to Education Terms

MARC S. BOYCE
J. LYNN McBRIEN
RONALD S. BRANDT
ALLEN HANEY

WITH EDITORIAL CONSULTATION FROM ROBERT W. COLE

ASSOCIATION FOR SUPERVISION AND CURRICULUM DEVELOPMENT

ALEXANDRIA, VA
1997

OTHER INFORMATION

CALL NO.	370-3 MCB
ACC. NO.	63154
PAGES	xii, 115 p
SIZE	26 cm
ISBN	08-71202-743

3.5 विस्तृत अध्ययनार्थ ग्रन्थ सूची

1. IGNOU : A.A.C.R.-2 Rev.-Part 2 (BLIS Course Material).

2. Joint Steering Committee for Revision of A.A.C.R.-2nd rev.ed., 1998. Edited by ichael Gorman and Paul W. Winkler, Ottawa, Canadian Library Association, 1998.

3. गौतम, जे. एन, एवं निरन्जन सिंह : एडवान्स कैटलागिंग, आगरा, वाई.के. पब्लिशर्स, 1998

4. सूद, एस. पी. : क्रियात्मक सूचीकरण ए.ए.सी.आर.-2, जयपुर, राज पब्लिशिंग हाउस, 2002

5. वर्मा , ए. के. : प्रयोगात्मक ए.ए.सी.आर.-2, रामपुर, सेन्ट्रल बुक हाउस, 1998

इकाई -4 : सम्पादकीय निर्देशन में रचित पुस्तकों का सूचीकरण (Cataloguing of Books under Editorial Direction)

संरचना

4.0 उद्देश्य
4.1 सम्पादकीय निर्देशन से तात्पर्य
4.2 सम्पादकीय निर्देशन में शीर्षक का वरण एवं उपकल्पन के नियम
4.3 सूचीकृत उदाहरण
4.4 अभ्यास हेतु मुखपृष्ठ
4.5 विस्तृत अध्ययनार्थ ग्रंथ सूची

4.0 उद्देश्य

इस इकाई के निम्नलिखित उद्देश्य हैं :-

1- सम्पादकीय निर्देशन का अर्थ स्पष्ट करना।

2- सम्पादकीय निर्देशन में प्रकाशित पुस्तकों की सूचीकरण हेतु उनके शीर्षक के वरण एवं उपकल्पन के नियमों की विवेचना करना।

3- उदाहरण के माध्यम से शिक्षार्थियों को प्रायोगिक सूचीकरण हेतु और अधिक बोधगम्य बनाना

4.1 सम्पादकीय निर्देशन से तात्पर्य

पुस्तकालय के अन्तर्गत बहुत सी पुस्तकें ऐसी भी क्रय की जाती हैं जिनमें आख्या पृष्ठ पर लेखक के स्थान पर सम्पादक का उल्लेख होता है। बहुत से लेखकों के द्वारा छोटे-छोटे लेख लिखे जाते हैं और उन लेखों को एकत्रित करके पुस्तक के रूप में उसको एक आख्या (Title) प्रदान कर प्रकाशित किया जाता है और इन लेखों को एकत्रीकृत करके प्रकाशित कराने में उत्तरदायी व्यक्ति को सम्पादक की संज्ञा दी जाती है। ए.ए.सी.आर.-2 संशोधित के अन्तर्गत इस प्रकार के लघु लेख एकीकृत आख्या को सामूहिक आख्या (Collective title) के नाम से जाना जाता है।

4.2 सम्पादकीय निर्देशन में शीर्षक का वरण एवं उपकल्पन

नियम संख्या 21.7 के अन्तर्गत सम्पादकीय निर्देशन में प्रकाशित पुस्तकों के सूचीकरण का उल्लेख है। नियमानुसार सम्पादकीय निर्देशन में प्रकाशित पुस्तकों का शीर्षक (Heading) आख्या के अन्तर्गत उपकल्पित किया जाता है। आख्या के द्वारा शीर्षक अनुच्छेद का निर्माण किये जाने की स्थिति में अनुवर्ती पंक्तियाँ प्रकाशन वितरण अनुच्छेद तक द्वितीय उर्ध्वरेखा से वापस की जाती हैं। आख्या का प्रयोग करने के पश्चात् / (Slash) लगाते हुए दायित्व कथन क्षेत्र में यदि एक संपादक है तो edited by लगाते हुए संपादक का नाम, यदि दो सम्पादक हैं तो व्यक्तिगत लेखक की तरह ही दोनों सम्पादकों के नाम को and लगाकर तथा यदि तीन सम्पादक हैं तो पहला सम्पादक, (कामा) दूसरा सम्पादक and तीसरे संपादक के नाम का उल्लेख करते हैं। परन्तु यदि तीन से अधिक संपादक हैं तो दायित्व कथन क्षेत्र में प्रथम संपादक के नाम का उल्लेख कर ... [et. al.] का प्रयोग किया जाता है।

संकेतन क्षेत्र में सन्दर्भानुसार एक संपादक, दो संपादक, तीन संपादक की इतर संलेख निर्माण करने की सूचना दी जाती है तथा चूँकि आख्या से शीर्षक अनुच्छेद का निर्माण किया गया है अतः संकेतन अनुच्छेद में इतर संलेख हेतु आख्या का उल्लेख नहीं किया जाता है।

4.3 सूचीकृत उदाहरण (Catalogued Examples)

उदाहरण - 1

Promise of a new education culture

Edited By
Uhi Christopher

Edition -3
London, Johns Hopkins University Press, 2004

OTHER INFORMATION

CALL NO.	370 CHR
ACC. NO.	24193
PAGES	18 + 310
SIZE	24 cm
ISBN	978, 1421, 400 389

मुख्य संलेख (Main Entry)

370 CHR		Promise of a new education culture/edited by Uhi
		Christopher._3rd ed.-London : John Hopkins University Press, 2004. xviii, 310 p; 24 cm.
23193		1. Education I. Christopher, Uhi
		O

विषय इतर संलेख (Subject Added Entry)

370 CHR		EDUCATION Promise of a new education culture.
		Rest as in the main entry.
		O

संपादक इतर संलेख (Editor Added Entry)

370 CHR		Christopher, Uhi Promise of a new education culture.
		Rest as in the main entry.
		O

उदाहरण - 2

Plants and Society

Edited By
Marilyn K. Gowing
John D Kraft

Edition -6
London McGraw-Hill 1998

OTHER INFORMATION

CALL NO.	580 PLA
ACC. NO.	29123
PAGES	vi + 220
SIZE	22 cm

Note : Encludes bibliographical reference and index.

मुख्य संलेख (Main Entry)

580 PLA	Plants and society / edited by Marilyn K. Gowing	
		and John D. Kraft.-6th ed. - London : McGraw-Hill, 1998
29123		vi, 220 p; 22 cm.
		Includes bibliographical reference and index.
		1. Botany I. Gowing, Marilyn K. II. Kraft, John
	D.	
		O

विषय इतर संलेख (Subject Added Entry)

		BOTANY
580 PLA	Plants and society.	
		Rest as in the main entry.
		O

सम्पादक इतर संलेख (Editor Added Entry)

580 PLA		Gowing, Marilyn K. Plants and society.
		Rest as in the main entry.

संपादक इतर संलेख (Editor Added Entry)

580 PLA		Kraft, John D. Plants and society.
		Rest as in the main entry.

उदाहरण-3

Introduction to Human Anatomy

Edited By
M. J. De-Vries
N. Cross
D.P. Grant

4th Edition
Chicago, University of Chicago Press, 2007

OTHER INFORMATION

CALL NO.	611 INT
ACC. NO.	242939
PAGES	ix + 249
SIZE	24 cm

मुख्य संलेख (Main Entry)

611 INT	Introduction to human anatomy / edited by M.J.	
		De-Vries, N. Cross and D. P. Grant.- 4th ed.- Chicago : University of Chicago Press, 2007.
242939		ix, 249 p; 24 cm.
		1. Human Anatomy I. De-Vries, M.J. II. Cross,
	N. III. Grant, D.P.	

विषय इतर संलेख (Subject Added Entry)

		HUMAN ANATOMY
611 INT	Introduction to human anatomy.	
		Rest as in the main entry.

संपादक इतर संलेख (Editor Added Entry)

		De-Vries, M.J.
611 INT	Introduction to human anatomy.	
		Rest as in the main entry.

सम्पादक इतर संलेख (Editor Added Entry)

611 INT		Cross, N. Introduction to human anatomy.
		Rest as in the main entry. O

संपादक इतर संलेख (Editor Added Entry)

611 INT		Grant, D.P. Introduction to human anatomy.
		Rest as in the main entry. O

उदाहरण-4

Future of Interior Decoration

Edited By

George Grove
James R. Hulbert
P. J. Keating
Felix Raugel

3rd Edition
Network, Sunflower Publications, 2003

OTHER INFORMATION

CALL NO.	747 FUT
ACC. NO.	25431
PAGES	11 + 248
SIZE	24 cm

Note : New Art book Series No. 12

मुख्य संलेख (Main Entry)

747 FUT	Future of interior decoration / edited by George Grove... [et.al.]. - 3rd ed. - New York : Sun flower Publications, 2003, xi, 248p.; 24 cm.- (New art book series; no. 12)
25431	1. Interior decoration I. Grove, George II, series.

विषय इतर संलेख (Subject Added Entry)

747 FUT	INTERIOR DECORATION Future of interior decoration.
	Rest as in the main entry.

संपादक इतर संलेख (Editor Added Entry)

747 FUT	George, Grove. Future of interior decoration.
	Rest as in the main entry.

		New art book series; no. 12.
747 FUT	Future of interior decoration.	
		Rest as in the main entry.
		○

4.4 अभ्यास हेतु मुख पृष्ठ

मुख पृष्ठ - 1

(एक सम्पादक)

Designing Disney's Theme Parks :

The Architecture of Reassurance

Edited By
Karnal Ann Marling

Flammarion
Paris
1997

OTHER INFORMATION

CALL NO.	791.06 DES
ACC. NO.	246345
PAGES	xii, 223 p.
SIZE	26 cm
ISBN	2-08013-6399

मुख पृष्ठ -2
(दो सम्पादक)

Ecosystem Management : Applications for Sustainable Forest and Wildlife Resources

EDITED BY
MARK S. BOYCE
AND
ALAN HANEY

YALE UNIVERSITY PRESS
NEW HAVEN, CNNECTICUT
1997

OTHER INFORMATION

CALL NO.	333.95 ECO
ACC. NO.	76432
PAGES	vii, 361 p
SIZE	26 cm
ISBN	03-00069-022

मुख पृष्ठ -3
(तीन सम्पादक)

The Liberal Persuasion : Arthur Schlesinger, Jr. and the Challange of the American Past.

EDITED BY
JOHN PATRIC DIGGINS
SARAH A. BINDER
EZRA. F. VOGEL

PRINCETON UNIVERSITY PRESS
PRINCETON
1997

OTHER INFORMATION

CALL NO.	973.072 LIB
ACC. NO.	84312
PAGES	x, 324 p
SIZE	24 cm
ISBN	06-91048-290

मुख पृष्ठ -4
(तीन से अधिक सम्पादक)

The People vs. Big Tobacco : How the States Took on the Cigarette Gaints

CARRICK MOLLENKAMP
ADAM LEVY
JOSEPH MENN
JEFFERY ROTHFEDER

BLOOMBERG PRESS
WILLISTON, VT
1998

OTHER INFORMATION

CALL NO.	346.73 PEO
ACC. NO.	64312
PAGES	xi, 334 p
SIZE	26 cm
ISBN	15-76600-572

मुख पृष्ठ -5
(तीन सम्पादक अनुवादक एवं ग्रंथमाला सहित)

Irwin-Dorsey Series in Behavioural Sciences in Business - No. 74

ORGANIZATION, BEHAVIOUR AND ADMINISTRATION

By
PAUL R. LAWRENCE
ROBERT C. KATZ
JOHN A. SELLER

TRANSLATED BY
AMY WINSLOW
CARETON B. JOECKEL

HOMEWOOD
ILLINOIS
1961

OTHER INFORMATION

CALL NO.	X : 8 K1
ACC. NO.	8961
PAGES	X + 391
SIZE	21 cm

मुख पृष्ठ -6
(तीन सम्पादक - प्रमुख सम्पादक के संकेत सहित)

The United Nations and International Law

EDITED BY
CHRISTOPHER C. JOYNER
JOHN, MARC
and
THOMAS QUIRK

CAMBRIDGE UNIVERSITY PRESS
NEW YORK
1997

OTHER INFORMATION

CALL NO.	341.23 UNI
ACC. NO.	63249
PAGES	xvii, 474 p
SIZE	26 cm
ISBN	05-215865-93

4.5 विस्तृत अध्ययनार्थ ग्रन्थ सूची

1. IGNOU : A.A.C.R.-2 Rev.-Part 2 (BLIS Course Material).
2. Joint Steering Committee for Revision of A.A.C.R.-2nd rev.ed., 1998. Edited by ichael Gorman and Paul W. Winkler, Ottawa, Canadian Library Association, 1998.
3. गौतम, जे. एन, एवं निरन्जन सिंह : एडवान्स कैटलागिंग, आगरा, वाई.के. पब्लिशर्स, 1998
4. सूद, एस. पी. : क्रियात्मक सूचीकरण ए.ए.सी.आर.-2, जयपुर, राज पब्लिशिंग हाउस, 2002
5. वर्मा , ए. के. : प्रयोगात्मक ए.ए.सी.आर.-2, रामपुर, सेन्ट्रल बुक हाउस, 1998

इकाई - 5 : बहुखण्डीय ग्रन्थों का सूचीकरण (Cataloguing of Multivolumed Books)

संरचना

5.0 उद्देश्य

5.1 बहुखण्डीय ग्रन्थ से तात्पर्य

5.2 विवरणात्मक तत्त्व

  5.2.1 आख्या

  5.2.2 पृष्ठांकन

  5.2.3 प्रकाशन वर्ष

  5.2.4 आकार

5.3 बहुखण्डीय ग्रन्थों के प्रकार

  5.3.1 प्रकार - 1

  5.3.2 प्रकार - 2

5.4 सूचीकृत उदाहरण

5.5 अभ्यास हेतु मुख पृष्ठ

5.6 विस्तृत अध्ययनार्थ ग्रन्थ सूची

5.0 उद्देश्य

इस इकाई के निम्नलिखित उद्देश्य हैं :-

1- बहुखण्डीय ग्रन्थ से शिक्षार्थियों को परिचित कराना

2- बहुखण्डीय ग्रन्थों एवं उनके प्रकारों से शिक्षार्थियों को अवगत कराना

3- बहुखण्डीय ग्रन्थों का सूचीकरण करना सिखाना

5.1 बहुखण्डीय ग्रन्थ से तात्पर्य

सामान्यतया ग्रंथ एक ही खण्ड में प्रकाशित होते हैं। परन्तु कुछ ग्रंथ एक से अधिक खण्डों में प्रकाशित होते हैं। इसका प्रमुख कारण यह है कि यदि उनको एक ही खण्ड में प्रकाशित कर दिया जाये तो उनके विशाल आकार-प्रकार के कारण उनको उठाने-रखने में असुविधा होती है, तथा उन ग्रन्थों की जिल्द शीघ्र ही जीर्ण-शीर्ण हो

जाती हैं। इसके अतिरिक्त जब विचार-वस्तु एक खण्ड के उचित आकार में समायोजित नहीं हो सके तो इसे एक से अधिक खण्डों में प्रकाशित किया जाता है।

ए0ए0सी0आर0-2 आर में पृष्ठ संख्या 620 पर बहुखण्डों को बहुभाग (Multiparts) की संज्ञा देते हुए इसे "पृथक भागों की अनंत संख्या में सम्पूर्ण या पूर्ण होने वाला एक मोनोग्राफ " के रूप में परिभाषित किया गया है।

क्लासीफाइड कैटालाग कोड में बहुखण्डीय ग्रंथ को निम्नलिखित प्रकार से परिभाषित किया गया है।

"अविच्छिन्न अभिव्यक्तिकरण प्रदान करते हुये दो या दो से अधिक खण्डों (Volumes) का ग्रन्थ, और इस अथवा अन्य किसी कारणवश खण्डों में विचार-सामग्री का विभाजन, समस्त खण्डों का प्रतिपादन (treatment) एक अविभाज्य संघात (Set) के रूप में करने के लिए विवश करता है, अर्थात जैसे वे सब मिलकर एक खण्ड का निर्माण करते हैं" ।

5.2 विवरणात्मक तत्त्व

बहुखण्डीय पुस्तकों के सूचीकरण करते समय निम्नलिखित चार विवरणात्मक तत्वों में भिन्नतायें दृष्टिगोचर होती है। उनके लिए निम्नलिखित नियमों का प्राविधान है।

5.2.1 आख्या

बहुखण्डीय ग्रन्थों में सामान्यतया दो प्रकार की आख्याएं होती हैं -

(1) समस्त खण्डों के लिए एक समान आख्या। उदाहरण -

Mishra, Ramesh.

Expert System/by Ramesh Mishra. - New Delhi : Times Publishers, 1980.

3v.

O

तीन खण्डों के इस बहुखण्डीय प्रकाशन में तीनों खण्डों के आख्या पृष्ठ पर एक ही आख्या का उल्लेख है। अन्तर यह है कि प्रत्येक खण्ड में खण्ड की संख्या खण्ड 1, खण्ड 2 एवं खण्ड 3 के रूप में उल्लिखित हैं।

(2) समस्त खण्डों की एक समान आख्या के अतिरिक्त प्रत्येक खण्ड की अलग अलग विशिष्ट आख्या।

उदाहरण -

Brown, Morgan.
Polymer science / by Morgan Brown .- New York : John Wiley, 1994.
3v.
Contents : v.1 chemistry of Polymerisation -v.2 Kinetion of Polymerisation-v.3 Cristalinity in polymers.

5.2.2 पृष्ठांकन

नियम संख्या 2.5 B17-19 के अनुसार जब कोई मुद्रित मोनोग्राफ एक से अधिक खण्डों में होता है तो भौतिक विवरण क्षेत्र में खण्डों की संख्या को सम्मिलित रूप में अंकित किया जाता है।

3v.

4v. etc.

6 v. in 4

8 v. in 5

बहुखण्डीय ग्रन्थों के सेट के पृष्ठांकन में अनेक भिन्नतायें होती हैं।

नियम संख्या 2.4B20 के अनुसार यदि खण्डों का सेट अनवरत रूप से पृष्ठांकित है तो पृष्ठांकन को गोल कोष्ठक में खण्डों की संख्या के पश्चात दिया जाये। ऐसी स्थिति में प्रथम खण्ड के प्रारम्भिक पृष्ठ एवं अंतिम खण्ड के मुख्य पृष्ठ का उल्लेख किया जाता है। जैसे -

4v. (xii, 980p.)

6v. (ix, 810 p.)

नियम संख्या 2.5B21 के अनुसार यदि बहुखण्डीय ग्रन्थ के प्रत्येक खण्ड की अलग

अलग पृष्ठ संख्या हो तो इसे दो प्रकार से अंकित किया जा सकता है-

2v.

2v. (ix, 215; vi, 180 p.)

नियम संख्या 2.7 B10 के अनुसार ऐसे भौतिक विवरण जो पूर्व में भौतिक विवरण क्षेत्र में अंकित नहीं किये गये हों, उन्हें **टिप्पणी अनुच्छेद** (Note Section) में अंकित किया जाता है।

5.2.3 प्रकाशन वर्ष

नियम संख्या 1.4F8 के अनुसार प्रकाशन वर्ष का उल्लेख करने के सम्बन्ध में निम्नलिखित तीन स्थितियाँ होती हैं -

(अ) यदि बहुखण्डीय ग्रन्थ के सभी खण्डों का प्रकाशन वर्ष एक ही हो तो-
1960

(ब) यदि बहुखण्डीय ग्रन्थों के अलग अलग खण्डों पर भिन्न भिन्न प्रकाशन वर्ष अंकित हों तो प्रकाशन वितरण आदि क्षेत्र में प्रथम खण्ड का वर्ष - अंतिम खण्ड के वर्ष का उल्लेख करना चाहिए। उदाहरण स्वरूप : 1980-1985

(स) यदि बहुखण्डीय ग्रन्थ के कुछ खण्ड प्रकाशनाधीन हों तो पहले खण्ड के प्रकाशन वर्ष को अंकित कर छोटी आड़ी रेखा (Hyphen) लगा कर चार अक्षरों की जगह छोड़ी जाती है।

उदाहरणार्थ : 1980 -

खाली स्थान छोड़ने का औचित्य है कि जब सभी खण्ड प्रकाशित हो जाते हैं तो इस खाली स्थान को अंतिम खण्ड के प्रकाशन वर्ष का उल्लेख कर भर दिया जाता है।

5.2.4 आकार

नियम संख्या 2.5 D3 के अनुसार यदि बहुखण्डीय ग्रन्थ के विभिन्न खण्डों की ऊँचाई में अन्तर हो तथा यह अन्तर दो सेन्टीमीटर से कम हो तो पहले बड़ी ऊंचाई को अंकित किया जाता है। परन्तु यदि अन्तर दो सेन्टीमीटर से अधिक हो तो पहले छोटी साइज, छोटी आड़ी रेखा (Hyphen) से जोड़ते हुये बड़ी साइज दोनों को अंकित करते हैं।

उदाहरण 1-

खण्ड	साइज	कैटलॉग कार्ड पर अंकन
v.1 -	20 cm.	तीनों खण्डों की साइज में 2 सेमी. से कम

		का अन्तर है। अतः 2 सेमी से कम का
v.2 -	20.5 cm	अन्तर होने के कारण अधिकतम
v.3 -	21 cm.	आकार - 21 सेमी अंकित करते हैं।

उदाहरण 2 -

<u>खण्ड</u>	<u>साइज</u>	<u>कैटलाग कार्ड पर अंकन</u>
v.1 -	20 cm.	सेट के खण्डों के मध्य आकार में 2 सेमी
v.2 -	21 cm.	से अधिक का अंतर होने के कारण
v.3 -	23 cm.	न्यूनतम - अधिकतम ऊँचाई
		दोनों का उल्लेख करते हैं।
		यथा 20 - 23 cm.

5.3 बहुखण्डीय ग्रन्थों के प्रकार

बहुखण्डीय ग्रन्थों को सूचीकरण की दृष्टि से दो प्रकारों में विभक्त किया गया हैः-

1. बहुखण्डीय ग्रन्थ प्रकार - 1
2. बहुखण्डीय ग्रन्थ प्रकार - 2

5.3.1 बहुखण्डीय ग्रन्थ प्रकार - 1

सूचीकरण की दृष्टि से अत्यंत सरल ग्रन्थ होते हैं। इनमें समस्त खण्डों की एक सामान्य आख्या (Common titles) होती है तथा अलग अलग खण्डों की विशिष्ट आख्यायें (Specific title) नहीं होती ।

व्यावहारिक सूचीकरण की दृष्टि से इन्हें पुनः निम्नलिखित तीन भागों में विभक्त किया गया है -

1. पूर्ण संघात (Complete set)
2. अपूर्ण उपलब्ध संघात (Incomplete available set)
3. अपूर्ण संघात (incomplete set)

1. पूर्ण संघात (Complete set)

जब किसी बहुखण्डीय ग्रन्थ के सभी खण्ड प्रकाशित हो गये हों तथा पुस्तकालय में उपलब्ध हो तो उसे पूर्ण संघात की संज्ञा देते हैं।

नियम संख्या 2.5 B17 के अनुसार पूर्ण संघात को सूचीकृत करने के लिए मुख्य प्रविष्टि के भौतिक विवरण क्षेत्र में खण्डों की संख्या निम्नवत अंकित की जाती है।

4 v.

6 v.

2. अपूर्ण उपलब्ध संघात (Incomplete available set)

जब किसी बहुखण्डीय ग्रन्थ के सभी खण्ड प्रकाशित हो गये हों परन्तु उनमें से कुछ खण्ड पुस्तकालय में उपलब्ध हों तथा कुछ खण्ड पुस्तकालय में अनुपलब्ध हों तो ऐसे संघात (set) को 'अपूर्ण उपलब्ध संघात' कहते हैं।

नियम संख्या 1.7 B20 एवं 2.7 B20 के अनुसार जब पुस्तकालय में बहुखण्डीय संघात के सभी खण्ड उपलब्ध न हो तो इसकी सूचना टिप्पणी अनुच्छेद में अंकित की जायेगी। टिप्पणी अनुच्छेद में यह सूचना दो प्रकार से अंकित की जा सकती है।

(अ) सकारात्मक टिप्पणी -

Library has v. 1-5, 7 and 9 only.

(ब) नकारात्मक टिप्पणी -

Library set lacks v. 5-8, 12, 14-16.

यदि इस बात की संभावना हो कि ग्रन्थालय में अनुपलब्ध खण्ड पुस्तकालय द्वारा भविष्य में उपलब्ध करा लिये जायेंगे तो अस्थाई टिप्पणी (पेंसिल द्वारा) अंकित किया जाना चाहिए।

3. अपूर्ण संघात (Incomplete set)

जब बहुखण्डीय ग्रन्थ के कुछ खण्ड तो प्रकाशित हों चुके हों एवं कुछ खण्ड प्रकाशनाधीन हों तो उसे अपूर्ण संघात (Incomplete set) कहते हैं।

नियम संख्या 1.5 B5 के अनुसार यदि बहुखण्डीय ग्रन्थ के सभी खण्ड प्रकाशित न हुये हों तो भौतिक विवरण क्षेत्र में तीन अक्षर की जगह छोड़ कर (small) v. अंकित किया जाता है। ग्रन्थ के सभी खण्ड प्रकाशित हो जाने पर इस खाली स्थान पर खण्डों की संख्या लिख दी जाती है।

उदाहरणार्थ - ...v.

5.3.2 बहुखण्डीय ग्रन्थ प्रकार - 2

बहुखण्डीय ग्रन्थ के दूसरे प्रकार के अन्तर्गत ऐसे ग्रन्थ आते हैं जिनके समस्त खण्डों की एक सामान्य आख्या (Common title) के अतिरिक्त प्रत्येक खण्ड की अपनी विशिष्ट आख्या (Specific title) भी होती है।

नियम संख्या 1.7B 18 एवं 2.7 B 18 के अनुसार ऐसे बहुखण्डीय ग्रन्थ जिसमें पूर्ण संघात आख्या के अतिरिक्त प्रत्येक खण्ड की स्वयं की भी विशिष्ट आख्या (Specific title) दी गई हो, को टिप्पणी क्षेत्र में contents: लिख कर निम्नवत अंकित करते हैं। उदाहरणार्थ -

Contents : Vol.1, Data collection - v.2. Data analysis.

5.4 सूचीकृत उदाहरण Catalogued Examples

उदाहरण - 1 [बहुखण्डीय ग्रन्थ प्रकार-1 (पूर्ण संघात)]

Agricultural Prices in India

(in two volumes)
Prof. Raj Singh Negi

New Book Publishers, Indore, 1978.

OTHER INFORMATION

CALL NO.	338.13 NEG.
ACC. NO.	18512-19513
PAGES	Vol.1- vi, 150
	Vol.2.- xi, 151-310
SIZE	Vol.1.- 18 cm
	Vol. 2.- 21 cm.

Note: Index in 2nd volume from page no. 308 - 310.

मुख्य संलेख (Main Entry)

338.13 NEG	Negi, Raj Singh
18512- 18513	Agricultural prices in India/by Raj Singh Negi.- Indore : New Book Publishers, 1978. 2v.(vi, 310 p.); 18-21 cm. Index in 2nd volume from page no. 308-310. 1. Agriculture-Economic aspect I. Title. O

विषय इतर संलेख (Subject Added Entry)

338.13 NEG		AGRICULTURE-ECONOMIC ASPECT Negi, Raj Singh.
		Rest as in the main entry. O

आख्या इतर संलेख (Title Added Entry)

338.13 NEG		Agricultural prices in India. Negi, Raj Singh.
		Rest as in the main entry. O

महत्वपूर्ण बातें -

1. नियम संख्या 2.5B17-19 के अनुसार भौतिक विवरण क्षेत्र में कुल खण्डों की संख्या 2v का उल्लेख किया गया है।

2. नियम संख्या 2.5B20 के अनुसार चूँकि दोनों खण्डों के मुख्य पृष्ठों का अंकन निरन्तरता में है अतः गोल कोष्टक के अन्दर प्रथम खण्ड का प्रारम्भिक पृष्ट, (कामा) अन्तिम खण्ड का मुख्य पृष्ट दोनों का उल्लेख किया गया है।

3. नियम संख्या 2.5D3 के अनुसार विभिन्न खण्डों की ऊँचाई के मध्य यदि 2 सेमी से अधिक का अन्तर है तो न्यूनतम - अधिकतम ऊँचाई दोनों का उल्लेख किया जाता है।

उदाहरण - 2

[बहुखण्डीय ग्रन्थ- प्रकार-1 (अपूर्णसंघात तथा ग्रन्थमाला)]

New Book of Popular Science

(In 6 volumes)

THERESSA J. FLYNN

DAVID K. CURRAN

W.E. SARIS

Edited by

I.N.GALL HOFFER

(Third revised edition)

LONGMAN, NEW YORK

OTHER INFORMATION

CALL NO.	500 FLY .
ACC. NO.	18004 - 18006
SIZE	24 cm.
H.T.P.	Longman New Book Series; No. 18.

Note: 1. Library has volume1, 3, and 6

2. Vol. I was published 1965

Vol. II - IV were published in 1975

Vol. V and VI were published in 1978.

मुख्य संलेख (Main Entry)

500 FLY	Flynn, Theressa J.
18004- 18006	New book of popular science/Theressa J. Flynn, David K. Curran and W.E. Saris; edited by I.N. Gallhopper. - 3rd rev. ed.- New York: Longman, 1965-1978. 6v; 24 cm.- (Longman New Book Series; no.18) Library has v.1, 3 and 6 1. Science I.Curran, David K. II. Saris, W.E. III. Gallhopper, I.N. IV Title. V series. O

विषय इतर संलेख (Subject Added Entry)

500 FLY	SCIENCE. Flynn, Theressa J.
	Rest as in the main entry. O

सहलेखक इतर संलेख (Joint Author Added Entry)

500 FLY	Curran, David K. Flynn, Theressa J.
	Rest as in the main entry. O

सहलेखक इतर संलेख (Joint Author Added Entry)

		Saris, W.E.
500 FLY	Flynn, Theressa J.	
		Rest as in the main entry.
		○

सम्पादक इतर संलेख (Editor Added Entry)

500		Gallhopper, I.N.
FLY	Flynn, Theressa J.	
		Rest as in the main entry.
		○

आख्या इतर संलेख (Title Added Entry)

		New Book of Popular Science .
500 FLY	Flynn, Theressa J.	
		Rest as in the main entry.
		○

ग्रन्थमाला इतर संलेख (Series Added Entry)

500		Longman New Book Series; no.18
FLY	Flynn,Theressa J.	
		Rest as in the Main Entry.
		○

महत्वपूर्ण बातें

1. नियम संख्या 1.7B20 एवं 2.7B20 के अनुसार बहुखण्डीय ग्रन्थ के जो खण्ड पुस्तकालय में उपलब्ध नहीं है उसकी सूचना सकारात्मक रूप में टिप्पणी अनुच्छेद में दी गयी है।

उदाहरण - 3

(बहुखण्डीय ग्रन्थ प्रकार - 2)

Principles of Psychology
(In three volumes)
by
Prof. Stewart Brown
Dr. Julie Andrew
(Third revised edition)
Edited by
Mirand A. Schreurs
HOLT RINEHART AND WINSTON
NEW YORK

OTHER INFORMATION

CALL NO. 150 BRO .

ACC. NO. 28301 - 3

Titles of volumes are:

Vol. 1 Perception and consciousness.

Vol. 2 Growth, learning and language.

Vol. 3 Motives and emotions

Vol. No.	Size	Year of Pub.	Pages
Vol. 1	22 cm	1969	ix, 1-210
Vol. 2	23 cm	1971	211-415
Vol. 3	25 cm	1972	416-810

H.T.P. Foundations of Psychology series; no. 14. Edited by James P. Warey.

मुख्य संलेख (Main Entry)

150 BRO	Brown, Stewart.
28301-3	Principles of psychology / by Stewart Brown and Julie Andrew; edited by Mirand A Schreurs.-3rd rev. ed.- New York : Holt Rinehart and Wiston, 1969-1972. 3v.(ix,810p.);22-25cm.- (Foundation of psychology series; no,14) Contents: v.1. Perception and consciousness-v.2. Growth,learning and language-v.3.Motives and emotions. 1. Psychology I.Andrew, Julie II. Schreurs, Mirand A. III. Title IV. Series.

विषय इतर संलेख (Subject Added Entry)

		PSYCHOLOGY
150 BRO	Brown, Stewart.	
		Rest as in the main entry.
		○

सहलेखक इतर संलेख (Joint Author Added Entry)

		Andrew. Julie,
150 BRO	Brown, Stewart.	
		Rest as in the main entry.
		○

सम्पादक इतर संलेख (Editor Added Entry)

		Schreurs, Mirand A.
150 BRO	Brown, Stewart.	
		Rest as in the main entry.
		○

आख्या इतर संलेख (Title Added Entry)

		Principles of psychology.
150 BRO	Brown, Stewart.	
		Rest as in the main entry.
		O

ग्रन्थमाला इतर संलेख

		Foundation of Psychology series; no.14
150 BRO	Brown, Stewart.	
		Rest as in the main entry.
		O

महत्वपूर्ण बातें -

1. नियम संख्या 1.7B8 एवं 2.7B18 के अनुसार बहुखण्डीय ग्रन्थ जिसमें सामान्य आख्या के अतिरिक्त प्रत्येक खण्ड की अलग-अलग विशिष्ट आख्या दी हो तो उसे टिप्पणी क्षेत्र में Contents के रूप में उल्लिखित किया जाता है।

उदाहरण - 4

(बहुखण्डीय ग्रन्थ)

EXPERT SYSTEM

(In two volumes)

Edited by

John Fraser

Vol. 1 : Artificial Intelligence By Beverly Haviland

Vol. 2 : Knowledge Representation by Richard K. Lester.

ADDISON WESLEY

NEW YORK

1994

OTHER INFORMATION

CALL NO.	001.535 EXP
ACC. NO.	17177 - 78
SIZE	22 cm.

मुख्य संलेख

001.535 EXP	Expert System/edited by John Fraser.-New York :
17177-78	Addison Wesley, 1994 2v.; 22cm. Contents: v.1. Artificial intelligence/by Beverly Haviland - v.2. Knowledge representation /by Richard K. Lestar. 1. Artificial intelligence I. Fraser, John II. Haviland, Beverly. Artificial III. Lester, Richard K. knowledge IV. Title V. Title : Artificial intelligence.v.1. VI. Title: Knowledge representation. v.2. O

विषय इतर संलेख (Subject Added Entry)

001.535 EXP		ARTIFICIAL INTELLEGENCE. Expert System.
		Rest as in the main entry. O

सम्पादक इतर संलेख (Editor Added Entry)

001.535 EXP		Fraser, John. Expert System.
		Rest as in the main entry. O

लेखक इतर संलेख - खण्ड 1 (Author Added Entry Vol.-1)

001.535 EXP		Haviland, Beverly. Artifiical intelligence.v.1,: Expert System
		Rest as in the main entry. O

लेखक इतर संलेख - खण्ड 2 (Author Added Entry. V.2)

001.535 EXP	Expert System	Lester,Richard K. Knowledge representation.v.2.
		Rest as in the main entry. ○

आख्या इतर संलेख (Title Added Entry)

001.535 EXP	Expert System	Expert System.
		Rest as in the main entry. ○

आख्या इतर संलेख - खण्ड 1 (Title Added Entry-v.1)

001.535 EXP	Expert System	Artificial intelligence.v.1,: Haviland, Beverly
		Rest as in the main entry. ○

आख्या इतर संलेख - खण्ड 2 (Title Added Entry-v.2)

001.535 EXP	Expert System	Knowledge representation.v.2. Lester, Richard K.
		Rest as in the main entry. ○

महत्वपूर्ण बातें -

1. नियमानुसार अलग-अलग खण्डों के लिए आख्या एवं लेखक संलेखों का निर्माण किया गया है।

उदाहरण - 5

(बहुखण्डीय ग्रन्थ प्रकार - 2 : कुछ खण्ड प्रकाशित होना शेष)

Psychology in India

The State of the Art

(In 3 volumes)

Vol. 1 : Personality and Mental Processes

Vol. 2 : Basic and Applied Social Psychology

Vol. 3 : Organizational Behaviour and Mental Health

4th edition

By

Prof. Aniruddh Pandey

Rupa & Co.

Bombay

2009

OTHER INFORMATION

CALL NO.	150.954 PAN
ACC. NO.	19222-3
PAGES	V1 : 245p. V2 : 236p;
SIZE	24 cm.

Note: v.3 is yet to be published.

मुख्य संलेख (Main Entry)

150.954 PAN	Pandey, Aniruddha.
19222-3	Psychology in India: the state of the art/ by Aniruddha Pandey. - 4th ed. .-Bombay : Rupa and Co. 2009 — ... v. (245; 236 p.); 24 cm. Contents : v. 1. Personality and mental processes - v.2. Basic and applied social psychology. 1. Psychology - India I. Title. O

विषय इतर संलेख (Subject Added Entry)

150.954 PAN	PSYCHOLOGY - INDIA Pandey, Aniruddha
	Rest as in the main entry. O

आख्या इतर संलेख (Title Added Entry)

150.954 PAN	Psychology in India. Pandey, Aniruddha.
	Rest as in the main entry. O

महत्वपूर्ण बातें -

1. नियम संख्या 1.5B5 के अनुसार यदि कुछ खण्ड प्रकाशित होना शेष हो तो भौतिक विवरण क्षेत्र में तीन अक्षर की जगह छोड़कर Small v. अंकित किया

जाता है। जिससे कि शेष खण्ड प्रकाशित होने पर उस खाली स्थान पर उन खण्डों की संख्या लिख दी जाती है।

2. नियम संख्या 1.4F8 के अनुसार यदि कुछ खण्ड प्रकाशित होने के लिए शेष हों तो प्रकाशन वितरण अनुच्छेद में पहले खण्ड के प्रकाशन वर्ष का उल्लेख कर छोटी आड़ी रेखा (Hyphen) लगाकर चार अक्षरों की जगह छोड़ दी जाती है। इसका औचित्य है कि जब सभी खण्ड प्रकाशित हो जाते हैं तो इस खाली स्थान को अन्तिम खण्ड के प्रकाशन वर्ष का उल्लेख कर भर दिया जाता है।

5.5 अभ्यास हेतु मुख पृष्ठ (Title Page for Practice)

मुख पृष्ठ 1

(बहुखण्डीय ग्रन्थ प्रकार - 1, पूर्ण संघात)

Geometry of Surfaces

(In four volumes)

by

John Sprite

Edited by

Paul A. Herbig

Springer

New York

1979

OTHER INFORMATION

CALL NO. 516.362 GEO

Vol.	Pages	Size	Acc. No.
I	iv, 208	20 cm.	5001
II	209-510	21 cm.	5002
III	511-710	23 cm.	5003
IV	711-910	23.6 cm	5004

ISBN - 0 - 431 - 40596-2

मुख पृष्ठ - 2

(बहुखण्डीय ग्रन्थ प्रकार - 1, अपूर्ण संघात)

The Effect of Independence on Treaties

A Handbook

(In three volume)

By

Dr. R. R. Rawat

Dr. P. N. Mehrotra

New York

Oxford University Press

1976

OTHER INFORMATION

CALL NO.	341.026 L6.1 - L6.2	
Acc No.	18432 - 33	
Page	Vol. 1 - ix, 216; Vol. 2 xii, 217-480	
Size	Vol. I :	22 cm.
	Vol. 2 :	25 cm.

Note: Vol. 3 not acquired by library as yet.

मुख पृष्ठ 3

(बहुखण्डीय ग्रन्थ प्रकार - 2, पूर्ण संघात)

Sociometric Research

By

W.E. Saris

I. W. Gallhoffer

Volume 1 : Data Collection and Scaling by

John Denver

Volume 2 : Data Analysis by Ann Arbor

New York

St. Martin's Press

1974

OTHER INFORMATION

CALL NO.	302 SOC
Acc No.	26506 - 7
Page	V. 1 - VII, 264
	V. 2 - IX, 310
Size	14 x 18 cm.
H.T.P.	International Series in Sociometric Research XII.

मुख पृष्ठ 4

(बहुखण्डीय ग्रन्थ प्रकार - 2 , अपूर्ण संघात)

Brown Publications in Biological Sciences no. 13.

Edited by Jeffrey R. Gates

HUMAN PHYSIOLOGY

(In three volumes)

Edited by

John Riggs

1989

W.C. BROWN PUBLISHERS

New York

OTHER INFORMATION

CALL NO.	612 HUM
Acc No.	3261 - 3
Size	24 cm.
Page	V1 - IX, 239 p.; V.2 - XII, 240 -412

Note: The work is completed in three volumes. The Library possesses only first two volumes and third volume is not available in Library. The title of first two volumes are :

Vol. 1 - Human Evolution. By Ronald S. Brandt.

Vol. 2 - Human Respiration. By Mark S. Boyce.

The Book is fully illustrated.

मुख पृष्ठ 5

(बहुखण्डीय ग्रन्थ प्रकार - 2, अपूर्ण संघात)

Recapturing Marxism

An Appraisal of Recent Trends in Sociological Theory

By

RHONDEN F. LEVINE

JERRY LEMBECK

(4 Volumes)

V. 1 : Marxism and Neo-Marxism

V. 2 : New Classes and old theories

V. 3 : Class and class capacities

Edited by P.G.M. Dickson

V. 4 : Race, Ethnicity and Class.

New York

Praeger

OTHER INFORMATION

CALL NO.	335.4 LEV
Acc. No.	56412 - 13
Size	25 cm.
Year of Publication :	V. 1 - 1983
	V. 2 - 1984
	V. 3 - 1985

Note: 1. Volume 2 is not in the library.

2. Volume 4 is yet to be published.

मुख पृष्ठ 6

(बहुखण्डीय ग्रन्थ प्रकार - 2, सभी खण्ड प्रकाशित व ग्रन्थालय में उपलब्ध)

Human Resource Development in Banks

Editor

Anil K. Khandelwal

Vol. 1 - Concept / R.K. Gupta
Vol. 2 - Roles in HRD / Udai Pareek
Vol. 3 - HRD Case Studies / T.P. Raman
Vol. 4 - Future of HRD / S.S. Kulkarni

New Delhi
Oxford Publishing

OTHER INFORMATION

CALL NO. 332.106 83 HUM

Acc No. 42161 - 4

Vol. No.	Pages	Size	Year of Publication
I	IV, 140	23.2 cm.	1986
II	141-350	23.6 cm.	1987
III	351-480	25.2 cm.	1989
IV	481-610	27 cm.	1990

मुख पृष्ठ 7

(बहुखण्डीय ग्रन्थ प्रकार - 2 , पूर्ण संघात)

Comparing New Democracies

Edited by
Enrique A. Balyora

Vol. 1 : Democratic Transition in comparative perspective / Andrea Hinding.
Vol. 2 : Democratic Establishments / Barbara C. Gelpi
Vol. 3 : From Diarchy to Polyarchy / Merilyn J Bell.

BOLDER
WEST VIEW PRESS
1987

OTHER INFORMATION

CALL NO.	321. 8 COM
Acc. No.	1011 - 1013
Pages	V.1 : xi, 266 p.; V2: vii, 299 p.; V.3 : vii, 276 p.
Size	24 cm.

मुख पृष्ठ 8

(बहुखण्डीय ग्रन्थ प्रकार - 2, पूर्ण संघात)

POST IMPERIALISM

International Capitalism and Development in

the late twentieth century

(In four volumes)

By

David G. Becker

Volume 1 : Post imperialism / by James J. Fishman.

Volume 2 : Third world indebted industrialization
by Anthony S. Kangman.

Volume 3 : International Capital / By Susan Pilgrim.
Ed. by Doris Grumbach.

Volume 4 : National Development in the late twentieth
century / by D. S. Ross.

Boulder

L. Rienner Publishers.

OTHER INFORMATION

CALL NO. 338.888 BEC

Acc. No. 39612 - 4

Vol. No.	Size	Year of Pub.	Pages
I	20 cm.	1987	IV, 1-315
II	20 cm.	1988	316 - 510
III	21 cm.	1989	511 - 710
IV	Yet to be published.		

मुख पृष्ठ 9

(बहुखण्डीय ग्रन्थ प्रकार - 2, कुछ खण्ड प्रकाशित होना शेष)

HANDBOOK OF BUSINESS MANAGEMENT

By

Alexander Hamilton

Vol. 1 : Personnel Management
Vol. 2 : Financial Management Handbook
Vol. 3 : Marketing Management Handbook

New York
Global Books and Subscription Services
2002

OTHER INFORMATION

CALL NO.	658
Acc No.	546734
Size	27 cm.
ISBN	81-86830-54-5

Note: Volume 3 is yet to be publish.

मुख पृष्ठ 10

(बहुखण्डीय ग्रन्थ प्रकार - 2, सहकारक सहित)

Course of Analytical Chemistry

A. P. KRESHKOV

AND

A. A. YAROSLAVTSEV

TRANSLATED FROM THE RUSSIAN BY
NICHOLAS BOBROV

VOLUME 1 : QUALITATIVE ANALYSIS
VOLUME 2 : QUANTITATIVE ANALYSIS

MOSCOW
MIR PUBLISHERS
1977

OTHER INFORMATION

CALL NO.	543 KRE
Acc No.	18388 - 9
Size	25 cm.

5.6 विस्तृत अध्ययनार्थ ग्रन्थ सूची

1. IGNOU : A.A.C.R.-2 Rev.- Part 2 (BLIS Course Material).
2. Joint Steering Committee for Revision of A.A.C.R.-2nd rev. ed., 1998. Edited by Michael Gorman and Paul W. Winkler, Ottawa, Canadian Library Association, 1998.
3. गौतम, जे.एन. एवं निरन्जन सिंह : एडवान्स कैटलागिंग, आगरा, वाई.के. पब्लिशर्स, 1998
4. सूद, एस.पी. : क्रियात्मक सूचीकरण ए.ए.सी.आर. -2, जयपुर, राज पब्लिशिग हाउस, 2002
5. वर्मा, ए.के. : प्रयोगात्मक ए.ए.सी. आर.-2, रामपुर, सेन्ट्रल बुक हाउस, 1998.

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त
विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

BLIS-05

पुस्तकालय सूचीकरण प्रायोगिक

खण्ड- 2

ए0 ए0 सी0आर0-2R द्वारा सूचीकरण : भाग -दो

इकाई - 6 5

शासन तथा उसके अंगों द्वारा रचित पुस्तकों का सूचीकरण

(Cataloguing of books by government and its Organs)

इकाई - 7 28

संस्था तथा उसके अंगों द्वारा रचित पुस्तकों का सूचीकरण

(Cataloguing of books by institution and its Organs)

इकाई - 8 39

सम्मेलन तथा उसके अंगों द्वारा रचित पुस्तकों का सूचीकरण

(Cataloguing of books by Conference and its Organs)

इकाई - 9 53

सामान्य सावधिक प्रकाशनों का सूचीकरण

(Cataloguing of Simple Periodical Publications)

खण्ड-2- :ए0 ए0 सी0आर0-2R द्वारा सूचीकरण : भाग -दो

प्रस्तावना -

अनुसंधान एवं विकास के युग में ग्रन्थालयों में व्यक्तिगत लेखकों की रचनाओं के अतिरिक्त समष्टि लेखकों की रचनायें भी बहुतायत से प्रकाशित हो रही हैं।इनमें शासन, संस्था एवं सम्मेलन का नाम लेखक के रूप में होता है। ए.ए.सी.आर.-2 संशोधित में समष्टि लेखकों से सम्बन्धित रचनाओं के सूचीकरण हेतु विस्तृत रूप में नियमों का उल्लेख है।

प्रस्तुत खण्ड निम्नलिखित इकाइयों में विभक्त है :-

इकाई-6 शासन तथा उसके अंगों द्वारा रचित पुस्तकों का सूचीकरण - इस इकाई के अन्तर्गत समष्टि निकाय से तात्पर्य, उसके प्रकार, शासन से तात्पर्य, शासन के अंग एवं शासन द्वारा रचित पुस्तकों के प्रायोगिक सूचीकरण से अवगत कराया गया है।

इकाई-7 संस्था तथा उसके अंगों द्वारा रचित पुस्तकों का सूचीकरण- इस इकाई के अन्तर्गत संस्था से तात्पर्य, संस्था के प्रकार संस्था की रचनाओं के सूचीकरण हेतु नियमों के साथ सोदाहरण सूचीकरण से अवगत कराया गया है।

इकाई-8 सम्मेलन तथा उसके अंगों द्वारा रचित पुस्तकों का सूचीकरणः- इस इकाई के अन्तर्गत सम्मेलन का अर्थ एवं परिभाषा, सम्मेलन के प्रकार, सम्मेलन के अधीनस्थ अंग, शीर्षक के चयन एवं उपकल्पन हेतु नियम के साथ ही सोदाहरण प्रायोगिक सूचीकरण से शिक्षार्थियों को अवगत कराया गया है।

इकाई-9 सामान्य सावधिक प्रकाशनों का सूचीकरण :- इस इकाई के अन्तर्गत सावधिक प्रकाशन क्या होते हैं, उनके संलेखों की संरचना सम्बन्धी नियमों के ज्ञान के साथ ही सूचीकृत उदाहरण द्वारा शिक्षार्थियों को बोधगम्य बनाने का प्रयास किया गया है। पाठ्यक्रम में पुस्तकों के आख्या पृष्ठ (Title page) स्वनिर्मित है जिसका उद्देश्य शिक्षार्थियों को प्रायोगिक ज्ञान प्रदान करना है।

इकाई - 6 : शासन तथा उसके अंगों द्वारा रचित पुस्तकों का सूचीकरण (Cataloguing of books by Government and its organs)

इकाई की रूपरेखा

6.0 उद्देश्य

6.1 समष्टि निकाय से तात्पर्य

6.1.1 समष्टि निकाय के प्रकार

6.2 शासन से तात्पर्य

6.3 शीर्षक का चयन एवं उपकल्पन

6.4 शासन के अंग

6.4.1 शासन के स्थाई अंग

6.4.1.1 वैधानिक अंग

6.4.1.2 प्रशासकीय अंग

6.4.1.3 राज्य अथवा शासन का अध्यक्ष

6.5 प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष उपशीर्षक

6.6 शासन का अस्थाई अंग

6.7 अभ्यास हेतु मुखपृष्ठ

6.8 विस्तृत अध्ययन हेतु ग्रन्थ सूची

6.0 उद्देश्य

इस इकाई के निम्नलिखित उद्देश्य है -

1. समष्टि निकाय का अर्थ स्पष्ट करना,
2. समष्टि निकाय के अंगों का वर्णन करना,
3. ए.ए.सी.आर-2 संशोधित के नियमानुसार शासन एवं उसके अंगों के शीर्षक के चयन एवं उपकल्पन को समझाना ।

6.1 समष्टि निकाय से तात्पर्य

वर्तमान युग में पुस्तकालयों के अन्तर्गत व्यक्तिगत लेखकों द्वारा रचित पुस्तकों के अतिरिक्त ऐसी भी पुस्तकों का संग्रह किया जाता है जिसमें लेखक के रूप में व्यक्ति न होकर अपितु समष्टि निकाय अथवा उसका कोई अंग होता है।इस प्रकार के प्रकाशनों के अन्तर्गत शासन अथवा उसके अंगों द्वारा रचित पुस्तकें, संस्था अथवा उसके अंगों द्वारा रचित पुस्तकें एवं सम्मेलन की कार्यवाहियाँ आदि आते हैं। इस सम्बन्ध में AACR-II संशोधित के अन्तर्गत समष्टि निकाय या समष्टि लेखक द्वारा रचित पुस्तकों के सूचीकरण हेतु नियमों का प्रावधान अलग से किया गया है।

AACR-II संशोधित में समष्टि निकाय के सम्बन्ध में निम्नलिखित व्याख्या की गई है। "एक संगठन अथवा व्यक्तियों का वह समूह, जो एक विशेष नाम से जाना जाता है तथा एक सत्ता (Entity) के रूप में कार्य करता है अथवा कार्य कर सकता है।"

6.1.1 समष्टि निकाय के प्रकार

AACR-II संशोधित के अध्याय - 24 में वर्णित नियमों के आधार पर इसे मुख्यतया निम्नलिखित प्रकारों में बांटा जा सकता है।

(1) शासन (Government)

(2) संस्था (Institution)

(3) सम्मेलन (Conference)

इसके अतिरिक्त समष्टि लेखकत्व की दृष्टि से निम्न दो प्रकार के और समष्टि लेखकत्व का भी जिक्र है। जो निम्नवत है -

(1) प्रदर्शनियाँ, मेले एवं उत्सव (Exhibition, fairs and festivals)

(2) रेडियो एवं टेलीविजन केन्द्र (Radio and Television centres)

समष्टि निकाय के उपरोक्त श्रेणियों में से प्रस्तुत अध्याय में शासन द्वारा समष्टि लेखक के रूप में लिखित पुस्तकों के प्रायोगिक सूचीकरण के सम्बन्ध में विस्तृत व्याख्या निम्नवत प्रस्तावित है।

6.2 शासन से तात्पर्य

वे पुस्तकें जिसके विषय वस्तु के प्रस्तुतीकरण के लिए शासन अथवा उसका कोई

अंग जिम्मेदार हो, को शासकीय प्रकाशन कहा जाता है। AACR-II संशोधित के अनुसार 'शासन से तात्पर्य समष्टि निकायों - कार्यपालिका, विधायिका तथा न्यायपालिका, जिसका एक निश्चित भूभाग पर आधिपत्य होता है, की सम्पूर्णता का बोध होता है'।

प्रायोगिक सूचीकरण की दृष्टि से जब किसी ग्रन्थ में प्रस्तुत विचारों के लिए सम्पूर्ण शासन अथवा उसका कोई अंग उत्तरदायी हो तो ऐसे ग्रन्थों के लेखक के रूप में शासन अथवा उसके अंगों को ही स्वीकार किया जाता है। ऐसी स्थितियों में शीर्षक का चयन एवं उपकल्पन शासन तथा उसकें अंगों पर ही आधारित होता है।

6.3 शीर्षक का चयन एवं उपकल्पन

AACR-II संशोधित के अनुसार शासन के अन्तर्गत शीर्षक का चयन सर्वप्रथम भौगोलिक भूभाग (राष्ट्र, राज्य, प्रदेश या उससे सम्बन्धित भौगोलिक इकाई) के द्वारा किया जाता है । तत्पश्चात यदि भौगोलिक भूभाग के साथ-साथ उससे सम्बन्धित पुस्तक के मुख्य पृष्ठ पर उसके अधीनस्थ अंगों का भी उल्लेख है तो डाट (.) लगाकर उन अधीनस्थ अंगों के नाम का भी उल्लेख किया जाता है। भौगोलिक भूभाग को छोड़कर जुड़े हुए अन्य अधीनस्थ अंगों को रेखांकित (Underline) किया जाता है। महत्वपूर्ण है कि यदि शीर्षक (Heading) अग्ररेखा पर पूर्ण रूपेण समाहित नहीं होता तो उसकी वापसी अगली पंक्ति पर तृतीय काल्पनिक रेखा से की जाती है। उदाहरणार्थ -

मुख्य पृष्ठ पर दी गई सूचना

(i) Department of Scholarship, Ministry of Social Welfare, Government of India.

(ii) Department of Minor Irrigation, Government of Rajasthan.

सूचीपत्रक में शीर्षक का उपकल्पन

AACR-II संशोधित के नियमानुसार निम्नवत होगा ।

(i) India. Ministry of Social Welfare. Department of Scholarship.

(ii) Rajasthan. Department of Minor Irrigation

6.4 शासन के अंग

निम्नलिखित तालिका के अनुसार शासन के विभिन्न अंगों का बोध किया जा

सकता है।

- शासन के अंग
  - स्थाई अंग
    - वैधानिक अंग
      - कार्यपालिका
      - विधायिका
      - न्यायपालिका
    - प्रशासनिक अंग
    - राज्य अथवा शासन का प्रमुख
  - अस्थाई अंग

उदाहरण

(सम्पूर्ण शासन)

Democracy in India

Manager of Publication
New Delhi, 1950

Other Information:

Call No.	-	321.800954 IND
Acc. No.	-	5384
Pages	-	22 + 370
Size	-	22 cm.

मुख्य संलेख (Main Entry)

```
321.800954
IND        India
               Democracy in India. - New Delhi: Manager of
           publication, 1950.
               xxii, 370 p.; 22 cm.
 5384



               1. Democracy - India I. Title

                          O
```

विषय इतर संलेख (Subject Added Entry)

321.800954 IND	India	DEMOCRACY - INDIA.
		Rest as in the main entry. O

शीर्षक इतर संलेख (Title Added Entry)

321.800954 IND	India	Democracy in India.
		Rest as in the main entry. O

6.4.1 शासन के स्थाई अंग

6.4.1.1 शासन का वैधानिक अंग

उदाहरण - 2 **Debate on child labour**

Rajya Sabha

Govt. of India

Manager of Publications, New Delhi, 2001

Other information:

Call No.	-	331.31 IND
Acc.No.	-	537483
Pages	-	xiii, 423
Size	-	24 cm.

मुख्य संलेख (Main Entry)

331.31 IND	India. Parliament. Rajya Sabha.	
537483		Debate on child labour/ Rajya Sabha, Government of India.- New Delhi: Manager of Publication, 2001. xiii, 423p.; 24 cm. 1. Child labour I.Title.

विषय इतर संलेख (Subject Added Entry)

331.31 IND.		CHILD LABOUR. India.Parliament. Rajya Sabha
		Rest as in the main entry.

आख्या इतर संलेख (Title Added Entry)

331.31 IND		Debate on child labour. India. Parliament. Rajya Sabha
		Rest as in the main entry.

महत्वपूर्ण बातें :

नियम संख्या 24.21ए के अनुसार विधायी निकाय के एक से अधिक सदन होने पर उन्हें सदनों के मिले जुले नाम को उपशीर्षक के रूप में उल्लिखित करते हैं। जैसा कि उपरोक्त उदाहरण में भारत देश मे लोक सभा एवं राज्य सभा दोनों

सदनों का सम्मिलित नाम Parliament का उल्लेख किया गया है।

6.4.1.2 शासन का प्रशासनिक अंग

उदाहरण -3 **Selected Educational Statistics**

1985-86

Government of India
Ministry of Human Resource Development
Planning, Monitoring and Statistics Division

Manager of Publication
New Delhi
1987

Other information:

Call No.	-	370.954 IND
Acc. No.	-	34926
Pages	-	iv, 240 p.
size	-	23 cm

मुख्य संलेख (Main Entry)

370.954 IND	India. Ministry of Human Resource Development. Planning Monitoring and Statistics Division Selected Educational Statistics 1985-86 /Government of India, Ministry of Human Resource Development, Planning, Monitoring and Statistics Division -New Delhi: Manager of publication, 1987. iv, 240p.; 23 cm. 1. Education - Statistics I. Title
34926	

विषय इतर संलेख (Subject Added Entry)

370.954 IND.		EDUCATION- STATISTICS. India. Ministry of Human Resource Development.
		Planning, Monitoring and Statistics Division Rest as in the main entry.

आख्या इतर संलेख (Title Added Entry)

370.954 IND.		Selected educational statistics 1985-86 India. Ministry of Human Resource Development.
		Planning, Monitoring and Statistics Division. Rest as in the main entry.

महत्वपूर्ण बातें -

(1) समष्टि निकाय के इस उदाहरण में लेखकत्व के सम्बन्ध में तीन चरण (अंग) का उल्लेख है।

India.

Ministry of Human Resource Development

Planning, Monitoring and Statistics Division.

उपरोक्त स्थिति में Ministry of Human Resource Development को द्वितीय अंग के रूप में लेना आवश्यक है क्योंकि भारत सरकार के अन्य मन्त्रालयों के अधीनस्थ भी Planning, Monitoring and Statistics Division हो सकते हैं। अतः समष्टि निकाय के तीनों अंगों का उल्लेख पदानुक्रम (hierarchy) में किया गया है।

2. नियमानुसार समष्टि निकाय लेखक एवं उसके अंग यदि अग्र रेखा पर समाहित नहीं होते हैं तो उनकी वापसी अगली पंक्ति पर तृतीय काल्पनिक रेखा से की जाती है।

उदाहरण - 4 (शासन एवं उसका न्यायपालिकीय अंग)

Reported criminal cases 1975-85

(Emblem of Supreme Court)

Controller of Publications, New Delhi.

1989

OTHER INFORMATION

Call No.	-	345 IND
Acc. No.	-	39926
Pages	-	ix, 346
size	-	24 cm.

मुख्य संलेख (Main Entry)

345 IND	India. Supreme Court	
39926		Reported Criminal cases 1975-85.- New Delhi : Controller of Publications, 1989. ix, 346 p.; 24 cm. 1. Criminal Law I. Title O

विषय इतर संलेख (Subject Added Entry)

345 IND.		CRIMINAL LAW India. Supreme Court.
		Rest as in the main entry. O

आख्या इतर संलेख (Title Added Entry)

345 IND		Reported criminal cases, 1975-85 India. Supreme Court
		Rest as in the main entry. O

6.1.4.3 राज्य अथवा शासन का अध्यक्ष

उदाहरण - 5 [राज्याध्यक्ष (Head of the State)]

Official orders of A.P.J. Abdul Kalam

Edited by

Brijesh Mishra

Manager of Publications

New Delhi, 2007

Other Information:

Call No.	-	954 IND
Acc. No.	-	934179
Page	-	ix, 347 p.
size	-	22 cm

Note: A.P.J. Abdul Kalam was president of India during 2002-07.

मुख्य संलेख (Main Entry)

954 IND	India. President (2002-2007:APJ Abdul Kalam).
934179	Official orders of APJ Abdul Kalam/ edited by Brijesh Mishra.- New Delhi: Manager of Publications, 2007. ix, 347 p.; 22 cm. 1. India- History I. Mishra, Brijesh II. Title O

विषय इतर संलेख (Subject Added Entry)

954 IND.	INDIA - HISTORY India. Presient (2002-2007 :APJ Abdul Kalam)
	Rest as in the main entry. O

संपादक इतर संलेख (Editor Added Entry)

954 IND		Mishra, Brijesh. India. President (2002-2007: APJ Abdul Kalam)
		Rest as in the main entry. ○

आख्या इतर संलेख (Title Added Entry)

954 IND		Official Orders of APJ Abdul Kalam. India. President (2002-2007:APJ Abdul Kalam)
		Rest as in the main entry. ○

महत्वपूर्ण बातें -

1) नियम संख्या 21.4D1 के अनुसार राज्याध्यक्ष, शासनाध्यक्ष तथा अन्तर्राष्ट्रीय संस्थानों के प्रमुखों के शासकीय पत्र व्यवहार जैसे विधान मंडलों को दिये गये सन्देश, उद्घोषणायें एवं प्रशासनिक आदेश हेतु समष्टि शीर्षक शासन के अन्तर्गत निर्मित किया जाता है।

2) नियम संख्या 24.20B के अनुसार राष्ट्र के प्रधान (राष्ट्रपति, राजा, रानी) अथवा राज्य के प्रधान (राज्यपाल) के उपशीर्षक के लिए अंग्रेजी भाषा में उनके पद के नाम का उल्लेख करते हैं। उसके पश्चात् पदासीन रहने के समावेशित वर्ष (Inclusive years) तथा व्यक्ति के नाम का उल्लेख निम्नवत किया जाता है।

उदाहरणार्थ

1) प्रजातांत्रिक देशों में -

India. President (1962-1967: S Radha Krishnan)

Uttar Pradesh. Governor (2004-2009:TV Rajeshwar)

2) राजतन्त्रात्मक देशों में

United Kingdom. Sovereign (1837-1901:Victoria)

Spain. Sovereign (1886-1931: Alfonso XIII)

उदाहरण - 6 [शासनाध्यक्ष (Head of the Government)]

Jai Jawan Jai Kisan

Speech in the Lok Sabha
on secured and green India

by Lal Bahadur Shastri
Prime Minister of India
Controller of Publications, New Delhi,
1961

Other Information:

Call No.	-	954 IND
Acc No.	-	214363
Pages	-	xii, 215 p.
size	-	23 cm.

मुख्य संलेख (Main Entry)

954 IND	India. Prime Minister	
214363	Jai Jawan Jai Kisan: speech in the Lok Sabha on secured and green India/by Lal Bahadur Shastri.- New Delhi: Controller of publications, 1961. xii, 215; p. 23 cm. 1. India-History I. Title	

विषय इतर संलेख (Subject Added Entry)

954 IND	INDIA-HISTORY India. Prime Minister	
	Rest as in the main entry.	

आख्या इतर संलेख (Title Added Entry)

954 IND	Ind	Jai Jawan Jai Kisan a. Prime Minister
		Rest as in the main entry. ○

देखें सन्दर्भ संलेख (See Reference Entry)

	Sha	shtri, Lal Bahadur
		See : India. Prime Minister ○

महत्वपूर्ण बातें -

1. नियम संख्या 24.20C के अनुसार शासन के प्रमुख तथा अर्न्तशासकीय निकायों के प्रमुख के रूप में कार्यरत शासन के प्रमुख के उपशीर्षक के लिए यदि वह राष्ट्र का प्रधान नहीं है तो उसके पदनाम को उल्लिखित किया जाता है। उसके कार्यावधि तथा नाम का उल्लेख नहीं किया जाता है। उदाहरणस्वरूप :-

   United Kingdom. Prime Minister

   United Nations. Secretary General

6.5 प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष उपशीर्षक

ए.ए.सी.आर.-2 संशोधित के नियम संख्या 24.19 के अनुसार यदि ग्रन्थ के मुख पृष्ठ पर शासन के दो या दो से अधिक अंगों के नाम अंकित हों तो ऐसी स्थिति में शासन के नाम अथवा एजेन्सी के नाम के मध्य श्रृंखला के अन्तर्गत आने वाले निचले तत्व के नाम का उपकल्पन किया जाता है और मध्य श्रृंखला में उस तत्व को छोड़ दिया जाता है जो निचले तत्व के उपकल्पन में न रहते हुए भी पर्याप्त व्यष्टिकृत बन रहा हो लेकिन यदि निचले तत्व को मध्य तत्व के बिना व्यष्टिकृत बनाने में कोई असुविधा हो रही हो तो मध्य श्रृंखला में उस तत्व के बाद ही निचले तत्व का उपकल्पन किया जायेगा।

अत्यन्त सामान्य शब्दों में कहा जाय तो यदि अधीनस्थ अंगों में निम्नतम एवं मध्यम अंगों के बीच भाव और भाषा की समानता हो तो मध्यम अंग को उपशीर्षक के रूप में नहीं उपकल्पित करते हैं। क्योंकि निम्नतम अंग से ही स्पष्ट हो जाता है कि वह स्वाभाविक रूप से मध्यम अंग का ही अधीनस्थ अंग है।

उदाहरण -

Department of Railway Recruitment, Ministry of Railways, Government of India.

उपकल्पन - India. Department of Railway Recruitment.

उपरोक्त उदाहरण में मध्यम अंग Ministry of Railways का उपकल्पन करने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि Department of Raiways Recruitment निश्चित रूप से Ministry of Railways के ही अन्तर्गत आता है।

परन्तु

Department of Scholarship, Ministry of Higher Education, Government of Uttar Pradesh.

का उपकल्पन निम्नवत किया जायेगा -

Uttar Pradesh. Ministry of Highter Education. Department of Scholarship.

उपरोक्त उदाहरण में Department of Scholarship को व्यष्टिकृत बनाने की दृष्टि से Ministry of Higher Education का उल्लेख करना आवश्यक है।

उदाहरण -7 (शासन के दो समान विभागीय प्रशासकीय अंग)

Directory of Universities and colleges in Uttar Pradesh

by

Directorate of Higher Education
Ministry of Higher Education
Government of Uttar Pradesh

Dhara Publications
Allahabad, 2011

Other information:

Call No	-	378 UTT
Acc. No.	-	92169
Pages	-	xii, 279 p.
size	-	24 cm

मुख्य संलेख (Main Entry)

378 UTT	Uttar Pradesh. Directorate of Higher Education.
921169	Directory of universities and colleges in Uttar Pradesh/Directorate of Higher Education, Ministry of Higher Education, Govt. of Uttar Pradesh. -Allahabad: Dhara Publications, 2011. xii, 279.p; 24 cm. 1. Higher Education I. Title. ○

विषय इतर संलेख (Subject Added Entry)

378 UTT	HIGHER EDUCATION. Uttar Pradesh. Directorate of Higher Education.
	Rest as in the main entry. ○

आख्या इतर संलेख (Title Added Entry)

378 UTT	Directory of Universities and colleges in Uttar Pradesh Uttar Pradesh. Directorate of Higher Education
	Rest as in the main entry. ○

महत्वपूर्ण बातें -

1) नियम संख्या 24.19 के अनुसार यदि अधीनस्थ निकायों में निम्नतम एवं मध्यम निकायों के बीच भाव और भाषा की समानता हो तो मध्यम निकाय को

उपशीर्षक के रूप में नहीं अंकित किया जाता क्योंकि निम्नतम निकाय से ही स्पष्ट हो जाता है कि वह स्वाभाविक रूप से मध्यम निकाय का ही अधीनस्थ अंग है। उदाहरणार्थ -

Department of Education,
Ministry of Education,
Govt. of India.

को

India. <u>Department of Education</u> उपकल्पित करेंगें।

6.6 शासन का अस्थाई अंग

ए.ए.सी.आर.-2 संशोधित के अन्तर्गत शासन के अस्थाई अंग से तात्पर्य शासन द्वारा बनाए गये किसी कमीशन अथवा कमेटी से है । चूँकि कमीशन एवं कमेटी की प्रकृति अस्थाई होती है। तात्पर्य इनका निर्माण एक विशेष उद्देश्य की पूर्ति तथा एक निश्चित अवधि के लिए होता है। इसलिए इन्हें अस्थाई अंग से सम्बोधित किया जाता है।

महत्वपूर्ण बात यह है कि अस्थाई अंग का बोध होने के लिए यह आवश्यक है कि किसी भी कमीशन/कमेटी का अध्यक्ष भी होगा। इसीलिए चेयरमैन के नाम से भी एक अतिरिक्त संलेख बनाया जाता है।

व्यावहारिक सूचीकरण के लिए शीर्षक अनुच्छेद में सबसे पहले शासन के भौगोलिक नाम के बाद पूर्ण विराम (.) उसके पश्चात कमीशन/कमेटी के नाम का उल्लेख किया जाता है।

उदाहरण -8 (शासन का अस्थायी अंग - कमेटी)

Report of the

Reforms Committee in the Insurance Sector

Govt. of India .

Ministry of Finance

Insurence Division

Published by - Manager of Publications, New Delhi, 1994

<u>Other information:</u>

Call No.	-	368 IND
Acc. no.	-	33787
Pages	-	6+150
size	-	26 cm.

Note: Chairman of the Reforms committee in the Insurence Sector was Prof. S.K. Rangarappa. The report is also known as Rangarappa Committee report.

मुख्य संलेख (Main Entry)

368 IND	India. Reforms Committee in the Insurance Sector.	
33187	Report of the Reforms Committee in the Insurance Sector/Govt. of India, Ministry of Finance, Insurence Division.- New Delhi: Manager of Publications, 1994. vi, 150 p.; 26 cm Chairman: S.K.Rangarappa Also known as : Rangarappa committee report. 1. Insurance I. Rangarappa, S.K. II Title III. Title : Rangarappa Committee report.	

विषय इतर संलेख (Subject Added Entry)

368 IND	INSURENCE India. Reforms Committee in the Insurance Sector.
	Rest as in the main entry.

अध्यक्ष इतर संलेख (Chairman Added Entry)

368 IND	Rangarappa, S.K. India.Reforms Committee in the Insurance Sector.
	Rest as in the main entry.

विशिष्ट आख्या इतर संलेख (Special Title Added Entry)

368 IND	India.	Rangarappa Committee report Reforms Committee in the Insurance Sector
		Rest as in the main entry. O

महत्वपूर्ण बातें -

उपरोक्त उदाहरण में कमेटी के चेयरमैन के नाम से एक इतर संलेख का निर्माण किया गया है। साथ ही उक्त कमेटी की रिपोर्ट के उपयोगकर्ताओं द्वारा उनमें चेयरमैन के नाम से मांगे जाने की सम्भावना प्रबल है अतः उक्त रिपोर्ट को चेयरमैन के नाम से भी एक विशिष्ट आख्या के रूप में इतर संलेष निर्मित किया गया है।

6.7 अभ्यास हेतु मुख पृष्ठ

मुख पृष्ठ - 1 (शासन का अस्थाई अंग)

Towards Equality

Report of the Committee on the Status of Women in India

DEPARTMENT OF SOCIAL WELFARE

MINISTRY OF EDUCATION

GOVERNMENT OF INDIA

MANAGER OF PUBLICATIONS

DELHI

1974

OTHER INFORMATION:

Call No.	-	305.4 IND
Acc.No.	-	25431
Pages	-	xi, 249 p.
Size	-	26 cm.

मुख पृष्ठ - 2 (शासन का स्थाई अंग)

Compendium on In-house R&D Centres
(Engineering Industries)

Department of Scientific and Industrial Research
Government of India

DEPARTMENT OF SCIENTIFIC AND INDUSTRIAL RESEARCH
NEW DELHI
1997

OTHER INFORMATION:

Call No.	-	607.2 IND
Acc.No.	-	80512
Pages	-	xi, 346 p.
Size	-	26 cm.

मुख पृष्ठ - 3

(शासन का प्रशासनिक अंग-दो अधीनस्थ अंगों सहित)

Indian Agriculture in Brief -
22nd ed.

Directorate of Economics and Statistics
Ministry of Agriculture
Government of India

THE CONTROLLER OF PUBLICATIONS
DELHI
1989

OTHER INFORMATION:

Call No.	-	630.954 IND
Acc.No.	-	25599
Pages	-	xi, 341 p.
Size	-	26 cm.

मुख पृष्ठ - 4

(शासन एवं प्रशासनिक अंग)

Education in India.

Past, Present and Future

1985-86

GOVERNMENT OF INDIA

MINISTRY OF HUMAN RESOURCE DEVELOPMENT

NEW DELHI

1987

OTHER INFORMATION:

Call No.	-	370.954 IND
Acc.No.	-	4567
Pages	-	iv, 240 p.
Size	-	24 cm.

मुख पृष्ठ - 5

(शासन के दो प्रशासकीय अंग)

Family Welfare Programme in India

Year Book 1988-89

DEPARTMENT OF FAMILY WELFARE

MINISTRY OF HEALTH AND FAMILY WELFARE

GOVERNMENT OF INDIA

NEW DELHI

1990

OTHER INFORMATION:

Call No.	-	362.82 IND
Acc.No.	-	34216
Pages	-	xii, 403 p.
Size	-	24 cm.

मुख पृष्ठ - 6

(शासन का विधाई अंग)

GOVERNMENT OF UNITED STATES

SENATE

(US)

Debate on International Foreign Policy

Washington

1975

OTHER INFORMATION:

Call No.	-	327 N75
Acc.No.	-	89261
Pages	-	480
Size	-	14 x 18 cm.

मुख पृष्ठ - 7

(शासन का न्यायिक अंग)

Judicial Powers of the Honourable Judges

High Court

Madhya Pradesh

Manager of Publications

M.P. Goverment Printing Press

Gwalior (M.P.)

1986

OTHER INFORMATION:

Call No.	-	340 N86
Acc.No.	-	7492
Pages	-	10 + 280.
Size	-	20 cm.

(राज्याध्यक्ष)

President Speaks

A collection of speeches of Sarvapalli Radhakrishnan

Published by
Manager of Publication
Government of India
New Delhi
1970

OTHER INFORMATION:

Call No.	-	351.003 13 N70
Acc.No.	-	4621
Pages	-	6 + 320
Size	-	18 cm.

Note: Sarvapalli Radhakrishnan was the President of India dur ing 1962-1967.

मुख पृष्ठ - 9

(शासन का अस्थाई अंग)

Fourth Central Pay Commission

Report, 1986

Department of Pay Revision
Ministry of Finance
Government of India

Manager of Publications
New Delhi
1986

OTHER INFORMATION:

Call No.	-	331.22 N86
Acc.No.	-	92141
Pages	-	10 + 180
Size	-	18 cm.

Note: Commission was set up by Government of India under the Chair- manship of Dr. V.K. Iyer.

मुख पृष्ठ - 10

(शासन एवं उसका प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय श्रेणी का अंग)

Research and Development in Industrial Biochemistry

By

Division of Research and Development

Department of Science and Technology

Ministry of Science and Technology

Government of India

Manager of Publications

New Delhi

1980

OTHER INFORMATION:

Call No.	-	660.63 IND
Acc.No.	-	64162
Pages	-	12 + 140 p.
Size	-	22 cm.

6.8 विस्तृत अध्ययन हेतु ग्रन्थ सूची

1. IGNOU : A.A.C.R.-2 Rev.- Part 2 (BLIS Course Material).
2. Joint Steering Committee for Revision of A.A.C.R.-2nd rev. ed., 1998. Edited by Michael Gorman and Paul W. Winkler, Ottawa, Canadian Library Association, 1998.
3. गौतम, जे.एन. एवं निरन्जन सिंह : एडवान्स कैटलागिंग, आगरा, वाई.के. पब्लिशर्स, 1998
4. सूद, एस.पी. : क्रियात्मक सूचीकरण ए.ए.सी.आर. -2, जयपुर, राज पब्लिशिग हाउस, 2002
5. वर्मा, ए.के. : प्रयोगात्मक ए.ए.सी. आर.-2, रामपुर, सेन्ट्रल बुक हाउस, 1998.

इकाई - 7 : संस्था तथा उसके अंगों द्वारा रचित पुस्तकों का सूचीकरण (Cataloguing of books by Institutions and its organs)

इकाई की रूपरेखा

7.0 उद्देश्य

7.1 संस्था से तात्पर्य

7.2 शीर्षक का चयन एवं उपकल्पन

7.3 सूचीकृत उदाहरण

7.4 अभ्यास हेतु मुख पृष्ठ

7.5 विस्तृत अध्ययन हेतु ग्रन्थ सूची

7.0 उद्देश्य

इस इकाई के निम्नलिखित उद्देश्य है -

1. संस्था से परिचित कराना एवं संस्था को परिभाषित करना ।
2. संस्था-की श्रेणियों से परिचित कराना।
3. लेखक के रूप में संस्था एवं उसके अंगों को ए.ए.सी.आर.-2 संशोधित के अनुसार सूचीकृत करने का ज्ञान कराना।

7.1 संस्था से तात्पर्य

संस्था से तात्पर्य एक स्वायत्त शासी निकाय से है, भले ही इस निकाय को वित्तीय सहायता शासन द्वारा प्राप्त हो परन्तु स्वशासन की दृष्टि से निकाय की यह श्रेणी अपने प्रशासनिक निर्णय लेने में स्वयं सक्षम होती है। इस कोटि द्वारा प्रकाशित ग्रन्थों को संस्था की रचना से जाना जाता है। संस्था के भी तीन स्तर होते हैं - अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर,उदाहरण स्वरूप World Health Organisation, UNESCO, UNISEF, United Nations आदि, राष्ट्रीय स्तर पर-Indian Council of Medical Research, University Grant Commission तथा स्थानीय स्तर - पर Bengali Welfare Association, Varanasi, Chitragupta Vanshaj Sabha, Bareilly आदि।

AACR-2 संशोधित के अनुसार संस्थागत लेखकों के अन्तर्गत संघ (Association), संस्था (Institution),व्यापारिक संघ (Business firm), लाभ निरपेक्ष उद्यम (Non-Profit Enterprises), धार्मिक संगठन, स्थानीय गिरजाघर आदि आते हैं।

7.2 शीर्षक का चयन एवं उपकल्पन

7.2.1 जब किसी ग्रन्थ के अन्तर्निहित विषय वस्तु के लिए कोई संस्था उत्तरदायी हो तो शीर्षक का चयन एवं उपकल्पन संस्था के नाम से किया जाता है उदाहरणार्थ -

World Health Organisation

उपकल्पन

World Health Organisation

7.2.2 यदि एक ही नाम की संस्था का बोध कई स्थानों पर होने की संभावना हो तो संस्था के नाम के पश्चात गोल कोष्ठक ( ) के अन्तर्गत उसके स्थान के नाम का भी उल्लेख करते हैं। उदाहरणस्वरूप -

National Council of Medical Research

उपरोक्त स्थिति में National Council of Medical Research कई राष्ट्रों में होने की संभावना है। अतः शीर्षक हेतु इसका उपकल्पन करते समय इसके नाम के अन्त में गोल कोष्ठक में राष्ट्र के नाम का उल्लेख निम्नवत करेंगे।

उपकल्पन

National Council of Medical Research (India)

7.2.3 यदि किसी संस्था का कोई अधीनस्थ अंग भी उस रचना के लिए उत्तरदायी हैं तो द्वितीय अंग के रूप में उसका भी उल्लेख करेंगे, उदाहरण स्वरूप

Department of Library and Information Science, U.P. Rajarshi Tandon Open University, Allahabad

उपकल्पन -

U.P. Rajarshi Tandon Open University. Department of Library and Information Science.

7.3 सूचीकृत उदाहरण

उदाहरण - 1

The New Americans

Economic Demographic and Fiscal Effects of Immigration

National Research Council, U.S.A.

National Academy Press, Washington, D.C., 1997

Other information:

Call No.	-	330.973 NAT
Acc. No.	-	46412
Pages	-	xii; 434p.
Size	-	26 cm.
ISBN	-	03-09063-566

मुख्य संलेख (Main Entry)

330.973 NAT	National Research Council (USA).
46412	The New Americans : Economic, Demographic and Fiscal Effects of Immigration/Nation Research Council, USA.- Washington DC: National Academy Press, 1997. xii, 434 p.; 26 cm ISBN : 03-09063-566 1. Economic Conditions I. Title O

विषय इतर संलेख (Subject Added Entry)

330.973 NAT	ECONOMIC CONDITIONS National Research Council (USA).
	Rest as in the main entry. O

आख्या इतर संलेख (Title Added Entry)

330.973 NAT		The New Americans.
	National Research Council (USA).	
		Rest as in the main entry.
		O

उदाहरण - 2

(संस्था एवं उसका प्रथम श्रेणी का अंग)

The Hidden Epidemic

Confronting Sexually Transmitted Diseases

Institute of Medical Science, BHU

Division of Health Promotion and Prevention of

Sexually Transmitted Diseases.

BHU Press, Varanasi, 1998.

Other Information.

Call No.	-	614.547 INS
Acc. No.	-	241619
Pages	-	xii, 432 p.
size	-	26 cm.

मुख्य संलेख (Main Entry)

614.547 INS	Institute of Medical Science (BHU). Division of Health Promotion and Prevention of Sexually Transmitted Diseases.	
241619		The Hidden Epidemic: confronting secxually transmitted diseases/Institute of Medical Science, BHU, Division of Health Promotion and Prevention of sexually transmitted diseases.- Varanasi: BHU Press, 1998.
		xii, 432 p.; 26 cm.
		1. Sexually transmitted diseases I. Title.
		O

विषय इतर संलेख (Subject Added Entry)

614.547 INS		SEXUALITY TRANSMITTED DISEASES Institute of Medical Science (BHU).Division of
		Health Promotion and Prevention of Sexually Transmitted Diseases. Rest as in the main entry. O

आख्या इतर संलेख (Title Added Entry)

614.547 INS		The Hidden Epidemic Institute of Medical Science (BHU).Division of
		Health Promotion and Prevention of Sexually Transmitted Diseases. Rest as in the main entry. O

<u>उदाहरण - 3</u>

(संस्था एवं उसके दो अंग)

Recent Trends on kidney Transplantation

Department of Nephrology

School of Surgery

Sanjay Gandhi Post Graduate Institute of

Medical Sciences, Lucknow.

Allied Publication, Lucknow, 2006.

<u>Other Information.</u>

Call No.	-	617.461 P06
Acc. No.	-	46953
Pages	-	xii, 419 p.
size	-	23 cm.

मुख्य संलेख (Main Entry)

917.461
P06 Sanjay Gandhi Post Graduate Institute of Medical
Sciences (Lucknow). School of Surgery. Dep-
artment of Nephrology.
Recent Trends in Kidney Transplantation/
46953 Departent of Nephrology, School of Surgery, Sanjay
Gandhi Post Graduate Institute of Medical Science,
Lucknow.- Lucknow : Allied Publication, 2006.
xii, 419; 23 cm.
I. Kidney Transplantation I. Title.
O

विषय इतर संलेख (Subject Added Entry)

KIDNEY TRANSPLANTATION
617.461
P06 Sanjay Gandhi Post Graduate Institute of Medical
Sciences (Lucknow). School of Surgery.
Department of Nephrology.
Rest as in the main entry.
O

आख्या इतर संलेख (Title Added Entry)

Recent Trends in Kidney Transplantation
617.461
P06 Sanjay Gandhi Post Graduate Institute of Medical
Sciences (Lucknow). School of Surgery.
Department of Nephrology.
Rest as in the main entry.
O

उदाहरण - 4

(संस्था एवं उसका अस्थाई अंग)

Bharat Sanchar Nigam Limited

Report of the Wage Committee for Workers.

Nycil Publications, New Delhi, 2006.

Other Information.

Call No.	-	331.21 PO6
Acc. No.	-	129396
Pages	-	vii, 339 p.
size	-	24 cm.

Note: The wage committee for workers was set up by BSNL in 2004 under the chairmanship of V Parthsarthi.

मुख्य संलेख

331.21 PO6	Bharat Sanchar Nigam Limited. Wage Committee for workers.
129396	Report of the wage committee for workers/ Bharat Sanchar Nigam Limited. - New Delhi: Nycil publications, 2006. vii, 339 p.; 24 cm. 1. Labour Economics I. Parthsarathi, V. II.Title O

विषय इतर संलेख (Subject Added Entry)

	LABOUR ECONOMICS
331.21 PO6	Bharat Sanchar Nigam Limited. Wage Committee for workers Rest as in the main entry. O

अध्यक्ष इतर संलेख (Chairman Added Entry)

		Parthsarthi, V.
331.21 PO6		Bharat Sanchar Nigam Limited. <u>Wage Committee for Workers</u>.
		Rest as in the main entry.
		O

आख्या इतर संलेख (Title Added Entry)

		Report of the wage committee for workers
331.21 PO6		Bharat Sanchar Nigam Limited. <u>Wage committee for workers.</u>
		Rest as in the main entry.
		O

7.4 अभ्यास हेतु मुख पृष्ठ

मुख पृष्ठ 1 (संस्था)

Education and the New International Order

National Institute of Educational Planning and Administration, New Delhi.

Concept Publishing

New Delhi

1983

Other Information:

Call No.	-	370 NAT
ACC No.	-	34126
Pages	-	xii, 243p.
Size	-	26 cm.

मुख पृष्ठ 2

(संस्था एवं उसका प्रथम श्रेणी का अंग)

Linking Science and Technology to Society's Environmental Goals

Policy Division, National Research Council (US)

National Academy Press
Washington, DC
1996

Other Information:

Call No.	-	363.7 NAT
ACC No.	-	76124
Pages	-	xii, 530p.
Size	-	28 cm.
ISBN	-	03-09055-784

मुख पृष्ठ 3

(संस्था के दो प्रशासनिक अंग)

The New Americans: Economic, Demographic and Fiscal Effects of Immigration

Prepared by
Demographic Section,
Department of Economic Affairs of
National Research Council (US)

National Academy Press
Washington, DC
1997

Other Information:

Call No.	-	330.973 NAT
ACC No.	-	46412
Pages	-	xii, 434p.
Size	-	26 cm.
ISBN	-	03-09063-566

मुख पृष्ठ 4

(संस्था एवं उसके दो अधीनस्थ अंग)

Statistical Tables on
Scientific and Technical Manpower

Statistical Division
of
Division for Scientific and Technical Personnel
Council of Scientific and Industrial Research (CSIR)
New Delhi
1986

Other Information:

Call No.	-	310 N86
ACC No.	-	8923
Pages	-	6 + 310
Size	-	18 cm.

मुख पृष्ठ 5

(संस्था का अस्थाई अंग)

Educational Psychology in Teacher Education

Report of the
Committee on Educational Psychology
National Society of College Teachers of Education

New York
J. Willey & Sons
1953

Other Information:

Call No.	-	370.15 N53
ACC No.	-	43276
Pages	-	6 + 110p.
Size	-	23 cm.

मुख पृष्ठ 6

(संस्था एवं उसका अस्थाई अंग)

The Effect of Independence on Treaties

Report of the

Committee on State Succession to Treaties and other

Governmental Obligations

of

Internationa Law Association

Published by

New York

Oxford University Press

1995

Other Information:

Call No.	-	341.2 N95
ACC No.	-	50061
Pages	-	15 + 380 with illustrations
Size	-	22 cm.

Note: Committee appointed by International Law Association in 1990 under the chairmanship of John Cliff.

7.5 विस्तृत अध्ययन हेते ग्रन्थ सूची

1. IGNOU : A.A.C.R.-2 Rev.- Part 2 (BLIS Course Material).
2. Joint Steering Committee for Revision of A.A.C.R.-2nd rev. ed., 1998. Edited by Michael Gorman and Paul W. Winkler, Ottawa, Canadian Library Association, 1998.
3. गौतम, जे.एन. एवं निरन्जन सिंह : एडवान्स कैटलागिंग, आगरा, वाई.के. पब्लिशर्स, 1998
4. सूद, एस.पी. : क्रियात्मक सूचीकरण ए.ए.सी.आर. -2, जयपुर, राज पब्लिशिग हाउस, 2002
5. वर्मा, ए.के. : प्रयोगात्मक ए.ए.सी. आर.-2, रामपुर, सेन्ट्रल बुक हाउस, 1998.

इकाई -8 : सम्मेलन तथा उसके अंगों द्वारा रचित पुस्तकों का सूचीकरण (Cataloguing of books by conference and its organs)

इकाई की रूपरेखा

8.0 उद्देश्य

8.1 सम्मेलन से तात्पर्य

8.2 शीर्षक का चयन एवं उपकल्पन

8.3 सम्मेलन के अधीनस्थ अंग

8.4 सूचीकृत उदाहरण

8.5 अभ्यास हेतु मुख पृष्ठ

8.6 विस्तृत अध्ययन हेतु ग्रन्थ सूची

8.0 उद्देश्य

इस इकाई के निम्नलिखित उद्देश्य है -

1. सम्मेलन एवं उसके महत्व को स्पष्ट करना
2. सम्मेलन को परिभाषित करना,
3. सम्मेलन की श्रेणियों से अवगत कराना,
4. सम्मेलन तथा उसके अंगों को ए.ए.सी.आर.-2 संशोधित के अनुसार सूचीकृत करने के नियमों का बोध कराना।

8.1 सम्मेलन से तात्पर्य

समष्टि निकाय के अन्तर्गत शासन एवं संस्था के अतिरिक्त सम्मेलन भी एक महत्वपूर्ण कोटि है। सम्मेलन से तात्पर्य व्यक्ति अथवा विभिन्न निगमों के प्रतिनिधियों की संगोष्ठी से होता है तथा यह संगोष्ठी उनके सामूहिक हितों के सन्दर्भ में विचार विमर्श अथवा किसी एक ठोस निर्णय के लिए होती है। व्यावहारिक सूचीकरण की दृष्टि से विद्वानों की सभा (Scholar's Meetings), सम्मेलन (Conferences), अधिवेशन (Conventions), संगोष्ठियाँ (Symposium) एवं कार्यशालायें (Workshop)आदि

के प्रस्ताव (resolution), कार्यवाही (Proceedings), कार्यावली (Agenda), कार्यवृत्त (Minutes) एवं रिपोर्ट (Report) आदि प्रकाशित रचनाओं के सम्बन्ध में AACR-2 संशोधित में निम्नलिखित नियमों का प्रावधान हैं।

AACR-2 संशोधित में दो प्रकार के सम्मेलनों का उल्लेख है।

1. सावधिक (periodic)
2. तदर्थ (Ad-hoc)

सावधिक सम्मेलन से तात्पर्य है कि वे सम्मेलन जो एक निश्चित अवधि के बाद नियमित रूप से आयोजित किए जाते हैं इसीलिए इन्हें वार्षिक सम्मेलन (Annual Conference)अथवा अंकीय सम्मेलन (Numbered Conference) की भी संज्ञा प्रदान की जाती है। उदाहरणार्थ -

Xth Annual Conference on Biotechnology held at varanasi in 1980.

इसका तात्पर्य यह है कि इस Conference का जन्म वर्ष अर्थात पहला सम्मेलन सन 1971 में आयोजित हुआ था।

तदर्थ सम्मेलन से तात्पर्य किन्हीं विशेष प्रयोजन हेतु कभी कभार होने वाले सम्मेलन से है। उदाहरणस्वरूप -

National Conference on Global Warming held at Rajasthan University, Jaipur in the year 2006.

शासन एवं संस्था की भाँति ही सम्मेलन का भी कोई अधीनस्थ अंग हो सकता है। उदाहरणस्वरूप

Invitation Committee of the workshop on Special Education.

उपरोक्त उदाहरण में Invitation Committee, workshop का अधीनस्थ अंग है। ।

8.2 शीर्षक का चयन एवं उपकल्पन

AACR-2 संशोधित के अनुसार सावधिक एवं तदर्थ सम्मेलनों के सम्बन्ध में नियम संख्या 24.3 F1, 24.3 F2 में एक समान नियमों का प्रावधान है।

सम्मेलन हेतु शीर्षक के चयन के सम्बन्ध में सम्मेलन के नाम को ही ग्रहण किया जाता है तद्पश्चात गोल कोष्ठक के अन्तर्गत Number : Year : Place लिखा जाता है। विद्यार्थियों की सुविधा की दृष्टि से यदि एक सूत्र वाक्य के रूप में इसके शीर्षक के चयन एवं उपकल्पन की बात कही जाय तो वह निम्नवत होगी।

Name of the Conference (Number : Year : Place)

उदाहरण स्वरूप -

1. Fourth International Conference on Public Administration held at Budapest 1998.

उपरोक्त का उपकल्पन निम्नवत किया जायेगा।

International Conference on Public Administration (4th : 1998: Budapest)

2. National Festival of Handicrafts held at New Delhi, 2001.

उपरोक्त का उपकल्पन निम्नवत किया जायेगा।

National Festival on Handicrafts (2001: New Delhi)

3. Transport Committee of Kumbh Mela festival held at Allahabad in the year 2001.

उपरोक्त का उपकल्पन निम्नवत किया जायेगा।

Kumbh Mela Festival (2001:Allahabad). Transport Committee.

8.3 सम्मेलन के अधीनस्थ अंग

ए.ए.सी.आर.-2 संशोधित के नियम संख्या 24.13ए के अनुसार सम्मेलन के अधीनस्थ निकाय को उस निकाय के साथ प्रविष्ट किया जाना चाहिये जिसका वह अधीनस्थ व सम्बन्धित निकाय है।

उदाहरण :-

* International Botanical Conference (12th : 1960:Paris).

Reception Committee.

* Indian Medical Association Conference (36th : 1975 : N. Delhi). Surgery Chapter.

8.4 सूचीकृत उदाहरण

उदाहरण .1

ADDITIONS TO ARCHITECTURAL HISTORY

Tenth Annual Conference of the Society of Architectural Historians held in Brisbane, 4-7 October 2002.

Edited by
John Macarthur

Brosbane

SOCIETY FOR ARCHITECTURAL HISTORIAN
2002

OTHER INFORMATION:

Call No.	-	720.214 ANN
Acc No.	-	12.975
Page	-	vi + 110 p.
Size	-	22 cm
ISBN	-	1864996471

मुख्य संलेख (Main Entry)

720.214 ANN	Annual Conference of the Society of Architectural
12975	Historians (10th:2002:Brisbane). Additions to Architectural History: Tenth Annual Conference of the Society of Architectural Historians held in Brisbane, 4-7 Oct 2002/edited by John Macarthur.-Brisbane: Society for Architectural Historians, 2002. vi, 110p.; 22 cm. ISBN : 1864996471 1.Architecture I.Macarthur,John II. Title. O

विषय इतर संलेख (Subject Added Entry)

	ARCHITECTURE.
720.214 ANN	Annual Conference of the Society of Archetechural
	Historians (10th : 2002:Brisbane) Rest as in the main entry. O

संपादक इतर संलेख (Editor Added Entry)

	Macarthur, John
720.214 ANN	Annual Conference of the Society of Archetechural
	Historians (10th : 2002:Brisbane) Rest as in the main entry. O

आख्या इतर संलेख (Title Added Entry)

720.214 ANN		Additions to Architectural History. Annual Conference of the Society of Archetechural
		Historians (10th : 2002:Brisbane) Rest as in the main entry. O

उदाहरण - 2

Proceedings of the

Indian Science Congress

Held at University of Allahabad, Allahabad

from 9-11 Aug. 2001.

Published by -

Coxton Press, Allahabad, 2002

OTHER INFORMATION:

Call No.	-	500 PO1
Acc No.	-	52391
Pages	-	xii, 181p.
size	-	24 cm.

मुख्य संलेख (Main Entry)

500 PO1		Indian Science Congress (2001:Allahabad)
52391		Proceedings of the Indian Science Congress held at University of Allahabad, Allahabad from 9-11 Aug, 2001. -Allahabad:Coxton Press, 2002. xii, 181p. ; 24 cm. 1. Natural Science I. Title O

विषय इतर संलेख (Subject Added Entry)

500 PO1		NATURAL SCIENCE. Indian Science Congress (2001: Allahabad)
		Rest as in the main entry.

आख्या इतर संलेख (Title Added Entry)

500 PO1		Proceedings. Indian Science Congress (2001: Allahabad)
		Rest as in the main entry.

उदाहरण - 3

3. Trade agreement and their implementation

Report of the Committee on

Export Trade

Prof. T.N. Raghurajan

Chairman

International Conference

On

Foreign Trade

Helt at New Delhi in 2006

Pentagan Publishers

New Delhi, 2006

OTHER INFORMATION :

Call No.	-	382 PO6
Acc No.	-	39246
Page	-	12 + 180
Size	-	18 cm.

Note: The conference established the committee on Export Trad[e] and Prof. Raghurajan was chairman of the committee.

मुख्य संलेख (Main Entry)

382
PO6 International Conference on Foreign Trade (2006:
New Delhi). Committee on Export Trade
Trade agreement and their implementation :
Report of the Committee on Export Trade/Inter-
39246 national Conference on foreign trade held at New
Delhi in 2006. - New Delhi: Pentagan Publishers,
2006.
xii, 180 p.; 18 cm
Chairman : T.N. Raghurajan

1. Foreign Trade I.Raghurajan, T.N. II. Title.

O

विषय इतर संलेख (Subject Added Entry)

FOREIGN TRADE
382
PO6 International Conference on Foreign Trade.
(2006:New Delhi).Committee on Export trade
Rest as in the main entry.

O

अध्यक्ष इतर संलेख (Chairman Added Entry)

Raghurajan, T.N.
382
PO6 International Conference on Foreign Trade (2006:
New Delhi). Committee on ForeignTrade.
Rest as in the main entry.

O

आख्या इतर संलेख (Title Added Entry)

382 PO6		Trade agreement and their implementation. International Conference on Foreign Trade (2006 : New Delhi). Committee on Foreign Trade. Rest as in the main entry. O

8.5 अभ्यास हेतु मुख पृष्ठ

मुख पृष्ठ 1

Fourth International Conference on Adult Education, Paris, 1985

UNESCO
PARIS
1985

OTHER INFORMATION

Call No. - 374 INT
ACC No. - 34213
Pages - xi, 249 p.
Size - 25 cm.

मुख पृष्ठ 2

International Conference on Acoustic Sensing and Imaging, London, 29- 30 March 1993

IEE

LONDON

1993

OTHER INFORMATION

Call No. - 534.2 INT

ACC No. - 34621

Pages - xii, 340

Size - 24 cm.

ISBN - 08-52967-553

मुख पृष्ठ 3

International Conference on Clean Electronics : Products and Technology, 9 - 11th October, 1995 at Edinburgh

INSTITUTE OF ELECTRONIC ENGINEERS

LONDON

1995

OTHER INFORMATION

Call No. - 621.38 INT

ACC No. - 24612

Pages - x, 341 p.

Size - 24 cm.

ISBN - 08-52966-512

मुख पृष्ठ 4

International Conference on Translation and the Computer London, November 1998

PROCEEDINGS
ASLIB
LONDON
1999

OTHER INFORMATION

Call No. - 025.51 INT
ACC No. - 43216
Pages - ix, 249 p.
Size - 24 cm.
ISBN - 0-453-24961

मुख पृष्ठ 5

ANCIENT ARCHITECTURE

XXV Annual Conference of the Society of Architectural Historians, India.
10 - 14 January 2010

EDITED BY
PROF. P.N. CHAUBEY

INDIAN SOCIETY FOR ARCHITECTURAL HISTORIANS,
NEW DELHI
2010

OTHER INFORMATION

Call No. - 720.214 ANN
ACC No. - 24613
Pages - 210 p.

Size - 22 cm.
ISBN - 18-64996-471 (pbk)

मुख पृष्ठ 6

Algebra Structures and Appl'-ations

Proceedings of the First Western Australian Conference on Algebra, Australia, 1980

Edited
by
Phillip Scgultz
Cheryl E. Prageger
And
Robert P. Sullivan

New York
Marcel - Dekker
1928

OTHER INFORMATION

Call No. - 512 WES
ACC No. - 763847
Pages - vii, 416 p.
Size - 23 cm.

मुख पृष्ठ 7

Distance Education for 21st Century

16th World Conference of the International Council for Distance Education, Thailand, November 1992

Edited by

Bruce Scriven

Roy Lundin

And

Yoni Ryan

Norway

ICDE

1993

OTHER INFORMATION

Call No.	-	378.03 WOR
ACC No.	-	342532
Pages	-	xii, 349 p.
Size	-	24 cm.

8.6 विस्तृत अध्ययन हेते ग्रन्थ सूची

1. IGNOU : A.A.C.R.-2 Rev.- Part 2 (BLIS Course Material).
2. Joint Steering Committee for Revision of A.A.C.R.-2nd rev. ed., 1998. Edited by Michael Gorman and Paul W. Winkler, Ottawa, Canadian Library Association, 1998.
3. गौतम, जे.एन. एवं निरन्जन सिंह : एडवान्स कैटलागिंग, आगरा, वाई.के. पब्लिशर्स, 1998
4. सूद, एस.पी. : क्रियात्मक सूचीकरण ए.ए.सी.आर. -2, जयपुर, राज पब्लिशिग हाउस, 2002
5. वर्मा, ए.के. : प्रयोगात्मक ए.ए.सी. आर.-2, रामपुर, सेन्ट्रल बुक हाउस 1998.

इकाई -9 :सामान्य सावधिक प्रकाशनों का सूचीकरण (Cataloguing of Simple Periodical Publications)

इकाई की रूपरेखा

9.0 उद्देश्य

9.1 सावधिक प्रकाशनों से तात्पर्य

9.2 मुख्य संलेख की संरचना

9.3 इतर संलेखों की संरचना

9.4 सूचीकृत उदाहरण

9.5 अभ्यास हेतु मुख पृष्ठ

9.6 विस्तृत अध्ययन हेतु ग्रन्थ सूची

9.0 उद्देश्य

इस इकाई के निम्नलिखित उद्देश्य है -

1. सावधिक प्रकाशन का अर्थ समझाना एवं उसे परिभाषित करना,
2. ए.ए.सी.आर.-2 संशोधित के अनुसार सावधिक प्रकाशन के मुख्य संलेख एवं इतर संलेखों की संरचना से शिक्षार्थियों को परिचित कराना,
3. सावधिक प्रकाशनों के सूचीकरण में आने वाली जटिलताओं एवं उनके समाधान हेतु शिक्षार्थियों को अवगत कराना ।

9.1 सावधिक प्रकाशनों से तात्पर्य

सावधिक प्रकाशन से तात्पर्य ऐसे प्रकाशन से है जो नियमित रूप से निश्चित समय अन्तराल पर विशिष्ट अंक संख्या सहित क्रमिक रूप से प्रकाशित होता है। आधुनिक युग में दिन-प्रतिदिन के अनुसंधानों से सम्बन्धित सूचना सामग्री प्रायः सावधिक प्रकाशनों (Periodical publications) तथा क्रमिक प्रकाशनों (Serial publications) में शीघ्रता से प्राप्त की जा सकती है। इस प्रकार किसी निश्चित विषय पर शोध को आगे बढ़ाने हेतु सावधिक प्रकाशनों के सहायता से प्राथमिक स्तर की सूचना (First Hand Information) प्राप्त की जाती है। सावधिक प्रकाशनों को निम्नवत परिभाषित किया जा सकता है।

AACR-2 R के अनुसार "एक क्रमिक जो अनिश्चित काल तथा नियमित अथवा निश्चित अन्तराल, सामान्यतयाः एक वर्ष में एक बार या एक से अधिक बार, के पश्चात प्रकाशित होता है। सामान्यतया इसके प्रत्येक अंक में पृथक पृथक लेख, कहानियाँ अथवा अन्य रचनाएं दी हुई होती हैं।"

सी.सी.सी. के अनुसार "ऐसे सावधिक प्रकाशन को सामयिकी कहा जाता है जिसका प्रत्येक खण्ड सामान्यतया दो या अधिक व्यक्तिगत लेखों के स्वतंत्र अंशदानों का बना हों, जिसमें सामान्यतया उसके क्रमिक खण्डों में विशिष्ट विषय और अंशदान देने वाले लेखक भी भिन्न हों, परन्तु सभी विषय ज्ञान के क्षेत्र के अन्तर्गत आते हैं। यह अधिकतर पूर्ण खण्ड के रूप में प्रकाशित नहीं होता बल्कि यह आंशिक अथवा अंकों में प्रकाशित होता है।"

9.2 मुख्य संलेख की संरचना

सावधिक प्रकाशनों के मुख्य संलेख के निर्माण के सम्बन्ध में ए.ए.सी.आर.-2 संशोधित के नियम संख्या 12 के अन्तर्गत उल्लेख है। सावधिक प्रकाशन के प्रसूचीकरण हेतु मुख्य संलेख में निम्नलिखित अनुच्छेदों का उल्लेख है।

1. **वर्ग संख्या अनुच्छेद (Class Number Section)** - इस अनुच्छेद को बायें हाशिये में अग्र रेखा के ऊपर ग्रन्थ के मुख्य संलेख की भाँति ही अंकित किया जाता है।

2. **आख्या एवं दायित्व कथन अनुच्छेद (Title and Statement of Responsibility section)** - सावधिक प्रकाशनों के शीर्षक (Heading) का निर्माण उसके नाम से किया जाता है। ऐसी स्थिति में अग्र रेखा पर प्रथम उर्ध्व रेखा से यह अनुच्छेद प्रारम्भ होता है। उदाहरण स्वरूप -

Quarterly Review of Physics.

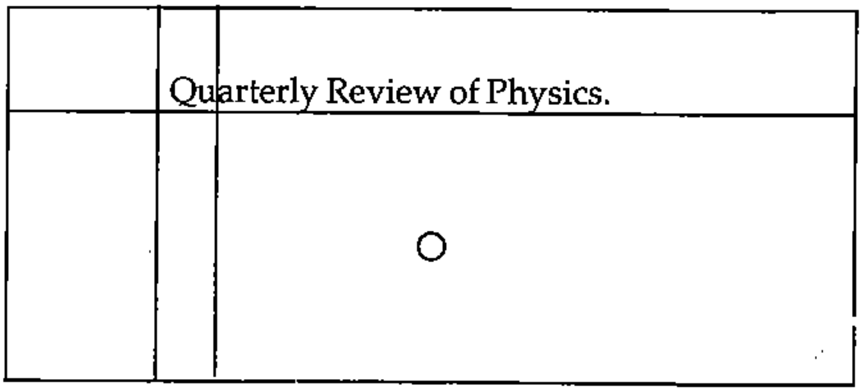

उसके पश्चात उत्तरदायित्व से सम्बन्धित व्यक्तियों अथवा निकायों को उपकल्पित किया जाता है।

उदाहरण -

Quarterly Review of Physics
by
Indian Physics Association

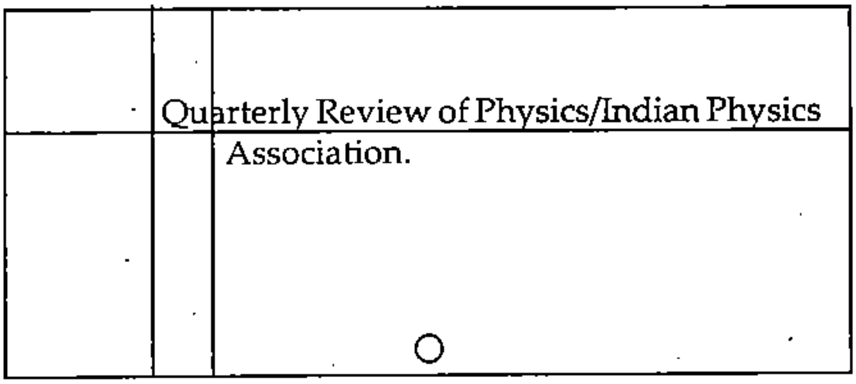

ए.ए.सी.आर.-2 संशोधित में नियमानुसार दायित्व कथन क्षेत्र में सावधिक प्रकाशन के सम्पादक का विवरण नहीं दिया जाता है। परन्तु यदि सम्पादक का विवरण दिया जाना सूचीकार द्वारा आवश्यक समझा जाता है तो नियमानुसार उसे टिप्पणी अनुच्छेद (Note Section)में अंकित करते है।

3. **संस्करण अनुच्छेद (Edition Section)** - आख्या एवं दायित्व कथन विवरण के पश्चात space dot dash space (.-) लगाकर संस्करण विवरण अंकित करते हैं। साधारणतः सावधिक प्रकाशनों में संस्करण विवरण बहुत कम देखने को मिलता है।

4. **आंकिक और / अथवा आनुवर्णिक, कालानुक्रम अन्य पदनाम अनुच्छेद (Numeric and/or Alphabetic, chronological or other designation Section)**- संस्करण अनुच्छेद के पश्चात (. -) लगाने के बाद सावधिक प्रकाशन के इस अनुच्छेद में विभिन्न सूचनाओं का नियम संख्या 12.3G1 के अनुसार निम्न प्रकार से अंकन किया जाता है।

उदाहरण -

Vol. 1, no.1 (Oct, 1944) - V.10, no. 12 (Sept, 1954)

5. **प्रकाशन, वितरण अनुच्छेद (Publication distribution section)** -

पूर्व वर्णित अनुच्छेद 4 के पश्चात (.-) लगाकर प्रकाशन स्थल का नाम तत्पश्चात कोलन (:) लगाकर प्रकाशक/वितरक का नाम कामा (,) प्रथम प्रकाशन वर्ष का उल्लेख कर डैश (-) लगाकर सावधिक प्रकाशन के बन्द होने के वर्ष का भी उल्लेख निम्नवत करते हैं-

उदाहरण -

New Delhi : Excellent Publications, 1944-1954.

टिप्पणी - अनुच्छेद 2 शीर्षक अग्र रेखा में प्रथम उर्ध्व रेखा से प्रारम्भ होकर पाँचवें अनुच्छेद प्रकाशन वितरण अनुच्छेद तक चारों अनुच्छेद एक ही पैराग्राफ में अंकित किये जाते हैं तथा इनके पंक्तियों की निरंतरता द्वितीय उर्ध्व रेखा (Second Indention) से की जाती है एवं एक अनुच्छेद को दूसरे अनुच्छेद से अलग करने के लिए विभाजक के रूप में (. --) का प्रयोग किया जाता है।

6. भौतिक विवरण अनुच्छेद (Physical description section)

पाँचवें अनुच्छेद की समाप्ति के पश्चात अगली पंक्ति पर द्वितीय ऊर्ध्व रेखा (Second indention)से यह अनुच्छेद प्रारम्भ होता है।सावधिक प्रकाशन के भौतिक स्वरूप से सम्बन्धित विभिन्न प्रकार की सूचनाओं को निम्न प्रकार से इस अनुच्छेद में वर्णित करते हैं।

उदाहरण -

52 v.
266.:ill. (some col)
8 poster : b & w
28 v. : ill.; 25 cm.
V:ill.;21cm + slides
80 v. : ill; 25 cm + 21 maps (col.; 66 x 90 cm)

7. ग्रन्थमाला अनुच्छेद (Series Section)

भौतिक विवरण अनुच्छेद के पश्चात (. -) लगाकर यह अनुच्छेद गोल कोष्ठक के अन्तर्गत पुस्तक के समान ही लिखा जाता है । सामान्यतः सावधिक प्रकाशनों में ग्रन्थमाला का उल्लेख कम ही देखने को मिलता है।

उदाहरण -

(Medical Aids Publication Series; no. 16)

8. टिप्पणी अनुच्छेद (Note Section)

A.A.C.R.-2 संशोधित के नियमानुसार निम्न प्रकार की सूचनाएं आवश्यकतानुसार टिप्पणी अनुच्छेद में अंकित किया जाता है।

उदाहरण -

अ. आवधिक टिप्पणी (Frequency note):

Monthly
Bimonthly
Quarterly
Half Yearly
Irregular

ब. **भाषा टिप्पणी (Language note):**

Text in German and English

Text in Hindi and English

स. **विशिष्ट आख्या का श्रोत टिप्पणी (Source of title proper note)**

Title from cover

Title from caption

Title from editorial pages

द. **अन्य सावधिक प्रकाशनों के साथ सम्बन्ध टिप्पणी (Relationship with other periodical note)**

द-1 **निरंतरता हेतु (For continuation)**

उदाहरणः-

Continues : Quarterly Journal of Botany

निरंतरता द्वारा (Continued by)

उदाहरण :-

Continued by : Journal of Botany

द-2 **विलय (Merger)**

जब दो या दो से अधिक सावधिक प्रकाशनों का आपस में विलय होता है तो टिप्पणी अनुच्छेद में उसकी सूचना को निम्न प्रकार से अंकित करते हैं।

Merged with : Annals of Library Science, Faces of Library Science and New Trends in Library Science

जब उपरोक्त तीनों सावधिक प्रकाशन आपस में मिल गये तो विलयन के पश्चात एक सावधिक प्रकाशन के मुख्य संलेख के टिप्पणी अनुच्छेद में इस बात का उल्लेख किया जाता है कि यह नया सावधिक प्रकाशन उपरोक्त तीनों सावधिक प्रकाशनों के विलयन के परिणाम स्वरूप बना।

उदाहरण

Merger of : Annals of Library Science, Faces of Library Science and New Trends in Library Science.

द-3 **विभाजन (Spilit)**

यदि कोई सावधिक प्रकाशन दो या दो से अधिक भागों में विभाजित होता है तो टिप्पणी क्षेत्र में उसका उल्लेख निम्नवत करते हैं।

उदाहरण -

Spilit into : Journal of Radio Engineering and Journal of

T.V. Engineering.

जब इन दोनों सावधि प्रकाशनों का अलग अलग मुख्य संलेख बनाएंगे तो टिप्पणी क्षेत्र में निम्नवत लिखेंगे।

उदाहरण -

Seprated from : Journal of Radio and T.V. Engineering

द-4 शीर्षक परिवर्तन टिप्पणी

जब कोई सावधिक प्रकाशन एक नाम से कुछ वर्ष प्रकाशित होने के पश्चात नये नाम से प्रकाशित होने लगता है तो पुराने नाम के मुख्य संलेख के टिप्पणी अनुच्छेद में नये नाम का उल्लेख निम्न प्रकार से करते हैं।

उदाहरण -

Continued by : Journal of Physiotherapy

नये नाम के सावधिक प्रकाशन के टिप्पणी अनुच्छेद में सावधिक प्रकाशन के पुराने नाम का उल्लेख निम्नवत किया जायेगा।

Continues : Physiotherapy Bulletin.

9. अन्तर्राष्ट्रीय मानक क्रमिक संख्या अनुच्छेद (International Standard Serial Number, Section)

टिप्पणी अनुच्छेद के पश्चात अगली पंक्ति पर द्वितीय उर्ध्व रेखा से ISSN अनुच्छेद का उल्लेख निम्नवत किया जाता है।

उदाहरण -

ISSN : 2229 - 3620

10. संकेत अनुच्छेद (Tracing Section)

इतर संलेखों हेतु आवश्यकतानुसार ग्रन्थ संलेख की भाँति ही पदों (Terms) का अंकन किया जाता है।

विद्यार्थियों की सुविधा की दृष्टि से उपरोक्त समस्त अनुच्छेदों का वर्णन निम्नवत सूची पत्रक पर और अधिक स्पष्टता के साथ समझा जा सकता है।

मुख्य संलेख की संरचना

(Structure of Main Entry)

Class No. Area		Title/Statement of Responsibility Area.-Edition
Acc.No.		Area.- Numeric and/or alphabetic chronological or other designation Area.- Publication Distribution Area. Physical description .- (Series area) Note Area ISSN Area Tracing O

9.3 इतर संलेखों की संरचना

A.A.C.R.-2 संशोधित में आधार पत्रक प्रणाली (Unit Card System) अपनाई गयी है। इसलिए इसके इतर संलेख को मुख्य संलेख की छायाकृति ही माना जा सकता है। ग्रन्थों के लिए इतर संलेखों की भाँति सावधिक प्रकाशनों के इतर संलेखों में भी मुख्य संलेख के दो अनुच्छेदों- क्रामक अंक अनुच्छेद (Class Number Section)एवं शीर्षक अनुच्छेद (Heading Section) में दी गई सूचना को ज्यों का त्यों लिखा जाता है तथा अग्र रेखा (Leading line) के नीचे द्वितीय उर्ध्व रेखा (Second Indention)से निर्देश सूचक पद (Directing Term) Rest as in the main entry सभी इतर संलेखों में अंकित किया जाता है। संकेत अनुच्छेद (Tracing section)में दी हुई सूचनाओं के लिए जिन इतर संलेखों का निर्माण किया जाना है उन्हें शीर्षक अनुच्छेद (Heading Section) के ऊपर द्वितीय उर्ध्व रेखा (Second indention)से प्रारम्भ करते है। जैसें -

विषय शीर्षक (Subject heading),प्रायोजक निकाय (Sponsoring body) आदि।

उदाहरण स्वरूप -

विषय शीर्षक इतर संलेख (Subject heading added entry)

		ZOOLOGY - PERIODICALS.
591	Indi	an Journal of Zoology
		Rest as in the main entry O

9.4 सूचीकृत उदाहरण (Catalogued Examples)

उदाहरण - 1

Journal of Arthopoda

sponsored by American Entomological Society

Vol. 1, No.1 July 1980

Editor

Terry Evans

Philadelphia

American Entomological Society

1980

<u>Other Information:</u>

Class No.	-	595.2
Size	-	26 cm

Note:
- First Issue Published : 1980
- Frequency : Quaterly
- One volume completed in one noncalandar year
- Library has full set of Journal except vol. 3 and 5
- Terry Evans has edited this journal from its inception.

मुख्य संलेख - (Main Entry)

595.2 Journal of Arthopoda/Sponsored by American
Entomological Society.-Vol.1, no.1 (July-
1980) - .-- Philadelphia: American Entomo-
logical Society, 1980-
... v; 26cm.
Editor : Ferry Evans.
Library set lacks v. 3 and 5.

1. Arthopoda-Periodical. I American Entomolo-
gical Society II. Evans, Terry

○

विषय शीर्षक इतर संलेख - (Subject Heading Added entry)

ARTHOPODA - PERIODICAL

595.2 Journal of Arthopoda
Rest as in the main Entry.

○

प्रायोजक इतर संलेख - (Sponser Added Entry)

American Entomological Society.

595.2 Journal of Arthopoda
Rest as in the main entry.

○

सम्पादक इतर संलेख - (Editor Added Entry)

		Evans, Terry
595.2	Journal of Arthopoda	
		Rest as in the main entry.

महत्वपूर्ण बातें -

1. मुख्य संलेख के शीर्षक (Heading) का निर्माण ए.ए.सी.आर.-2 संशोधित के नियम सं.21.1C1 के अनुसार उसकी आख्या (Title) के अन्तर्गत बनाया गया है तथा निरन्तरता द्वितीय उर्ध्व रेखा (IInd Indention)से की गई है। नियम सं. 12.1F2 के अनुसार दायित्व कथन प्रायोजित निकाय (Sponsoring Body)का उल्लेख किया गया है। नियम संख्या 12.3C4 के अनुसार संख्यात्मक एवं कालक्रम पद (Numeric and chronological term) दोनों का उल्लेख किया गया है। नियम संख्या 12.4F1 के अनुसार चूँकि सावधिक प्रकाशन प्रकाशित हो रहा है अतः प्रथम प्रकाशन वर्ष के पश्चात छोटी आड़ी रेखा (-) लगा कर चार अक्षर की जगह छोड़ी गयी है। मुख्य संलेख के भौतिक विवरण क्षेत्र में सावधिक प्रकाशन के प्रकाशनरत रहने के कारण नियम संख्या 12.5B1 के अनुसार तीन अक्षर की जगह छोड़कर Small v का अंकन किया गया है। नियम सं. 12.7B6 के अनुसार चूँकि सम्पादक सावधिक प्रकाशन से प्रारम्भ से ही जुड़ा है इसलिए संपादकीय नाम को टिप्पड़ी अनुच्छेद (Note Section)में अंकित किया गया है। अनुपलब्ध खण्डों की सूचना नियम संख्या 12.7B20 के अनुसार टिप्पड़ी अनुच्छेद में अंकित की गई है।

2. नियमानुसार, विषय शीर्षक इतर संलेख, प्रायोजक इतर संलेख एवं संपादक इतर संलेख का निर्माण किया गया है।

उदाहरण - 2

(सावधिक प्रकाशन - प्रायोजक निकाय का नाम सावधिक प्रकाशन की आख्या के साथ संलग्न)

Journal of
Indian Mathematical Association.

Vol.20, No.1 Jan-March, 2000

Published by
Indian Mathematical Association,
New Delhi, 1981

OTHER INFORMATION

Class No. - 510
size - 24 cm.
Note : 1. Frequency of the periodical is quarterly.
2. Library does not have vol. 12 and 16.
3. The periodical has ceased for publication in the year 2006.
4. First published : 1981.

मुख्य संलेख - (Main Entry)

510	Journal of Indian Mathematical Association.-Vol.1, no.1 (Jan.1981) -v.26(2006).– New Delhi: Indian Mathematical Association, 1981-2006. 26 v; 24 cm. Quarterly Library set locks vol.12 and 16. 1. Mathematics-Periodicals. I. Indian Mathematical Association. O

विषय शीर्षक इतर संलेख - (Subject Heading Added Entry)

		MATHEMATICS - PERIODICALS.
510		Journal of Indian Mathematical Association.
		Rest as in the main entry.

प्रायोजक इतर संलेख - (Sponser Added Entry)

		Indian Mathematical Association.
510		Journal of Indian Mathematical Association.
		Rest as in the main Entry.

महत्वपूर्ण बातें -

1. नियमानुसार संख्यात्मक एवं कालक्रम अनुच्छेद में सावधिक प्रकाशन बन्द होने का वर्ष एवं खण्ड संख्या दोनों का उल्लेख किया गया है।
2. प्रकाशन वितरण अनुच्छेद (Publication/Distribution Section) में सावधिक प्रकाशन प्रारम्भ होने का वर्ष (-) तथा बन्द होने का वर्ष दोनों का ही उल्लेख किया गया है।
3. भौतिक विवरण अनुच्छेद (Physical Description Section)में सावधिक प्रकाशन बन्द होने के खण्ड संख्या का उल्लेख किया गया है।
4. अन्य इतर संलेखों का उल्लेख नियमानुसार एवं आवश्यकतानुसार किया गया है।

उदाहरण - 3

(आवधिकता युक्त सावधिक प्रकाशन)

Quarterly Journal of Pediatric Surgery

(Sponsored by the Indian Society of Surgeons)

Vol.11 No.2 June 1996

Indian Society of Surgeons

Bangalore

OTHER INFORMATION

Class No. - 617.98

Size - 26 cm

Note: 1. First Published : 1986

2. It completes one volume in one calandar year

3. Library has vol. 4 onwards.

मुख्य संलेख (Main Entry)

617.98	Quarterly Journal of Pediatric Surgery/Sponsored by	
		the Indian Society of Surgeons. - vol.1, no.1 (Mar. 1986)- . - Bangalore : Indian Society of Surgeons, 1986 - ... v; 26 cm. Library set lacks vol.1-3 1. Pediatric Surgery -Periodical I. Indian society of Surgeons. ○

विषय शीर्षक इतर संलेख (Subject Heading Added Entry)

		PEDIATRIC SURGERY - PERIODICALS.
617.98	Quarterly Journal of Pediatric Surgery.	
		Rest as in the main entry. ○

प्रायोजक इतर संलेख (Sponsor Added Entry)

617.98		Indian Society of Surgeons. Quarterly Journal of Pediatric Surgery.
		Rest as in the main entry. O

महत्वपूर्ण बातें -

1. सावधिक प्रकाशन के नाम के साथ आवधिकता का बोध स्पष्ट हो रहा है। अतः टिप्पणी अनुच्छेद में आवधिकता (Frequency) का उल्लेख नियमानुसार नहीं किया गया है।
2. अन्य इतर संलेखों का निर्माण नियमानुसार किया गया है।

उदाहरण - 4

(प्रायोजक निकाय का नाम सावधिक प्रकाशन के साथ संलग्न नहीं)

Journal of Aerospace Engineering

Volume 17 Number 1 2004

Washington, DC
American Society of Aerospace Engineering

<u>OTHER INFORMATION</u>

Class No. - 629.105
Size - 22 cm
ISSN - 0893 - 1321

Note: 1. It is a quarterly journal started in 1988
2. Library has volume 3 onwards.

मुख्य संलेख (Main Entry)

629.105	Journal of Aerospace Engineering/American Society of Aerospace Engineering.-Vol.1, no.1 (1988)- . - Washington DC : American Society of Aerospace Engineering, 1988 - ... v.; 22 cm. Quarterly. Library set lacks vol.1-2. ISSN : 0893-1321 1. Aerospace Engineering-Periodical. I American Society of Aerospace Engineering.

विषय शीर्षक इतर संलेख (Subject Heading Added Entry)

	AEROSPACE ENGINEERING-PERIODICALS
629.105	Journal of Aerospace Engineering. Rest as in the main entry.

प्रयोजक इतर संलेख (Sponsor Added Entry)

	American Society of Aerospace Engineering
629.105	Journal of Aerospace Engineering. Rest as in the main entry.

महत्त्वपूर्ण बातें -

1. सावधिक प्रकाशन के दायित्व कथन का उल्लेख नियम संख्या - 12.1B एवं 12.F1 के अनुसार किया गया है।
2. अन्य इतर संलेख नियमानुसार बनाये गये हैं।

9.5 अभ्यास हेतु मुख पृष्ठ

मुख पृष्ठ - 1

American Journal of Business Research

Vol. 1 No.1 November 2008

Cary, NC
American Institute of Higher Education

OTHER INFORMATION

Class No.	-	659.14
First published in	-	2008
Frequency	-	Quarterly
ISSN	-	1934-6484
Holding	-	Library has all volumes

मुख पृष्ठ - 2

Internet Writing Journal

Volume 6 January 2002

WRITERS WRITE INC.
DALLAS

OTHER INFORMATION

Class No.	-	800
First issue published in-		1997
Frequency	-	monthly

Library has all volumes

मुख पृष्ठ - 3

(सावधिक प्रकाशन के साथ प्रायोजित निकाय)

Journal of Applied Geophysics

Volume 52 Number.1 2004

Sponsored by
International Association of Applied Geophysics

ELSEVIER SCIENCE
AMSTERDAM, NETHERLANDS

OTHER INFORMATION

Class No.	-	551.05
First issue published in-		1963
Frequency	-	8 / year
ISSN	-	0926-9851

मुख पृष्ठ - 4

Journal of Acoustic Emission

Vol. 23 Number 1 2004

ACOUSTIC EMISSION GROUP
ENCINO, CA

OTHER INFORMATION

Class No.	-	534.05
First issue published in-		1982
Frequency	-	4/year
ISSN	-	0730-0050

Library has volume 11 onwards.

Note: Periodical completes one volume in one non calandar year

मुख पृष्ठ - 5

National Economy Management and Planning

Vol. 20 Issue No.8 2002

CHINA PEOPLE'S UNIVERSITY
BEIJING

OTHER INFORMATION

Class No.	-	330
First issue published in	-	1983
Frequency	-	monthly
Library has volume 10 onwards		
ISSN	-	1005-4316

मुख पृष्ठ - 6

(आवधिकता युक्त सावधिक प्रकाशन)

Quarterly Journal of International Law

VOLUME 11 ISSUE 5 1996

Editor
Francis Ward

UNIVERSITY OF CHICAGO PRESS
CHICAGO

OTHER INFORMATION

Class No.	-	341
First published in	-	1986
library has volume 5 onwards		

Note: The Editor is associated with the journal from its beginning.

9.6 विस्तृत अध्ययन हेते ग्रन्थ सूची

1. IGNOU : A.A.C.R.-2 Rev.- Part 2 (BLIS Course Material).
2. Joint Steering Committee for Revision of A.A.C.R.-2nd rev. ed., 1998. Edited by Michael Gorman and Paul W. Winkler, Ottawa, Canadian Library Association, 1998.
3. गौतम, जे.एन. एवं निरन्जन सिंह : एडवान्स कैटलागिंग, आगरा, वाई.के. पब्लिशर्स, 1998
4. सूद, एस.पी. : क्रियात्मक सूचीकरण ए.ए.सी.आर. -2, जयपुर, राज पब्लिशिग हाउस, 2002
5. वर्मा, ए.के. : प्रयोगात्मक ए.ए.सी. आर.-2, रामपुर, सेन्ट्रल बुक हाउस, 1998.

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त
विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

BLIS-05
पुस्तकालय सूचीकरण प्रायोगिक

खण्ड-3

क्लासीफाइड कैटलाग कोड द्वारा सूचीकरण : भाग-एक

इकाई -10 5
क्लासीफाइड कैटलाग कोड का परिचय, संलेखों के प्रकार एवं संरचनां
(Introduction to Classified Catalogue Code, Types of Entries and their Structure)

इकाई -11 28
एक व्यक्तिगत लेखक द्वारा रचित पुस्तकों का सूचीकरण
(Cataloguing of Books by Single Personal Author)

इकाई -12 53
संयुक्त व्यक्तिगत लेखक द्वारा रचित पुस्तकों का सूचीकरण
(Cataloguing of Books by Joint Personnel Authors)

इकाई -13 80
छद्मनामधारी लेखकों द्वारा रचित पुस्तकों का सूचीकरण
(Cataloguing of Books by pseudonym authors)

इकाई -14 107
बहुखण्डीय ग्रन्थों का सूचीकरण
(Cataloguing of Multi-volumed Books)

खण्ड-3- : क्लासीफाइड कैटलॉग कोड द्वारा सूचीकरण : भाग-एक

प्रस्तावना -

प्रायोगिक सूचीकरण हेतु समय-समय पर विद्वानों द्वारा अनेक सूची संहिताओं का निर्माण किया गया है। सूचीकरण हेतु सूचना का मुख्य स्रोत वह ग्रन्थ या प्रलेख होता है जिसका सूचीकरण किया जा रहा है। प्रस्तुत खण्ड में डा. एस.आर.रंगनाथन कृत क्लासीफाइड कैटलॉग कोड के अनुसार ग्रन्थों के सूचीकरण हेतु चर्चा की जा रही है। यह खण्ड निम्नलिखित इकाइयों में विभक्त है :-

इकाई-10 क्लासीफाइड कैटलॉग कोड का परिचय, संलेखों के प्रकार एवं संरचना :- इस इकाई के अन्तर्गत क्लासीफाइड कैटलॉग कोड के ऐतिहासिक विकास क्रम के साथ परिचय, संलेखों के प्रकार, संलेखों की संरचना से उदाहरण सहित शिक्षार्थियों को अवगत कराया गया है।

इकाई-11 एक व्यक्तिगत लेखक द्वारा रचित पुस्तकों का सूचीकरण:- इस इकाई के अन्तर्गत व्यक्तिगत लेखक से तात्पर्य, एकल व्यक्तिगत लेखक द्वारा रचित पुस्तकों के शीर्षक का चयन एवं उपकल्पन सम्बन्धी नियमों का ज्ञान एवं उदाहरण के माध्यम से प्रविष्टियों का संरचना से शिक्षार्थियों को जानकारी प्रदान की गई है।

इकाई-12 संयुक्त व्यक्तिगत लेखक द्वारा रचित पुस्तकों का सूचीकरण:- इस इकाई के अन्तर्गत संयुक्त व्यक्तिगत लेखक से तात्पर्य, उनके प्रकार तथा उनकी रचनाओं के प्रायोगिक सूचीकरण हेतु नियमों से अवगत कराते हुए उदाहरण के माध्यम से शिक्षार्थियों को सिद्धहस्त बनाने का प्रयास किया गया है।

इकाई-13 छद्मनामधारी लेखकों द्वारा रचित पुस्तकों का सूचीकरण:- इस इकाई के अन्तर्गत छद्मनामधारी लेखक की अवधारणा, छद्मनामान्तर्गत रचित कृतियों को सूचीकृत करने के लिए क्लासीफाइड कैटलॉग कोड के नियमों एवं इस प्रकार की कृतियों को सूचीकृत करने हेतु विस्तार से चर्चा की गई है।

इकाई-14 बहुखण्डीय ग्रन्थों का सूचीकरण :- इस इकाई में बहुखण्डीय ग्रन्थ की परिभाषा, प्रकार एवं उनके सूचीकरण के नियमों से अवगत कराया गया है। सूचीकृत मुखपृष्ठ एवं अभ्यासार्थ मुखपृष्ठ भी दिये गये हैं। पाठ्यक्रम में पुस्तकों के आख्या पृष्ठ (Title Page) स्वनिर्मित हैं जिसका उद्देश्य शिक्षार्थियों को प्रायोगिक ज्ञान प्रदान करना है।

इकाई - 10: क्लासीफाइड कैटलॉग कोड का परिचय, संलेखों के प्रकार एवं संरचना (Introduction to classified catalogue code, types of Entries and their structure)

इकाई की रूपरेखा

10.0 उद्देश्य

10.1 क्लासीफाइड कैटलॉग कोड का परिचय

10.2 संलेखों के प्रकार

10.3 संलेखों की संरचना

10.3.1 मुख्य संलेख

10.3.2 इतर संलेख

10.4 विस्तृत अध्ययनार्थ ग्रन्थ सूची

10.0 उद्देश्य

इस इकाई के निम्नलिखित उद्देश्य है :

- क्लासीफाइड कैटलॉग कोड (Classified Catalogue Code) के ऐतिहासिक विकास क्रम से परिचित कराना,
- क्लासीफाइड कैटलॉग कोड के विभिन्न संलेखों की संरचना से अवगत कराना,
- सूचीकृत उदाहरण के माध्यम से क्लासीफाइड कैटलाग के विभिन्न संलेखों का बोध कराना।

10.1 क्लासीफाइड कैटलॉग कोड का परिचय

क्लासीफाइड कैटलॉग कोड की संरचना भारतीय पुस्तकालय विज्ञान मनीषी डॉ. एस.आर.रंगनाथन के द्वारा की गयी है। यदि इसके ऐतिहासिक यात्रा की ओर दृष्टिपात करें तो इसका प्रथम संस्करण सन 1934 में मद्रास लाइब्रेरी एसोशिएसन द्वारा प्रकाशित किया गया। उस समय यह कोड चार खण्डों में था ।इसका द्वितीय संस्करण 1938 में सूचीकरण के उपसूत्रों के अनुप्रयोग सहित प्रकाशित हुआ। इसी संस्करण में वर्ग संख्या (Class Number) से वर्ग निर्देश प्रविष्टि (Class Index Entry) के निर्माण हेतु शृंखला

प्रक्रिया (Chain procedure) का प्रयोग प्रारम्भ हुआ। इसका तीसरा संस्करण सन 1958 में प्रकाशित हुआ जिसमें संघ प्रसूची (Union Catalogue) तथा सामयिकी प्रकाशन के नियमों को सम्मिलित किया गया। इसका चतुर्थ संस्करण सन 1955 में अवतरित हुआ जिसमें राष्ट्रीय वांग्मय सूची (National Bibliography) निर्मित करने में आवश्यक नियमों का समावेश किया गया।

इस कैटलॉग कोड का पाँचवां (वर्तमान) संस्करण जो 1964 में अस्तित्व में आया, विभिन्न नवीन अध्यायों सहित प्रकाशित हुआ। इस संस्करण में 19 भाग है। इस संस्करण के प्रकाशन एवं संशोधन में श्री ए. नीलमेघन तत्कालीन रीडर डी.आर.टी.सी. बैंगलोर द्वारा डॉ. रंगनाथन को महत्वपूर्ण सहयोग प्रदान किया गया।

डॉ.रंगनाथन के अनुसार वर्गीकृत सूची (Classified Catalogue) से तात्पर्य ऐसी सूची से है जिसमें कुछ संलेख संख्या संलेख (number entry) तथा कुछ संलेख शब्द संलेख (Word entry) होते हैं। अतः वर्गीकृत सूची (Classified Catalogue) एक द्विभागीय सूची होती है। जो निम्नवत है -

क- वर्गीकृत भाग (Classified Part)

ख- अनुवर्ण भाग (Alphabetical part)

वर्गीकृत भाग मुख्य भाग होता है।इसमें संलेख वर्गीकृत क्रम (Classified order) से व्यवस्थित किये जाते है। अनुवर्ण भाग इसके पूरक (Supplement) के रूप में कार्य करता है जिसको अनुक्रमणिका (Index) की भी संज्ञा दे सकते हैं। इसमें संलेख अनुवर्ण क्रम (Alphabetical) में व्यवस्थित किये जाते हैं। इसका उपयोग मुख्य भाग (Classified part) से वाँछित सूचना प्राप्त करने के लिए भी किया जाता है।

10.2 संलेखों के प्रकार (Types of Entries)

क्लासीफाइड कैटलॉग कोड के अनुसार निर्मित किये जाने वाले संलेखों को दो भागों में विभाजित किया गया है जो निम्नवत है-

क- मुख्य संलेख (Main entry)

ख- इतर संलेख (Added entries)

उपरोक्त दोनों प्रकार के निर्मित संलेखों को निम्न तालिका से अधिक स्पष्ट किया जा सकता है।

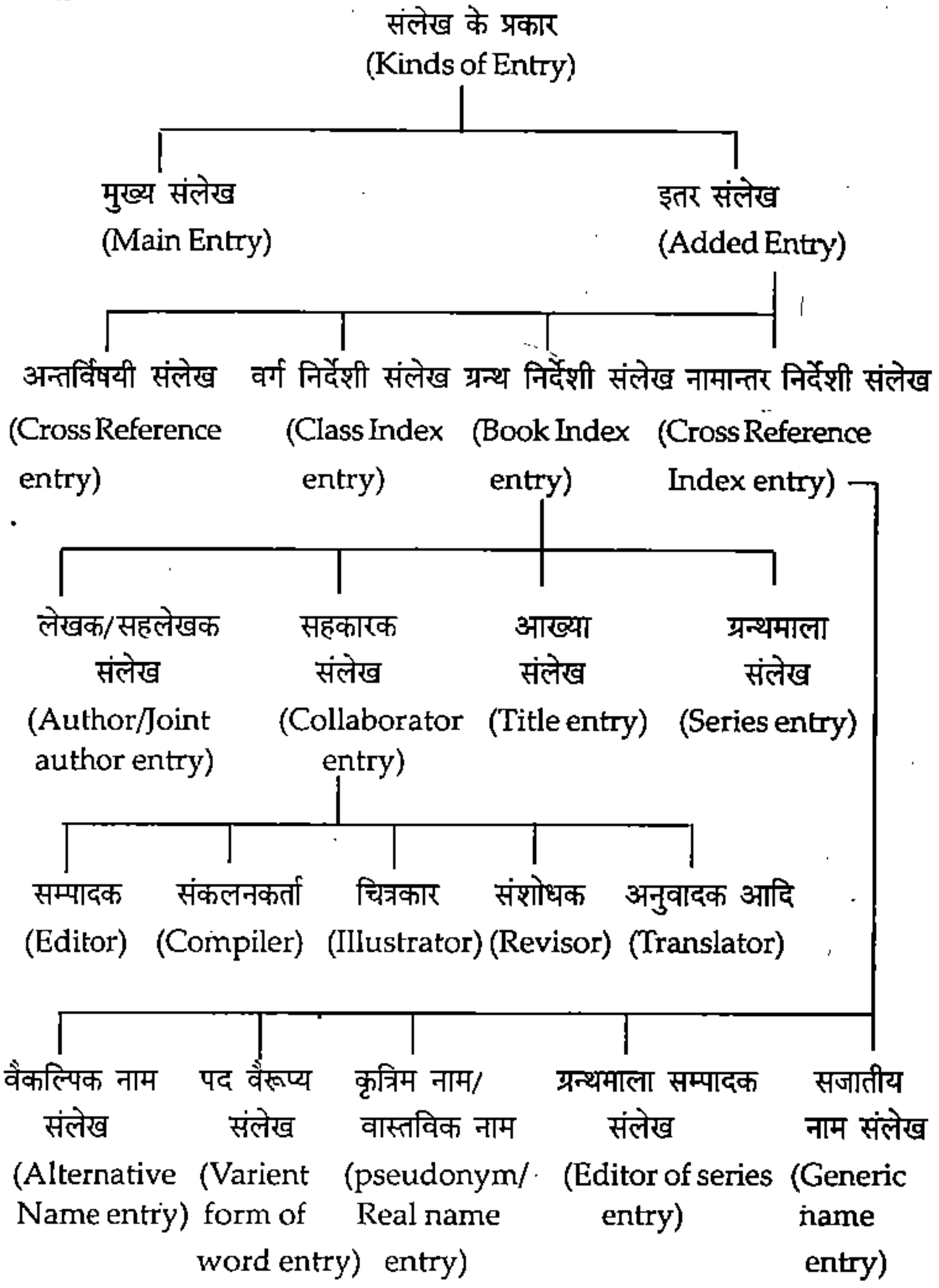

10.3 संलेखों की संरचना

क्लासीफाइड कैटलॉग कोड में ऊपर वर्णित प्रकार के संलेख होते हैं। अब इन संलेखों का अलग-अलग विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है।

10.3.1 मुख्य संलेख (Main entry)

क्लासीफाइड कैटलॉग कोड में मुख्य संलेख के अन्तर्गत ग्रन्थ से सम्बन्धित सभी महत्वपूर्ण सूचनाएं अंकित की जाती है। डॉ.रंगनाथन ने 'क्लासीफाइड कैटलॉग कोड में' मुख्य संलेख को निम्न प्रकार से परिभाषित किया है, "विशिष्ट विषय संलेख जो पूरे ग्रन्थ

के सम्बन्ध में अधिकतम सूचना प्रदान करता है, मुख्य संलेख (Main entry) के नाम से जाना जाता है। ग्रन्थ से सम्बन्धित अन्य सभी इतर संलेख (Added entry) सामान्यतया मुख्य संलेख से ही व्युत्पन्न (derived) होते हैं।"

सी.सी.सी. के नियम संख्या MBO के अनुसार मुख्य संलेख में निम्नानुसार अनुच्छेद होते हैं:-

1. अग्र अनुच्छेद (Leading Section)
2. शीर्षक अनुच्छेद (Heading Section)
3. आख्या अनुच्छेद (Title Section)
4. टिप्पणी अनुच्छेद (Note Section)
5. परिग्रहण संख्या अनुच्छेद (Accession number section)
6. संकेत अनुच्छेद (Tracing section)

उपरोक्त अनुच्छेदों में से प्रथम पाँच अनुच्छेद सूची पत्रक (Catalogue card) के अग्र भाग (Front portion)में क्रमानुसार अंकित किये जाते हैं। परन्तु छठां अनुच्छेद मुख्य संलेख सूची पत्रक के पृष्ठ भाग (Back of the main entry card)पर अंकित किया जाता है।

उपरोक्त वर्णित अनुच्छेदों का विस्तृत विवरण निम्नवत है।

1. **अग्र अनुच्छेद Leading Section)**- इस अनुच्छेद में ग्रन्थ का क्रामक अंक (Call Number) लिखा जाता है। इस सूचना को अग्र रेखा (Leading line) पर प्रथम ऊर्ध्व रेखा (First induction) से आरम्भ करते हुए पहले वर्ग संख्या (class Number)उसके पश्चात दो अक्षरों का स्थान छोड़कर ग्रन्थ संख्या (Book number) का उल्लेख करते हैं। इस सूचना को सदैव पेन्सिल से अंकित किया जाता है। इस अनुच्छेद को सूची पत्रक में निम्नवत अंकित किया जाता है।

क्रामक संख्या Y71 N95

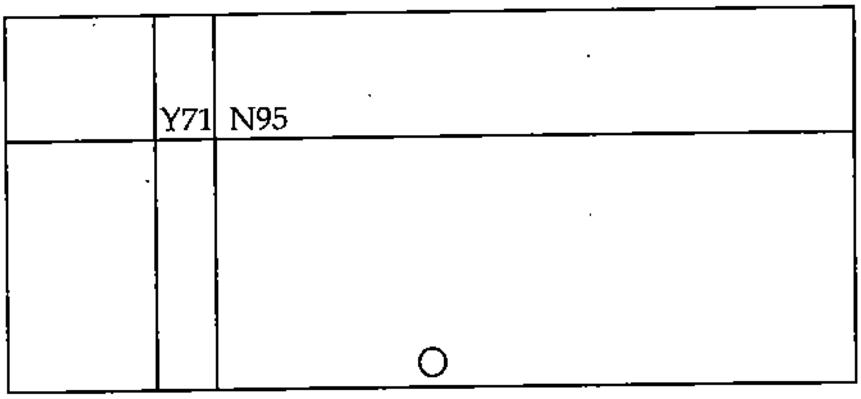

2. **शीर्षक अनुच्छेद (Heading Section)** - यह अनुच्छेद अग्र रेखा के बाद

वाली पंक्ति पर द्वितीय उर्ध्व रेखा (Second indention) से प्रारम्भ होता है। तथा सम्पूर्ण सूचना एक पंक्ति में नहीं आने की स्थिति में अनुवर्ती पंक्तियाँ (succeeding lines)प्रथम उर्ध्व रेखा (First indention) से प्रारम्भ होती है। इसमें सामान्यतः लेखक का नाम अंकित किया जाता है। लेखक के न होने पर नियमानुसार ग्रन्थ के सहकारक (Collaborator) का नाम अथवा ग्रन्थ की आख्या (Title) अंकित की जाती है। लेखक की सूचना को तीन भागों में विभाजित किया जाता है जो निम्नवत है:-

अ) प्रथम भाग में प्रविष्टि पद (entry element) के रूप में ग्रन्थकार या सहकारक का कुलनाम (Sir name) बड़े अक्षरों (Capital letters) में द्वितीय उर्ध्व रेखा (Second Indention) से अंकित किया जाता है।

ब) इसका दूसरा भाग गौण पद (Secondary elements)कहलाता है। इसमें मुख्यतः लेखक/सहकारक का प्रथम नाम (fore-name) वृत्ताकार कोष्टक (Circular bracket) में अंकित किया जाता है।

स) इसका तीसरा भाग व्यष्टिकारक पद (individualising element)कहलाता है इसमें लेखक /सहकारक के जन्म व मृत्यु वर्ष का विवरण अगले वृत्ताकार कोष्ठक (Circular bracket) में अंकित किया जाता है, तथा जन्म वर्ष और मृत्यु वर्ष को योजक चिह्न हाइफन (-) से जोड़ा जाता है।

आख्या पृष्ट पर इस अनुच्छेद से सम्बन्धित सूचना :

लेखक का नाम Vidya Dhar Mishra

लेखक का जन्म वर्ष 1948

इस सूचना को क्लासीफाइड कोड के अनुसार सूची पत्रक पर निम्नवत अंकित करते हैं।

	Y71	N 95
		MISHRA (Vidya Dhar) (1948 -)
		O

परन्तु यदि किसी ग्रन्थ में लेखक नहीं है अपितु किसी सहकारक की कोटि है ऐसी स्थिति में शीर्षक अनुच्छेद में सहकारक के नाम का उल्लेख करते हैं, तो उसके नाम के पश्चात कामा (,) संकेत चिह्न लगाकर सदैव विवरणात्मक तत्व (descriptive element) का उल्लेख करते हैं। विवरणात्मक तत्व को तिरछा (Italic) अथवा रेखांकित

(Underline) करते हैं। उदाहरणार्थ :-

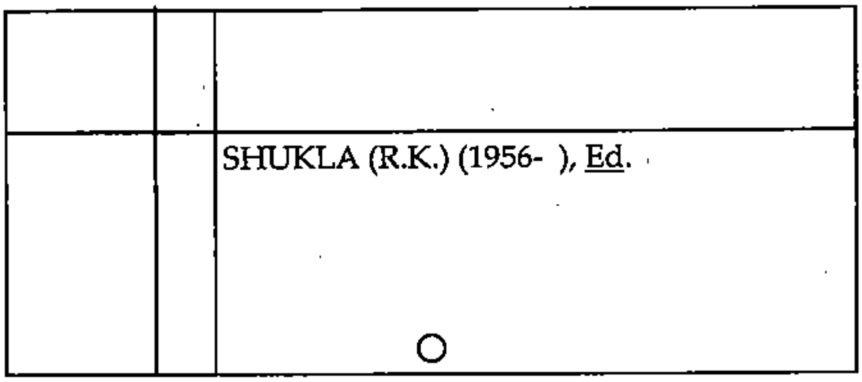

3. **आख्या अनुच्छेद (Title section)** - शीर्षक अनुच्छेद के समाप्ति के पश्चात् अगली पंक्ति पर द्वितीय उर्ध्व रेखा से यह अनुच्छेद प्रारम्भ होता है। इस अनुच्छेद के अन्तर्गत निम्न तीन सूचनाएं एक पैराग्राफ के अन्तर्गत ही तीन वाक्यों में दी जाती है। इस प्रकार अनुवर्ती पंक्तियाँ प्रथम उर्ध्व रेखा से वापस की जाती है।

अ) मुख्य आख्या (Main Title) - सबसे पहले ग्रन्थ की मुख्य आख्या का उल्लेख होता है और यदि मुख्य आख्या के पूर्व A, An या The है तो मुख्य आख्या को अंकित करते समय इन्हें हटा दिया जाता है।

अ.1 उपआख्या (Sub title)- मुख्य आख्या के बाद कोलन (:) संकेत चिह्न लगाकर उपआख्या का उल्लेख किया जाता है।

ब) संस्करण विवरण - मुख्य आख्या एवं उपआख्या के पश्चात पूर्ण विराम चिह्न लगाकर संस्करण विवरण निम्नवत् अंकित किया जाता है:-

आख्या पृष्ट पर सूचना	सूची पत्रक पर अभिकल्पन
3rd edition	Ed. 3
4th revised edition	Rev ed 4
New Edition	New ed

स) सहकारक विवरण (Collaborator Statement)- संस्करण विवरण के पश्चात् पूर्ण विराम लगाकर यदि कोई सहकारक (संपादक, अनुवादक, संकलनकर्ता, संशोधनकर्ता अथवा चित्रकार) है तो उसके नाम का उल्लेख निम्न प्रकार से करते हैं।

	Y71	N95
		MISHRA (Vidya Dhar) (1948 -) Book of prehistoric sociology : Archeological perspective. Ed 3. Ed by J N Pandey. O

यदि दो सहकारकों ने ग्रन्थ निर्माण में एक ही प्रकार का कार्य किया है तो दोनों सहकारकों का नाम 'and' से जोड़ते हैं :

उदाहरण - Ed by T P Shukla and S R Tripathi

यदि किसी ग्रन्थ की रचना में एक से अधिक कोटि के सहकारकों का योगदान है तो आख्या अनुच्छेद में संस्करण विवरण के बाद पहले सह कारक का उल्लेख कर पूर्ण विराम (.) लगाते हैं। उसके पश्चात् दूसरे सहकारक का नाम उसके पद के साथ अंकित करते हैं।

उदाहरण - Ed by S N Mishra. Tr by C K. Singh.

निम्नानुसार मुख्य संलेख के आख्या अनुच्छेद में सूचनाओं को अंकित किया जाता है।

	Y71	N95
		MISHRA (Vidya Dhar) (1948 -). Book of prehistoric Sociology: Archeological Perspective. Ed 3. Ed by T P Shukla and S R Tripathi. Tr by C K Singh. O

4 **टिप्पणी अनुच्छेद (Note section)-**

सूची पत्रक पर आख्या अनुच्छेद जिस पंक्ति पर समाप्त होता है उसकी अगली पंक्ति पर द्वितीय उर्ध्व रेखा से टिप्पड़ी अनुच्छेद प्रारम्भ होता है। यदि इस अनुच्छेद की सूचनायें एक पंक्ति पर समाहित नहीं होती तो अनुवर्ती सूचना प्रथम उर्ध्व रेखा से प्रारम्भ होती है।

सी.सी.सी. के नियमानुसार टिप्पड़ी निम्नानुसार छः प्रकार की हो सकती हैं :-

(i) ग्रन्थमाला टिप्पड़ी (Series Note)

(ii) बहु-ग्रन्थमाला टिप्पणी (Multiple Series Note)

(iii) उदगृहीत टिप्पणी (Extract Note)

(iv) आख्या परिवर्तन टिप्पड़ी (Change of Title Note)

(v) उद्ग्रहण टिप्पणी (Extraction of Note)

(vi) सम्बद्ध ग्रन्थ टिप्पणी (Associated Book Note)

उपरोक्त टिप्पड़ियों में से संलेख निर्माण में ग्रन्थमाला टिप्पणी का ही सर्वाधिक प्रयोग होता है। अतः यहाँ ग्रन्थमाला टिप्पणी के सम्बन्ध में ही चर्चा प्रासंगिक है।

ग्रन्थमाला टिप्पड़ी में सूचना के तीन भाग हो सकते हैं -

(अ) ग्रन्थमाला का नाम (Name of Series)

(ब) ग्रन्थमाला का सम्पादक (Editor of Series)

(स) ग्रन्थमाला की संख्या (Number of Series)

उपरोक्त तीनों भागों को सूची पत्रक में इसी क्रम में वृत्ताकार कोष्ठक (Circular Brakcet)में अंकित किया जाता है तथा प्रत्येक भाग के पूर्ण होने के बाद पूर्ण विराम (.) का प्रयोग किया जाता है। यदि ग्रन्थमाला के नाम से पूर्व प्रारम्भिक आर्टिकल्स (Initial Articles)- A, An, The को प्रयोग है तो ग्रन्थमाला का उल्लेख करते समय इसका प्रयोग नहीं करते। यदि किसी ग्रन्थ में दो या दो से अधिक ग्रन्थमाला टिप्पड़ियाँ दी गई हैं तो उनको अलग अलग कोष्ठकों में द्वितीय उर्ध्व रेखा से अंकित किया जाता है।

उपरोक्त सूचनाओं को नियमानुसार मुख्य संलेख के टिप्पड़ी अनुच्छेद में निम्नवत अंकित करते हैं -

	Y71	N95
		MISHRA (Vidya Sagar) (1948 -). Book of Prehistoric sociology: Archeological perspective. Ed 3. Ed by J N Pandey. (New Book in History Series. Ed by Rita Verma.6).

5. परिग्रहण संख्या अनुच्छेद (Accession Number Section) :

परिग्रहण संख्या ग्रन्थ के आख्या पृष्ठ (Title page) के पश्च भाग (Back of the Title page) पर परिग्रहणकर्ता (Accessioner) द्वारा अंकित की जाती है। परिग्रहण संख्या सूची पत्रक के अग्रभाग का अन्तिम अनुच्छेद है, जिसे सूची पत्रक के अन्तिम लाइन पर प्रथम उर्ध्व रेखा से प्रारम्भ कर लिखा जाता है तथा अन्त में पूर्ण विराम (.) नहीं दिया जाता। परिग्रहण संख्या का उल्लेख केवल मुख्य संलेख में ही किया जाता है।

नियमानुसार परिग्रहण संख्या अनुच्छेद में इस सूचना को निम्नवत अंकित करते हैं -

	Y71	N95
		MISHRA (Vidya Sagar) (1948 -)
		Book of Prehistoric Sociology : Archeological
	Pers	pective. Ed 3. Ed by J N Pandey.
		(New Book in History Series. Ed by Rita Verma.
	6).	
	8926	
		O

6. संकेत अनुच्छेद (Tracing Section)

यह अनुच्छेद सूची पत्रक के मुख्य संलेख (Main Entry) के पश्च भाग (Back portion)पर अंकित किया जाता है। मुख्य संलेख से सम्बन्धित इतर संलेखों (Added Entries) की सूचना इस अनुच्छेद में वर्णित की जाती है।

सर्वप्रथम मुख्य संलेख निर्मित सूची पत्रक के पश्च भाग को काल्पनिक रूप से दो भागों में विभाजित किया जाता है जिन्हें दायें व बाँये भाग (Right and Left Part) के नाम से जाना जाता है।

बाँये भाग में ग्रन्थ से सम्बन्धित अन्तर्विषयी संलेखों (Cross Reference Entries - CRE) के वर्गांक अंकित किये जाते हैं और उनके समक्ष 'P' (पृष्ठ),Part (भाग), Chap (अध्याय), Sec (अनुच्छेद)शब्द लिखकर सम्बन्धित संख्यायें अंकित की जाती हैं। प्रत्येक संलेख के लिए एक रेखा का प्रयोग किया जाता है। इनको वर्गीकृत क्रम में अंकित किया जाता है।

दाँये भाग को पुनः काल्पनिक रूप से तीन भागों में विभाजित किया जाता है जिन्हें क्रमशः दाँया ऊपरी भाग (Right Upper Part), दाँया मध्य भाग (Right

Middle Part),एवं दॉया निम्न भाग (Right Lower Part) के नाम से अभिहित किया जाता है। ऊपरी भाग में वर्ग निर्देशी संलेख (Class Index Entry - CIE), मध्य भाग में ग्रन्थ निर्देशी संलेख (Book Index Entry - BIE) तथा सबसे नीचे के भाग में नामांतर निर्देशी संलेख (Cross Reference Index Entry- CRIE)के शीर्षक (Heading) अंकित किये जाते हैं। वर्ग निर्देशी संलेख (Class Index Entry) का अनुक्रम अंतिम खोज कड़ी होता है। ग्रन्थ निर्देशी संलेख (Book Index Entry) का अनुक्रम लेखक संलेख, सहकारक संलेख, आख्या संलेख एवं ग्रन्थमाला संलेख होता है।

संकेत अनुच्छेद के सभी 'शब्द अथवा पद' (Word or Term)व्याकरण के नियमानुसार सामान्य लेखन शैली में ही अंकित किये जाते हैं। यदि एक पंक्ति में किसी शीर्षक को समाहित न किया जा सकता हो तो उसकी अनुवर्ती पंक्तियाँ दो अक्षर की जगह छोड़कर लिखी जाती हैं।

निम्न प्रारूप के आलोक में संकेत अनुच्छेद को अधिक स्पष्ट किया जा सकता है -

<table>
<tr><td rowspan="3">Cross Reference
Entry (CRE)</td><td>Class Index Entry
(CIE)</td></tr>
<tr><td>Book Index Entry
(BIE)</td></tr>
<tr><td>Cross Reference Index Entry
(CRIE)</td></tr>
</table>

सतत् पत्रक (Continuation Card)

संकेत अनुच्छेद (Tracing Section) की सूचना मुख्य संलेख के पश्च भाग पर स्थान कम होने की अवस्था में आवश्यकतानुसार नवीन सतत् पत्रक (Continuation Card)के अग्रभाग पर इस अनुच्छेद की शेष सूचना अंकित की जाती है। सतत् पत्रक की अग्ररेखा (Leading Line) पर प्रथम उर्ध्व रेखा से ग्रन्थ की क्रामक संख्या का उल्लेख किया जाता है।

निम्न प्रारूप के माध्यम से सतत् पत्रक को अधिक स्पष्ट किया जा सकता है।

सतत् पत्रक (Continuation Card)

Cros Reference Entry	Class Index Entry Book Index Entry Continued in the next card

		Continued 2 Class No. Book No.
		Continuation of Book Index Entry Cross Reference Index Entr Continued on the back card ○

मुख्य संलेख (Main Entry) के सूची पत्रक (Catalogue Card) के पश्च भाग में उल्लिखित संकेत अनुच्छेद (Tracing Section) के सभी शीर्षकों के प्रयोग को निम्न उदाहरण के माध्यम से अधिक स्पष्ट किया जा सकता है।

उदाहरण

BOOK OF PREHISTORIC SOCIOLOGY

BY

Dr. Vidya Dhar Mishra

Third Edition

Edited by

Dr. J. N. Pandey

Roshani Publishers,

Varanasi, 1995

Other Information

Call No.	:	Y71 N95
Acc. No.	:	2712
H.T.P.	:	New Books in History Series 12. Edited by Dr. Indrani Verma.
Note	:	Page 220-310 are related with the subject stone Age with Class Numer Y 714 Author born in the year 1948.

मुख्य संलेख (Main Entry)

Sec 1→		Y71	N95
Sec 2→			MISHRA (Vidya Dhar) (1948 -)
Sec 3→			Book of Prehistoric Sociology. Ed 3. Ed by J N Pandey.
Sec 4→			(New Books in History Series. Ed by- Indrani Verma. 12).
Sec 5→		2712	O

संकेत (Tracing)

Section-6 - Tracing Section:

C R E	Y714 P220-310	Prehistoric, Sociology Sociology. Stone Age, Prehistoric,	C I E
		Mishra (Vidya Dhar) (1948-) Pandey (J N), <u>Ed</u>. New Books in History Series.	B I E
		Verma (Indrani), <u>Ed</u>.	C R I E

10.3.2 इतर संलेख (Added Entries)

पाठकों के पुस्तक माँग की विभिन्न अभिगमों (Approaches) की पूर्ति हेतु इतर संलेखों का निर्माण किया जाता है। सभी इतर संलेखों का उद्गम स्रोत मुख्य संलेख ही होता है। डॉ. रंगनाथन के अनुसार मुख्य संलेख के अतिरिक्त किसी ग्रन्थ के लिए निर्मित अन्य संलेख को इतर संलेख कहते हैं।

इतर संलेख (Added Entries) निम्न प्रकार के होते हैं -

1. अर्न्तविषयी संलेख (Cross Reference Entry - CRE)
2. वर्ग निर्देशी संलेख (Class Index Entry - CIE)
3. ग्रन्थ निर्देशी संलेख (Book Index Entry - BIE)
4. नामान्तर निर्देशी संलेख (Cross Reference Index Entry - CRIE)

10.3.2.1 अर्न्तविषयी संलेख (Cross Reference Entry)

डॉ.रंगनाथन के अनुसार, "अन्तर्विषयी संलेख अनुवर्ग सूची में विशिष्ट सहायक वर्गांक संलेख है । यह ग्रन्थ के अंश को वर्गांक से मुख्य ग्रन्थ में वर्णित विषय की ओर निर्देशित करती है। अंश संलेख होने के कारण अनुवर्ग सूची के वर्गीकृत भाग में इन्हें व्यवस्थित किया जाता है।"

क्लासीफाइड कैटलाग कोड के नियम संख्या MJ के अनुसार एक साधारण ग्रन्थ के इस संलेख में निम्नलिखित अनुच्छेद होते हैं -

1) अग्र अनुच्छेद (Leading Section)
2) निर्देशक अनुच्छेद (Directing Section)
3) मूल प्रलेख विवरण अनुच्छेद (Locus Section)
   - 3.1 मूल ग्रन्थ की क्रामक संख्या
   - 3.2 मूल ग्रन्थ के मुख्य संलेख के शीर्षक (Heading) का कुल नाम (Sir name)
   - 3.3 मूल ग्रन्थ की आख्या, संस्करण एवं प्राप्ति स्थल यथा - पृष्ठ, अध्याय, भाग अदि।

उदाहरण -

अर्न्तविषयी संलेख (Cross Reference Entry)

	Y714	
	P. 220-310	See also Y 71 N95 Mishra Book of Prehistoric Sociology. Ed 3. O

10.3.2.2 वर्ग निर्देशी संलेख (Class Index Entry)

इस संलेख के माध्यम से सामान्य विषय के द्वारा उसके वर्ग संख्या की ओर निर्दिष्ट किया जाता है। इस संलेख में ग्रन्थ की वर्ग संख्या प्राकृतिक भाषा में अनुवादित कर ग्रन्थ के विषय शीर्षक निकाले जाते हैं तथा उन विषय शीर्षकों को सूची पत्रक पर प्राकृतिक भाषा में लिखा जाता है। इसमें प्राकृतिक विषय को अग्र रेखा पर लिख उपयोगकर्ता को वर्गांक की ओर निर्दिष्ट किया जाता है। वर्गांक प्राप्त कर उपयोगकर्ता सूची के वर्गीकृत भाग में पहुँचकर उस विषय से सम्बन्धित सभी ग्रन्थों की सूचना एक साथ प्राप्त कर लेता है। वर्ग संख्या से सामान्य विषय (विषय शीर्षक) निकालने के लिए डॉ.रंगनाथन ने एक विधि का प्रतिपादन किया है जिसे शृंखला प्रक्रिया (Chain Procedure) कहते हैं। संक्षेप में इस विधि का निम्नवत उल्लेख है -

10.3.2.2.1 शृंखला प्रक्रिया (Chain Procedure)

डॉ. रंगनाथन के अनुसार "शृंखला प्रक्रिया किसी भी वर्गांक से विषय शीर्षक संलेख (Subject Heading Entry) निर्मित करने की एक लगभग यांत्रिक प्रक्रिया है" इस प्रक्रिया में विषय शीर्षक निकालने के लिए निम्नलिखित कड़ियाँ होती हैं -

1. मिथ्या कड़ी (False Link) - यह वह कड़ी है जो किसी योजक चिन्ह (Connecting Symbol), दशा सम्बन्ध (Phase Relation) प्रदर्शित करने वाले चिन्ह से समाप्त होती है या फिर काल पक्ष (Time Isolate) से किसी कड़ी का अन्त हो।

   उदाहरणार्थ -

   योजक चिन्ह - , ; : . ' - ( )

   दशा सम्बन्ध चिन्ह - जैसे Oa, ob, og आदि

   काल एकल - N 68, P04 आदि

2. DeKeepe ksdl er(Unsought link) - यह वह कड़ी होती है जिसके अन्तर्गत पाठ्य सामग्री उपयोगकर्ताओं द्वारा खोजे जाने की संभावना नहीं होती।

3. खोज कड़ी (Sought link) - उस कड़ी को कहते है जो न तो मिथ्या हो और न ही अखोज हो अर्थात् जिस कड़ी के माध्यम से उपयोगकर्ताओं द्वारा पाठ्य सामग्री खोजे जाने की संभावना हो।

शृंखला प्रक्रिया को अधिक स्पष्ट करने के लिए एक उदाहरण द्वारा इसी अध्याय के अन्तर्गत प्रस्तुत किया जायेगा।

10.3.2.2.2 संरचना (Structure)

वर्ग निर्देशी संलेख के निम्नवत् तीन अनुच्छेद होते हैं-

(1) अग्र अनुच्छेद (Leading Section)

(2) निर्देशक अनुच्छेद (Directing Section)

(3) निर्देशांक अनुच्छेद (Index Number Section)

(1) अग्र अनुच्छेद (Leading Section)

सूची पत्रक में अग्र रेखा (Leading Line) पर प्रथम उर्ध्व रेखा से वर्ग निर्देशी शीर्षक (Name of the class) को अंकित किया जाता है। यह शीर्षक बड़े अक्षरों (capital letters) में लिखा जाता है। यदि वर्ग निर्देशी शीर्षक एक पंक्ति में नहीं समायोजित हो पाता तो उसे अनुवर्ती पंक्तियों में प्रथम उर्ध्व रेखा से ही लिखा जाता है।

(2) निर्देशक अनुच्छेद (Directing Section)

अग्र अनुच्छेद की समाप्ति के पश्चात अगली पंक्ति पर द्वितीय उर्ध्व रेखा (Second Indention) से निम्न निर्देशक पद (Directing Term)का उल्लेख करते हैं -

For documents in ths Class and its Subdivisions, see the Classified Part of the catalogue under the Class Number

टिप्पड़ी - 1. उपरोक्त वर्णित निर्देशक पद सूची पत्रक में द्वितीय उर्ध्व रेखा से प्रारम्भ हो कर अनुवर्ती पंक्तियाँ प्रथम उर्ध्व रेखा से होती है।

2. निर्देशक पद में रेखांकित सात शब्द (Letters) बड़े अक्षर (Capital letters) के रूप में अंकित किये जाते हैं।

(3) निर्देशांक अनुच्छेद (Index Number Section)

इस अनुच्छेद में अग्र अनुच्छेद (leading section) में दिये गये शीर्षक को दर्शाने वाला निर्देशांक (Index Number)लिखा जाता है। जिस पंक्ति पर निर्देशक अनुच्छेद (Directing Section) समाप्त होता है उसी पर चार अक्षर का रिक्त स्थान

छोड़ कर सूची पत्रक के दायीं ओर निर्देशांक पेन्सिल से लिखा जाता है। यदि उस पंक्ति पर स्थान कम है तो वर्ग संख्या उससे अगली लाइन पर सूची पत्रक में दायीं ओर ही लिखते हैं तथा अनुच्छेद के अन्त में पूर्ण विराम (.) नहीं लगाते।

उदाहरण -

वर्ग निर्देशी संलेख (Class Index Entry)

PREHISTORIC, SOCIOLOGY

For documents in this Class and its Sub-divisions, see the Classified Part of the catalogue under the Class Number

Y71

SOCIOLOGY

For documents in this Class and its Sub-divisions, see the Classified Part of the catalogue under the Class Number

Y

STONE AGE, PREHISTORIC, SOCIOLOGY

For documents in this Class and its sub-division or see the Classified Part of the catalogue under the Class Number

Y714

10.3.2.3 ग्रन्थ निर्देशी संलेख (Book Index Entry)

उपयोगकर्ताओं की पाठ्य सामग्री मांग के विभिन्न अभिगमों (Approaches) की पूर्ति हेतु इस संलेख को निर्मित किया जाता है।

यह संलेख उपयोगकर्ता के जिस अभिगम की पूर्ति करता है वही उस संलेख का नाम माना जाता है।

क्लासीफाइड कैटलाग कोड में निम्नलिखित ग्रन्थ निर्देशी संलेख (Book Index Entry)बनाने का प्राविधान है -

(1) ग्रन्थकार ग्रन्थ निर्देशी संलेख (Author Book Index Entry)

(2) सह-ग्रन्थकार ग्रन्थ निर्देशी संलेख (Joint Author Book Index Entry)

(3) सहकारक ग्रन्थ निर्देशी संलेख (Collaborator Book Index Entry)

  3.1 सम्पादक ग्रन्थ निर्देशी संलेख (Editor Book Index Entry)

  3.2 अनुवादक ग्रन्थ निर्देशी संलेख (Translator Book Index Entry)

  3.3 संशोधक ग्रन्थ निर्देशी संलेख (Revisor Book Index Entry)

  3.4 चित्रकार ग्रन्थ निर्देशी संलेख (Illustrator Book Index Entry)

  3.5 संकलनकर्ता ग्रन्थ निर्देशी संलेख (Compiler Book Index Entry)

(4) आख्या ग्रन्थ निर्देशी संलेख (Title Book Index Entry)

(5) ग्रन्थमाला ग्रन्थ निर्देशी संलेख (Series Book Index Entry)

10.3.2.3.1 संरचना (Structure)

क्लासीफाइड कैटलाग कोड के नियम संख्या MKO के अनुसार ग्रन्थ निर्देशी संलेख में निम्न चार अनुच्छेद होते हैं-

(1) **अग्र अनुच्छेद (Leading Section)**- मुख्य संलेख में दी गई सूचना पर आधारित शीर्षक अग्ररेखा पर प्रथम उर्ध्व रेखा से लिखा जाता है तथा अनुवर्ती पंक्तियाँ भी प्रथम उर्ध्व रेखा से ही प्रारम्भ की जाती है। शीर्षक की समाप्ति पर पूर्ण विराम (.) लगाया जाता है।

(2) **द्वितीय अनुच्छेद (Second Section)** - जिस रेखा पर अग्र अनुच्छेद समाप्त होता है उसकी अगली पंक्ति पर द्वितीय उर्ध्व रेखा से यह अनुच्छेद प्रारम्भ होता है।

(3) **निर्देशांक अनुच्छेद (Index Number Section)**- जिस पंक्ति पर द्वितीय अनुच्छेद समाप्त होता है, यदि उसी पंक्ति पर स्थान शेष है तो चार अक्षरों का रिक्त स्थान खाली छोड़कर सूची पत्रक के दायीं ओर क्रामक संख्या (Call No.)लिखा जाता है अन्यथा उससे अगली पंक्ति पर पत्रक के दायीं ओर लिखते हैं।

(4) **टिप्पड़ी अनुच्छेद (Note Section)**- इस अनुच्छेद की आवश्यकता ग्रन्थ में सामान्यतः नहीं पड़ती है।

ग्रन्थ निर्देशी संलेख (Book Index Entry)के अन्तर्गत आने वाली उपरोक्त वर्णित संलेखों की संरचना निम्नवत है -

(1) ग्रन्थकार ग्रन्थ/निर्देशी संलेख (Author Book Index Entry)

इस संलेख में निम्न अनुच्छेदानुसार सूचनायें अंकित की जाती हैं -

(क) अग्र अनुच्छेद (Leading Section) - इस अनुच्छेद के अन्तर्गत सूची पत्रक के अग्र रेखा पर प्रथम उर्ध्व रेखा से मुख्य संलेख के शीर्षक अनुच्छेद (Heading Section) में अंकित सूचना को ज्यों का त्यों अंकित किया जाता है।

(ख) द्वितीय अनुच्छेद (Second Section)- जिस रेखा पर अग्र अनुच्छेद समाप्त होता है उसकी अगली पंक्ति पर द्वितीय उर्ध्व रेखा से ग्रंथ की संक्षिप्त आख्या उसके पश्चात पूर्ण विराम (.)लगा कर संस्करण विवरण का उल्लेख करते हैं। अंत में पूर्ण विराम लगाते है।

(ग) निर्देशांक अनुच्छेद (Index Number Section)- इस अनुच्छेद के अन्तर्गत ग्रन्थ की क्रामक संख्या (Call Number), द्वितीय अनुच्छेद की समाप्ति के पश्चात चार अक्षरों की दूरी पर दाहिनी ओर अंकित की जाती है। यदि द्वितीय अनुच्छेद की समाप्ति के पश्चात दाहिनी ओर पर्याप्त स्थान नहीं रहता तो क्रामक संख्या अनुवर्ती पंक्ति की दाहिनी ओर अंकित की जाती है।

उदाहरण -

ग्रन्थकार ग्रंथ निर्देशी संलेख

(Author Book Index Entry)

MISHRA (Vidya Dhar((1948 -).
Book of Prehistoric Sociology. Ed 3.
Y71 N95

2. सह-ग्रन्थकार ग्रन्थ निर्देशी संलेख (Joint Author Book Index Entry)

यह संलेख भी ग्रन्थकार निर्देशी संलेख की ही भाँति निर्मित किया जाता है। अन्तर मात्र इतना होता है कि एक लेखक के स्थान पर दो लेखक अथवा दो लेखक से अधिक होने की स्थिति में मुख्य संलेख के शीर्षक अनुच्छेद (Heading Section) में सहग्रन्थकार की सूचना जो दी गई होती है उसे ज्यों का त्यों सूची पत्रक में अग्र रेखा

पर प्रथम उर्ध्व रेखा से अंकित किया जाता है। अनुवर्ती पंक्तियाँ भी प्रथम रेखा से ही वापस की जाती है।

अन्य अनुच्छेद ग्रन्थकार निर्देशी संलेख की ही भाँति होते हैं।

3. **सहकारक ग्रन्थ निर्देशी संलेख (Collaborator Book Index Entry):**

इस कोटि के संलेख में भी उपरोक्तानुसार तीन अनुच्छेद होते हैं -

(क) अग्र अनुच्छेद (Leading Section)- इस अनुच्छेद के अन्तर्गत सूची पत्रक के अग्र रेखा पर प्रथम उर्ध्व रेखा (First Indention) से सहकारक (Collaborator) का नाम लेखक की भाँति 'विवरणात्मक पद' (Descriptive Term) सहित अंकित किया जाता है। विवरणात्मक पद को रेखांकित किया जाता है। एक से अधिक सहकारकों की स्थिति में उनका उपकल्पन भी सहलेखकों के समान क्रम परिवर्तन करके किया जाता है ऐसी स्थिति में दो सहकारक ग्रन्थ निर्देशी संलेख निर्मित किये जाते हैं।

(ख) द्वितीय अनुच्छेद (Second Section)- इस अनुच्छेद में मुख्य संलेख में प्रयुक्त लेखक का कुलनाम (Sirname) सामान्य भाषा में लिखने के पश्चात् कोलन (:) लगाते हैं। उसके पशचात् ग्रन्थ की आख्या (Title) का उल्लेख कर पूर्णविराम (.) अंकित करते हैं। तत्पश्चात् यदि ग्रन्थ का संस्करण विवरण है तो उसका उल्लेख कर अंत में पूर्ण विराम (.) का प्रयोग करते हैं।

(ग) निर्देशांक अनुच्छेद (Index Number Section) - इस अनुच्छेद में दी जाने वाली सूचना ग्रन्थकार निर्देशी संलेख (Author Index Entry) की ही भाँति होती है।

उदाहरण - संपादक ग्रन्थ निर्देशी संलेख
(Editor Book Index Entry)

	PANDEY (J N), <u>Ed</u>.
	Mishra : Book of Prehistoric Sociology. Ed 3.
	Y71 N95
	O

(4) आख्या ग्रन्थ निर्देशी संलेख (Title Book Index Entry)

क्लासीफाइड कैटलॉग कोड के नियमानुसार प्रत्येक ग्रन्थ के लिए 'आख्या निर्देशी संलेख (Title Index Entry) का निर्माण नहीं किया जाता। जब आख्या

(Title) अलंकारिक होती है अर्थात ग्रन्थ की आख्या से जब उसके वास्तविक विषय का बोध न हो ऐसी स्थिति में आख्या निर्देशी संलेख निर्मित की जाती है, अन्यथा नहीं। आख्या निर्देशी संलेख के भी तीन अनुच्छेद होते हैं -

(क) अग्र अनुच्छेद (Leading Section) - सूची पत्रक में अग्र रेखा (Leading line) पर प्रथम उर्ध्व रेखा से यह अनुच्छेद प्रारम्भ होता है। आख्या (Title) के प्रथम दो शब्द दीर्घ अक्षरों (Capital letters)में अंकित किये जाते है। तथा अन्य शब्द सामान्य अक्षरों में लिखे जाते हैं।

(ख) द्वितीय अनुच्छेद (Second Section) - जिस पंक्ति पर अग्र अनुच्छेद (Leading section) समाप्त होता है उसकी अगली पंक्ति पर द्वितीय उर्ध्व रेखा (Second Indention) से By लिखकर लेखक/सहकारक का कुल नाम (Sirname) लिखते हैं एवं अन्त में पूर्ण विराम (.) अंकित करते हैं।

(ग) निर्देशांक अनुच्छेद (Index Number Section) - मुख्य संलेख (Main Entry)के अग्र अनुच्छेद (Leading Section)में उल्लिखित क्रामक संख्या (Call Number) को पेन्सिल के द्वारा सूची पत्रक में दाहिनी ओर अंकित करते हैं।

उदाहरण - आख्या ग्रन्थ निर्देश संलेख

(Title Book Index Entry)

BOOK OF prehistoric Sociology. Ed 3.
By Mishra. Y71 N95

टिप्पड़ी - उपरोक्त ग्रन्थ की आख्या अलंकारिक (Ornamental) नहीं है इसलिए इसका आख्या ग्रन्थ निर्देश संलेख (Title Book Index Entry)नियमानुसार नहीं बनाया जायेगा तथापि नमूने के तौर पर शिक्षार्थियों के बोधगम्यता हेतु इसे निर्मित किया गया है।

5. ग्रन्थमाला ग्रन्थ निर्देशी संलेख (Series Book Index Entry)

इस कोटि के संलेख में भी अन्य ग्रन्थ निर्देशी संलेख की भाँति निम्नवत तीन अनुच्छेद होते हैं -

(क) अग्र अनुच्छेद (Leading Section) - सूची पत्रक के अग्र रेखा (Leading line) पर प्रथम उर्ध्व रेखा (First Indention) से ग्रन्थमाला का नाम बड़े

अक्षरों में (Capital letters)अंकित किया जाता है। तथा यदि ग्रन्थमाला उसी पंक्ति पर समाप्त नहीं होती तो अनुवर्ती सूचना भी प्रथम उर्ध्व रेखा से ही वापस की जाती है।

(ख) द्वितीय अनुच्छेद (Second Section)- अग्र अनुच्छेद (Leading Section)की समाप्ति के बाद अगली पंक्ति पर प्रथम एवं द्वितीय उर्ध्व रेखा (First and Second Indention) के मध्य ग्रन्थमाला संख्या (Series Number) का अंकन किया जाता है। तत्पश्चात ग्रन्थमाला संख्या के बाद द्वितीय उर्ध्व रेखा से लेखक/सहकारक का कुलनाम (Surname) सामान्य भाषा में लिखकर कोलन चिन्ह (:) लगाते है। उसके उपरान्त आख्या का उल्लेख कर पूर्णविराम (.) लगाकर संस्करण विवरण अंकित करते हैं। अनुच्छेद की समाप्ति पर पूर्णविराम (.) का प्रयोग करते हैं।

(ग) निर्देशांक अनुच्छेद (Index Number Section)- द्वितीय अनुच्छेद की समाप्ति के पश्चात चार अक्षरों का रिक्त स्थान छोड़कर सूची पत्रक के दाहिनी ओर क्रामक अंक (Call Number) को पेंसिल से लिखते हैं। उस पंक्ति पर स्थान कम होने की स्थिति में उससे अगली पंक्ति पर सूचीपत्रक के दाहिनी ओर क्रामक संख्या का उल्लेख करते हैं।

उदाहरण - ग्रन्थमाला ग्रन्थ निर्देशी संलेख

(Series Book Index Entry)

	NEW BOOKS IN HISTORY SERIES.	
	12	Mishra : Book of Prehistoric Sociology. Ed3. Y71 N95
		O

10.3.2.4 नामान्तर निर्देशी संलेख (Cross Reference Index Entry)

क्लासीफाइड कैटलॉग कोड में नियम संख्या LA3 के अन्तर्गत इन संलेखों का वर्णन है। ये निम्न प्रकार की होती हैं -

क) वैकल्पिक नाम संलेख (Alternative Name Entry)

ख) पद वैरूप्य संलेख (Varient form of Word Entry)

ग) कृत्रिम नाम/वास्तविक नाम संलेख (Pseudonym Real Name Entry)

घ) ग्रन्थमाला सम्पादक संलेख (Series Editor Entry)

ङ) सजातीय नाम संलेख (Generic Name Entry)

10.3.2.4.1 संरचना (Structure)- नामांतर निर्देशी संलेख (Cross Reference Index Entries)में भी अन्य इतर संलेखों की भाँति निम्न तीन अनुच्छेद होते हैं -

(क) अग्र अनुच्छेद (Leading Section)- यह अनुच्छेद सूची पत्रक के अग्र रेखा (Leading line) पर प्रथम उर्ध्व रेखा (First Indention)से प्रारम्भ होता है तथा अनुवर्ती पंक्तियाँ भी प्रथम उर्ध्व रेखा से ही प्रारम्भ होती हैं।

(ख) निर्देशांक अनुच्छेद (Directing Section)- यह अनुच्छेद द्वितीय उर्ध्व रेखा (Second Indention) से लिखा जाता है। इसमें निर्देशक पद (Directing Term) See या See also लिखते हैं तथा निर्देशक पद को रेखांकित करते हैं तथा इसके अन्त में पूर्ण विराम (.) नहीं लगाया जाता ।

(ग) निर्देशित शीर्षक अनुच्छेद (Referred-To-Heading Section) - इस अनुच्छेद में निर्देशित शीर्षक अंकित किया जाता है। यह अनुच्छेद द्वितीय उर्ध्व रेखा (Second Indention) से प्रारम्भ होता है तथा अनुवर्ती पंक्तियाँ प्रथम उर्ध्व रेखा (First Indention) से प्रारम्भ होती है।

संदर्भित उदाहरण में **नामांतर** निर्देशी संलेख की कोटि (घ) ग्रन्थमाला सम्पादक का उल्लेख है। अतः नीचे ग्रन्थमाला सम्पादक नामान्तर निर्देशी संलेख (Editor of Series Cross Reference Index Entry) का निर्माण किया जा रहा है।

उदाहरण - ग्रन्थमाला सम्पादक नामान्तर निर्देशी संलेख

(Editor of Series cross Reference Index Entry)

	VERMA (Indrani), <u>Ed</u>.	
		<u>See</u> NEW BOOK IN HISTORY SERIES. O

अन्य प्रकार के नामान्तर निर्देशी संलेख भी ऊपर वर्णित नियमानुसार ही निर्मित किये जाते है। अन्य उदाहरणों के साथ उन्हें भी निर्मित कर शिक्षार्थियों को स्पष्ट कराया जायेगा।

10.4 विस्तृत अध्ययनार्थ ग्रन्थ सूची (Bibliography)

1. Ranganathan (SR): Cataloguing Practice. Ed 2. Bangalore, Sarda Ranganathan Endowment for LIbrary Science, 1994.

2. Ranganathan (S.R.) : Classified Catalogue Code. Ed 6. Bangalore, Sarda Ranganathan Endowment for Library Science, 1992.

3. Krishna Kumar : An Introduction to Cataloguing Practice, N. Delhi, 1996.

4. सूद (एस.पी.) सूचीकरण प्रक्रिया, जयपुर,आर.बी.एस.ए., 1998

5. शर्मा (बी.डी.) : अनुवर्ग प्रसूची नियमावली : एक व्यावहारिक अध्ययन, वाई.के.पब्लिशर्स, आगरा, 1999

6. वर्मा (ए.के.) : क्रियात्मक अनुवर्ग सूचीकरण, रायपुर, सेन्ट्रल बुक हाउस, 1999

इकाई -11: एक व्यक्तिगत लेखक द्वारा रचित पुस्तकों का सूचीकरण (Cataloguing of Books by Single Personal Author)

इकाई की रूपरेखा

11.0 उद्देश्य

11.1 व्यक्तिगत लेखक से तात्पर्य

11.2 एकल व्यक्तिगत लेखक हेतु शीर्षक का चयन एवं उपकल्पन

11.3 सूचीकृत उदाहरण

11.4 अभ्यास हेतु उदाहरण

11.5 विस्तृत अध्ययनार्थ ग्रन्थ सूची

11.0 उद्देश्य

इस इकाई के निम्नलिखित उद्देश्य है :

- व्यक्तिगत लेखक को परिभाषित करना,
- एकल व्यक्तिगत लेखकों द्वारा रचित पुस्तकों हेतु सूचीकरण नियमों से शिक्षार्थियों को अवगत कराना,
- एकल व्यक्तिगत लेखकों द्वारा रचित पुस्तकों के प्रायोगिक सूचीकरण से शिक्षार्थियों को सुपरिचित कराना।

11.1 व्यक्तिगत लेखक से तात्पर्य (Meaning of Personal Author)

सामान्यतः लेखक से तात्पर्य ग्रन्थ के अविर्भाव एवं संरचना करने वाले से हैं, जो अपने विचारों एवं विशिष्ट ज्ञान को विषय से सम्बन्धित ग्रन्थ में अभिव्यक्त कर लिपिबद्ध करता है। लेखक अपने ग्रन्थ की विषयवस्तु एवं मौलिक विचारों के लिए उत्तरदायी होता है।

किसी भी ग्रन्थ की रचना एक लेखक द्वारा अथवा एक से अधिक लेखकों द्वारा हो सकती है। जब किसी ग्रन्थ की रचना में एक लेखक उत्तरदायी होता है तो वह व्यक्तिगत लेखक कहलाते हैं। डॉ. एस.आर.रंगनाथन के अनुसार, "लेखक के रूप में व्यक्ति कृति में प्रस्तुत विचारों एवं अभिव्यक्त का पूर्ण उत्तरदायित्व स्वयं की व्यक्तिगत

क्षमता पर होता है, अन्य किसी पद, समष्टि निकाय के अन्तर्गत नहीं होता और न ही उस निकाय की क्षमता में होता है।''

11.2 एकल व्यक्तिगत लेखक हेतु शीर्षक का चयन एवं उपकल्पन (Choice of Heading and rendering for Single Per sonal Author)

शीर्षक अनुच्छेद (Heading Section) अग्र अनुच्छेद के पश्चात् वाली पंक्ति पर लिखा जाता है इसमें लेखक के नाम का उल्लेख किया जाता है।

- लेखक के नाम के पूर्व लगे सम्मान सूचक शब्द, पदवीधारक शब्द, आदि उपकल्पन के पूर्व हटा दिये जाते हैं। उदाहरणार्थ Dr, Shri, Shrimati, Mr, Mrs, Ms, Sir, Rai Sahab, Padmashri, Bharat Ratna आदि।

- क्लासीफाइड कैटलाग कोड के Part J के नियम संख्या JA2 के अनुसार लेखक के नाम में से कुलनाम (Surname) का प्रयोग प्रविष्टि पद (Entry Element) के रूप में दीर्घ अक्षरों (Capital letters) में तथा व्यक्तिगत नाम (Forename)का प्रयोग गौड़ पद (Secondary Element) के रूप में वृत्ताकार कोष्ठक में लिखा जाता है । इसके पश्चात लेखक का जन्म - मृत्यु वर्ष अगले वृत्ताकार कोष्ठक में व्यष्टिकरण पद (Individualising Element) के रूप में अंकित किया जाता है।

- क्लासीफाइड कैटलाग कोड के नियम संख्या JA3 के अनुसार एक शब्दीय नाम को आख्या पृष्ठ (Title Page) के अनुसार ज्यों का त्यों लिखा जाता है।

उदाहरण स्वरूप -

YAGYVALKA

PARASHAR

VASHISTHA

- क्लासीफाइड कैटलाग कोड के नियम संख्या JA6 के अनुसार बहुशब्दीय नाम (Multi-worded Name) को प्रविष्ट पद (Entry Element), गौड़ पद (Secondary Element)एवं व्यष्टिकृत पद (Individualising Element) के रूप में उपकल्पित किया जायेगा।

उदाहरण स्वरूप -

Dr. Ramesh Kumar Sharma born in 1934 and died in the year 2001

को

SHARMA (Ramesh Kumar) (1934 - 2001) उपकल्पित किया जायेगा।

- योजकीय प्रविष्टि पद (Hyphenated Entry Element)के सम्बन्ध में नियम संख्या JA62 में निम्नवत उल्लेख है ।

उदाहरण स्वरूप - Laura Smith-Johnson को

SMITH - JOHNSON (Laura)उपकल्पित करेंगे।

- कंजक्शन के साथ प्रविष्टि पद (Entry Element with Conjunction) को निम्नवत् उपकल्पित किया जाता है।

उदाहरण स्वरूप -

Peter Endrew DU Gard Born in 1946 को
ENDREW DU GARD (Peter) (1946 -). उपकल्पित करेंगे।

- नियम संख्या JA 64 योजकीय एवं कंजक्शन रहित दो शब्दीय प्रविष्टि पद (Two worded entry Element without Hyphen and Conjunction) का निम्नवत् उपकल्पित करने का निर्देश देता है -

Dr. Ranjana Das Gupta को

DAS GUPTA (Ranjana)उपकल्पित करेंगे।

- नियम संख्या JA65 तीन शब्दीय प्रविष्ट पद (Three worded Entry Element)को निम्नवत उपकल्पन हेतु निर्देशित करते हैं -

Munindra Kumar Datta Rai Mahashya

को

DATTA RAI MAHASHYA (Munindra Kumar)उपकल्पित करेंगे।

बिना कुलनाम (Without Surname)को ज्यों का त्यों ही लिखेगे।

Ramesh Kumar

को

RAMESH KUMAR ही उपकल्पित करेंगे।

11.3 सूचीकृत उदाहरण (Catalogued Examples)

उदाहरण - 1

(एक लेखक, सहकारक, एवं ग्रन्थमाला)

Indian Social Problems
By
Prof. G.R. Madan
Ed by
Dr. Puneet Arora
Ed 4
Allied Publishers
New Delhi, 1999

<u>Other Information:</u>

Call No.	:	Y : 4.44 N99
ACC No.	:	8926
Note	:	1. Prof. G.R. Madan (1940 - 2001)
		2. Social Books Series No. 4.

मुख्य संलेख (Main Entry) -

	Y:4.	44 N99
		MADAN (G R) (1940 - 2001). Indian Social Problems. Ed 4. Ed by Puneet
	Aro	ra. (Social Book Series. 4).
	8926	
		O

संकेत (Tracing)

India, Social Pathology. Social Pathology, Sociology. Sociology. Madan (G R) (1940-2001). Arora (Puneet), <u>Ed</u>. Social Book Series.

वर्ग निर्देशी संलेख (Class Index Entry) हेतु, शृंखला प्रक्रिया (Chain Procedure)

वर्ग संख्या - Y : 4.44

Y = Sociology (Sought link)

↓

Y : = ———— (False Link)

↓

Y : 4 = Social Patology (Sought link)

↓

Y : 4. = ———— (False Link)

↓

Y : 4.4 = Asia — (Unsought Link)

↓

Y : 4.44 = India -- (Sought Link)

उपरोक्त विवरणानुसार खोज कड़ी (Sought link)के रूप में निम्न तीन कड़ियों के लिए वर्ग निर्देशी संलेख (Class Index Entry)निर्मित किये जायेगें: -

1. India, Social Pathology.
2. Social Pathology, Sociology
3. Sociology.

वर्ग निर्देशी संलेख - 1

(Class Index Entry-1)

INDIA, SOCIAL PATHOLOGY.
For documents in this Class and its sub-division, see the Classified Part of the Catalogue under the Class Number Y: 4.44 O

वर्ग निर्देशी संलेख - 2

(Class Index Entry -2)

SOCIAL PATHOLOGY, SOCIOLOGY.

For documents in this Class and its Subdivisions, see the Classified Part of the catalogue under the Class Number

Y : 4

O

वर्ग निर्देशी संलेख - 3

(Class Index Entry -3)

SOCIOLOGY

For documents in this Class and its Subdivisions, see the Classified Part of the Catalogue under the Class Number.

Y

O

लेखक ग्रन्थ निर्देशी संलेख

(Author Book Index Entry)

MADAN (G R) (1940 - 2001).

Indian Social Problems. Ed4.

Y : 4.44 N 99

O

सम्पादक ग्रन्थ निर्देशी संलेख

(Editor Book Index Entry)

	ARORA (Puneet), Ed.	
		Madan : Indian Social Problems. Ed 4. Y: 4.44 N 99

ग्रन्थमाला ग्रन्थ निर्देशी संलेख

(Series Book Index Entry)

	SOCIAL BOOK SERIES.	
	4	Madan : Indian Social Problems. Ed 4. Y : 4.44 N99

महत्वपूर्ण बातें -

- मुख्य संलेख में शीर्षक (Heading) को नियमानुसार ग्रन्थ के लेखक से उपकल्पित किया गया है।
- संकेत अनुच्छेद (Tracing Section) में सबसे पहले दाहिने ऊपर के भाग में वर्ग निर्देशी खोज कड़ियों (Class Index Sought Links) को अंकित किया गया है। वर्गांक को शृंखला प्रक्रिया (Chain Procedure) के द्वारा कड़ियों को ऊपर से नीचे खोला गया है, परन्तु संकेत पत्रक (Tracing Card) में नियमानुसार नीचे से ऊपर का क्रम बनाते हुए अंकित किया गया है।
- अन्य इतर संलेख - सहकारक, ग्रन्थमाला का निर्माण क्लासीफाइड कैटलाग कोड के नियमानुसार किया गया है।

उदाहरण - 2

(एकल लेखक सहकारक एवं अर्न्तविषयी सूचना के साथ)

Principles of Electrical Engineering

By

William H. Timbe

Fourth Revised Edition

By

George B Hoadley

John Wiley and Sons

New York, 1951

Other Information :

Call No.	:	D66 N51
Acc No.	:	9172
Note	:	Pages 240-308 devoted to Alternating current and its class No. is D664.

मुख्य संलेख (Main Entry)

	D66	N51
		TIMBE (William H). Principles of Electrical Engineering.Rev. ed. 4. Rev by George B Hoadley.
	9172	

संकेत पत्रक (Tracing Card)

D664 P 240-308.	Electrical Engineering, Engineering. Engineering Alternating current, Electrical Engineering. Timbe (William H). Hoadley (George B), Rev.

अन्र्तविषयी संलेख (Cross Reference Entry)

	D664	
	P 240-308.	See also D66 N51 Timbe Principles of Electrical Engineering. Rev ed 4. O

वर्ग निर्देशी संलेख (Class Index Entry) हेतु शृंखला प्रक्रिया (Chain procedure)

वर्ग संख्या - D66

D	=	Engineering	(Sought link)
↓			
D6	=	Mechanical Engineering	(Unsought link)
↓			
D66	=	Electrical Engineering	(Sought link)
↓			
D664	=	Alternating Current	(Sought link)

उपरोक्त विवरणानुसार खोज कड़ी (Sought link)के रूप में निम्न तीन कड़ियों के लिए वर्ग निर्देशी संलेख (Class Index Entry)निर्मित किये जायेंगे।

1. Electrical Engineering, Engineering.
2. Engineering.
3. Alternating current, Electrical Engineering.

द्विबिन्दु वर्गीकरण में Electrical Engineering (D66) को Mechanical Engineering के अन्तर्गत रखा गया है परन्तु चूँकि ग्रन्थ Electrical Engineering से सम्बन्धित है एवं उपयोग कर्ता द्वारा Electrical Engineering की पुस्तक खोज हेतु

Mechanical Engineering विषय में ढूंढने की सम्भावना नहीं है। अतः Mechanical Engineering की कड़ी को अवांछित कड़ी (Unsought link)के रूप में स्वीकार किया गया है।

ग्रन्थ में दी गई विशेष सामग्री जो Alternating Current है उसके वर्गांक - D664 की कड़ी (Link) को ही खोला गया है क्योंकि उससे पूर्व तक की कड़ी -D66 तक पूर्व में शृंखला प्रक्रिया द्वारा खोला जा चुका है।

वर्ग निर्देशी संलेख - 1 (Class Index Entry - 1)

ELECTRICAL ENGINEERING, ENGINEERING.
For documents in this Class and its Subdivisions, see the Classified Part of the Catalogue under the Class Number.
D 66

वर्ग निर्देशी संलेख - 2 (Class Index Entry - 2)

ENGINEERING.
For documents in this class and its subdivisions, see the Classified Part of the Catalogue, under the Class Number
D

वर्ग निर्देशी संलेख - 3 (Class Index Entry - 3)

ALTERNATING CURRENT, ENGINEERING.
For documents in this class and its subdivisions, see the Classified Part of the Catalogue, under the Class Number
D664

लेखक ग्रन्थ निर्देशी संलेख (Author Book Index Entry)

TIMBE (William H.)

Principles of Electrical Engineering. Rev ed 4.

D66 N51

संशोधनकर्ता ग्रन्थ निर्देशी संलेख (Reviser Book Index Entry)

HOADLEY (George B), Rev.

Timbe: Principles of Electrical Engineering. Rev ed 4.

D66 N51

उदाहरण - 3

एकल व्यक्तिगत लेखक, लेखक का पूरा नाम, ग्रन्थमाला

(Single Personal Author, Author's Full Name, Series)

The Principles of Import Tax

By

Prof. R. C. Bhatia

New Style Publishers

Jaipur, 2004

<u>Other Information:</u>

Call No.	:	X72:546 P04
Acc No.	:	4291
Note	:	Full Name of author is Ramesh Chandra Bhatia
		Economies Paper back Book series No.6.

मुख्य संलेख (Main Entry)

	X72:	546 P04
		BHATIA (Ramesh Chandra) Principles of Import Tax. (Economies Paperback Book Series. 6)
	4291	

संकेत पत्रक (Tracing Cart)

Import, Trade. Trade, Tax. Tax, Public Finance. Public Finance, Economies. Economics. Bhatia (Ramesh Chandra) Economies Paperback Book Series.

र्ग निर्देशी संलेख (Class Index Entry) हेतु शृंखला प्रक्रिया (Chain Procedure)

र्ग संख्या - X72 : 546

	↓	Economies -	(Sought link)
7	↓	Public Finance -	(Sought link)
72	↓	Tax -	(Sought link)
72:	↓	———— -	(False link)
72:5	↓	Trade -	(Sought link)
72:54	↓	Export, Import -	(Unsought link)
72:546	=	Import -	(Sought link)

उपरोक्त विवरणानुसार खोज कड़ी (Sought link) के रूप में निम्न पाँच कड़ियों के लिए वर्ग निर्देशी संलेख (Class Index Entry)का निर्माण किया जायेगा।

1. Import, Trade
2. Trade, Tax
3. Tax, Public Finance
4. Public Finance, Economies.
5. Economies.

वर्ग निर्देशी संलेख - 1 (Class Index Entry - 1)

IMPORT, TRADE

For documents in this class and its sub-divisions, see the Classified Part of the Catalogue, under the Class Number

X 728:546

वर्ग निर्देशी संलेख - 2 (Class Index Entry - 2)

TRADE, TAX

For documents in this class and its sub-divisions, see the Classified Part of the Catalogue, under the Class Number

X72:5

वर्ग निर्देशी संलेख - 3 (Class Index Entry - 3)

TAX, PUBLIC FINANCE.

For documents in this class and its sub-divisions, see the Classified Part of the Catalogue, under the Class Number

X72

वर्ग निर्देशी संलेख - 4 (Class Index Entry - 4)

PUBLIC FINANCE, ECONOMIES.

For documents in this class and its sub-divisions, see the Classified Part of the Catalogue, under the Class Number

X7

O

वर्ग निर्देशी संलेख - 5 (Class Index Entry-5)

ECONOMIES.

For documents in this class and its sub-divisions, see the Classified Part of the Catalogue, under the Class Number

X

O

लेखक ग्रन्थ निर्देशी संलेख (Author Book Index Entry)

BHATIA (Ramesh Chandra)

Principles of Import Tax.

X72:546 P04

O

ग्रन्थमाला ग्रंथ निर्देशी संलेख (Series Book Index Entry)

ECONOMIES PAPERBACK BOOK SERIES.

6 Bhatia : Principles of Import Tax

X 72:546 PO4

O

महत्वपूर्ण बातें -

- नियमानुसार आख्या (Title)से आरम्भिक उपपद 'The' हटा दिया गया है।
- मुख्य संलेख में शीर्षक अनुच्छेद (Heading section) में संक्षिप्त नाम से पूर्ण नाम का चयन एवं उपकल्पन नियम संख्या JA41 के अनुसार किया गया है। ग्रन्थ के आख्या पृष्ठ पर लेखक के पूर्ण नाम का उल्लेख है इसलिए उसके पूर्ण नाम को अंकित किया गया है।
- लेखक के नाम के पूर्व लगे पदवीधारक शब्द को नियमानुसार उपकल्पन करते समय हटा दिया गया है।
- अन्य इतर संलेख (Added Entries) का निर्माण नियमानुसार किया गया है।
- संकेत (Tracing) पत्रक पर यदि सूचना एक पंक्ति पर नहीं आ पाती तो अनुवर्ती पंक्ति पर शेष सूचना दो अक्षर का रिक्त स्थान छोड़ कर लिखी जाती है।

उदाहरण - 4

(एकल व्यक्तिगत लेखक - आख्या,उप आख्या एवं ग्रन्थमाला सम्पादक के साथ)

Research Methods in Librarianship
Techniques and Interpretation
By
Charles H. Busha

Academic Press
New York, 1980

Other Information:

Call No.	:	2:f N80
Acc No.	:	7264
Note:	:	Library and Information Science Series no. 14. Edited by Stephen P. Harter

मुख्य संलेख (Main Entry)

	2:f	N80
		BUSHA (Charles H). Research Methods in Librarianship: techniques and interpretation. (Library and Information Science Series. Ed by Stephen P. Harter. 14)
	7264	

संकेत पत्रक (Tracing Card)

Investigation, Library Science Library Science. Busha (Charles H). Library & Information Science Series. Harter (Stephen P), Ed.

वर्ग निर्देशी संलेख (Class Index Entry) हेतु शृंखला प्रक्रिया (Chain procedure)

वर्ग संख्या -- 2 : f

2	=	Library Science	(Sought link)
2:	=	————————	(False link)
2:f	=	Investigation	(Sought link)

उपरोक्त विवरणानुसार खोज कड़ी (Sought link) के रूप में निम्न दो कड़ियों के लिए वर्ग निर्देशी संलेख (Class Index Entry) को निर्मित किया जायेगा।

1. Investigation, Library Science
2. Library Science

वर्ग निर्देशी संलेख - 1 (Class Index Entry-1)

INVESTIGATION, LIBRARY SCIENCE.

For documents in this class and its subdivisions, see the Classified Part of the Catalogue, under the Class Number

2:f

वर्ग निर्देशी संलेख - 2 (Class Index Entry-2)

LIBRARY SCIENCEC.

For documents in this class and its subdivisions, see the Classified Part of the Catalogue, under the Class Number 2

लेखक ग्रन्थ निर्देशी संलेख (Author book Index Entry)

BUSHA (Charles H).

Research Methods in Librarianship

2 : f N80

ग्रन्थालय ग्रन्थ निर्देशी संलेख (Series Book Index Entry)

LIBRARY AND INFORMATION SCIENCE SERIES

14 Busha : Research Methods in Librarianship.

2: f N80

ग्रन्थमाला सम्पादक नामान्तर निर्देशी संलेख

(Editor of Series cross Reference Index Entry)

	HARTER (Stephen P), Ed.	
	See	
	LIBRARY AND INFORMATION SCIENCE	
	SERIES.	
	O	

महत्वपूर्ण बातें -

- मुख्य संलेख में शीर्षक का चयन एवं उपकल्पन आख्या पृष्ठ पर अंकित सूचना के आधार पर किया गया है।
- ग्रन्थमाला के सम्पादक का उल्लेख संकेत पत्रक (Tracing Card)पर क्लासीफाइड कैटलाग कोड के नियम संख्या MH3 के अनुसार किया गया है।
- अन्य इतर संलेख का निर्माण नियमानुसार किया गया है।

उदाहरण - 5

(एकल व्यक्तिगत लेखक, एक से अधिक कोटि के सहकारक तथा ग्रन्थमाला सम्पादक)

Recent Advances in Zoology

By

Prem Hari Gupta

Edited by

C.B. Srivastava

IV Edition

Illustrated by

S.C. Goel

Rastogi and Company

Meerut, 1988

Other Information

Call No.	:	K N88
Acc No.	:	3142
Note	:	Zoological Text Books No.6. Ed by M.H.Verma

मुख्य संलेख (Main Entry)

K N88

GUPTA (Prem Hari).

Recent Advances in Zoology. Ed 4. Ed by C.B. Srivastava. Ill.by S C Goel.

(Zoological Text Books. Ed by M H Verma.6).

3142

संकेत पत्रक (Tracing Card)

Zoology.

Gupta (Prem Hari).
Srivastava (C.B.), Ed.
Goel (S C), Ill.
Zoological Text Books.

Verma (M H), Ed.

वर्ग निर्देशी संलेख (Class Index Entry)

ZOOLOGY.

For documents in this class and its subdivisions, see the Classified Part of the Catalogue, under the Class Number

K

लेखक ग्रन्थ निर्देशी संलेख (Author Book Index Entry)

GUPTA (Prem Hari).
Recent Advances in Zoology. Ed 4.

K N88

O

सम्पादक ग्रन्थ निर्देशी संलेख (Editor Book Index Entry)

SRIVASTAVA (C B), Ed.
Gupta : Recent Advances in Zoology. Ed 4.

K N88

O

चित्रकार ग्रन्थ निर्देशी संलेख (Illustrator Book Index Entry)

GOEL (S C), Ill.
Gupta : Recent Advancess in Zoology. Ed 4.

K N88

O

ग्रन्थालय ग्रन्थ निर्देशी संलेख (Series Book Index Entry)

	ZOOLOGICAL TEXT BOOKS.	
	6	Gupta : Recent Advances in Zoology. Ed 4. K N88 O

ग्रन्थमाला सम्पादक नामान्तर निर्देशी संलेख

(Editor of Series Cross Reference Index Entry)

	VERMA (M H), Ed.	
		See ZOOLOGICAL TEXT BOOKS. O

महत्वपूर्ण बातें -

आख्या पृष्ठ (Title page) पर जिस क्रम में सहकारक का उल्लेख है उसी क्रम में आख्या अनुच्छेद (Title Section)में सहकारक का उल्लेख नियमानुसार किया गया है। सम्पादक का उल्लेख आख्या पृष्ठ पर पहले है तो आख्या अनुच्छेद में पहले सम्पादक का उल्लेख करने के पश्चात् चित्रकार का उल्लेख किया गया है।

अन्य इतर संलेखों (Added Entries) का उल्लेख नियमानुसार किया गया है।

11.4 अभ्यास हेतु उदाहरण

उदाहरण . 1

(एकल व्यक्तिगत लेखक सहकारक सहित)

An Advanced History of India

By

Prof. R.C. Vandhopadhya (1932-2001)

एक व्यक्तिगत लेखक द्वारा रचित पुस्तकों का सूचीकरण

Ed by
Dr. H. C. Raichaudhari
4th Edition

MacMillan India Pvt. Ltd.
Jaipur, 1978.

Other Information:

Call No.	:	V44 N79
Acc No.	:	16921

उदाहरण - 2

(एकल व्यक्तिगत लेखक - सहकारक एवं ग्रन्थमाला सहित)

Political Theory
2nd Revised Edition
By
Dr. R.L. Gupta
Ed by
Prakash Chandra

Cosmos Bookline Pvt. Ltd.
New Delhi - 1987.

Other Information:

Call No.	:	W: (R) N87
Acc No.	:	9325
Note	:	Studies in Political Theory No. 3.

उदाहरण - 3

(एकल व्यक्तिगत लेखक - योजकीय कुल नाम के साथ)

The Essential Systems of Psychology
By
Francoise Jean-Piere
6th Edition

Rinehart and Winston
New York, 1969.

Other Information:

Call No.	:	SA N69
Acc No.	:	12141

उदाहरण - 4

(एकल व्यक्तिगत लेखक - सहकारक एवं अर्न्तविषयी सूचना के साथ)

Education for Abnormal Students

By

Doris Grumbach

Ed by

Susan Pilgrim

Ed 2

Penguin Books
New York, 1977.

Other Information:

Call No.	:	T6 N77
Acc No.	:	42161
Note	:	Pages 200-270 devoted to Criminal students and for this Pages class No. is T63.

उदाहरण - 5

(एकल व्यक्तिगत लेखक विभिन्न कोटि के सहकारकों के साथ)

Papers on Vedanța

By

Dr. A.K. Verma

Translated from Sanskrit

by

Shankar Aiyer

Ed by

Sudesh Vaidya
Ed 2.

Konark Publications
New Delhi - 1989.

Other Information:

Call No.	:	R65 N89
Acc No.	:	20245

उदाहरण - 6

(एकल व्यक्तिगत लेखक - ग्रन्थमाला सम्पादक के साथ)

General Chemistry

7th Edition

By

H.E.Holt

Ed by

William Robinson

D.C.Heath and Company

Toranto, 1977.

Other Information:

Call No.	:	E N77
Acc No.	:	16809
Note	:	Library of Modern Sciences. No.5. Edited by W. Nebergall.

11.5 विस्तृत अध्ययनार्थ ग्रन्थ सूची (Bibliography)

1. Ranganathan (SR): Cataloguing Practice. Ed 2. Bangalore, Sarda Ranganathan Endowment for LIbrary Science, 1994.
2. Ranganathan (S.R.) : Classified Catalogue Code. Ed 6. Bangalore, Sarda Ranganathan Endowment for Library Science, 1992.
3. Krishna Kumar : An Introduction to Cataloguing Practice, N. Delhi, 1996.

4. सूद (एस.पी.) सूचीकरण प्रक्रिया, जयपुर,आर.बी.एस.ए., 1998

5. शर्मा (बी.डी.) : अनुवर्ग प्रसूची नियमावली : एक व्यावहारिक अध्ययन, वाई.के.पब्लिशर्स, आगरा, 1999

6. वर्मा (ए.के.) : क्रियात्मक अनुवर्ग सूचीकरण, रायपुर, सेन्ट्रल बुक हाउस, 1999

इकाई -12: संयुक्त व्यक्तिगत लेखक द्वारा रचित पुस्तकों का सूचीकरण (Cataloguing of Books by Joint Personal Authors)

इकाई की रूपरेखा

12.0 उद्देश्य

12.1 संयुक्त व्यक्तिगत लेखक से तात्पर्य

12.2 संयुक्त व्यक्तिगत लेखकों की कृतियों के प्रकार

12.2.1 दो संयुक्त व्यक्तिगत लेखकों की कृतियाँ

12.2.2 तीन अथवा तीन से अधिक संयुक्त व्यक्तिगत लेखकों की कृतियाँ

12.3 सूचीकृत उदाहरण

12.4 अभ्यास हेतु उदाहरण

12.5 विस्तृत अध्ययनार्थ ग्रन्थसूची

12.0 उद्देश्य

इस इकाई के निम्नलिखित उद्देश्य है :

- संयुक्त व्यक्तिगत लेखक से सुपरिचित होना।
- संयुक्त व्यक्तिगत लेखकों द्वारा रचित पुस्तकों से सम्बन्धित सूचीकरण नियमों से सुपरिचित होना।
- संयुक्त व्यक्तिगत लेखकों के ग्रन्थों हेतु प्रायोगिक सूचीकरण से सुपरिचित होना।

12.1 संयुक्त व्यक्तिगत लेखक से तात्पर्य (Meaning of Joint Personal Author)

ग्रन्थों की संरचना में बहुत सारे ग्रन्थ ऐसे होते हैं जिसकी संरचना एक से अधिक संयुक्त लेखकों द्वारा की जाती है तथा ग्रन्थ के विषय एवं ग्रन्थ में निहित विचारों के लिए एक से अधिक संयुक्त लेखक समान रूप से उत्तरदायी होते हैं। इस प्रकार जब एक से अधिक व्यक्तिगत लेखक मिलकर किसी ग्रन्थ की रचना करते है, तो उसे संयुक्त व्यक्तिगत लेखक द्वारा रचित ग्रन्थ की संज्ञा दी जाती है। इस प्रकार के लेखकत्व को बहुग्रन्थकारिता

(Joint authorship)अथवा सहभागी ग्रन्थकारिता (shared authorship) के नाम से भी जाना जाता है।

क्लासीफाइड कैटलाग कोड के नियम संख्या FC5 में डॉ.रंगनाथन ने संयुक्त व्यक्तिगत लेखक को परिभाषित करते हुए कहा है- "दो और अधिक व्यक्तिगत एवं समष्टि लेखक जो ग्रन्थ में व्यक्त विचारों एवं अभिव्यक्तियों के लिए संयुक्त रूप से उत्तरदायी हैं तथा जिसमें से ग्रन्थ के किसी भी भाग का उत्तरदायित्व किसी भी लेखक के लिए स्पष्ट एवं पृथक न किया जा सकता हो।"

उपरोक्त परिभाषा से स्पष्ट हो जाता है कि संयुक्त लेखक व्यक्ति अथवा समष्टि दोनों ही हो सकते है। वर्तमान अध्याय में व्यक्ति ही संयुक्त उत्तरदायित्व में पुस्तक लेखन के लिए उत्तरदायी हैं उस प्रसंग में चर्चा होगी।

12.2 संयुक्त व्यक्तिगत लेखकों की कृतियों के प्रकार

क्लासीफाइड कैटलॉग कोड के अनुसार संयुक्त व्यक्तिगत लेखकों की कृतियों को सूचीकरण की दृष्टि से निम्नवत दो भागों में विभाजित किया जा सकता है।

(क) दो संयुक्त व्यक्तिगत लेखकों की कृतियाँ

(ख) तीन अथवा तीन से अधिक संयुक्त व्यक्तिगत लेखकों की कृतियाँ।

12.2.1 दो संयुक्त व्यक्तिगत लेखकों की कृतियाँ

क्लासीफाइड कैटलाग कोड के नियम संख्या MD32 के अनुसार यदि किसी ग्रन्थ के आख्या पृष्ठ (Title Page) पर दो संयुक्त लेखकों के नाम अंकित है तो मुख्य संलेख (Main Entry) के शीर्षक अनुच्छेद (Heading Section) में दोनों लेखकों के नाम लिखे जाते हैं । लेखकों के नाम जिस क्रम में आख्या पृष्ठ पर अंकित होते है। उसी क्रम में शीर्षक अनुच्छेद में उल्लिखित किया जाता है तथा दोनों नामों को 'and' योजक पद से जोड़ते हैं।

उदाहरण स्वरूप

TIWARI (R K) and SHUKLA (P K)

ऊपर वर्णित उदाहरण में दो संयुक्त व्यक्तिगत लेखक हैं अतः दोनों लेखकों के नाम से ग्रन्थ निर्देशी संलेख (Book Index Entry) का निर्माण किया जायेगा क्योंकि उपयोगकर्ता दोनों लेखकों में से किसी भी लेखक के नाम से ग्रन्थ की माँग कर सकता है।

इस हेतु संकेत पत्रक (Tracing card) में लेखक ग्रन्थ निर्देशी संलेख (Author Book Index Entry) का उल्लेख करते समय लेखक का क्रम परिवर्तित करते हुये निम्नवत् दो लेखक ग्रन्थ निर्देशी संलेख निर्मित किया जायेगा। उदाहरण -

1. TIWARI (R K) and SHUKLA (P K)
2. SHUKLA (P K) and TIWARI (R K)

12.2.2 तीन अथवा तीन से अधिक संयुक्त व्यक्तिगत लेखकों की कृतियाँ

क्लासीफाइड कैटलाग कोड के नियम संख्या MD33 के अनुसार यदि किसी ग्रन्थ के तीन या तीन से अधिक संयुक्त व्यक्तिगत लेखक है तो मुख्य संलेख (Main Entry)के शीर्षक अनुच्छेद (Heading Section)में प्रथम लेखक (आख्या पृष्ठ पर प्रथम स्थान पर अंकित) के नाम का उल्लेख करके 'and others' पद लिखते हैं।

12.3 सूचीकृत उदाहरण

उदाहरण - 1

(दो संयुक्त व्यक्तिगत लेखक तथा एक सहकारक)

Social Structure and Change in India

by

M.N. Srinivas

A.M. Shah

Revised Sixth Edition.

Ed by

E. A. Ramaswamy

Oxford University Press

New Delhi, 1996

Other Information:

Call No. : Y : 7.44 N96

Acc No. : 2246

मुख्य संलेख (Main Entry)

	Y:7.44 N96	
		SRINIVAS (M N) and SHAH (A M).
		Social Structure and change in India. Rev ed 6.
	Ed by E A Ramaswami.	
	2246	

संकेत पत्रक (Tracing Card)

India, Personality, Personality, Sociology. Sociology. Srinivas (M.N) and Shah (A M) Shah (AM)and Srinivas (MN). Ramaswami (E A), Ed.

वर्ग निर्देशी संलेख (Class Index Entry)हेतु श्रृंखला प्रक्रिया (Chain Procedure)

वर्ग संख्या = Y : 7.44

Y	↓	Sociology	(Sought link)
Y:	↓	———	(False link)
Y:7	↓	Personality	(Sought link)
Y:7.4	↓	Asia	(Unsought link)
Y:7.44	=	India	(Sought link)

उपरोक्त विवरणानुसार खोज कड़ी (Sought link) के रूप में निम्न तीन कड़ियों के लिए वर्ग निर्देशी संलेख निर्मित किये जायेंगे।

1. India, Personality.
2. Personality, Sociology
3. Sociology.

वर्ग निर्देशी संलेख-1 (Class Index Entry 1)

	INDIA, PERSONALITY.
	For documents in this class and its sub-divisions, see the Classified Part of the Catalogue, under the Class Number Y: 7.44 O

वर्ग निर्देशी संलेख-2 (Class Index Entry - 2)

PERSONALITY, SOCIOLOGY.

For documents in this class and its sub-divisions, see the Classified Part of the Catalogue, under the Class Number

Y:7

○

वर्ग निर्देशी संलेख -3 (Class Index Entry-3)

SOCIOLOGY

For documents in this class and its sub-divisions, see the Classified Part of the Catalogue, under the Class Number

Y

○

संयुक्त लेखक ग्रंथ निर्देशी संलेख (Joint Author Book Index Entry)

SRINIVAS (M N) and SHAH (A M)

Social Structure and change. Rev ed 6.

Y:7.44 N96

○

संयुक्त लेखक ग्रंथ निर्देशी संलेख (Joint Author Book Index Entry)

SHAH (AM) and SRINIVAS (M N)

Social structureand change. Rev ed 6.

Y:7.44 N96

○

सम्पादक ग्रंथनिर्देशी संलेख (Editor Book Index Entry)

RAMASWAMI (E A), <u>Ed.</u>
Srinivas and Shah : Social structure and change. Rev-ed 6.
Y:7.44 N96

महत्वपूर्ण बातें -

- मुख्य संलेख (Main Entry) के शीर्षक अनुच्छेद में दोनों लेखकों के नाम को जिस क्रम में वह आख्या पृष्ठ (Title page)पर अंकित है, योजक पद 'and' लगा कर अंकित किया गया है।
- संकेत पत्रक (Tracing Card)में संयुक्त लेखक ग्रंथ संलेख (Joint Author Book Index Entry)हेतु दोनों लेखकों के नाम परिवर्तन कर दो ग्रन्थ निर्देशी संलेख निर्मित किये गये हैं। इस प्रकार दो लेखक ग्रन्थ निर्देशी संलेख लेखकों के नामों के क्रम को पलट कर निर्मित किये गये हैं।
- संपादक ग्रन्थ निर्देशी संलेख (Editor Book Index Entry)के द्वितीय अनुच्छेद में दोनों संयुक्त लेखक के कुलनाम (Sirname) का प्रयोग योजक चिन्ह 'and' लगा कर किया गया है।

उदाहरण - 2

(दो संयुक्त व्यक्तिगत लेखक के साथ सहकारक, ग्रन्थमाला एवं ग्रन्थमाला सम्पादक)

The Teaching of Psychology
Method content and context

By
John Radford
and
David Rose

Edited by
Louis R Wilson
3rd Edition

John Wiley and Sons
New York, 1980

Other Information

Call No.	:	S (T:3) N80
Acc. No.	:	18201
Note	:	Wiley series in Psychology. Edited by N.A.Willard.12

मुख्य संलेख (Main Entry)

	S (T: 83) N80	
		RADFORD (John) and ROSE (David. Teaching of Psychology : Method content and context. Ed 3. Ed by Louis R Wilson. (Wiley Series in Psychology. Ed by N A Willard 12).
	18201	

संकेत पत्रक (Tracing Card)

Teaching Technique, Psychology.
Psychology.

Radford (John) and Rose (David).
Rose (David) and Radford (John).
Wilson (Louis R), Ed.
Wiley Series in Psychology.

Willard (NA), Ed.

वर्ग निर्देशी संलेख (class Index Entry) हेतु श्रंखला प्रक्रिया (Chain Procedure)

वर्ग संख्या = S (T:3)
S = Psychology (Sought link)
↓
S(T:3) = Teaching Technique (Sought link)

उपरोक्त श्रंखला में सी सी सी के नियमानुसार विषय विधि (Suject Device) से प्राप्त वर्गांक के भाग (T:3) को एक अंक मानकर एक कड़ी का निर्माण किया गया है।

अतः विवरणानुसार खोज कड़ी (Sought link) के रूप में निम्न दो कड़ियों के

लिए वर्ग निर्देशी संलेख (Class Index Entry)निर्मित की जायेंगी।

1. Teaching Technique, Psychology.
2. Psychology

वर्ग निर्देशी संलेख - 1 (Class Index Entry-1)

TEACHING TECHNIQUE, PSYCHOLOGY.

For documents in this class and its sub-divisions, see the Classified Part of the Catalogue, under the Class Number

S (T : 3)

वर्ग निर्देशी संलेख - 2 (Class Index Entry-2)

PSYCHOLOGY

For documents in this class and its sub-divisions, see the Classified Part of the Catalogue, under the Class Number

S

संयुक्त लेखक ग्रंथ निर्देशी संलेख (Joint author Book Index Entry)

RADFORD (John) and ROSE (David).

Teaching of Psychology. Ed 3.

S(T:3) N80

ROSE (David) and RADFORD (John).

Teaching of Psychology. Ed 3

S(T:3) N80

संम्पादक ग्रन्थ निर्देशी संलेख (Editor Book Index Entry)

	WILSON (Louis R), <u>Ed.</u>	
	Ed 3.	Radford and Rose : Teaching of Psychology
		S(T:3) N80
		O

ग्रन्थमाला ग्रन्थ निर्देशी संलेख (Series Book Index Entry)

	WILEY SERIES IN PSYCHOLOGY.	
	12 Ed 3	Radford and Rose : Teaching of Psychology. S(T:3) N80
		O

ग्रन्थमाला सम्पादक नामान्तर निर्देशी संलेख

(Editor of Series cross Reference Index Entry).

	WILLARD (N A), <u>Ed.</u>	
		<u>See</u> WILEY SERIES IN PSYCHOLOGY.
		O

महत्वपूर्ण बातें -

- आख्या पृष्ठ (Title Page)पर ग्रन्थ की आख्या के पूर्व लगा आरम्भिक शब्द The को मुख्य संलेख में उपकल्पन करते समय हटा दिया गया है।
- संकेत पत्रक (Tracing Card)में संयुक्त लेखक को अंकित करते हुए एक पंक्ति पर समायोजित न होने की स्थिति में अनुवर्ती पंक्ति पर दो अक्षर का रिक्त स्थान छोड़ कर अवशेष सूचना अंकित की जाती है।

- ग्रन्थमाला संपादक नामान्तर निर्देशी संलेख (Editor of Series cross Reference Index Entry)का निर्माण नियमानुसार किया गया है।
- उप आख्या (Sub title) का अंकन इतर संलेखों (Added Entries) में नियमानुसार नहीं किया जाता ।

उदाहरण - 3

(तीन संयुक्त व्यक्तिगत लेखकों के साथ एक ही कोटि के दो सहकारक, ग्रन्थमाला एवं दो ग्रन्थमाला सम्पादक)

Buddhism in India
Challenging Brahmanism and Caste

By
Harry Gehman
John Green
Calvi Greeden
Edited by
James Teller
Dennis Holden

Sage Publications
New Delhi, 1999

Other Information:

Call No.	:	Q4.44 N99
Acc No.	:	16189
Note:	:	Sacred Literature Series; no. 14 Edited by Peter Hazell and Anthony Pritchard.

मुख्य संलेख (Main Entry)

	Q 4.44	N99
		GEHMAN (Harry) and others.
		Buddhism in India : Challenging Brahmanism
	and	caste. Ed by James Teller and Dennis Holden.
		(Sacred literature Series. Ed byPeter Hazell and
	Anthony Pritchard. 14).	
	16189	
		O

संकेत पत्रक (Tracing Card)

India, Buddhism. Buddhism, Religion Religion. Grehman (Harry) and others. Teller (James) and Holden (Dennis),Ed. Holden (Dennis) and Teller (James), Ed. Sacred Literature Series Hazell (peter) and Pritcherd (Anthony),Ed Pritchard (Anthony) and Hazell (Peter),Ed.

वर्ग निर्देशी संलेख (Class Index Entry)हेतु श्रंखला प्रक्रिया (Chain procedure)

वर्ग संख्या Q 4.44

Q	=	Religion	(Sought link)
Q4	=	Buddhism	(Sought link)
Q4.	=	————	(False link)
Q4.4	=	Asia	(Unsought link)
Q4.44	=	India, Buddhism	(Sought link)

उपरोक्त विवरणानुसार खोज कड़ी (Sought link) के रूप में निम्न तीन कड़ियों के लिए वर्ग निर्देशी संलेख (Class Index Entry)निर्मित किये जायेंगे।

1. India, Buddhism.
2. Buddhism, Religion.
3. Religion.

वर्ग निर्देशी संलेख - 1 (Class Index Entry)

INDIA, BUDDHISM. For documents in this class and its sub-divisions, see the Classified Part of the Catalogue, under the Class Number Q4.44 O

वर्ग निर्देशी संलेख - 2 (Class Index Entry-2)

BUDDHISM, RELIGION

For documents in this class and its sub-divisions, see the Classified Part of the Catalogue, under the Class Number

Q4.

○

वर्ग निर्देशी संलेख - 3 (Class Index Entry-3)

RELIGION.

For documents in this class and its sub-divisions, see the Classified Part of the Catalogue, under the Class Number

Q

○

लेखक ग्रन्थ निर्देशी संलेख (Author Book Index Entry)

GREHMAN (Harry) and others.

Buddhism in India.

Q4.44 N99

○

सम्पादक ग्रन्थ निर्देशी संलेख (Editor Book Index Entry)

TELLER (James) and HOLDEN (Dennis), Ed.

Grehman and others: Buddhism in India.

Q4.44 N99

○

	HOLDEN (Dennis) and TELLER. (James), <u>Ed.</u>	
		Grehman and others: Buddhism in India. Q 4.44 N99 ○

ग्रन्थमाला ग्रन्थ निर्देशी संलेख (Series Book Index Entry)

	SACRED LITERATURE SERIES.	
	14	Grehman and others: Buddhism in India. Q 4.44 N99 ○

ग्रन्थमाला सम्पादक नामान्तर निर्देशी संलेख

(Editor of Series Cross Reference Index Entry)

	HAZELL (Peter) and PRITCHARD (Anthony), <u>Ed.</u>	
		<u>see</u> SACRED LITERATURE SERIES ○

	PRITCHARD (Anthony) and HAZELL (Peter), <u>Ed.</u>	
		<u>see</u> SACRED LITERATURE SERIES. ○

महत्वपूर्ण बातें -

- मुख्य संलेख में नियमानुसार केवल प्रथमांकित लेखक का नाम शीर्षक अनुच्छेद (Heading Section) में अंकित कर 'and others' पद का प्रयोग अन्त में किया गया है।
- आख्या अनुच्छेद (Title Section)में सम्पादक को लेखक की तरह 'and' योजक पद लगा कर अंकित किया गया है।
- टिप्पड़ी अनुच्छेद (Note section) में ग्रन्थमाला सम्पादक जिस क्रम में आख्या पृष्ठ (Title Page) पर उल्लिखित है उसी क्रम में लिखकर योजक पद 'and' के द्वारा दोनों के नामों का उल्लेख किया गया है।
- संकेत पत्रक (Tracing Card) में ग्रन्थ के सम्पादक एवं ग्रन्थमाला सम्पादक दोनों को क्रमवार पलट कर अंकित किया गया है तदुपरान्त इतर संलेख निर्मित किये गये हैं।

उदाहरण - 4

(चार संयुक्त व्यक्तिगत लेखक- प्रथम लेखक योजकीय प्रविष्टि पद)

(Hyphenated Entry Element) के साथ अनुवादक एवं सम्पादक)

Tobacco Habit of Women in India

By

Andrew Seth Pringle-Pattision

Herbert J. Reich

John G. Skalinik

Philip F. Ordung

Edited by

S.S.Jorn

Translated by

John Mecano

Fourth Edition

Prentice-Hall of India

New Delhi, 1992

Other Information

Call No.	:	Y15: 412.44 N92
Acc No.	:	8961
Note	:	Prentice Books on Social Pathology No.9. Ed by H M Huxley.

मुख्य संलेख (Main Entry)

Y15:412.44 N92
PRINGLE-PATTISION (Andrew Seth) and others.
Tobacco Habit of Women in India. Ed 4. Ed by SS Jorn. Tr by John Mecano.
(Prentice Books on social Pathology. Ed by H M Huxley. 9):

8961

संकेत पत्रक (Tracing Card)

India, Tobacco Habit
Tobacco Habit, Social Pathology.
Social Pathology, Women.
Women, Sociology
Sociology.

Pringle-Pattision (Andrew Seth) and
others.
Jorn (SS), Ed.
Mecano (John), Tr.
Prentice Books on Social Pathology.

Huxley (HM), Ed.

वर्ग निर्देशी संलेख (Class Index Entry) हेतु श्रंखला प्रक्रिया (Chain procedure)

वर्ग संख्या - Y15:412.4

Y	↓	Sociology	(sought link)
Y1	↓	By Age and Sex	(unsought link)
Y15	↓	Women	(sought link)
Y15:	↓	————	(False link)
Y15:4	↓	Social Pathology	(sought link)
Y15:41	↓	Intemperence	(unsought link)
Y15:412	=	Tobacco Habit	(sought link)

Y15:412.	↓	————	(False link)
Y15:412.4	↓	Asia	(unsought link)
Y15:412.44	=	India	(sought link)

उपरोक्त विवरणानुसार खोज कड़ी (Sought link) के रूप में निम्न पाँच कड़ियों के लिए वर्ग निर्देशी संलेख (Class Index Entry) का निर्माण किया जायेगा।

1. India, Tobacco Habit.
2. Tobacco Habit, Social Pathology.
3. Social Pathology, Women.
4. Women, Sociology.
5. Sociology.

वर्ग निर्देशी संलेख-1 (Class Index Entry-1)

INDIA, TOBACCO HABIT.

For documents in this class and its sub-divisions, see the Classified Part of the Catalogue, under the Class Number.

Y15: 412.44

वर्ग निर्देशी संलेख-2 (Class Index Entry-2)

TOBACCO HABIT, SOCIAL PATHOLOGY.

For documents in this class and its sub-divisions, see the Classified Part of the Catalogue, under the Class Number

Y1 5.412

वर्ग निर्देशी संलेख-3 (Class Index Entry-3)

SOCIAL PATHOLOGY, WOMEN

For documents in this class and its sub-divisions, see the Classified Part of the Catalogue, under the Class Number

Y15:4

वर्ग निर्देशी संलेख -4 (Class Index Entry-4)

WOMEN, SOCIOLOGY.

For documents in this class and its sub-divisions, see the Classified Part of the Catalogue, under the Class Number Y15

O

वर्ग निर्देशी संलेख -5 (Class Index Entry-5)

SOCIOLOGY

For documents in this class and its sub-divisions, see the Classified Part of the Catalogue, under the Class Number Y

O

लेखक ग्रन्थ निर्देशी संलेख (Author Book Index Entry)

PRINGLE-PATTISION (Andrew Seth)and others.

Tobacco Habit of Women in India. Ed 4.

Y15:412.44 N92

O

सम्पादक ग्रन्थ निर्देशी संलेख (Editor Book Index Entry)

TORN (SS), Ed.

Pringle-Pattision and others: Tobacco Habit of women in India. Ed 4.

Y15:412.44 N92

O

अनुवादक ग्रन्थ निर्देशी संलेख (Translator Book Index Entry)

MECANO (John), Tr.

Pringle-Pattision and others: Tobacco Habit of Women in India. Ed 4.

Y15:412.44 N92

ग्रन्थमाला ग्रन्थ निर्देशी संलेख (Series Book Index Entry)

PRENTICE BOOKS ON SOCIAL PATHOLOGY.

9 Pringle-Pattision and others: Tobacco Habit of Women in India. Ed 4.

Y15:412.44 N92

ग्रन्थमाला सम्पादक नामान्तर निर्देशी संलेख

(Editor of Series Cross Reference Index Entry)

HUXLEY (H M), Ed.

see

PRINTICE BOOK ON SOCIAL PATHOLOGY.

महत्वपूर्ण बातें -

- क्लासीफाइड कैटलाग कोड के नियमानुसार आख्या पृष्ठ (Title page) पर अंकित प्रथम लेखक का कुलनाम योजकीय पद है। अतः उसी के अनुसार Sirname को अंकित किया गया है।
- अन्य सभी इतर संलेख (Added Entries) का निर्माण नियमानुसार किया गया है।

उदाहरण - 5

संयुक्त व्यक्तिगत लेखक द्वारा रचित पुस्तकों का सूचीकरण

(तीन संयुक्त व्यक्तिगत लेखक, सहकारक तथा दो ग्रंथमाला एवं दो ग्रन्थमाला सम्पादक, अर्न्तविषयी संलेख के साथ)

Fundamentals of Physics

2nd Edition

By

William C. Odson

David S. Mclaren

Ellis R. Hays.

Edited by

W.E. Antoll

Oxford University Press

N.Delhi, 1965.

Other Information:

Call No.	:	C1 N65
Acc.No.	:	9314
Note:	:	Pure Science series No.6. Ed by charles carr. Science Concept Series No.15. Ed by Evase Anjell. Part 4 is devoted to Gravitation and its class No. is C18

मुख्य संलेख (Main Entry)

	C1	N65
	Antoll.	ODSON (William C) and others. Fundamentals of Physics. Ed 2. Ed by W E Antoll. (Pure science series, Ed by charless Carr.6). (Science concept series. Ed by Evase Anjell. 15)
	9314	
		O

संकेत पत्रक (Tracing)

C 18 Pt.4	Fundamentals, Physics. Physics. Gravitation, Physics. Odson (William C) and others. Antoll (W E), Ed. Pure Science Series. Science concept series. Carr (Charles), Ed. Anjell (Evase), Ed.

वर्ग निर्देशी संलेख (Class Index Entry)हेतु श्रंखला प्रक्रिया (Chain Procedure)

वर्ग संख्या : C1

C	= ↓	Physics	(sought link)
C1	= ↓	Fundamentals	(sought link)
C18	=	Gravitation	(sought link)

उपरोक्त विवरणानुसार खोज कड़ी के रूप में मूल पुस्तक के लिए दो कड़ी एवं पुस्तक के भाग के लिए एक कड़ी। इस प्रकार निम्न तीन खोज कड़ियों हेतु वर्ग निर्देश संलेख निर्मित किये जायेंगे। तीसरी खोज कड़ी पुस्तक के भाग के लिए है इसलिए वो कड़ी बाद में संकेत पत्रक पर लिखी जायेगी।

1. Fundamentals, Physics,
2. Physics
3. Gravitation, Physics

अंर्तविषयी संलेख (Cross Reference Entry)

	C 18	
		See also C1 N65 Odson and others. Fundamentals of Physics. Ed 2. Pt.4. O

वर्ग निर्देशी संलेख -1 (Class Index Entry-1)

FUNDAMENTALS, PHYSICS.

For documents in this class and its subdivisions, see the Classified Part of the Catalogue, under the Class Number C1

O

वर्ग निर्देशी संलेख -2 (Class Index Entry-2)

PHYSICS.

For documents in this class and its subdivisions, see the Classified Part of the Catalogue, under the Class Number C

O

वर्ग निर्देशी संलेख -3 (Class Index Entry-3)

GRAVITATION, PHYSICS.

For documents in this class and its subdivisions, see the Classified Part of the Catalogue, under the Class Number C18

O

लेखक ग्रंथ निर्देशी संलेख (Author Book Index Entry)

ODSON (William C) and others.

Fundamentals of Physics. Ed 2.

C1 N65

O

सम्पादक ग्रन्थ निर्देशी संलेख (Editor Book Index Entry)

	ANTOLL (W E), Ed.	
		Odson and others: Fundamentals of Physics.
	Ed 2.	C1 N65

ग्रन्थमाला ग्रन्थ निर्देशी संलेख -1 (Series Book Index Entry-1)

	PURE SCIENCE SERIES	
	6	Odson and others: Fundamentals of Physics.
	Ed 2	C1 N65

ग्रन्थमाला ग्रन्थ निर्देशी संलेख -2 (Series Book Index Entry-2)

	SCIENCE CONCEPT SERIES.	
	15	Odson and others: Fundamentals of Physics.
	Ed 2.	C1 N65

ग्रन्थालय सम्पादक नामान्तर निर्देशी संलेख -1

(Editor of Series cross Reference Index Entry-1)

	CARR (Charles), Ed.	
		see
		PURE SCIENCE SERIES.

ग्रन्थमाला सम्पादक नामान्तर निर्देशी संलेख -2

(Editor of Series and Cross Reference Index Entry-2)

	AN	ELL (Evase), Ed.
		see SCIENCE CONCEPT SERIES. O

महत्वपूर्ण बातें -

- प्रासांगिक ग्रंथ में स्वतंत्र रूप से दो ग्रन्थमाला टिप्पड़ी दी है अतः नियमानुसार दोनों को पृथक अनुच्छेद के रूप में अंकित किया गया है।
- संकेत पत्रक (Tracing Card) में अर्न्तविषयी संलेख हेतु केवल उन अंशों से श्रंखला निर्मित की गई है जो मुख्य संलेख के वर्गांक से आगे की है।

12.4 अभ्यास हेतु उदाहरण

उदाहरण - 1

(दो संयुक्त व्यक्तिगत लेखक, सहकारक, ग्रन्थमाला)

Medical Law : Text Cases and Materials

By

Emily Jackson

Kenyan Mason

Ed by

Greme Laurie

Second Edition

OUP

New Delhi

2008

Other Information:

Call No.	:	Z (L) P08
Accession No.:		15002
Series Note	:	Series in Medical Law No. 7.

उदाहरण - 2

(दो संयुक्त व्यक्तिगत लेखक, सहकारक, ग्रन्थमाला एव ग्रन्थमाला सम्पादक)

POLITICS IN BRITAIN

By

LYNTON ROBINS

A.G. JORDON

EDITED BY

A.J. BAKER

REVISED EDITION

GREENWOOD

NEW YORK

1987

Other Information:

Call No.	:	W.56 M7
Accession No.:		2532
Note	:	Contemporary Politics Series
		No.2. Ed by Emily Bronte

उदाहरण - 3

(तीन संयुक्त व्यक्तिगत लेखक, एक ही कोटि के दो सहकारक, ग्रन्थमाला एवं दो ग्रन्थमाला सम्पादक)

The Treatment of Prisoners under International Law

Nigel Rodley

Matt Pollard

Nigel White

Ed by
Marcelo Alonso
Edward J. Finn

International Edition
OUP
New Delhi
2009

संयुक्त व्यक्तिगत लेखक द्वारा रचित पुस्तकों का सूचीकरण

Other Information:

Call No. :	Z1, A, 6 P09
Accession No.:	15005
Series Note :	Series in General Public International Law.6. Ed by J.H. Fewkes and John Yarkwood

---

उदाहरण - 4

(चार संयुक्त व्यक्तिगत लेखक, प्रथम लेखक योजकीय प्रविष्टि पद वाला, सम्पादक एवं अनुवादक)

A THEORY OF RELIGION

By

RICHARD LINK-LEE

RODNEY STARK

WILLIAMS S. BAINBRIDGE

GREGORY TROPEA

Translated by

DONALD RITCHIE

Edited by

MURRAY STEIN

Second Edition

GREENWOOD

New York

1987

Other Information:

Call No. :	Q	M7
Accession No.:	21262	
Note :	Toronto Series in Religion No. 6	

उदाहरण - 5

(तीन संयुक्त व्यक्तिगत लेखक, सहकारक, ग्रन्थमाला, अर्न्तविषयी सूचना के साथ)

The Idea of Rajasthan
Explorations in Regional Identity

By
Karine Schomer
Joan L. Erdman
Deryck O. Lodrick

Ed by
F.D. Greene

MANOHAR PUBLICATIONS
1999

Other Information:

Call No. :	Y.4437	N99
Accession No.:	1082	
Note :	Public Tourism Book Series No.4.	
	Ed by R.E. Chemiya.	
	P.260-300 devoted to Stone Age	
	Culture and its class No. s Y714:1	

12.5 विस्तृत अध्ययनार्थ ग्रन्थसूची

1. Ranganathan (SR): Cataloguing Practice. Ed 2. Bangalore, Sarda Ranganathan Endowment for LIbrary Science, 1994.
2. Ranganathan (S.R.) : Classified Catalogue Code. Ed 6. Bangalore, Sarda Ranganathan Endowment for Library Science, 1992.

3. Krishna Kumar : An Introduction to Cataloguing Practice, N. Delhi, 1996.

4. सूद (एस.पी.) सूचीकरण प्रक्रिया, जयपुर,आर.बी.एस.ए., 1998

5. शर्मा (बी.डी.) : अनुवर्ग प्रसूची नियमावली : एक व्यावहारिक अध्ययन, वाई.के.पब्लिशर्स, आगरा, 1999

6. वर्मा (ए.के.) : क्रियात्मक अनुवर्ग सूचीकरण, रायपुर, सेन्ट्रल बुक हाउस, 1999

इकाई -13: छद्मनामधारी लेखकों द्वारा रचित पुस्तकों का सूचीकरण (Cataloguing of Books by Pseudonym Authors)

इकाई की रूपरेखा

13.0 उद्देश्य

13.1 छद्मनाम से तात्पर्य

13.2 छद्मनामधारी लेखक हेतु शीर्षक का चयन एवं उपकल्पन

13.3 सूचीकृत उदाहरण

13.4 अभ्यास हेतु उदाहरण

13.5 विस्तृत अध्ययनार्थ ग्रन्थसूची

13.0 उद्देश्य

इस इकाई के निम्नलिखित उद्देश्य है :

- छद्मनामधारी लेखक (Pseudonym author)से सुपरिचित होना।
- छद्मनामधारी लेखकों द्वारा रचित पुस्तकों के लिए क्लासीफाइड कैटलाग कोड में निर्देशित नियमों से सुपरिचित होना।
- छद्मनामधारी लेखकों द्वारा लिखी गई पुस्तकों के प्रायोगिक सूचीकरण से सुपरिचित होना।

13.1 छद्मनाम से तात्पर्य (Meaning of Pseudonym)

जब लेखक ग्रन्थ की रचना में अपने वास्तविक नाम का उल्लेख न करें और उसे गुप्त रखें, बल्कि वास्तविक नाम के स्थान पर अन्य कोई कल्पित नाम का प्रयोग करें तो उसे छदमनामधारी लेखक (Pseudonym author) कहते हैं। यह प्रवृत्ति संसार के अनेक देशों और विभिन्न भाषाओं के साहित्य में प्रकट होती है। प्राचीन समय से ही देश विदेश में छदम नाम से साहित्य को लिखने की प्रवृत्ति लेखकों में देखने को मिलती है। प्राचीन भारत में 'विष्णु गुप्त' ने अपने छदम नाम 'कौटिल्य' से सुप्रसिद्ध ग्रन्थ 'अर्थशास्त्र' की रचना की। हिन्दी में उपन्यासकार, नाटककार, कहानीकार, मुंशी प्रेमचन्द ने अपनी सभी रचना प्रेमचन्द के नाम से ही विरचित की है जबकि उनका वास्तविक नाम धनपत राय था। मुंशी प्रेमचन्द जी ने एक अन्य नाम नवाब राय से उर्दू में रचनायें की। इसी प्रकार से हिन्दी साहित्य में अन्य उदाहरण 'काका हाथरसी',

'अज्ञेय', 'नागार्जुन', 'नीरज', 'बच्चन', 'निराला', 'सोम ठाकुर', आदि ऐसे लेखक है, जो अपने वास्तविक नाम की अपेक्षा छदमनाम से अधिक ख्याति प्राप्त है। अंग्रेजी साहित्य में भी 'जार्ज इलियट', "मार्क टवेन', 'टू ब्रदर्स' आदि प्रसिद्ध एवं ख्याति प्राप्त छदम नाम है।

डा. एस.आर.रंगनाथन ने क्लासीफाइड कैटलाग में छदमनामधारी लेखकों को कुछ इस प्रकार परिभाषित किया है -"एक लेखक द्वारा प्रयुक्त मिथ्या अथवा काल्पनिक नाम वास्तविक नाम से भिन्न कोई विशिष्ट नाम उसके वास्तविक नाम से भिन्न कोई विशिष्ट नाम। एक छदम नाम लेखक को उसके जीवनकाल में अथवा जीवनोपरान्त अन्य व्यक्तियों द्वारा भी प्रदान किया जा सकता है अथवा वह स्वतः ही सहज भाव से आरम्भ हो जाता है।"

अतः निष्कर्षतः हम कह सकते हैं -

- छदमनाम लेखक द्वारा लेखन कार्य हेतु स्वीकार किया जाता है।
- यह वास्तविक नाम से भिन्न होता है।
- छदमनाम स्वयं लेखक द्वारा अथवा अन्य व्यक्तियों द्वारा दिया जा सकता है। इसके अतिरिक्त छदमनाम सहज भाव से भी प्रचलित हो सकता है।
- छदम नाम लेखक के जीवनकाल अथवा जीवनोपरान्त भी प्रचलन में हो सकता है।

13.2 छद्म नामधारी लेखक हेतु शीर्षक का चयन एवं उपकल्पन

क्लासीफाइड कैटलाग कोड में छद्मनामधारी लेखकों के शीर्षक (Heading) के चयन एवं उपकल्पन हेतु निम्न नियमों का प्रावधान किया गया है।

- नियम संख्या MD41 - यदि आख्या पृष्ठ (Title Page)पर लेखक के स्थान पर केवल छद्मनाम का उल्लेख हो तो शीर्षक अनुच्छेद (Heading Section) में लेखक के छद्मनाम का प्रयोग किया जायेगा। छद्मनाम के पश्चात् कामा (,) लगाकर विवरणात्मक पद (Descriptive term) Pseud लिखेंगे एवं Pseud को रेखांकित (Underline)करेंगे।अन्त में पूर्ण विराम (.) लगायेंगे।

उदाहरण -

DANGER, Pseud.
PREMCHAND, Pseud.
TWAIN (Mark), Pseud.

- नियम संख्या MD421 - यदि आख्या (Title Page) पर लेखक के छदमनाम के साथ ही वास्तविक नाम का भी उल्लेख हो तो शीर्षक अनुच्छेद (Heading section) में छदमनाम के पश्चात कामा (,) लगाकर विवरणात्मक पद 'Pseud' के पश्चात कामा (,) लगाकर वृत्ताकार कोष्ठक में i.e.लिखने के उपरान्त कामा

(,) लगाकर वास्तविक नाम सामान्य क्रम में लिखा जाता है । उसके उपरान्त कोष्ठक बन्द कर दिया जाता है। यदि यह सूचना एक पंक्ति पर समायोजित नहीं हो पाती तो अनुवर्ती पंक्ति प्रथम उर्ध्व रेखा (First indention) से वापस होगी।

उदाहरण - PREMCHAND, Pseud, (i.e. Dhanpat Rai).

TWAIN (Mark), Pseud, (i.e. SL Clemens)

उपयोगकर्ता के वास्तविक नाम से पुस्तक खोज अभिगम की पूर्ति हेतु वास्तविक नाम से छदमनाम (Real Name to Pseudonym) हेतु एक नामान्तर निर्देशी संलेख (Cross Reference Index Entry) का निर्माण किया जायेगा।

- नियम संख्या MD422 - यदि आख्या (Title Page) पर लेखक का वास्तविक नाम दिया गया हो एवं छदमनाम (Pseudonym) अधीनस्थ रूप से जुड़ा हो तो ऐसी स्थिति में शीर्षक अनुच्छेद (Heading Section)में लेखक के वास्तविक नाम का उपकल्पन किया जायेगा। उसके पश्चात कामा (,) लगा कर वृत्ताकार कोष्ठक में i.e. के पश्चात छदमनाम का उल्लेख कर पुनः कामा (,) लगाकर Pseud लिखेंगे।

उदाहरण - RAI (Dhanpat), (i.e. Premchand, Pseud.).

CLEMENS (SL), (i.e. Mark Twain, Pseud).

- नियम संख्या MD423 - यदि लेखक का वास्तविक नाम ग्रन्थ में न उल्लिखित हो तथा बाहरी स्रोत से ज्ञात हो तो शीर्षक अनुच्छेद में लेखक के छदम नाम को ही अंकित कर उसके बाद कामा (,) लगा कर विवरणात्मक पद Pseud लगाते हैं। तत्पशचात कामा (,) लगाकर दीर्घ कोष्ठक में i.e. लिखकर वास्तविक नाम का उल्लेख सामान्य क्रम में करते हैं।

उदाहरण - SHIVANI, Pseud, [i.e. Gora Pant].

TWAIN (Mark), Pseud, [i.e. S L clemens].

- नियम संख्या MD424 - यदि दो सहलेखकों द्वारा सम्मिलित रूप से एक छद्म नाम का प्रयोग किया जाता है और दोनों सहलेखकों का वास्तविक नाम भी ग्रन्थ में उपलब्ध है तो ऐसी स्थिति में शीर्षक अनुच्छेद में छदम नाम से शीर्षक का निर्माण होगा। तद्पश्चात कामा (,) लगा कर Pseud के पश्चात पुनः कामा (,) लगा कर गोल कोष्ठक में i.e. के उपरान्त दोनों लेखकों के वास्तविक नाम का उल्लेख सामान्य शैली में होगा तथा दोनों लेखकों के नाम को and से जोड़ा जायेगा।

उदाहरण - TWO BROTHERS, Pseud, (i.e. Rajan Sharma and Sajan Sharma).

- नियम संख्या MD425 - यदि तीन या उससे अधिक सहलेखक सम्मिलित रूप से किसी एक छदम नाम का प्रयोग करते हैं तो शीर्षक अनुच्छेद में छदम नाम को ही अंकित किया जायेगा परन्तु वृत्ताकार कोष्ठक के अन्तर्गत वास्तविक नाम के स्थान पर प्रथमांकित लेखक के वास्तविक नाम का उल्लेख कर and others लिखा जायेगा।

उदाहरण - THREE SISTERS, Pseud, (i.e. Sita Ganguli and others)

13.3 सूचीकृत उदाहरण

उदाहरण - 1

(एकल छदम नामधारी लेखक, वास्तविक नाम अज्ञात, सहकारक)

HINDU DHARMA

By

Mahatma

Religious Book House

Baroda, 1940

Other Information:

Call No.	:	Q2 N40
Acc. No.	:	9641
Note	:	Editor of this book is Dr. Sada Phal Sharma. The Real Name of the author is unknown.

मुख्य संलेख (Main Entry)

	Q2	N40
		MAHATMA, Pseud. Hindu Dharma. Ed by Sada Phal Sharma
	9641	
		O

संकेत पत्रक (Tracing Card)

Hinduism, Religion. Religon. Mahatma, Pseud. Sharma (Sada Phal), Ed.

वर्ग निर्देशी संलेख (Class Index Entry)हेतु श्रंखला प्रक्रिया (Chain Procedure)

वर्ग संख्या - Q 2

Q	=	Religion	(sought link)
Q2	=	Hinduism	(sought link)

उपरोक्त विवरणानुसार निम्न दो खोज कड़ी के आधार पर वर्ग निर्देशी संलेख निर्मित किये जायेंगें।

1. Hinduism, Religion.
2. Religion.

वर्ग निर्देशी संलेख- 1 (Class Index Entry-1)

HINDUISM, RELIGION.
For documents in this class and its sub-divisions, see the Classified Part of the Catalogue, under the Class Number Q2 O

वर्ग निर्देशी संलेख- 2 (Class Index Entry-2)

RELIGION.
For documents in this class and its sub-divisions, see the Classified Part of the Catalogue, under the Class Number Q O

छद्मनामधारी लेखकों द्वारा रचित पुस्तकों का सूचीकरण

लेखक ग्रंथ निर्देशी संलेख (Author Book Index Entry)

	MAHATMA, Pseud.	
		Hindu Dharma.
		Q 2 N40
		O

संपादक ग्रंथ निर्देशी संलेख (Editor Book Index Entry)

	SHARMA (Sada Phal), Ed.	
		Mahatma, Pseud. : Hindu Dharma.
		Q 2 N40
		O

महत्वपूर्ण बातें -

- आख्या ग्रन्थ निर्देशी संलेख (Title Book Index Entry) का निर्माण नहीं किया गया है। क्योंकि ग्रन्थ की आख्या (Title) से विषय का बोध हो रहा है।

उदाहरण - 2

(छदम नामधारी लेखक, ग्रंथ में उपलब्ध वास्तविक नाम के साथ)

Mill on the Floss

By

ITALO SVEVO

Translated from Italian By

Archibald Colloquin

Speakar and Wannbarg

London, 1963

Other Information:

Call No.	:	0121,3M61,3 N63
Acc. No.	:	96123
Note	:	The real name of author is Ettore Schmitz. This information is taken from the book itself.

मुख्य संलेख- (Main Entry)

	0121, 3M61,3 N63	
		SVEVO (Italo), Pseud., (i e Ettore Schmitz). Mill on the Floss. Tr from Italian by Archibald colloquin.
	96123	

Mill on the Floss, Svevo (Italo), Pseud, (i e Ettore sehmitz)
Svevo (Italo), Pseud, (i e Ettore Schmitz), Fiction.
Fiction, Italian.
Italian, Literature.
Literature.

Svevo (Italo), Pseud,(i e Ettore Schmitz).
Colloquin (Archibald), Tr.
Mill on the Floss.

Schmitz (Ettore).

वर्ग निर्देशी संलेख - (Class Index Entry)हेतु शृंखला प्रक्रिया - (Chain Procedure)

वर्ग संख्या - O121, 3M61,3

O	=	Literature	(sought link)
O1	=	Indo Europea	(unsought link)
O12	=	Latin	(unsought link)
O121	=	Italian	(sought link)
O121,	=	————	(False link)
O121,3	=	Fiction, Italian	(sought link)
O121,3M61	=	Svevo (Italo), Pseud, (i e Ettore Schmitz)(S.L.)	
O121,3M61,	=	————	(False link)
O121,3M61,3	=	Mill on the Floss	(sought link)

उपरोक्त विवरणानुसार निम्न पाँच खोज कड़ी (sought link) के आधार पर वर्ग निर्देशी संलेख निर्मित किये जायेंगे।

1. Mill on the Floss, Svevo (Italo), Pseud, (i e Ettore Schmitz).
2. Svevo (Italo), Pseud, (i e Ettore Schmitz), Fiction.
3. Fiction, Italian.
4. Italian, Literature.
5. Literature.

वर्ग निर्देशी संलेख - 1 (Class Index Entry-1)

MILL ON the floss, SVEVO (Italo), Pseud,
(i.e. Ettore Schmitz), FICTION.
For documents in this class and its sub-divisions, see the Classified Part of the Catalogue, under the Class Number
O121,3M61,3

वर्ग निर्देशी संलेख - 2 (Class Index Entry-2)

SVEVO (Italo), Pseud, (i.e. Ettore Schmitz), FICTION.
For documents in this class and its sub-divisions, see the Classified Part of the Catalogue, under the Class Number
Q121, 3M61

वर्ग निर्देशी संलेख - 3 (Class Index Entry-3)

FICTION, ITALIAN
For documents in this class and its sub-divisions, see the Classified Part of the Catalogue, under the Class Number
O121,3

वर्ग निर्देशी संलेख - 4 (Class Index Entry-4)

ITALIAN, LITERATURE.

For documents in this class and its subdivisions, see the Classified Part of the Catalogue, under the Class Number

O121

वर्ग निर्देशी संलेख - 5 (Class Index Entry-5)

LITERATURE.

For documents in this class and its subdivisions, see the Classified Part of the Catalogue, under the Class Number

O

लेखक ग्रन्थ निर्देशी संलेख - 1 (Author Book Index Entry-1)

SVEVO (Italo), Pseud, (i.e. Ettore Schmitz).

Mill on the Floss.

O121, 3M61,3 N63

अनुवादक ग्रन्थ निर्देशी संलेख - (Translator Book Index Entry)

COLLOQUIN (Archibald), Tr.

Svevo, Pseud: Milk on the Floss.

O121, 3M61,3 N63

आख्या ग्रन्थ निर्देशी संलेख (Title Book Index Entry)

MILL ON the floss.
By Svevo, Pseud.

O121, 3M61, 3 N63

O

वास्तविक नाम-छदम नाम नामान्तर निर्देशी संलेख

(Real Name to Pseudonym Cross Reference Index Entry)

SCHMITZ (Ettore)
see
SVEVO (Italo), Pseud.

O

महत्वपूर्ण बातें -

- लेखक का वास्तविक नाम ग्रन्थ में ही अंकित होने के कारण नियम संख्या MD421 का प्रयोग किया गया है।
- वास्तविक नाम अभिगम की सम्पूर्ति हेतु नामान्तर निर्देशी संलेख का निर्माण किया गया है।

उदाहरण - 3

(वास्तविक नाम के अधीन छदम नाम, सहकारक, ग्रन्थमाला एवं ग्रन्थमाला का सम्पादक)

The Multiverse of Democracy in India

By
D.L. Seth
Edited By
Ashish Nandy
Ed 6

Ajanta Publications
Patna - 1985.

Other Information:

Call No.	:	W6. 44 N85
Acc. No.	:	18201
Note	:	Political Book Series No. 5.
		Ed by C-E. Dixit.
		Politician is the Pseudonym of the author.

मुख्य संलेख- (Main Entry)

W6.44 N85.
SETH (D L), (i.e. Politician, Pseud).
Multiverse of Democracy in India. Ed 6. Ed by Ashis Nandy.
(Political Book Series. Ed by C E Dixit. 5).

18201

संकेत पत्रक (Tracing Card)

India, Democracy.
Democracy, Political Science
Political Science.

Seth (DL), (i.e. Politician, Pseud).
Nandy (Ashis), Ed.
Political Book Series.

Dixit (CE), Ed.
Politician, Pseud.

वर्ग निर्देशी संलेख-(Class Index Entry)हेतु शृंखला प्रक्रिया- (Chain Procedure)

वर्ग संख्या - W6.44

W	=	Political Science	(Sought link)
W6	=	Democracy	(Sought link)
W6.	=	————	(False link)

W6.4	=	Asia	(Unsought link)
W6.44	=	India	(sought link)

उपरोक्त विवरणानुसार निम्न तीन खोज कड़ी के आधार पर वर्ग निर्देशी संलेख निर्मित किये जायेंगे

1. India, Democracy.
2. Democracy, Political Science.
3. Political Science.

वर्ग निर्देशी संलेख- 1 (Class Index Entry-1)

INDIA, DEMOCRACY.

For documents in this class and its sub-divisions, see the Classified Part of the Catalogue, under the Class Number

W6.44

○

वर्ग निर्देशी संलेख- 2 (Class Index Entry-2)

DEMOCRACY, POLITICAL SCIENCE.

For documents in this class and its sub-divisions, see the Classified Part of the Catalogue, under the Class Number W6

○

वर्ग निर्देशी संलेख- 3 (Class Index Entry-3)

POLITICAL SCIENCE

For documents in this class and its sub-divisions, see the Classified Part of the Catalogue, under the Class Number W

○

लेखक ग्रन्थ निर्देशी संलेख- (Author Book Index Entry)

SETH (DL), (i.e. Politician, Pseud).
Multiverse of Democracy in India. Ed 6.
W6.44 N85

O

सम्पादक ग्रन्थ निर्देशी संलेख- (Editor Book Index Entry)

NANDY (Ashis), Ed.
Seth: Multiverse of Democracy in India.
Ed. 6.
W6.44 N85

O

ग्रन्थमाला ग्रन्थ निर्देशी संलेख- (Series Book Index Entry)

POLITICAL BOOK SERIES.
5 Seth: Multiverse of Democracy in India. Ed 6.
W6.44 N85

O

ग्रन्थमाला सम्पादक नामान्तर निर्देशी संलेख-

(Editor of Series Cross Reference Index Entry)

DIXIT (C E), Ed.
see
POLITICAL BOOK SERIES.

O

छद्म नाम-वास्तविक नाम नामांतर निर्देशी संलेख-

(Pseudonym-Real Name cross Reference Index Entry)

	POLITICIAN, Pseud.	
		see SETH (D L)

महत्वपूर्ण बातें -

- छदम नाम वास्तविक नाम के अधीन है। अतः नियम संख्या MD422 के अनुसार शीर्षक अनुच्छेद में शीर्षक हेतु वास्तविक नाम का चयन किया गया है।
- छदम नाम -वास्तविक नाम (Pseudonym to Real Name) हेतु एक नामांतर निर्देशी संलेख बनाया गया है।

उदाहरण - 4

(छदम नाम धारी लेखक - वास्तविक नाम वाह्य स्रोतों से ज्ञात)

The Concept of Law

ADVOCATE

Edited By
H.L.A. Hart

Suhana Publishers
New Delhi, 1961.

Other Information:

Call No. : Z N61

Acc. No. : 3926

Note : The Real name of the author is R.K.Ojha. It is known by outside source.

मुख्य संलेख- (Main Entry)

Z N61

ADVOCATE, Pseud, [i.e. R K Ojha]
Concept of Law. Ed by H L A Hart.

3926

O

संकेत पत्रक- (Tracing Card)

Law
Advocate, Pseud, [i.e. R K Ojha].
Hart (HLA), Ed.

Ojha (RK)

वर्ग निर्देशी संलेख- (Class Index Entry)

LAW

For documents in this class and its sub-divisions, see the Classified Part of the Catalogue, under the Class Number

Z

O

लेखक ग्रन्थ निर्देशी संलेख- (Author Book Index Entry)

ADVOCATE, Pseud, [i.e. R K Ojha].

Concept of Law.

Z N61

O

संपादक ग्रन्थ निर्देशी संलेख- (Editor Book Index Entry)

	HART (H L A), Ed.	
		Advocate, Pseud : Concept of Law.
		Z N61
		O

वास्तविक नाम-छदम नाम नामान्तर निर्देशी संलेख-

(Real-Name- Pseudonym cross Reference Index Entry)

	OJHA (R K)	
		see
		ADVOCATE, Pseud.
		O

महत्वपूर्ण बातें -

- शीर्षक (Heading) के चयन हेतु क्लासीफाइड कैटलाग कोड के नियम संख्या MD423 का उपयोग किया गया है। चूँकि लेखक का वास्तविक नाम बाहरी स्रोत से ज्ञात हुआ है अतः वास्तविक नाम को दीर्घ कोष्ठक में प्रयुक्त किया गया है।
- आख्या (Title) के पूर्व लगा आरम्भिक पद 'The' का विलोप कर दिया गया है।

उदाहरण - 5

(छदम नाम धारी लेखक, दो लेखकों द्वारा प्रयुक्त एक छदमनाम)

BLACK CAT WEAPING

By

Night Queen

Ed by
Madhulika Pandey

Fiction Publishers,
New Delhi, 1985.

Other Information:

Call No. : 0111,3N3, B N85

Acc. No. : 9621

Note : Night Queen is the Pseudonym of Karuna Tiwari and Mamata Tiwari.

मुख्य संलेख- (Main Entry)

	0111,3 N3, B N85	
	and	NIGHT QUEEN, Pseud, (i.e. Karuna Tiwari and Mamta Tiwari). Black cat weaping . Ed by Madhulika Pandey.
	9621	

संकेत पत्रक- (Tracing Card)

Black Cat weaping, Night Queen, Pseud, (i.e. Karuna Tiwari and Mamta Tiwari).
Night Queen, Pseud, (i.e. Karuna Tiwari and Mamta Tiwari), Fiction.
Fiction, English.
English, Literature.
Literature.

Pandey (Mudhilika), Ed.

Tiwari (Karuna) and Tiwari (Mamta)
Tiwari (Mamta) and Tiwari (Karuna)

वर्ग निर्देशी संलेख- (Class Index Entry)हेतु श्रंखला प्रक्रिया - (Chain Procedure)

वर्ग संख्या - 0111, 3N3, B.

0	=	Literature	(sought link)
↓			
01	=	Indo European	(Unsought link)
↓			
011	=	Teutonic	(Unsought link)
↓			
0111	=	English	(sought link)
↓			
0111,	=	————	(False link)
↓			
0111,3	=	Fiction	(sought link)
↓			
0111,3N3	=	Night Queen, Pseud, (i.e. Karuna Tiwari and Mamta Tiwari)	(sought link)
↓			
0111,3N3,	=	————	(False link)
↓			
0111,3N3,B	=	Black Cat weaping	(sought link)

उपरोक्त विवरणानुसार निम्न पाँच खोज कड़ी (Sought link) के आधार पर वर्ग निर्देशी संलेख निर्मित किये जायेंगें।

1. Black Cat weaping, Night Queen, Pseud, (i.e. Karuna Tiwari and Mamta Tiwari)
2. Night Queen, Pseud, (i.e. Karuna Tiwari and Mamata Tiwari), Fiction.
3. Fiction, English.
4. English, Literature.
5. Literature.

वर्ग निर्देशी संलेख - 1 (Class Index Entry-1)

BLACK CAT weaping, NIGHT QUEEN, Pseud, (i.e. Karuna Tiwari and Mamta Tiwari).

For documents in this class and its subdivisions, see the Classified Part of the Catalogue, under the Class Number 0111,3N3, B

O

वर्ग निर्देशी संलेख - 2 (Class Index Entry -2)

NIGHT QUEEN, Pseud, (i.e. Karuna Tiwari and Mamta Tiwari), FICTION.

For documents in this class and its sub-divisions, see the Classified Part of the Catalogue, under the Class Number 0111,3N3

O

वर्ग निर्देशी संलेख - 3 (Class Index Entry-3)

FICTION, ENGLISH

For documents in this class and its sub-divisions, see the Classified Part of the Catalogue, under the Class Number 0111,3

O

वर्ग निर्देशी संलेख - 4 (Class Index Entry-4)

ENGLISH, LITERATURE.

For documents in this class and its sub-divisions, see the Classified Part of the Catalogue, under the Class Number 0111

O

वर्ग निर्देशी संलेख - 5 (Class Index Entry-5)

LITERATURE

For documents in this class and its sub-divisions, see the Classified Part of the Catalogue, under the Class Number O

O

संपादक ग्रन्थ निर्देशी संलेख - (Editor Book Index Entry)

	PANDEY (Madhulika), Ed.	
		Night Queen, Pseud : Black Cat weaping. 0111,3M3, B N85

वास्तविक नाम-छदम नाम नामान्तर निर्देशी संलेख - 1

(Real Name - Pseudonym cross Reference Index Entry-1)

	TIWARI (Karuna) and TIWARI (Mamta).	
		see NIGHT QUEEN, Pseud.

वास्तविक नाम, छदम नाम नामान्तर विर्देशी संलेख - 2

(Real Name - Pseudonym cross Reference Index Entry-2)

	TIWARI (Mamta) and TIWARI (Karuna).	
		see NIGHT QUEEN, Pseud.

महत्वपूर्ण बातें -

- क्लासीफाइड कैटलाग कोड के नियम संख्या MD424 के अनुसार मुख्य संलेख का निर्माण किया गया है।
- दोनों लेखकों के वास्तविक नाम से छदमनाम के लिए दो नामान्तर निर्देशी संलेखों का निर्माण किया गया है।

उदाहरण - 6

(छदमनाम धारी लेखक, तीन लेखकों द्वारा संयुक्त रूप से प्रयुक्त एक छदमनाम)

RIGVEDIC RELIGION

By

TRIDEV

Edited by
Acharya Shivarchan Upadhyay
Ed 2.

Durga Publishers,
Varanasi, 2003.

Other Information:

Call No. : Q11 PO3

Acc. No. : 9216

Note : Tridev is Pseudonym of Three authors named - R.K. Sharma, P.K. Tripathi and T.N.Pandey.

मुख्य संलेख- (Main Entry)

	Q11	P03
		TRIDEV, Pseud. (i.e. R.K.Sharma and others). Rigvedic Religion. Ed 2. Ed by Shivarchan Upadhyay.
	9216	
		O

Rigvedic, Vedic. Vedic, Religion. Religion. Tridev, <u>Pseud</u>, (i.e. R K Sharma and others). Upadhyay (Shivarchan), <u>Ed.</u> Sharma (RK) and others.

वर्ग निर्देशी संलेख- (Class Index Entry)हेतु शृंखला प्रक्रिया- (Chain procedure)

वर्ग संख्या - Q 11

Q	=	Religion	(sought link)
Q1	=	Vedic	(sought link)
Q11	=	Rigvedic	(sought link)

उपरोक्त विवरणानुसार निम्न तीन खोज कड़ी (sought link) के आधार पर वर्ग निर्देशी संलेख निर्मित किये जायेंगे।

1. Rigvedic, Vedic
2. Vedic, Relgion.
3. Religion.

वर्ग निर्देशी संलेख- 1 (Class Index Entry- 1)

RIGVEDIC, VEDIC
For documents in this class and its subdivisions, see the Classified Part of the Catalogue, under the Class Number Q11 O

वर्ग निर्देशी संलेख- 2 (Class Index Entry- 2)

VEDIC, RELIGION,
For documents in this class and its subdivisions, see the Classified Part of the Catalogue, under the Class Number Q1 O

वर्ग निर्देशी संलेख- 3 (Class Index Entry- 3)

		RELIGION.
		For documents in this class and its sub-divisions, see the Classified Part of the Catalogue, under the Class Number Q O

लेखक ग्रन्थ निर्देशी संलेख- (Author Book Index Entry)

		TRIDEV, Pseud, (i.e. R K Sharma and others).
		Rigvedic Religion. Ed 2. Q 11 P03 O

सम्पादक वर्ग निर्देशी संलेख (Editor Book Index Entry)

		UPADHYAY (Shivarchan), Ed.
		Tridev, Pseud : Rigvedic Religion, Ed 2. O11 P03 O

छदमनाम-वास्तविक नाम नामान्तर निर्देशी संलेख-

(Pseudonym- Real Name cross Reference Index Entry)

		SHARMA (R K) and others.
		see TRIDEV, Pseud. O

महत्वपूर्ण बातें -

- नियम संख्या MD425 के अनुसार मुख्य संलेख का निर्माण किया गया है।
- इतर संलेखों का निर्माण नियमानुसार किया गया है।

13.4 अभ्यास हेतु उदाहरण

उदाहरण - 1

(एकल छदम नामधारी लेखक, वास्तविक नाम अज्ञात, सहकारक)

ROMOLA

By

GEORGE ELIOT

(1819 - 1880)

2nd Edition

Edited by

M.K. Swanton

Published by

John Wiley & Sons

New York

1973

Other Information:

Call No. : 0111, 3M19 L3

Acc. No. : 40100

उदाहरण - 2

(छदम नामधारी लेखक, ग्रन्थ में उपलब्ध वास्तविक नाम, सहकारक सहित)

THE STOLEN WHITE ELEPHANT

By

MARK TWAIN

(1835 - 1910)

2nd Edition

Edited by

A.O. Stern

Published by

OUP

New Delhi

Other Information:

Call No.	:	0111, 3M35 K9
Acc. No.	:	15409
Note	:	The real name of the author is Samuel Langhorne Clemens.

उदाहरण - 3

(वास्तविक नाम के अधीन छदमनाम, सहकारक एवं ग्रन्थमाला के साथ ग्रन्थमाला सम्पादक)

NINETEEN EIGHTY FOUR

By

GEORGE ORWELL

(1903 - 1950)

Edited by

J.H.FEWKES

OXFORD UNIVERSITY PRESS

New York

1986

Other Information:

Call No.	:	0111, 3NO3, N M6
Acc. No.	:	12190
Note	:	Pseudonym of the author is Eric Arthur Blair. This information is given on the back-side of the title page. World Classic series No. 6 Edited by John Yarkwood.

उदाहरण - 4

(छदम नामधारी लेखक, वास्तविक नाम वाह्य स्रोतों से ज्ञात)

WUTHERING HEIGHTS

By

EMILY BRONTE

(1818 - 1848)

Edited by
M.J. Power
Published by
John Wiley & Sons
New York
1978

Other Information:

Call No.	:	0111, 3M18, L8
Acc. No.	:	15192
Note	:	Currer Bell is the pseudonym of Emily Bronte. This information is taken from outside source.

उदाहरण - 5

(छदम नामधारी लेखक, दो लेखकों द्वारा संयुक्त रूप से प्रयुक्त एक छदमनाम)

MID NIGHT

By
DAVID WHITE

John Wiley & Sons
New York
1986

Other Information:

Call No.	:	0111, 3M19, M M6
Acc. No.	:	13149
Note	:	David White is joint Pseudonym of Adam Smith and William Smith.

उदाहरण - 6

(छदम नामधारी लेखक- तीन लेखकों द्वारा संयुक्त रूप से प्रयुक्त एक छदमनाम)

CHORUS GIRL

By
DANCER

New Delhi
Music Publications
1989

Other Information:

Call No.	:	0111, 3N03, C N89
Acc. No.	:	12189
Note	:	Dancer is Pseudonym of Three authors named- Sita Shukla, Gita Shukla and Nita Shukla.

13.5 विस्तृत अध्ययनार्थ ग्रन्थसूची

1. Ranganathan (SR): Cataloguing Practice. Ed 2. Bangalore, Sarda Ranganathan Endowment for LIbrary Science, 1994.
2. Ranganathan (S.R.) : Classified Catalogue Code. Ed 6. Bangalore, Sarda Ranganathan Endowment for Library Science, 1992.
3. Krishna Kumar : An Introduction to Cataloguing Practice, N. Delhi, 1996.
4. सूद (एस.पी.) सूचीकरण प्रक्रिया, जयपुर,आर.बी.एस.ए., 1998
5. शर्मा (बी.डी.) : अनुवर्ग प्रसूची नियमावली : एक व्यावहारिक अध्ययन, वाई.के.पब्लिशर्स, आगरा, 1999
6. वर्मा (ए.के.) : क्रियात्मक अनुवर्ग सूचीकरण, रायपुर, सेन्ट्रल बुक हाउस, 1999

इकाई -14: बहुखण्डीय ग्रन्थों का सूचीकरण (Cataloguing of Multi-Volumed Books)

इकाई की रूपरेखा

14.0 उद्देश्य

14.1 बहुखण्डीय ग्रन्थ से तात्पर्य

14.2 बहुखण्डीय ग्रन्थों के प्रकार

  14.2.1 बहुखण्डीय ग्रन्थ प्रकार - 1

  14.2.2 बहुखण्डीय ग्रन्थ प्रकार - 2

14.3 सूचीकृत उदाहरण

14.4 अभ्यास हेतु उदाहरण

14.5 विस्तृत अध्ययनार्थ ग्रन्थसूची

14.0 उद्देश्य

इस इकाई के निम्नलिखित उद्देश्य है :

- बहुखण्डीय ग्रन्थ की अवधारणा से सुपरिचित कराना,
- बहुखण्डीय ग्रन्थों के विभिन्न प्रकारों से अवगत कराना,
- बहुखण्डीय ग्रन्थों के पुस्तकालय में उपलब्धता के आधार पर, पूर्णसंघात, अपूर्ण संघात, अपूर्ण उपलब्ध संघात ग्रन्थों के प्रायोगिक सूचीकरण हेतु नियमों से अवगत कराना।
- सूचीकृत उदाहरण के माध्यम से बहुखण्डीय ग्रन्थों के प्रायोगिक सूचीकरण से शिक्षार्थियों को बाधित करना।

14.1 बहुखण्डीय ग्रन्थ से तात्पर्य

सामान्यतः ग्रन्थ एक ही खण्ड में प्रकाशित होते हैं। जब लेखक द्वारा किसी विशिष्ट विषय पर लिखी गई सामग्री बहुत अधिक पृष्ठों में हो जाती है तो उसके विशाल आंकार को देखते हुए उपयोगकर्ता को अध्ययन में सुविधा हेतु उक्त विशाल पाठ्य सामग्री को एक खण्ड में प्रकाशित न करके कई खण्डों में प्रकाशित किया जाता है। बहुखण्डीय ग्रन्थों के सभी खण्डों में विषयवस्तु की दृष्टि से निरन्तरता होती है। कभी कभी सभी खण्ड एक साथ प्रकाशित न हो कर विभिन्न समय अन्तराल में प्रकाशित होते हैं। बहुखण्डीय ग्रन्थों में सभी खण्डों की एक सामान्य आख्या होती है तथा अन्य खण्ड संख्या के

आधार पर चिन्हित होते है। परन्तु कभी कभी समस्त खण्डों की एक सामान्य आख्या के साथ-साथ अलग-अलग खण्डों की अलग-अलग विशिष्ट आख्या भी होती है। बहुखण्डीय ग्रन्थों में पृष्ठांकन की दृष्टि से कभी-कभी समस्त खण्डों के मध्य निरंतरता पाई जाती है और कभी कभी निरन्तरता का अभाव भी दृष्टिगोचर होता है।

क्लासीफाइड कैटलाग कोड में डा.रंगनाथन द्वारा बहुखण्डीय ग्रन्थों को निम्नवत परिभाषित किया है -"दो या अधिक खण्डों में प्रकाशित तथा वैचारिक नैरंतर्य वाला ग्रन्थ और इस अथवा अन्य कारणवश खण्डों में प्रदत्त विचार सामग्री का विभाजन समस्त खण्डों में इस प्रकार का हो, कि सभी खण्ड एक संघात (Set) के समान हों अर्थात वे सब मिलकर एकल खण्ड का निर्माण करते हों।"

ए.ए.सी.आर.-2 के अन्तर्गत दी गई परिभाषा निम्न प्रकार से है - "ऐसा ग्रन्थ जो निश्चित पृथक पृथक भागों में या तो सम्पूर्ण हुआ हो अथवा सम्पूर्ण होने वाला हो।

14.2 बहुखण्डीय ग्रन्थों के प्रकार (Types of Multivolumed Books)

प्रायोगिक सूचीकरण की दृष्टि से बहुखण्डीय ग्रन्थों को निम्नलिखित दो कोटियों में विभक्त किया गया है।

1. बहुखण्डीय ग्रन्थ प्रकार - 1
2. बहुखण्डीय ग्रन्थ प्रकार - 2

उपरोक्त दोनों कोटियों के बहुखण्डीय ग्रन्थों के सूचीकरण हेतु विस्तृत नियम निम्नवत हैं -

14.2.1 बहुखण्डीय ग्रन्थ प्रकार-1 (Multivolumed Books Type-1)

क्लासीफाइड कैटलाग कोड के अनुसार इस कोटि में वे बहुखण्डीय ग्रन्थ आते हैं जिसमें संघात (Set) से सम्बन्धित सभी खण्डों की एक सामान्य आख्या (Common Title) होती है। अलग अलग खण्ड अपनी खण्ड संख्या (Volume Number)के आधार पर चिन्हित किये जाते हैं।

प्रायोगिक सूचीकरण में पुस्तकालय के अन्तर्गत खण्ड उपलब्धता के आधार पर इन्हें पुनः निम्नलिखित कोटियों में विभक्त किया गया है।

1. पूर्ण संघात (Complete set)
2. अपूर्ण उपलब्ध संघात (Incomplete set)
3. अपूर्ण प्रकाशित संघात (Uncomplete set)

14.2.1.1 पूर्ण संघात (Complete set) - जब संघात (set) के सभी खण्ड

(Volume) प्रकाशित हुये हों एवं पुस्तकालय में उपलब्ध हो, ऐसे बहुखण्डीय ग्रन्थ को पूर्ण संघात (Complete set)की संज्ञा दी जाती है। इस कोटि के संघात (Set) को मुख्य संलेख (Main Entry) के आख्या अनुच्छेद (Title Section)की समाप्ति के पश्चात ग्रन्थ की कुल खण्ड संख्या का उल्लेख कर पद 'V' का उल्लेख करते हैं।

उदाहरणार्थ -

Principles of Economies

By

John Mare

Other Information:

Call No. : X K 2.1 to K 2.2

Acc.No. : 4321-22

Note : The Book is two volume set.

	X	K 2.1 to K 2.2
		MARE (John). Principles of Economies. 2V
	4321-4322	
		O

14.2.1.2 अपूर्ण उपलब्ध संघात (Incomplete Set)- जब बहुखण्डीय संघात (Multivolume Set) के सभी खण्ड प्रकाशित हैं परन्तु कुछ खण्ड पुस्तकालय में उपलब्ध नहीं हैं तो ऐसे बहुखण्डीय ग्रन्थ को अपूर्ण उपलब्ध संघात (Incomplete set) की कोटि में रखा जाता है।

इस कोटि के संघात (Set) को मुख्य संलेख (Main Entry)के आख्या अनुच्छेद (Title Section) की समाप्ति के पश्चात कुल खण्डों की संख्या का उल्लेख करने के बाद दीर्घ कोष्ठक [ ] में V लिख कर पुस्तकालय में अनुपलब्ध खण्ड/खण्डों की संख्या लिखकर पद Not in Library का उल्लेख करते हैं। दीर्घ कोष्ठक में लिखी यह सूचना पेन्सिल से लिखते है एवं उसे रेखांकित (Under line) करते हैं। यह सूचना पेन्सिल से इसलिए लिखते हैं कि जब खण्ड पुस्तकालय में उपलब्ध हो जायेगा तो यह सूचना मिटा दी जाती है।

उदाहरणार्थ

Psychological Enquiry

By

John Moore

Other Information:

Call No.	:	S : f N2.1, N2.3
Acc.No.	:	2991-2992
Note	:	It is Three volume set but volume two not available in the library.

	S:f	N 2.1, N 2.3
		MOORE (John) Psychological Enquiry. 3V.[V2 not in Library.] 2991-2992

14.2.1.3 अपूर्ण प्रकाशित संघात (Uncomplete set)- कभी कभी बहुखण्डीय संघात (Multivolume set) के सभी खण्ड एक साथ प्रकाशित नहीं होते । यदि ग्रन्थ के सभी खण्ड प्रकाशित न हुये हों तथा कुछ खण्ड प्रकाशनाधीन हों तो उसे अपूर्ण प्रकाशित संघात (Uncompleted set) कहते हैं। इस कोटि के संघात को मुख्य संलेख के आख्या अनुच्छेद की समाप्ति के पश्चात V लिखने के पश्चात प्रकाशित खण्डों की संख्या लिखकर एक छोटी आड़ी रेखा (Dash -) लगाते हैं। इस प्रकार छोटी आड़ी रेखा (-) लिखने से तात्पर्य है कि अभी कुछ खण्डों का प्रकाशन होना शेष है। निम्न उदाहरण से इसे अधिक स्पष्ट किया जा सकता है।

उदाहरण -

Book of Civil Engineering

By

Prof. T.D. Aahooja

Other Information:

Call No.	:	D1 N8.1 to N 8.3 -
Acc.No.	:	1421-1423
Note	:	The book is in four volumes. But volume 4 yet to be publish.

		N 8.1 to N 8.3 -
		AAHOOJA (TD) Book of Civil Engineering. V 1-3 - 1421-1423

उपरोक्त उदाहरण में ग्रंथ संख्या (Book Number) M8 का प्रयोग वर्ष 1988 के लिए किया गया है। M 8.1 प्रथम खण्ड के लिए एवं M 8.3 तीसरे खण्ड के लिए प्रयुक्त है उसके आगे छोटी आड़ी रेखा (-) जिसका तात्पर्य तीसरे खण्ड के पश्चात अभी अगले खण्ड का प्रकाशन शेष है।

आख्या अनुच्छेद (Title Section) की समाप्ति के पश्चात भी VI-3- से तात्पर्य तीसरे खण्ड के पश्चात अगला खण्ड प्रकाशनाधीन है यह सूचना सूची पत्रक पर पेन्सिल से लिखी जाती है।

उपरोक्त उदाहरण में परिग्रहण संख्या का उल्लेख भी वर्णित क्रम के अनुसार ही किया जाता है।

14.2.2 बहुखण्डीय ग्रन्थ प्रकार-2 (Multivolumed Books Type-2)

द्वितीय प्रकार के बहुखण्डीय ग्रन्थ वे होते हैं जिनके समस्त खण्डों की एक सामान्य आख्या (common title) तो होती ही है साथ ही साथ समस्त खण्डों की अलग अलग विशिष्ट आख्या (specific title)भी होती है।

प्रायोगिक सूचीकरण की दृष्टि से बहुखण्डीय ग्रन्थ प्रकार 1 (Multi Volume Type 1) के नियमों के अतिरिक्त प्रत्येक खण्ड के लिए अलग अलग पैराग्राफ (Paragraph) के रूप में सूचना निम्नवत अंकित की जाती है। पद V के पश्चात खण्ड की संख्या उसके पश्चात पूर्णविराम (.) लगाते हुए खण्ड की विशिष्ट आख्या/ by उस खण्ड के लेखक/ लेखकों का नाम (यदि आख्या पृष्ठ पर दिया गया है) उसके पश्चात पूर्णविराम (.) उसके पश्चात यदि कोई सहकारक हो तो उसके विवरणात्मक पद (Descriptive Term) का प्रयोग करते हुए उसके नाम का भी उल्लेख सामान्य शैली में करेंगे।

बहुखण्डीय ग्रन्थ प्रकार -2(Multi Volume set type-2) को निम्न कोटियों में प्रकार-1(Type-1) की भाँति विभक्त किया जा सकता है।

1. पूर्ण संघात (Complete set)
2. अपूर्ण उपलब्ध संघात (Incomplete set)
3. अपूर्ण प्रकाशित संघात (Uncomplete set)

विशिष्ट नियम

- बहुखण्डीय ग्रन्थों हेतु ग्रन्थ संख्या का प्रयोग करते हुए प्रथम खण्ड का ग्रन्थांक व to पद लिखने के बाद अंतिम खण्ड का ग्रन्थांक लिखा जाता है।

- अपूर्ण प्रकाशित संघात (Incomplete set) की अवस्था में अन्तिम ग्रन्थांक के बाद छोटी आड़ी रेखा (-) को अंकित किया जाता है।
- बहुखण्डीय ग्रन्थों की परिग्रहण संख्या (accession number) को अनुच्छेद में वर्णित करते समय संघात की प्रथम संख्या - संघात की अंतिम संख्या का उल्लेख किया जाता है,उदाहरणार्थ - 2001-2004
- जब संघात के खण्डों की संख्या एक क्रम में नही हो तो उसे निम्न प्रकार से अंकित करना चाहिए। 1939,2002

14.3 सूचीकृत उदाहरण

उदाहरण - 1

(बहुखण्डीय ग्रन्थ प्रकार-1 : पूर्ण संघात)

Social Structure and Change in India

By

M.N.Srinivas

A.M. Shah

Oxford University Press

New Delhi, 1996

Other Information:

Call No.	:	Y:7.44 N 6.1 to N 6.3
Acc. No.	:	2245-2247
Note	:	It is a Three Volume set

मुख्य संलेख (Main Entry)

	Y:7.44	N 6.1 to N 6.3
		SRINIVAS (M N) and SHAH (AM). Social structure and change in India. 3V.
	2245-2247.	
		O

India, Personality. Personality, Sociology. Sociology. Srinivash (MN) and SHAH (AM) Shah (AM) and Srinivash (MN)

वर्ग निर्देशी संलेख (Class Index Entry)हेतु श्रंखला प्रक्रिया (Chain Procedure)

वर्ग संख्या - Y : 7.44

Y	=	Sociology	(sought link)
Y:	=	————	(False link)
Y:7	=	Personality	(Sought link)
Y:7.	=	————	(False Link)
Y:7.4	=	Asia	(Unsought link)
Y:7.44	=	India, Personality	(sought link)

उपरोक्त विवरणानुसार खोजकड़ी (sought link) के आधार पर निम्न तीन वर्ग निर्देशी संलेख (Class Index Entry)निर्मित किये जायेंगे।

1. India, Personality
2. Personality, Sociology.
3. Sociology.

वर्ग निर्देशी संलेख-1 (Class Index Entry-1)

	INDIA, PERSONALITY. For documents in this class and its sub-divisions, see the Classified Part of the Catalogue, under the Class Number Y : 7.44

वर्ग निर्देशी संलेख-2 (Class Index Entry-2)

PERSONALITY, SOCIOLOGY.

For documents in this class and its subdivisions, see the Classified Part of the Catalogue, under the Class Number Y : 7

वर्ग निर्देशी संलेख-3 (Class Index Entry-3)

SOCIOLOGY.

For documents in this class and its subdivisions, see the Classified Part of the Catalogue, under the Class Number Y

लेखक निर्देशी संलेख (Author Book Index Entry)

SRINIVAS (MN) and SHAH (AM).

Social Structure and Change. 3V

Y:7.44 ⁃ N 6.1 to6.3

लेखक निर्देशी संलेख (Author Book Index Entry)

	SHAH (AM) and SRINIVAS (MN).	
		Social Structure and Change. 3V.
		Y 7.44 N 6.1 to N 6.3
		O

महत्वपूर्ण बातें -

- मुख्य संलेख के अग्र अनुच्छेद (Leading Section)में नियम संख्या NC3 के अनुसार ग्रंथ संख्या (Book Number)का उल्लेख किया गया है।
- दो लेखक होने के कारण शीर्षक अनुच्छेद (Heading section)में दोनों लेखकों के नाम को and से जोड़ा गया है।
- आख्या अनुच्छेद में कुल खण्डों की संख्या नियम संख्या ED 913 के अनुसार अंकित की गई है।
- लेखक ग्रन्थ निर्देशी संलेख में आख्या के बाद खण्डों की सूचना नियम संख्या NC15 के अनुसार अंकित की गयी है।

उदाहरण - 2

(बहुखण्डीय ग्रन्थ प्रकार-1 : अपूर्ण उपलब्ध संघात)

CANVAS PAINTING

By
Dr. Neha Saxena
Dr. Pratibha Verma
Dr. Nandita Pandey

Golden Publishers
Calcutta, 1991

Other Information:

Call No.	:	NQ:7 N9.1 to N 9.2
Acc. No.	:	7456 - 7457
Note	:	It is three volume set. Library has not acquired volume 3 as yet.

	NQ;7 N 9.1 to N9.2	
	7456-7457	SAXENA (Neha) and others. Canvas Painting. 3V. [V3 not in Library]

Canvas, Painting. Painting. Saxena (Neha) and others.

वर्ग निर्देशी संलेख (Class Index Entry)हेतु श्रंखला प्रक्रिया (Chain Procedure)

वर्ग संख्या - NQ; 7

NQ	=	Painting	(sought link)
NQ;	=	————	(False link)
NQ;7	=	Canvas	(sought link)

उपरोक्त विवरणानुसार खोजकड़ी (sought link) के आधार पर निम्न दो वर्ग निर्देशी संलेख (Class Index Entry)निर्मित किये जायेंगे।

1. Canvas, Painting
2. Painting

वर्ग निर्देशी संलेख-1 (Class Index Entry-1)

	CANVAS, PAINTING.
	For documents in this class and its sub-divisions, see the Classified Part of the Catalogue, under the Class Number NQ;7.

वर्ग निर्देशी संलेख -2 (Class Index Entry-2)

	PAINTING.	
	For documents in this class and its sub-divisions, see the Classified Part of the Catalogue, under the Class Number NQ	
	O	

लेखक ग्रन्थ निर्देशी संलेख (Author Book Index Entry)

	SAXENA (Neha) and others.	
		Canvas Painting. 3V [V3 not in library] NQ;7 N9.1 to N9.2
		O

महत्वपूर्ण बातें -

- मुख्य संलेख (Main Entry) के आख्या अनुच्छेद (Title Section) में खण्ड संख्या के बाद बड़े कोष्ठक [ ] में पेन्सिल से V3 not in library लिख कर रेखांकित करना इस बात को स्पष्ट करता है कि खण्ड 3 पुस्तकालय में उपलब्ध नहीं है।
- अनुपलब्धता की सूचना लेखक ग्रन्थ निर्देशी संलेख में भी अंकित की गई है।
- आख्या अनुच्छेद में कुल खण्डों की संख्या नियम संख्या ED 913 के अनुसार अंकित की गई है।
- लेखक ग्रन्थ निर्देशी संलेख में आख्या के बाद खण्डों की सूचना नियम संख्या NC15 के अनुसार अंकित की गयी है।

उदाहरण - 3

(बहुखण्डीय ग्रन्थ प्रकार-1 : अपूर्ण प्रकाशित संघात)

STRUGGLE FOR HEGEMONY IN INDIA

By
Shashi Joshi
Bhagwan Joshi

Cambridge University Press
New Delhi, 1992

Other Information:

Call No.	:	V44:51 N 2.1 to N 2.3-
Acc. No.	:	5251 - 5253
Note	:	It is Four volume set, but volume four not published yet.

मुख्य संलेख (Main Entry)

	V44:51	N 2.1 to N 2.3 -
		JOSHI (Shashi) and JOSHI (Bhagwan). Struggle for Hegemony in India. VI-3-
	5251-53-	

Struggle for Independence, India. India, History. History. Joshi (Shashi) and Joshi (Bhagwan) Joshi (Bhagwan) and Joshi (Shashi)

वर्ग निर्देशी संलेख (Class Index Entry)हेतु श्रंखला प्रक्रिया (Chain Procedure)

वर्ग संख्या - V44:51

V	=	History	(sought link)
V4	=	Asia	(Unsought link)
V44	=	India	(sought link)
V44:	=	————	(False link)
V44:5	=	Civil Right and duty.	(Unsought link)
V44:51	=	Struggle for Independence.	(sought link)

उपरोक्त विवरणानुसार खोजकड़ी (sought link) के आधार पर निम्नवत तीन वर्ग निर्देशी संलेख (Class Index Entry)निर्मित किये जायेंगे।

1. Struggle for Independence, India.
2. India, History.
3. History.

वर्ग निर्देशी संलेख-1 (Class Index Entry-1)

STRUGGLE FOR INDEPENDENCE, INDIA.

For documents in this class and its sub-divisions, see the Classified Part of the Catalogue, under the Class Number V44:51

वर्ग निर्देशी संलेख-2 (Class Index Entry-2)

INDIA, HISTORY.

For documents in this class and its sub-divisions, see the Classified Part of the Catalogue, under the Class Number V44

वर्ग निर्देशी संलेख-3 (Class Index Entry-3)

HISTORY

For documents in this class and its sub-divisions, see the Classified Part of the Catalogue, under the Class Number V

लेखक ग्रन्थ निर्देशी संलेख (Author Book Index Entry)

	JOSHI (Shashi) and JOSHI (Bhagwan).	
	V1-3-	Struggle for Hegemony in India. V44:51 N 2.1 to N 2.3 - O

लेखक ग्रन्थ निर्देशी संलेख (Author Book Index Entry)

	JOSHI (Bhagwan)and JOSHI (Shashi)	
	V1-3-	Struggle for Hegemony in India. V44:51 N 2.1 to N 2.3- O

महत्वपूर्ण बातें -

- बहुखण्डीय संघात (Multivolume Set) के तीन खण्ड तो प्रकाशित हो चुके हैं तथा चौथा अभी प्रकाशनाधीन है। इसलिए ग्रन्थांक (Book No.) के आगे आड़ी रेखा (-)तथा आख्या अनुच्छेद (Title Section) के पश्चात खण्डों की संख्या के आगे आड़ी रेखा (-) का अंकन किया गया है, जो इस बात का प्रतीक है कि अभी कुछ खण्ड प्रकाशित होना शेष है।
- खण्ड के अप्रकाशित होने की सूचना ग्रन्थ निर्देश संलेख में भी आड़ी रेखा (-) के माध्यम से प्रदर्शित की गई है।

उदाहरण - 4

(बहुखण्डीय ग्रन्थ प्रकार-2 : अपूर्ण संघात)

Fundamentals of Science

By
Louis Pond
John Moore

John Wiley and Sons
New York
1977.

<u>Other Information</u>:

Call No.	:	A N77.1 to N 77.3
Acc. No.	:	6305-6307.
Note	:	It is three volumed set. All the volumes are available in the library. Vol. 1: Early Science. Vol. 2: Scientific and Industrial Revolution. Vol. 3: Twentieth century science.

	A	N 77.1 to N 77.3
		POND (Louis) and MOORE (John). Fundamentals of Science. 3V. V 1. Early science. V 2. Scientific and Industrial Revolution. V 3. Twentieth century science. 6305-6307 O

संकेत पत्रक (Tracing Card)

Natural sciences. Pond (Louis) and Moore (John). Moore (John) and Pond (Louis)

वर्ग निर्देशी संलेख (Class Index Entry)

	NATURAL SCIENCES	
		For documents in this class and its subdivisions, see the Classified Part of the Catalogue, under the Class Number A O

लेखक ग्रन्थ निर्देशी संलेख (Author Book Index Entry)

POND (Louis) and MOORE (John).
Fundamentals of Science. 3V.
A N 77.1 to N 77.3

लेखक ग्रन्थ निर्देशी संलेख (Author Book Index Entry)

MOORE (John) and POND (Louis).
Fundamentals of Science. 3V.
A N 77.1 to N 77.3

महत्वपूर्ण बातें -

- मुख्य संलेख के आख्या अनुच्छेद (Title Section) के पश्चात् प्रत्येक खण्ड की विशिष्ट आख्या (Specific Title) को नियम संख्या NC 21 के अनुसार अतिरिक्त पैराग्राफ के रूप में अंकित किया गया है।
- ग्रन्थ निर्देशी संलेख में खण्ड संख्या का उल्लेख है परन्तु खण्डों की आख्याओं को अभिलिखित करने का प्रावधान नहीं है।
- अन्य इतर संलेख नियमानुसार निर्मित किये गये हैं।

उदाहरण - 5

(बहुखण्डीय ग्रन्थ प्रकार-2 : अपूर्ण उपलब्ध संघात)

Psychology in India Revisited

Edited by

Janak Pandey

Vol. 1 Physiological Foundation and Human Cognition.

Vol. 2 Personality and Health Psychology.

Vol. 3 Applied social and organizational Psychology.

Published by

Vikas Publications

Indore, 1987

Other Information:

Call No.	:	S.44 M 7.1 to M 7.2
Acc. No.	:	5140 - 5141
Note	:	Library has all the volumes except Vol.3

मुख्य संलेख (Main Entry)

S.44 M 7.1 to M 7.2
PANDEY (Janak), Ed.
Psychology in India Revisited. 3V [V3 not in library].
V1. Physiological Foundation and Human Cognition.
V2. Personality and Health Psychology.
V3. Applied social and organizational Psychology.
5140-5141.

संकेत पत्रक (Tracing Card)

India, Psychology
Psychology.

Pandey (Janak), Ed.

वर्ग निर्देशी संलेख (Class Index Entry)

श्रंखला प्रक्रिया (Chain Procedure) के द्वारा वांछित कड़ियों के आधार पर वर्ग निर्देशी संलेख निम्नवत होगे।

1. India, Psychology
2. Psychology.

वर्ग निर्देशी संलेख-1 (Class Index Entry-1)

	INDIA, PSYCHOLOGY.	
	For documents in this class and its sub-divisions, see the Classified Part of the Catalogue, under the Class Number S. 44	
	O	

वर्ग निर्देशी संलेख-2 (Class Index Entry-2)

	PSYCHOLOGY.	
	For documents in this class and its sub-divisions, see the Classified Part of the Catalogue, under the Class Number. S	
	O	

संपादक ग्रन्थ निर्देशी संलेख- (Editor Book Index Entry)

	PANDEY (Janak), Ed.	
	Psychology in India Revisited.3V [V3 not in library].	
	O	

महत्वपूर्ण बातें -

- उपर्युक्त बहुखण्डीय संघात (Multivolume set) एक सम्पादक द्वारा सम्पादित है। आख्या पृष्ठ पर तीन खण्ड एवं उनके तीनों की विशिष्ट आख्या (Specific Title) का भी उल्लेख है। परन्तु पस्तकालय में तीसरा खण्ड उपलब्ध नहीं है। अतः आख्या अनुच्छेद में तीसरे खण्ड के अनुपलब्धता का तो अंकन हुआ है साथ ही तीनों खण्डों के विशिष्ट आख्या का भी उल्लेख किया गया है।

उदाहरण - 6

(बहुखण्डीय ग्रन्थ प्रकार-2 : अपूर्ण प्रकाशित संघात)

ISLAM

Edited by

R.M. Salkeni

Vol. 1 Mohammad and Islam

Vol. 2 Islam Outlines, Beliefs

Vol. 3 Preachings of Islam

Vol. 4 Islam History

Vol. 5 Sufism

New Delhi

Aryan Books

1993

Other Information:

Call No. : Q7 N 3.1 to N 3.5 -

Acc. No. : 101-105

Note : It is a six volume set. Volume 6 not published as yet.

मुख्य संलेख (Main Entry)

	Q7	N 3.1 to N 3.5 -
		SALKENI (R M), Ed. Islam. V 1-5- V 1. Mohammad and Islam V 2. Islam outlines, Beliefs ○ Continued in the next card

मुख्य संलेख- सतत पत्रक (Main Entry- Continued Card)

Continued 1

Q7 N 3.1 to N 3.5 -
V 3. Preachings of Islam.
V 4. Islam History.
V 5. Sufism.

101-105.

संकेत पत्रक (Tracing Card)

Muhammadanism, Religion
Religion.

Salkeni (RM), Ed.

वर्ग निर्देशी संलेख (Class Index Entry)

श्रंखला प्रक्रिया (Chain Procedure) के द्वारा वांछित कड़ियों के आधार पर वर्ग निर्देशी संलेख निम्नवत होगे।

1. Muhammadanism, Religion.
2. Religion.

वर्ग निर्देशी संलेख-1 (Class Index Entry-1)

MOHAMMADANISM, RELIGION
For documents in this class and its subdivisions, see the Classified Part of the Catalogue, under the Class Number Q7

वर्ग निर्देशी संलेख-2 (Class Index Entry-2)

	RELIGION.	
	For documents in this class and its sub-divisions, see the Classified Part of the Catalogue, under the Class Number Q	
	O	

सम्पादक ग्रन्थ निर्देशी संलेख- (Editor Book Index Entry)

	SALKENI (RM), Ed.	
	Islam. V 1-5-	
	Q7 N 3.1 to N 3.5 -	
	O	

महत्वपूर्ण बातें -

- उपरोक्त संघात 6 खण्डों में है परन्तु छठां खण्ड अभी प्रकाशित नहीं हुआ है अतः नियमानुसार ग्रन्थ संख्या के अन्त में एवं आख्या अनुच्छेद के पश्चात् आड़ी रेखा (-) लगाकर यह प्रदर्शित किया गया है कि कुछ खण्ड प्रकाशनाधीन हैं।
- मुख्य संलेख में दी जाने वाले समस्त अनुच्छेद यदि एक ही पत्रक पर नहीं सम्पूरित हो पाते तो सतत् पत्रक का निर्माण कैसे किया जायेगा, उदाहरण के माध्यम से बताया गया है।
- अन्य इतर संलेख नियमानुसार बनाये गये हैं।

14.4 अभ्यास हेतु उदाहरण

उदाहरण - 1

(बहुखण्डीय ग्रन्थ प्रकार-1 : पूर्ण संघात)

Introduction to Probability and Statistics

Edited by

Donald Ritchie

Westview Press
New York
1991

Other Information:

Call No.	:	8281 N 91.1 to N 91.3
Acc. No.	:	73216-8
Size	:	24 cm.
Note	:	The Book is in three volumes. All volumes are available in the Library.

उदाहरण - 2

(बहुखण्डीय ग्रन्थ प्रकार-2 : अपूर्ण उपलब्ध संघात)

Fundamentals of University Physics

2nd Edition
(In 3 Volumes)
Marcelo Alonso
Edward J. Finn

Addison Wesley Publishing Company
Amsterdam
1980

Other Information:

Call No.	:	C N 80.1 to N 80.2
Acc. No.	:	43216-8
Size	:	25 cm.
Note	:	Volume 3 is not available in the library.

उदाहरण - 3

(बहुखण्डीय ग्रन्थ प्रकार-1 : अपूर्ण प्रकाशित संघात)

Urban Studies

Edited by
Ronnan Paddison
Michael Timberlake

Sage Publications
India
2010

Other Information:

Call No.	:	Y33 0 (X) P10.1 to P 10.3 -
Acc. No.	:	1540-1542
Note	:	It is a four volume set. Volume four is under publication..

उदाहरण -4

(बहुखण्डीय ग्रन्थ प्रकार-2 : पूर्ण संघात)—

Cultural Anthropology

Edited by
Kim Fortun
Mike Fortun

Vol. 1 : Moorings
Vol. 2 : Modernities
Vol. 3 : Emergence
Vol. 4 : Engagements

Sage Publications
India
2010

Other Information:

Call No.	:	Y 7:1 P 10.1 to P 10.4
Acc. No.	:	1940-1943
Note	:	It is a four volume set and all the volumes are available in the library.

उदाहरण -5

(बहुखण्डीय ग्रन्थ प्रकार-2 : अपूर्ण उपलब्ध संघात)

Pathway to India's Partition

by
Bimal Prasad

Vol. 1: The Foundations of Muslim Nationalism
Vol. 2: A Nation within a nation (1877-1937)
Vol. 3: The March to Pakistan

New Delhi
Manohar Publications
2002

Other Information:

Call No.	:	V44'N37-M77	P 2.1 to P 2.2
Acc. No.	:	1840-1841	
Note	:	All the volumes are in the library except vol.3.	

उदाहरण -6

(बहुखण्डीय ग्रन्थ प्रकार-2 : अपूर्ण प्रकाशित संघात)

Development of Politics and Government in India

(In six volumes)

by

Virender Grover

R. Arora

Vol. 1 : Struggle for India's Freedom

Vol. 2 : Constitutional Schemes and Political Development.

Vol. 3 : Federation of India and States Reorganization

Vol. 4 : Parliamentary Democracy

Vol. 5 : Multi Party System

Deep and Deep Publications Pvt. Ltd.

New Delhi

1994

Other Information:

Call No.	:	W.44	N 4.1 to N 4.5
Acc. No.	:	2226-30	
Note	:	All the volumes are in the library. Volume six not published as yet.	

14.5 विस्तृत अध्ययनार्थ ग्रन्थ सूची

1. Ranganathan (SR): Cataloguing Practice. Ed 2. Bangalore, Sarda Ranganathan Endowment for LIbrary Science, 1994.
2. Ranganathan (S.R.) : Classified Catalogue Code. Ed 6. Bangalore, Sarda Ranganathan Endowment for Library Science, 1992.
3. Krishna Kumar : An Introduction to Cataloguing Practice, N. Delhi, 1996.
4. सूद (एस.पी.) सूचीकरण प्रक्रिया, जयपुर,आर.बी.एस.ए., 1998
5. शर्मा (बी.डी.) : अनुवर्ग प्रसूची नियमावली : एक व्यावहारिक अध्ययन, वाई.के.पब्लिशर्स, आगरा, 1999
6. वर्मा (ए.के.) : क्रियात्मक अनुवर्ग सूचीकरण, रायपुर, सेन्ट्रल बुक हाउस, 1999

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त
विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

BLIS-05

पुस्तकालय सूचीकरण प्रायोगिक

खण्ड-4

क्लासीफाइड कैटलॉग कोड द्वारा सूचीकरण - भाग दो

इकाई - 15 5

शासन तथा उसके अंगों द्वारा रचित पुस्तकों का सूचीकरण
(Cataloguing of Books by Government and its Organs)

इकाई - 16 38

संस्था तथा उसके अंगों द्वारा रचित पुस्तकों का सूचीकरण
(Cataloguing of Books by Institution and its Organs)

इकाई - 17 56

सम्मेलन कार्यवाही का सूचीकरण
(Cataloguing of Conference Proceedings)

इकाई - 18 72

सामान्य सावधिक प्रकाशनों का सूचीकरण
(Cataloguing of Simple Periodical Publication)

खण्ड-4- :क्लासीफाइड कैटलॉग कोड द्वारा सूचीकरण : भाग -दो

प्रस्तावना

जब ग्रन्थ का लेखन कोई व्यक्ति न करके अपितु किसी निकाय द्वारा किया जाय तो उसे समष्टि निकाय का प्रकाशन कहते हैं। समष्टि निकाय के प्रकाशन के रूप में शासन द्वारा, संस्था द्वारा अथवा किसी संगोष्ठी/सम्मेलन की कार्यवाहियाँ हो सकती है। प्रस्तुत खण्ड में समष्टि निकाय से सम्बन्धित रचनाओं के सी.सी.सी.के अनुसार प्रायोगिक सूचीकरण की चर्चा की गई है।

प्रस्तुत खण्ड निम्नवत् इकाइयों में विभक्त है :-

इकाई-15 शासन तथा उसके अंगों द्वारा रचित पुस्तकों का सूचीकरण:- इस इकाई के अन्तर्गत शासन की परिभाषा, शासन व उसके अंगों के शीर्षक चयन एवं उपकल्पन के नियमों की जानकारी दी गई है तथा उदाहरण के माध्यम से शिक्षार्थियों को बोधगम्य बनाने का प्रयास किया गया है।

इकाई-16 संस्था तथा उसके अंगों द्वारा रचित पुस्तकों का सूचीकरण:- इस इकाई के अन्तर्गत संस्था की परिभाषा, उसके अंगों हेतु सूचीकरण नियमों की जानकारी के साथ सूचीकृत मुखपृष्ठ भी दिये गये हैं।

इकाई-17 सम्मेलन कार्यवाही का सूचीकरण :- इस इकाई के अन्तर्गत सम्मेलन से तात्पर्य, उसके प्रकार तथा शीर्षक के चयन एवं उपकल्पन से सम्बन्धित नियमों पर प्रकाश डाला गया है। साथ ही सूचीकृत एवं अभ्यास हेतु उदाहरण के माध्यम से शिक्षार्थियों को प्रायोगिक सूचीकरण से भी अवगत कराया गया है।

इकाई-18 सामान्य सावधिक प्रकाशनों का सूचीकरण :- इस इकाई में सामान्य सावधिक प्रकाशनों के क्रियात्मक सूचीकरण परिभाषा, इनकी मुख्य प्रविष्टि एवं सहायक प्रविष्टि की संरचना पर प्रकाश डाला गया है। आख्यान्तर्गत प्रविष्ट ग्रन्थों के सूचीकरण के नियमों की जानकारी दी गई है। पाठ्यक्रम में पुस्तकों के आख्या पृष्ठ (Title Page) स्वनिर्मित हैं जिसका उद्देश्य शिक्षार्थियों को प्रायोगिक ज्ञान प्रदान करना है।

इकाई -15: शासन तथा उसके अंगों द्वारा रचित पुस्तकों का सूचीकरण (Cataloguing of books by Government and its Organs)

इकाई की रूपरेखा

15.0 उद्देश्य

15.1 समष्टि निकाय से तात्पर्य

15.2 समष्टि लेखक के प्रकार

15.2.1 शासन

15.2.2 संस्था

15.2.3 सम्मेलन

15.3 शासन लेखक के रूप में

15.3.1 शासन के अंग

15.4 शासन एवं उसके अंगों का चयन एवं उपकल्पन

15.5 सूचीकृत उदाहरण

15.6 अभ्यास हेतु उदाहरण

15.7 विस्तृत अध्ययनार्थ ग्रन्थसूची

15.0 उद्देश्य

इस इकाई के निम्नलिखित उद्देश्य है :

- समष्टि निकाय एवं समष्टि लेखक की अवधारणा से शिक्षार्थियों को सुपरिचित कराना।
- समष्टि लेखकों की कोटियों से शिक्षार्थियों का सुपरिचित कराना।
- शासन एवं उसके अंगों से लेखक के रूप में शिक्षार्थियों का अवगाहित कराना।
- शासन एवं उसके अंगों के शीर्षक हेतु चयन एवं उपकल्पन के नियमों से शिक्षार्थियों को सुपरिचित कराना।
- शासन तथा उसके अंगों द्वारा रचित एवं प्रकाशित पुस्तकों के प्रायोगिक सूचीकरण करने हेतु शिक्षार्थियों को सामर्थ्यवान कराना।

15.1 समष्टि निकाय से तात्पर्य

जब ग्रन्थ का प्रकाशन कोई व्यक्ति न करके अपितु किसी निकाय (Body) द्वारा

किया जाय तो उसे समष्टि निकाय का प्रकाशन कहते है। समष्टि निकाय के प्रकाशन के रूप में शासन द्वारा प्रकाशित ग्रंथ, किसी संस्था द्वारा प्रकाशित ग्रन्थ अथवा किसी सम्मेलन / संगोष्ठी की प्रकाशित कार्यवाहियाँ (Proceedings) हो सकती हैं। संदर्भित प्रकाशित ग्रन्थों के सूचीकरण हेतु क्लासीफाइड कैटलाग कोड में विशेष नियमों का प्रावधान है।

क्लासीफाइड कैटलाग कोड में नियम संख्या FC2 के अन्तर्गत डा. रंगनाथन ने समष्टि निकाय को निम्नवत दो अर्थों में परिभाषित किया है।

1. सामूहिक रूप से प्रायः संयुक्त अथवा संगठित अथवा अनौपचारिक रूप से किसी सामान्य उद्देश्य अथवा किसी सामान्य कार्य के लिए यथा सरकारी कामकाज, वाणिज्यिक, औद्योगिक, सेवा सम्बन्धी, राजनीतिक कार्य अथवा कोई अन्य कार्य या विचार विनिमय के लिए परस्पर जुड़े हुये हों या संगठित हुये हों। उदाहरण के तौर पर - उत्तर प्रदेश सरकार, भारतीय इतिहास परिषद,इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, भारतीय चिकित्सा संघ आदि।

2. सामूहिक रूप से मिलकर कार्य करने वाले अनेक निकाय, अथवा किसी समान उद्देश्य के लिए एकजुट कार्य करने वाले अर्थ 1 में वर्णित समष्टि निकायों का संघ अथवा महासंघ - उदाहरणार्थ संयुक्त राष्ट्र संघ (UNO),विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO), भारतीय विश्वविद्यालय संघ (AIU) आदि।

इस प्रकार उपरोक्त परिभाषा के अवलोकनोपरान्त स्पष्ट होता है कि डा. रंगनाथन ने समष्टि निकाय को उसके कार्यों के आधार पर परिभाषित किया है।

एंग्लो अमेरिकन कैटलाग रूल्स-2 के अनुसार "समष्टि निकाय से तात्पर्य एक संगठन या व्यक्तियों का वह समूह, जो एक विशेष नाम से जाना जाता है। तथा एक सत्ता (Entity) के रूप में कार्य करता है, अथवा कर सकता है।" उदाहरण स्वरूप - संघ, संस्था, अलाभकारी उद्यम, शासन, धार्मिक संस्थायें, स्थानीय चर्च, सम्मेलन आदि।

15.2 समष्टि लेखक के प्रकार

क्लासीफाइड कैटलाग कोड में डा. रंगनाथन ने समष्टि लेखक को तीन कोटियों में विभक्त किया है -

1. शासन (Government)
2. संस्था (Institution)
3. सम्मेलन (Conference)

समष्टि लेखक के कोटियों का विस्तृत विवरण निम्न तालिका के माध्यम से अधिक स्पष्ट किया जा सकता है-

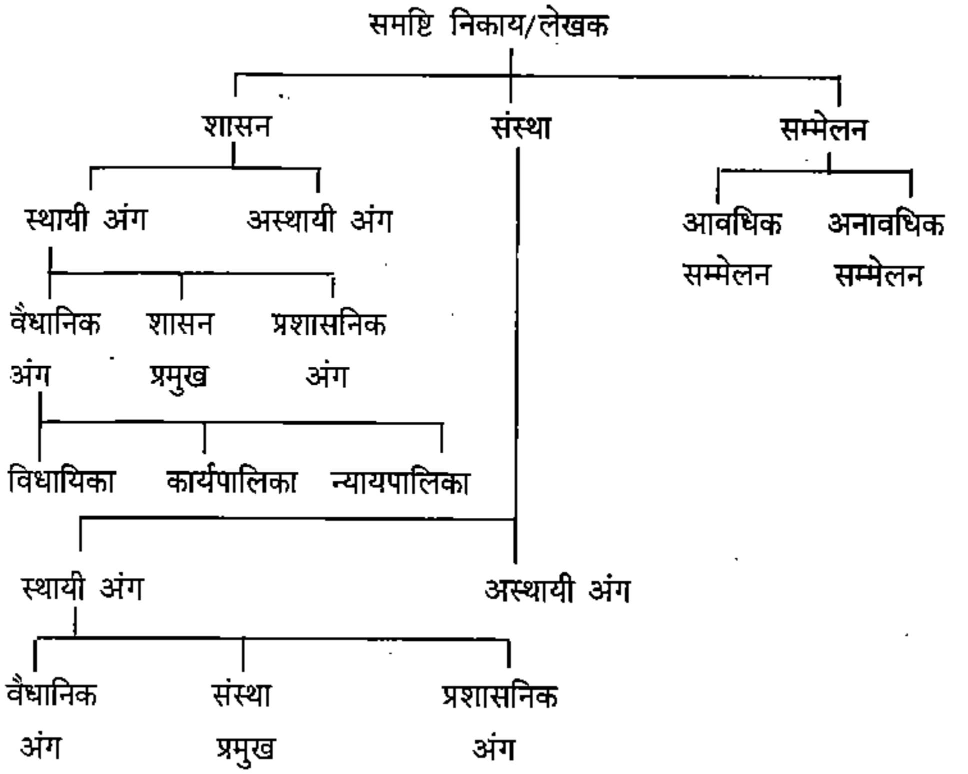

15.3 शासन लेखक के रूप में

ऐसे सभी ग्रन्थ जिनमें निहित विचारों के लिए कोई शासन अथवा उसके अंग जिम्मेदार हों तो उन्हें शासकीय प्रकाशन की संज्ञा दी जाती है। किसी शासकीय एजेन्सी द्वारा भौतिक रूप से अभिप्रेत कोई भी प्रकाशन जिसको शासकीय प्राधिकार द्वारा स्वीकृति प्राप्त हो तथा उसके प्रकाशन विवरण से अंकित हो कर निर्गमित हो।

क्लासीफाइड कैटलाग कोड में नियम संख्या FC 22 के अन्तर्गत डा. रंगनाथन ने शासन को निम्न प्रकार से परिभाषित किया है।

एक निश्चित भू भाग पर समष्टि निकाय का पूर्ण या सीमित संप्रभुता का होना। साधारणतया इसके कार्यकारी, विधायी, न्यायिक तथा प्रशासकीय कार्य होते है। इसके अन्य कार्यों में सुरक्षा, कराधान, वाणिज्य, जनयातायात, संचार आदि है, जो संप्रभुता के आधार पर सीमित होते रहते हैं।

शासन द्वारा प्रदत्त अधिकारों के अन्तर्गत एक निश्चित भू भाग पर एवं निश्चित सीमा पर स्वायत्तता प्राप्त स्थानीय सार्वजनिक प्राधिकारी, जो किसी निश्चित स्थानीय सार्वजनिक क्षेत्र में सेवाओं का नियमन, उन्नयन तथा अन्य सेवाओं का प्राविधान करता है।

15.3.1 शासन के अंग

क्लासीफाइड कोड के अन्तर्गत डा. रंगनाथन ने शासन के अंगों को निम्नलिखित

कोटियों में विभक्त किया है।

1. स्थायी अंग (Permanent organ)

2. अस्थायी अंग (Temporary organ)

स्थायी अंगों को निम्नवत तीन भागों में विभाजित किया गया है।

(अ) वैधानिक अंग (Constitutional organ)

(ब) शासन प्रमुख (Head of the Government)

(स) प्रशासकीय अंग (Administrative organ)

वैधानिक अंग को निम्नवत तीन भागों में पुनः विभाजित किया गया है।

(1) विधायिका (Legislative)

(2) कार्यपालिका (Executive)

(3) न्यायपालिका (Judiciary)

उपरोक्त वर्णित शासन के अंगों को निम्न तालिका से अधिक स्पष्ट किया जा सकता है -

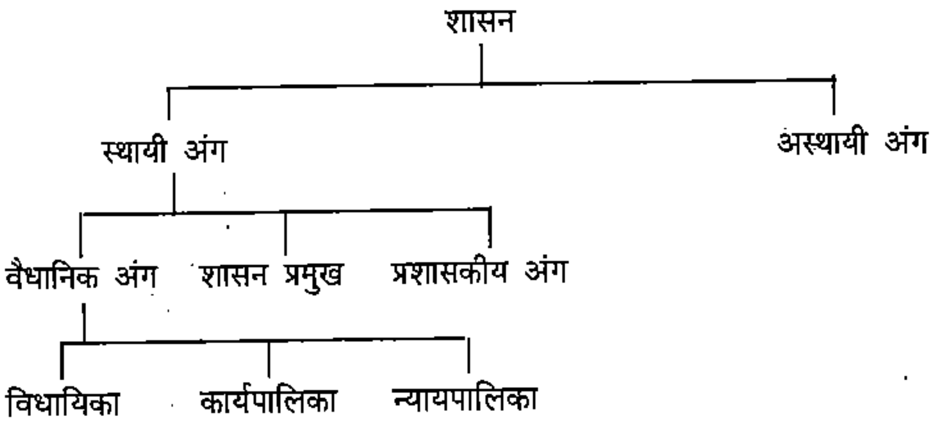

15.4 शासन एवं उसके अंगों का चयन एवं उपकल्पन

शीर्षक निर्माण (Heading Rendering) के सम्बन्ध में सबसे पहले शासन के नाम (जो सामान्यतः भौगोलिक भू भाग होता है) को बड़े अक्षरों (Capital letters) में लिखा जाता है। उसके पश्चात् कॉमा (,) लगा कर शासन के अंगों का उल्लेख पुनः स्मरणमान के उपसूत्र (Canon of Recall Value)के अनुसार किया जाता है।

4.1 **सम्पूर्ण शासन** - सी.सी.सी. के नियम संख्या JC 1 के अनुसार यदि समष्टि निकाय सम्पूर्ण शासन हो तो उसका नाम उसकी भौगोलिक सीमा क्षेत्र का नाम होगा यथा-

उदाहरणार्थ

Government of India को INDIA

Government of Madhya Pradesh को MADHYA PRADESH

शासन तथा उसके अंगों द्वारा रचित पुस्तकों का सूचीकरण

4.2 वैधानिक अंग (Constitutional organ)- क्लासीफाइड कैटलाग कोड के नियम संख्या JC 3 में शासन के वैधानिक अंगों के उपकल्पन सम्बन्धी निर्देश दिये गये हैं -

(अ) विधायिका (Legislature)- शासन के विधायी अंगों का उपकल्पन निम्न प्रकार से किया जायेगा।

उदाहरणार्थ -

(A) - UTTAR PRADESH, VIDHAN SABHA.

(B) - INDIA, RAJYA SABJA

(ब) कार्यपालिका (Executive)- शासन के कार्यपालिकीय अंगों का उपकल्पन निम्नलिखित प्रकार से किया जायेगा।

उदाहरणार्थ -

(A)- UTTAR PRADESH, COUNCIL OF MINISTERS

(B)-INDIA, CABINET

(स) न्यायपालिका (Judiciary)- शासन के न्यायपलिकीय अंगों का उपकल्पन निम्नवत किया जायेगा।

उदाहरणार्थ -

(A)-INDIA, SUPREME COURT

(B)-UTTAR PRADESH, HIGH COURT

4.3 शासन प्रमुख (Head of the Government)- क्लासीफाइड कैटलाग कोड के नियम संख्या JC 4 में शासन प्रमुख द्वारा शासकीय स्थिति में व्यक्त विचारों के प्रकाशित स्वरूप को सूचीकृत करने हेतु शीर्षक (Heading) का निर्माण निम्नवत् है।

उदाहरणार्थ -

(A)- INDIA, PRESIDENT (Jail Singh)

(B)- UTTAR PRADESH, GOVERNOR (T V Rajeshwar)

4.4 प्रशासकीय अंग (Administrative organ)- क्लासीफाइड कैटलाग कोड के नियम संख्या JC 6 में प्रशासकीय अंगों के उपकल्पन हेतु व्याख्या की गई है। प्रशासकीय अंग के नाम को द्वितीय अंग के रूप में पुनः स्मरणमान (Canon of Recall value)के उपसूत्र के अनुसार अंकित किया जाता है।

उदाहरणार्थ -

(A)-INDIA, FINANCE (Ministry of --)

(B)-UTTAR PRADESH, HIGHER EDUCATION (Ministry of –)

4.5 उपशीर्षकों का अन्तर्वेशन (Interpolation of Subheadings)- क्लासीफाइड कैटलाग कोड के नियम संख्या JC 66 के अनुसार यदि प्रशासनिक विभाग शासन का द्वितीय अथवा अन्य अंग हो तथा उसका नाम व्यष्टि कारक न हो तो शीर्षक निर्माण में किसी प्रकार की समरूपता पूर्व श्रेणी (Earlier Remove) के अंग जोड़े बिना समाप्त न होती हो तो पूर्ण शासन के नाम व प्रशासनिक विभाग के मध्य ऐसे नाम उपशीर्षक के रूप में अन्तर्वेशित करना चाहिए।

सामान्य रूप से तात्पर्य है कि यदि शासन के द्वितीय, तृतीय अथवा अन्य अंगों में भाव और भाषा की दृष्टि से समानता हो तो निम्न अंग का उपकल्पन कर मध्यम अंग का विलोपन कर देना चाहिए।

उदाहरणार्थ -

Department of Education
Ministry of Education
Government of Uttar Pradesh

का उपकल्पन निम्नवत होगा -

UTTAR PRADESH, EDUCATION (Department of –).

उपरोक्त उदाहरण में Ministry of Education को अर्न्तवेशित करने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि माना जाता है कि Department of Education, Ministry of Education के अन्तर्गत ही कार्यरत अंग है।

इसी प्रकार अन्य उदाहरण हैं -

Department of Scholarship
Ministry of Higher Education
Government of Uttar Pradesh.

का उपकल्पन निम्नवत होगा -

UTTAR PRADESH, HIGHER EDUCATION (Ministry of--), SCHOLARSHIP (Department of –).

उपरोक्त उदाहरण में Ministry of Higher Education का अन्तर्वेशित करना आवश्यक है।

4.6 अस्थायी अंग (Temporary organ) - शासन द्वारा समय समय पर किसी निश्चित कार्य एवं निश्चित अवधि हेतु आयोग (Commissions) /समिति (Committee) का गठन किया जाता है। ऐसे आयोग/ समितियों का उद्देश्य उस निश्चित कार्य को निश्चित अवधि में पूर्ण कर प्रतिवेदन शासन को प्रदान करना होता है जैसे ही आयोग

/समिति अपना प्रतिवेदन (Report) गठित करने वाली शासकीय प्राधिकरण को सौंप देती है, आयोग/समिति स्वतः भंग हो जाती है। इसीलिए इस अंग को शासन का अस्थायी अंग (Temprary organ) कहा जाता है।

क्लासीफाइड कैटलाग कोड के नियम संख्या JC 2 एवं उसके उपखण्डों में इस प्रकार के प्रकाशित प्रतिवेदनों को सूचीकरण करने हेतु अलग से निर्देश दिये गये हैं।

इस प्रकार के प्रतिवेदन हेतु शीर्षक निर्माण निम्नवत होगा -

(1) शासक का नाम बड़े अक्षरों में (Capital letters)

(2) आयोग/समिति का नाम पुनः स्मरणमान उपसूत्र (Canon of Recall value) के अनुसार।

(3) आयोग/समिति का स्थापनावर्ष अगले वृत्ताकार कोष्ठक में।

(4) (Chairman: चेयरमैन का नाम सामान्य शैली में)
यह सूचना भी अगले वृत्ताकार कोष्ठक में लिखी जायेगी।

उदाहरणार्थ -

1. INDIA, CITY TOWN PLANNING (Commission for–) (1992) (Chairman : R K Srinivasan).
2. JHARKHAND, REHABILITATION OF TRIBES (Committee for --) (2009) (Chairman : Parmatma Saran).

15.5 सूचीकृत उदाहरण (Catalogued Examples)

उदाहरण - 1

(शासन का वैधानिक अंग : विधायिका)

VALUE ADDED TAX BILL

Vidhan Sabha

Government of Uttar Pradesh

Government Printing Press

Allahabad

2008

Other Information:

Call No. : X 7291. 4452 P08

Acc. No. : 5961

मुख्य संलेख (Main Entry)

	X 7291.4452 Po8	
		UTTAR PRADESH, VIDHAN SABHA. Value Added Tax Bill.
	5961	

संकेत पत्रक (Tracing Card)

Uttar Pradesh, Sale Tax
Sale Tax
Economics

Uttar Pradesh, Vidhan Sabha.

वर्ग निर्देशी संलेख (Class Index Entry)

वांछित कड़ियों की श्रंखला अनुक्रमणिका (Chain Index)निम्न प्रकार से होगी-

वर्ग संख्या - X 7291.4452

X = Economics

X 7291 = Sale Tax

X 7291.4452 = Uttar Pradesh

उपरोक्त विवरणानुसार निम्न वर्ग निर्देशी संलेख निर्मित किये जायेंगे-

1. Uttar Pradesh, Sale Tax
2. Sale Tax, Economics.
3. Economics.

वर्ग निर्देशी संलेख - 1 (Class Index Entry- 1)

UTTAR PRADESH, SALE TAX

For documents in this class and its sub-divisions, see the Classified Part of the Catalogue, under the Class Number X 7291.4452

O

वर्ग निर्देशी संलेख - 2 (Class Index Entry- 2)

SALE TAX, ECONOMICS

For documents in this class and its sub-divisions, see the Classified Part of the Catalogue, under the Class Number X 7291

O

वर्ग निर्देशी संलेख - 3 (Class Index Entry- 3)

ECONOMICS

For documents in this class and its sub-divisions, see the Classified Part of the Catalogue, under the Class Number X

O

लेखक ग्रन्थ निर्देशी संलेख (Author Book Index Entry)

UTTAR PRADESH, VIDHAN SABHA.

Value Added Tax Bill.

Z 7291.4452 Po8

O

उदाहरण - 2

(शासन का वैधानिक अंग एवं दो उपअंग)

Pilgrimage of Muslims for Haj

Haj Committee

Ministry of External Affairs,

Government of India.

New Delhi

Manager of Publication,

2010

<u>Other Information:</u>

Call No. : Q7 : 4198 P10
Acc. No. : 786

	Q7:	4198 P10
	HA	INDIA, EXTERNAL AFFAIRS (Ministry of –), (Committee). Pilgrimage of Muslims for Haj.
	786	O

संकेत पत्रक (Tracing Card)

Pilgrimage, Mohammadinism. Mohammadinism, Religion Religion. India, External affairs (Ministry of --), Haj (Committee)

वर्ग निर्देशी संलेख - (Class Index Entry)

वर्ग संख्या - Q 7:4198

वांछित कड़ियों की श्रंखला अनुक्रमणिका (Chain Index) इस प्रकार होगी -

Q	=	Religion
Q7	=	Mohammadinism,
X7:4198	=	Pilgrimage

उपरोक्त विवरणानुसार निम्न वर्ग निर्देशी संलेख निर्मित किये जायेंगे -

1. Pilgrimage, Mohammadinism
2. Mohammadinism, Religion.
3. Religion.

वर्ग निर्देशी संलेख -1 (Class Index Entry-1)

PILGRIMAGE, MOHAMMADINISM.

For documents in this class and its sub-divisions, see the Classified Part of the Catalogue, under the Class Number. Q7:4198

वर्ग निर्देशी संलेख -2 (Class Index Entry-2)

MOHAMMADINISM, RELIGION

For documents in this class and its sub-divisions, see the Classified Part of the Catalogue, under the Class Number Q7

RELIGION.

For documents in this class and its sub-divisions, see the Classified Part of the Catalogue, under the Class Number Q

लेखक ग्रन्थ निर्देशी संलेख (Author Book Index Entry).

	INDIA, EXTERNAL AFFAIRS (Ministry of --), HAJ (Committee). Pilgrimage of Muslims for Haj. Q7:4198 P10 O	

महत्वपूर्ण बातें -

- आख्या पृष्ठ (Title page) पर वैधानिक अंग के साथ साथ दो उपअंग भी दिये गये हैं। उपअंग का उपकल्पन नियम संख्या JC 66 के अनुसार किया गया है।
- अन्य सभी इतर संलेख नियमानुसार बनाये गये हैं।

उदाहरण - 3

(समष्टि निकाय - न्यायपालिकीय अंग, उपअंग के साथ)

Debate on Indian Criminal Law

Office of Registrar General

High Court

Uttar Pradesh.

Allahabad

Government Printing Press

2006

<u>Other Information:</u>

Call No. : Z 44,5 Po6

Acc. No. : 8926

मुख्य संलेख (Main Entry)

	Z44,5 Po6	
	UTTAR PRADESH, HIGH COURT, REGISTRAR GENERAL (Office of —). Debate on Indian criminal law. 8926 O	

संकेत पत्रक (Tracing Card)

Crime, India. India, Law. Law. Uttar Pradesh, High Court, Registrar General (Office of --).

वर्ग निर्देशी संलेख - (Class Index Entry)

वांछित कड़ियों की श्रंखला अनुक्रमणिका (Chain Index) निम्न प्रकार से होगी -

Z	=	Law
Z44	=	India
Z44,5	=	Crime.

उपरोक्त विवरणानुसार निम्न वर्ग निर्देशी संलेख निर्मित किये जायेंगे -

1. Crime, India
2. India, Law
3. Law.

वर्ग निर्देशी संलेख -1 (Class Index Entry-1)

CRIME, INDIA. For documents in this class and its sub-divisions, see the Classified Part of the Catalogue, under the Class Number Z44, 5

वर्ग निर्देशी संलेख -2 (Class Index Entry-2)

INDIA, LAW For documents in this class and its sub-divisions, see the Classified Part of the Catalogue, under the Class Number Z44

	LAW.	
	For documents in this class and its sub-divisions, see the Classified Part of the Catalogue, under the Class Number Z	
	O	

लेखक ग्रन्थ निर्देशी संलेख (Author Book Index Entry)

	UTTAR PRADESH, HIGH COURT, REGISTRAR	
	GENERAL (Office of –). Debate on Indian criminal Law. Z44, 5 Po6	
	O	

महत्वपूर्ण बातें -

- वर्णित उदाहरण शासन के न्यायपालिकीय अंग का है साथ में दो उपअंग भी हैं जिनका नियमानुसार उपकल्पन किया गया है।
- अन्य इतर संलेख नियमानुसार बनाये गये हैं।

उदाहरण - 4

(शासन प्रमुख)

Peace Policy of India

By

Jawahar Lal Nehru

Prime Minister of India

Publication Division

Ministry of Information and Broadcasting

New Delhi, 1961

Other Information:

Call No. : V44 : 19(ZQ) N61

Acc. No. : 8926

शासन तथा उसके अंगों द्वारा रचित पुस्तकों का सूचीकरण

मुख्य संलेख (Main Entry)

	V44 : 19 (Zq) N61	
		INDIA, PRIME MINISTER(Jawahar Lal Nehru). Peace Policy of India. 8926.

संकेत पत्रक (Tracing Card)

Peace, Foreign Policy. Foreign Policy, India India, History. History. India, Prime Minister (Jawahar Lal Nehru).

वर्ग निर्देशी संलेख - (Class Index Entry)

वांछित कड़ियों की श्रंखला अनुक्रमणिका (Chain Index) निम्न प्रकार से होगी -

V = History

V44 = India

V44:19 = Foreign Policy

V44:19 (Zq) = Peace

उपरोक्त विवरणानुसार निम्न वर्ग निर्देशी संलेख निर्मित किये जायेंगे -

1. Peace, Foreign Policy.
2. Foreign Policy, India.
3. India, History
4. History.

वर्ग निर्देशी संलेख -1 (Class Index Entry-1)

PEACE, FOREIGN POLICY.

For documents in this class and its subdivisions, see the Classified Part of the Catalogue, under the Class Number. V44:19 (Zq)

O

वर्ग निर्देशी संलेख -2 (Class Index Entry-2)

FOREIGN POLICY, INDIA.

For documents in this class and its subdivisions, see the Classified Part of the Catalogue, under the Class Number V44:19

O

वर्ग निर्देशी संलेख -3 (Class Index Entry-3)

INDIA, HISTORY

For documents in this class and its subdivisions, see the Classified Part of the Catalogue, under the Class Number V44

O

वर्ग निर्देशी संलेख -4 (Class Index Entry-4)

HISTORY.

For documents in this class and its subdivisions, see the Classified Part of the Catalogue, under the Class Number V

O

लेखक ग्रन्थ निर्देशी संलेख (Author Book Index Entry)

		INDIA, PRIME MINISTER.(Jawahar Lal Nehru)
		Peace Policy of India. V44:19 (ZQ) N61 ○

महत्वपूर्ण बातें -

- मुख्य संलेख के शीर्षक अनुच्छेद में शासन प्रमुख के नियमानुसार शीर्षक का उपकल्पन किया गया है।
- अन्य संलेख नियमानुसार बनाये गये हैं।

उदाहरण - 5

(शासन तथा उसका प्रथम श्रेणी का प्रशासनिक अंग)

Challenges of Education:
A Policy Perspective

Ministry of Education
Government of India

Manager of Publications
New Delhi, 1995

Other Information:

Call No. : T.44 N95
Acc. No. : 3921

मुख्य संलेख (Main Entry)

	T.44	N95
	3921	INDIA, EDUCATION (Ministry of --) Challanges of Education: A Policy Perspective. ○

संकेत पत्रक (Tracing Card)

India, Education Education India, Education (Ministry of –).

वर्ग निर्देशी संलेख - (Class Index Entry)

वांछित कड़ियों की श्रंखला अनुक्रमणिका (Chain Index) निम्नवत होगी -

T	=	Education
T44	=	India

उपरोक्त विवरणानुसार निम्न वर्ग निर्देशी संलेख निर्मित किये जायेंगे -

1. India, Education
2. Education

वर्ग निर्देशी संलेख -1 (Class Index Entry-1)

INDIA, EDUCATION. For documents in this class and its sub-divisions, see the Classified Part of the Catalogue, under the Class Number. T.44 O

वर्ग निर्देशी संलेख -2 (Class Index Entry-2)

EDUCATION. For documents in this class and its sub-divisions, see the Classified Part of the Catalogue, under the Class Number T O

लेखक ग्रन्थ निर्देशी संलेख (Author Book Index Entry)

		INDIA, EDUCATION (Ministry of --)
		Challenges of Education. T.44 N95. ○

महत्वपूर्ण बातें -

- आख्या पृष्ठ पर शासन के साथ उसका एक ही उप अंग है। अतः शीर्षक (Heading) का उपकल्पन नियम संख्या MD21, JC21 व JC6 एवं उनके उपखण्डों के अनुसार किया गया है। शासन के प्रशासनिक अंग को पुनः स्मरणमान के उपसूत्र (Canon of Recall Value) के अनुसार लिखा गया है।
- अन्य इतर संलेख नियमानुसार निर्मित किये गये हैं।

उदाहरण - 6

(शासन तथा उसके प्रथम एवं द्वितीय श्रेणी के प्रशासनिक अंग)

Annual Report of Indian Epigraphy

For the year 1992

Department of Archaeology

Ministry of Education and Culture

Government of India

New Delhi

Manager of Publications

1993

Other Information:

Call No. : V44:72 N92 N98

Acc. No. : 6213

मुख्य संलेख (Main Entry)

V44:72'N92 N98
INDIA, EDUCATION AND CULTURE (Ministry of--), ARCHAEOLOGY (Department of-)
Annual Report of Indian Epigraphy for the year 1992.

6213.

संकेत पत्रक (Tracing Card)

Epigraphy, India.
India, History.
History.

India, Education and Culture
(Ministry of --), Archaeology
(Department of --).

वर्ग निर्देशी संलेख - (Class Index Entry)

वांछित कड़ियों की श्रंखला अनुक्रमणिका (Chain Index) निम्न प्रकार से होगी -

V	=	History
V44	=	India
V44:72	=	Epigraphy

उपरोक्त विवरणानुसार निम्न वर्ग निर्देशी संलेख निर्मित किये जायेंगे -

1. Epigraphy, India.
2. India, History.
3. History

वर्ग निर्देशी संलेख -1 (Class Index Entry-1)

EPIGRAPHY, INDIA

For documents in this class and its sub-divisions, see the Classified Part of the Catalogue, under the Class Number V44:72

वर्ग निर्देशी संलेख -2 (Class Index Entry-2)

INDIA, HISTORY.

For documents in this class and its sub-divisions, see the Classified Part of the Catalogue, under the Class Number V44

वर्ग निर्देशी संलेख -3 (Class Index Entry-3)

HISTORY.

For documents in this class and its sub-divisions, see the Classified Part of the Catalogue, under the Class Number V

लेखक ग्रन्थ निर्देशी संलेख (Author Book Index Entry)

INDIA, EDUCATION AND CULTURE (Ministry of -), ARCHAEOLOGY (Department of -).

Annual Report of Indian Epigraphy for the year 1992

V44:72'N92 N98

महत्वपूर्ण बात -

- मुख्य संलेख के शीर्षक अनुच्छेद में शासन के दोनों अंगों का उल्लेख नियम संख्या JC66 के अनुसार किया गया है। दोनों उप अंगों के बीच भाव और भाष की दृष्टि से समानता नहीं है। इसलिए दोनो उप अंगों का उपकल्पन आवश्यक है।
- अन्य सभी इतर संलेख नियमानुसार निर्मित किये गये हैं।

उदाहरण - 7

(शासन तथा उसके प्रथम एवं द्वितीय श्रेणी के प्रशासनिक अंग)

Report on Task Force
On
Rural Development

Planning Commission
Ministry of Planning
Government of India

Manager of Publications
New Delhi, 1984

Other Information:

Call No.	:	Y31:7:7 'N84 N4
Acc. No.	:	2314
Note	:	Rural Development Publication Series No.8.

	Y31	:7:7 'N84 N4
		INDIA, PLANNING (Commission). Report on Task Force on Rural Development. (Rural Development Publication Series.8)
	2314	O

संकेत पत्रक (Tracing Card)

Improvement, Personality, Personality, Rural Rural, Sociology Sociology. India, Planning (Commission). Rural Development Publication Series.

श्रंखला प्रक्रिया (Chain Procedure)

वांछित कड़ियों की श्रंखला अनुक्रमणिका (Chain Index) निम्नवत प्रकार से होगी -

वर्ग संख्या Y31:7:7

Y	=	Sociology
Y31	=	Rural
Y31:7	=	Personality
Y31:7:7	=	Improvement

उपरोक्त विवरणानुसार निम्न वर्ग निर्देशी संलेख निर्मित किये जायेंगे -

1. Improvement, Personality
2. Personality, Rural
3. Rural, Sociology.
4. Sociology.

वर्ग निर्देशी संलेख -1 (Class Index Entry-1)

IMPROVEMENT, PERSONALITY.
For documents in this class and its sub-divisions, see the Classified Part of the Catalogue, under the Class Number Y31:7:7

वर्ग निर्देशी संलेख -2 (Class Index Entry-2)

PERSONALITY, RURAL.
For documents in this class and its sub-divisions, see the Classified Part of the Catalogue, under the Class Number Y31:7

○

वर्ग निर्देशी संलेख -3(Class Index Entry-3)

RURAL, SOCIOLOGY.
For documents in this class and its sub-divisions, see the Classified Part of the Catalogue, under the Class Number Y

○

वर्ग निर्देशी संलेख -4(Class Index Entry-4)

SOCIOLOGY.
For documents in this class and its sub-divisions, see the Classified Part of the Catalogue, under the Class Number Y

○

लेखक ग्रन्थ निर्देशी संलेख (Author Book Index Entry)

INDIA, PLANNING (Commission)
Report on Task Force on Rural Development.
Y31:7:7 'N84 N4

○

ग्रन्थमाला ग्रन्थ निर्देशी संलेख (Series Book Index Entry)

	RURAL DEVELOPMENT PUBLICATION SERIES.	
	8	India, Planning (Commission): Report on task Force on Rural Development. Y31:7:7 'N84 N4

महत्वपूर्ण बातें -

- आख्या पृष्ठ पर शासन के दो उप अंगों के मध्य भाव और भाषा की समानता की दृष्टि से प्रथम श्रेणी के उप अंग को उपशीर्षक रूप में अन्तर्वेषित नहीं किया गया है।
- अन्य सभी इतर संलेख नियमानुसार निर्मित किये गये हैं।

उदाहरण - 8

(शासन का अस्थायी अंग)

Report of the
Select Committee of Bank Industry

Ministry of Commerce
Government of India
1995

Other Information

Call No. : X62.44'N94t N95

Acc. No. : 4012

Note : Select Committee of Bank Industry was appointed by the Ministry of Commerce, Government of India in the year 1994 under the Chairmanship of K.P.Sinha. The Report is also known as Sinha Committee Report.

मुख्य संलेख (Main Entry)

X62.44 'N94t N95

INDIA, BANK INDUSTRY (Select Committee of -) (1994) (Chairman : K P Sinha).

Report of the select committee of Bank Industry.

4012

Report, India, Bank Industry (Select Committee of-) (1994)
Report, Sinha Committee.
India, Bank.
Bank, Economies.
Economics.

India, Bank Industry (Select Committee of-) (1994) (Chairman: KP Sinha)
Sinha Committee.

वर्ग निर्देशी संलेख (Class Index Entry)

वांछित कड़ियों की श्रंखला अनुक्रमणिका (Chain Index) निम्नवत प्रकार से होगी -

वर्ग संख्या X62.44 'N94t

X	=	Economics
X62	=	Bank
X62.44	=	India
X62.44'N94t	=	Report, Sinha Committee.
X62.44'N94t	=	Report, India, Bank Industry (Select Committee of -)(1994)

उपरोक्त विवरणानुसार निम्न वर्ग निर्देशी संलेख निर्मित किये जायेंगे -

1. Report, India, Bank Industry (Select Committee of -) (1994)
2. Report, Sinha Committee.
3. India, Bank

4. Bank, Economics

5. Economics.

वर्ग निर्देशी संलेख-1 (Class Index Entry-1)

REPORT, INDIA, BANK INDUSTRY (Select Committee of -) (1994).

For documents in this class and its sub-divisions, see the Classified Part of the Catalogue, under the Class Number X62.44 'N94t

O

वर्ग निर्देशी संलेख-2 (Class Index Entry-2)

REPORT, SINHA COMMITTEE.

For documents in this class and its sub-divisions, see the Classified Part of the Catalogue, under the Class Number X62.44 'N94t

O

वर्ग निर्देशी संलेख-3 (Class Index Entry-3)

INDIA, BANK

For documents in this class and its sub-divisions, see the Classified Part of the Catalogue, under the Class Number

X 62.44

O

वर्ग निर्देशी संलेख-4 (Class Index Entry-4)

BANK, ECONOMICS

For documents in this class and its sub-divisions, see the Classified Part of the Catalogue, under the Class Number X62

O

वर्ग निर्देशी संलेख-5 (Class Index Entry-5)

ECONOMICS

For documents in this class and its sub-divisions, see the Classified Part of the Catalogue, under the Class Number X

O

लेखक ग्रन्थ निर्देशी संलेख (Author Book Index Entry)

INDIA, BANK INDUSTRY (Select Committee of -) (1994) (Chairman: K.P.Sinha).

Report of the Select Committee of Bank Industry.

X62.44'N94t N95

O

लेखक ग्रन्थ निर्देशी संलेख (Author Book Index Entry)

SINHA COMMITTEE.

Report of the Select Committee of Bank Industry.

X62.44 'N94t N95

O

महत्वपूर्ण बातें -

- मुख्य संलेख का निर्माण नियम संख्या JC6, JC71, JC72 के अनुसार किया गया है।
- वर्ग संख्या (Class No.) की अन्तिम कड़ी से दो वर्ग निर्देशी संलेख (Class Index Entry) नियम संख्या KJ1 के अनुसार निर्मित किया गया है।
- द्वितीय लेखक ग्रन्थ निर्देशी संलेख का निर्माण नियम संख्या MK115 के अनुसार किया गया है।
- अन्य इतर संलेख नियमानुसार बनाये गये हैं।

15.6 अभ्यास हेतु उदाहरण

उदाहरण - 1

(शासन का वैधानिक अंग)

U.P. Control of Organised Crime Bill, 2007

(Seal)
Vidhan Sabha
Government of Uttar Pradesh

Government Printing Press
Allahabad
2008

Other Information:

Call No.	:	Y45:5 Po8
Acc. No.	:	2936

उदाहरण - 2

(शासन का वैधानिक अंग एवं दो उप अंग)

GOVERNMENT OF INDIA
MINISTRY OF EDUCATION

Report of the All India Adult
Education Survey

Manager of Publications
New Delhi
1983

Other Information:

Call No. : T 3 : 8.44 'N 82 t 4 M3

Acc. No. : G-115

उदाहरण - 3

(समष्टि निकाय - न्यायपालिकीय अंग, उपअंग के साथ)

Reported Cases of Hindu PropertyLaw

Reporting Section

Supreme Court

Government of India

Manager of Publications

New Delhi

1995

Other Information:

Call No. : Z (Q2),2 N95

Acc. No. : 1246

उदाहरण - 4

(शासन प्रमुख)

Drought Situation in Maharashtra

Speech in Lok Sabha

By

Man Mohan Singh

Prime Minister of India

Manager of Publications

New Delhi

2005

<u>Other Information:</u>

Call No. : Y74435:435 Po5

Acc. No. : 9216

उदाहरण - 5

(शासन तथा उसका प्रथम श्रेणी का प्रशासनिक अंग)

Co-operation at a Glance

Ministry of Food and Agriculture

Government of India

1968

<u>Other Information:</u>

Call No. : XM.44 'N68t K8

Acc. No. : 383940

उदाहरण - 6

(शासन तथा उसके प्रथम एवं द्वितीय श्रेणी के प्रशासनिक अंग)

Selected Educational Statistics

(As on 30 September 1995)

1995-96

Government of India

Ministry of Human Resource Development

Department of Education

1996

<u>Other Information:</u>

Call No. : T.44 'N 95 s N6

Acc No. : 40158

उदाहरण - 7

(शासन तथा उसके प्रथम एवं द्वितीय श्रेणी के प्रशासनिक अंग)

Japan's Growth and Education

Educational Development in

Relation to Socio Economic Growth, 1963

Directorate of Education

Ministry of Education

Government of Japan

1963

Other Information:

Call No.	:	T.42 OaX K3
Acc. No.	:	2948
Note	:	Educational Development Series No. 6.

उदाहरण - 8

(शासन का अस्थायी अंग)

Report of the Advisory
Committee on Agricultural Credit.

Chairman : Kasturi Santharam

Ministry of Agriculture

Government of India

1961

Other Information:

Call No.	:	X8(J) : 6'N59t K1
Acc. No.	:	1678
Note	:	Advisory Committee was appointed in the year 1959 By Government of India.

15.7 विस्तृत अध्ययनार्थ ग्रन्थ सूची

1. Ranganathan (SR): Cataloguing Practice. Ed 2. Bangalore, Sarda Ranganathan Endowment for LIbrary Science, 1994.
2. Ranganathan (S.R.) : Classified Catalogue Code. Ed 6. Bangalore, Sarda Ranganathan Endowment for Library Science, 1992.
3. Krishna Kumar : An Introduction to Cataloguing Practice, N. Delhi, 1996.
4. सूद (एस.पी.) सूचीकरण प्रक्रिया, जयपुर,आर.बी.एस.ए., 1998
5. शर्मा (बी.डी.) : अनुवर्ग प्रसूची नियमावली : एक व्यावहारिक अध्ययन, वाई.के.पब्लिशर्स, आगरा, 1999
6. वर्मा (ए.के.) : क्रियात्मक अनुवर्ग सूचीकरण, रायपुर, सेन्ट्रल बुक हाउस, 1999

इकाई -16 : संस्था तथा उसके अंगों द्वारा रचित पुस्तकों का सूचीकरण (Cataloguing of books by Institution and its organs)

संरचना

16.0 उद्देश्य

16.1 संस्था से तात्पर्य

16.2 संस्था के अंग

16.3 संस्था के शीर्षक हेतु चयन एवं उपकल्पन

16.4 सूचीकृत उदाहरण

16.5 अभ्यास हेतु उदाहरण

16.6 विस्तृत अध्ययनार्थ ग्रंथसूची

16.0 उद्देश्य

इस इकाई के निम्नलिखित उद्देश्य हैं :-

1- संस्था की अवधारणा से सुपरिचित होना।

2- संस्था एवं उसके अंगों के सूचीकरण नियमों से अवगत होना

3- संस्था एवं उसके अंगों के प्रायोगिक सूचीकरण से सुपरिचित होना।

16.1 संस्था से तात्पर्य

शासन के समान ही अन्यान्य स्वायत्तशासी संस्थायें होती हैं जिनका अपना प्रकाशन होता है। संस्था भी समष्टि निकाय की एक कोटि होती है। संस्था के प्रकाशनों में बहुत ही महत्वपूर्ण जानकारियाँ उपलब्ध होती हैं। संस्थायें भौगोलिक क्षेत्र के आधार पर तीन कोटियों में विभक्त की जा सकती है।

1. अन्तर्राष्ट्रीय संस्था - जैसे संयुक्त राष्ट्र संघ, विश्व स्वास्थ्य संगठन, यूनेस्को आदि।

2. राष्ट्रीय संस्था-जैसे National Insitute of Medical Science, Indian Council of Historical Research आदि.

3. स्थानीय संस्था जैसे - Bengali Welfare Assciation, Allahabad, Chitragupta, Vansaj Mahasabha, Varanasi आदि।

उपरोक्त प्रकार की संस्थाओं द्वारा प्रकाशित ग्रन्थों को सूचीकरण हेतु क्लासीफाइड कैटलाग में अलग से नियमों का उल्लेख हैं।

डॉ॰ रंगनाथन ने क्लासीफाइड कैटलाग कोड के नियम संख्या FC23 में संस्था को परिभाषित करते हुए व्यक्त किया है "शासन के अतिरिक्त अन्य प्रकार का स्वाधीन या स्वायत्तशासी समष्टि निकाय। इसका निर्माण शासन द्वारा किया जा सकता है, अथवा इसका गठन किसी अधिनियम के अन्तर्गत शासन अथवा स्वैच्छिक रूप से औपचारिक या अनौपचारिक रूप से किया जा सकता है। ये मात्र सम्मेलन आयोजन के अतिरिक्त अन्य कार्य करते हुए निरन्तर अस्तित्व में रहती है या निरन्तर अस्तित्व बनाये रखने के लिए प्रयत्नशील रहती है।

16.2 संस्था के अंग

शासन की ही तरह संस्था के भी अंगों का प्रथमतः दो कोटियों में विभक्त किया जाता है:

1- स्थाई अंग

2 - अस्थाई अंग

स्थाई अंग को पुनः निम्न तीन कोटियों में विभक्त किया जाता है:-

(क) वैधानिक अंग

(ख) संस्था प्रमुख

(ग) प्रशासकीय अंग

निम्न तालिका से संस्था के विभाजन को और अधिक स्पष्ट किया जा सकता है-

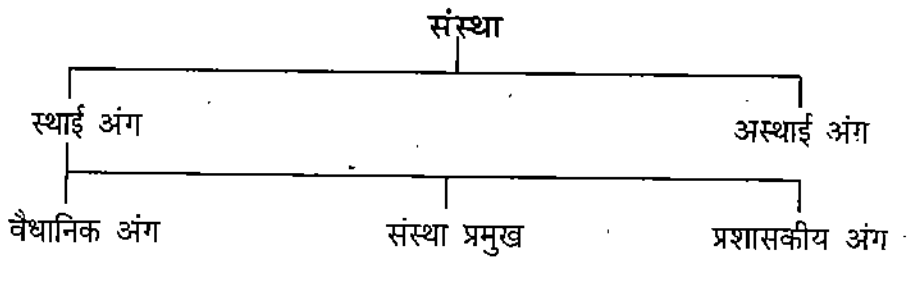

16.3 संस्था के शीर्षक हेतु चयन एवं उपकल्पन

शीर्षक हेतु संस्था के नाम का चयन किया जाता है। संस्था के नाम को पुनः स्मरणमान के उपसूत्र (Canon of Recall Value) के अनुसार उपकल्पित किया जाता है। पुनः स्मरणमान के उपसूत्र से तात्पर्य संस्था के विषय को बाहर निकाल कर बड़े अक्षरों (Capital letters) में लिखा जाता है तथा शेष बचे हुए शब्द वृत्ताकार कोष्ठक में लिखे जाते हैं।

यदि एक ही नाम की संस्था कई स्थानों पर हों तो उन्हें व्यक्तित्व प्रदान करने के लिए अगले वृत्ताकार कोष्ठक में स्थान के नाम का उल्लेख करते हैं।

उदाहरणार्थ :-

MEDICAL (Indian - Association)

MEDICAL RESEARCH (National Council of —) (India)

TECHNOLOGY (Indian Institute of —) (Kanpur)

BLOOD DONOR (Association) (Allahabad)

16.3.1 संस्था के अंगों का उपकल्पन :-

संस्था के अंगों का उपकल्पन संस्था के नाम के पश्चात् कामा (,) लगाकर पुनः स्मरणमान के उपसूत्र के अनुसार किया जाता है।

16.3.1.1 वैधानिक अंगों का उपकल्पन निम्नवत् किया जाता है :-

- MEDICAL (Indian - Association), GOVERNING BODY.
- TECHNOLOGY (Indian Institute of—) (Kanpur), ACADEMIC (Council)

16.3.1.2 संस्था प्रमुख का उपकल्पन निम्नवत् किया जाता है :-

- OPEN UNIVERSITY (U.P. Rajarshi Tandon), VICE CHANCELLOR (Nageshwar Rao)
- INFORMATION TECHNOLOGY (Indian Institute of—) (Allahabad), DIRECTOR (MD Tiwari)

16.3.1.3 प्रशासकीय अंग का उपकल्पन निम्नवत् किया जाता है :-

- Department of Finance, University of Allahabad. का उपकल्पन निम्न प्रकार होगा।

  UNIVERSITY (Of Allahabad), FINANCE (Department of—)

16.3.1.4 उपशीर्षकों का अन्तर्वेशन :-

शासन की ही भाँति संस्था के भी यदि प्रथम श्रेणी एवं द्वितीय श्रेणी के अंगों में भाव या भाषा की समानता हो तो निचले अंग को उपकल्पित कर मध्यम अंक का विलोपन करते हैं।

संस्था तथा उसके अंगों द्वारा रचित पुस्तकों का सूचीकरण

उदाहरण स्वरूप :

Indian Council of Historical Research, Department of Finance, Budget Section का उपकल्पन निम्नवत् होगा :

HISTORICAL RESEARCH (Indian Council of—), BUDGET (Section).

उपर्युक्त उदाहरण के बीच का उप अंग Department of Finance. का विलोपन कर दिया गया है क्योंकि Budget section सदैव Department of Finance का ही अंग होता है।

परन्तु

Indian Institute of Medical Science, Registration of Out Door Patient, Statistics Division का उपकल्पन निम्न प्रकार से होगा :

MEDICAL SCIENCE (Indian Institute of—) OUT DOOR PATIENT (Registration of—), STATISTICS (Division).

उपर्युक्त उदाहरण में बीच का उपअंग नहीं हटायेंगे।

16.3.1.5 अस्थाई अंग :-

संस्था किसी विशेष कार्य की पूर्ति हेतु किसी समिति (Committee) का गठन एक निश्चित समय के लिए करती है, तो उसे संस्था का अस्थाई अंग कहते हैं। इसका भी उपकल्पन शासन की ही भाँति निम्नवत् करते हैं।

- संस्था का नाम (पुनः स्मरण मान उपसूत्र के अनुसार)
- तदर्थ समिति का नाम (पुनः स्मरणमान सूत्र के अनुसार)
- वृत्ताकार कोष्ठक में समिति का स्थापना वर्ष
- अगले वृत्ताकार कोष्ठक में (Chairman) चेयरमैन के नाम का उल्लेख करते हैं।

उदाहरणार्थ :

LIBRARY (Public) (Allahabad), BOOK PURCHASE (Advisory Committee for—) (1985) (Chairman : N K Rai)

16.3.1.6 संयुक्त समिति, आयोग :-

संस्था द्वारा यदि किसी कार्य को सम्पूरित करने के लिए दो या दो से अधिक समिति का गठन किया जाये तथा उनके प्रतिवेदनों को भी संयुक्त रूप से प्रकाशित किया जाये तो उनके उपकल्पन हेतु निम्नवत् प्रावधान है :-

यदि कोई अंग दो या दो से अधिक संस्थाओं द्वारा स्थापित किया गया हो तो उस अंग के नाम के पूर्व, स्थापित करने वाली संस्थाओं के नाम को शीर्षक के रूप में प्रयोग किया जायेगा तथा उनके नाम को योजक पद and के द्वारा जोड़ा जायेगा :-

उदाहरणार्थ :-

LIBRARY (UP-Association) and LIBRARY (MP- Association), PROFESSIONAL DEVELOPMENT (Joint Committee on—).

16.4 सूचीकृत उदाहरण

उदाहरण 1

(पूर्ण संस्था)

Indian Women in Rural Development : Critical Issues

International Labour Office

Geneva

1980

Other Information :

Call No : - Y15-31:7:7.44 N80

Acc No : - 4916

	Y15-31 : 7 : 7.44 N80	
		LABOUR (International— Office) (Geneva)
		Indian Women in Rural Development : Critical
	Issues.	
	4916	

India, Improvement Improvement, Personality. Personality, Rural Rural, Women, Women Sociology. Sociology. Labour (International Office) (Geneva)

शृंखला प्रक्रिया (Chain Procedure)

वांछित कड़ियों की श्रंखला अनुक्रमणिका (Chain Index) निम्नवत् होगी,

वर्ग संख्या — Y15 – 31 : 7 : 7.44

Y	=	Sociology
Y 15	=	Women
Y15–31	=	Rural
Y15–31:7	=	Personality
Y15–31:7:7	=	Improvement
Y15–31:7:7.44	=	India

उपरोक्त विवरणानुसार निम्न वर्ग निर्देशी संलेख निर्मित किये जायेंगे :-

1- India, Improvement
2- Improvement, Personality.
3- Personality, Rural
4- Rural, Women
5- Women, Sociology
6- Sociology

वर्ग निर्देशी संलेख –1 (Class Index Entry–1)

INDIA, IMPROVEMENT RURAL WOMEN.
For documents in this Class and its Subdivision, see the Classified Part of the Catalogue under the Class Number. Y15–31:7:7.44

वर्ग निर्देशी संलेख –2 (Class Index Entry–2)

IMPROVEMENT, PERSONALITY.

For documents in this Class and its Subdivision, see the Classified Part of the Catalogue under the Class Number. Y15–31:7:7

वर्ग निर्देशी संलेख –3 (Class Index Entry–3)

PERSONALITY, RURAL WOMEN.

For documents in this Class and its Subdivision, see the Classified Part of the Catalogue under the Class Number. Y15–31:7

वर्ग निर्देशी संलेख –4 (Class Index Entry–4)

RURAL, WOMEN.

For documents in this Class and its Subdivision, see the Classified Part of the Catalogue under the Class Number. Y15–31

वर्ग निर्देशी संलेख –5 (Class Index Entry–5)

WOMEN, SOCIOLOGY.
For documents in this Class and its subdivision, see the Classified Part of the Catalogue under the Class Number. Y15

○

वर्ग निर्देशी संलेख –6 (Class Index Entry–6)

SOCIOLOGY
For documents in this Class and its subdivision, see the Classified Part of the Catalogue under the Class Number. Y

○

लेखक ग्रन्थ निर्देशी संलेख (Author Book Index Entry)

LABOUR (International–Office) (Geneva).
Indian women in Rural Development : Critical Issues.
Y15–31:7:7.44 N80

○

महत्वपूर्ण बातें -

- मुख्य संलेख में शीर्षक अनुच्छेद (Heading Section) में नियमानुसार संस्था का विषय बाहर निकाल कर बड़े अक्षरों (Capital Letters) में रखा गया है तथा शेष वृत्ताकार कोष्ठक में समान्य अक्षरों से लिखा गया है।
- संस्था को व्यष्टिकृत करने के लिए अगले वृत्ताकार कोष्ठक में स्थान के नाम का उल्लेख किया गया है।
- अन्य इतर संलेख नियमानुसार बनाये गए हैं।

उदाहरण-2

(संस्था एवं उसका एक प्रशासकीय अंग)

Marketing of Fuel Gases

Marketing Division
Indian Oil Corporation

Edited by
Dr. P. K. Gonde
DGM Marketing
Regional Office, Bombay

Aone Publishers
Bombay, 2003

<u>*OTHER INFORMATION*</u>

CALL NO.	X8 (F558) : 51 PO3
ACC. NO.	2917

मुख्य संलेख (Main Entry)

	X8 (F558) : 51 PO3	
		OIL (Indian - Corporatin), MARKETING (Division).
		Marketing of Fúel Gases. Ed by P K Gonde.
	2917	O

संकेत पत्रक (Tracing Card)

Marketing, Fuel Gas.
Fuel Gas, Industry.
Industry, Economics
Economics.

Oil (Indian-Corporation), Marketing (Division).

Gonde (PK), Ed.

श्रृंखला प्रक्रिया (Chain Procedure)

वांछित कड़ियों की श्रंखला अनुक्रमणिका (Chain Index) निम्न प्रकार से होगी।

वर्ग संख्या — X8 (F558) : 51

X	=	Economics
X8	=	Industry
X8(F558)	=	Fuel Gas
X8 (F558) : 51	=	Marketing

उपरोक्त विवरणानुसार निम्न वर्ग निर्देशी संलेख निर्मित किये जायेंगे :-

1- Marketing, Fuel Gas
2- Fuel Gas, Industry
3- Industry, Economics
4- Economics

वर्ग निर्देशी संलेख –1 (Class Index Entry–1)

MARKETING, FUEL GAS.

For documents in this Class and its Subdivision, see the Classified Part of the Catalogue under the Class Number.

X8(F558) : 51

वर्ग निर्देशी संलेख –2 (Class Index Entry–2)

FUEL GAS, INDUSTRY.

For documents in this Class and its Subdivision, see the Classified Part of the catalogue under the Class Number.

X8(F558)

वर्ग निर्देशी संलेख –3 (Class Index Entry–3)

INDUSTRY, ECONOMICS.

For documents in this Class and its Subdivision, see the Classified Part of the Catalogue under the Class Number.

X8

वर्ग निर्देशी संलेख –4 (Class Index Entry–4)

		ECONOMICS
		For documents in this Class and its Subdivision, see the Classified Part of the Catalogue under the Class Number. X

लेखक ग्रन्थ निर्देशी संलेख (Author Book Index Entry)

		OIL(Indian-Corporartion),MARKETING (Division).
		Marketing of Fuel Gases. X8 (F558) :.51 P03

सम्पादक ग्रन्थ निर्देशी संलेख (Editor Book Index Entry)

		GONDE (PK), Ed.
		Oil (Indian – Corporation), Marketing (Division): Marketing of Fuel Gases X8 (F558) : 51 P03

महत्वपूर्ण बातें -

- संस्था एवं उसके अंग का नाम पुनः स्मरणमान के उपसूत्र के अनुसार उपकल्पित किया गया है।
- अन्य सभी इतर संलेख क्लासीफाइड कैटलाग कोड के नियमानुसार बनाये गये हैं।

उदाहरण-3

(संस्था के साथ प्रथम श्रेणी एवं द्वितीय श्रेणी के प्रशासकीय अंग)

Television in India

By

Research and Development Section

OF

Visual Equipment Department

OF

Bharat Electronics Limited

Edited by

Er. R. N. Singh

Bombay

Bharat Electronic Limited

1985

<u>*OTHER INFORMATION*</u>

CALL NO. D65, 45.44 N85

ACC. NO. 3192

मुख्य संलेख (Main Entry)

	D65, 45.44 N85	
	ELECTRONICS (Bharat – Limited), VISUAL EQUIPMENT (Department of–), RESEARCH AND DEVELOPMENT (Section). Television in India. Ed by R N Singh.	
	3192 O	

संकेत पत्रक (Tracing Card)

India, Television.
Television, Electronics.
Electronic, Engineering.
Engineering

Electronics (Bharat–Limited),
Visual Equipment
(Departmentof–), Research
and Development (Section).

Singh (R N), Ed.

श्रृंखला प्रक्रिया (Chain Procedure)

वांछित कड़ियों की श्रंखला अनुक्रमणिका (Chain Index-) निम्न प्रकार होगी।

वर्ग संख्या — D65,45.44

D	=	Engineering
D65	=	Electronics,
D65,45	=	Television
D65,45.44	=	India

उपरोक्त विवरणानुसार निम्न वर्ग निर्देशी संलेख निर्मित किये जायेंगे :-

1- India, Television.
2- Television, Electronics
3- Electronics, Engineering
4- Engineering.

वर्ग निर्देशी संलेख –1 (Class Index Entry–1)

INDIA, TELEVISION.

For documents in this Class and its Subdivision, see the Classified Part of the Catalogue under the Class Number.

D65,45.44

वर्ग निर्देशी संलेख –2 (Class Index Entry–2)

TELEVISION, ELECTRONICS
For documents in this Class and its Subdivision, see the Classified Part of the Catalogue under the Class Number.
D65,45

O

वर्ग निर्देशी संलेख –3 (Class Index Entry–3)

ELECTRONICS, ENGINEERING
For documents in this Class and its Subdivision, see the Classified Part of the Catalogue under the Class Number.
D65

O

वर्ग निर्देशी संलेख –4 (Class Index Entry–4)

ENGINEERING
For documents in this Class and its Subdivision, see the Classified Part of the Catalogue under the Class Number.
D

O

लेखक ग्रन्थ निर्देशी संलेख (Author Book Index Entry)

ELECTRONICS (Bharat–Limited), VISUAL EQUIPMENT (Department of-) RESEARCH AND DEVELOPMENT (Section).
Television in India.
D65,45.44 N85

सम्पादक ग्रन्थ निर्देशी संलेख (Editor Book Index Entry)

SINGH (RN), Ed.
Electronics (Bharat–Limited), Visual Equipment (Department of–), Research and Development (Section) : Television in India
D65,45.44 N85

महत्वपूर्ण बातें -

- मुख्य संलेख एवं इतर संलेखों का निर्माण क्लासीफाइड कैटलाग कोड के नियमानुसार बनाया गया है।

16.5 अभ्यास हेतु उदाहरण

उदाहरण- 1

(संस्था एवं उसका अस्थाई अंग)

International Law Association

Committee on
State Succession to Treaties and Other
Government Obligations

The Effect of Independence
on
Treties : A Hand Book

<u>*OTHER INFORMATION*</u>

CALL NO.	Z,3 N95
ACC. NO.	9416
Note :	The Committee was established By India Law Association in the year 1994 and the Chairman of this Committee was R. C. Chawara.

उदाहरण-2

(संस्था एवं उसका अस्थाई अंग)

University System and Extension as the Third Dimension.

Report of the
Review Committee
Appointed by

The University Grants Commission

Edited By
V. Appa Rao

UGC
1987

<u>*OTHER INFORMATION*</u>

CALL NO.	T 4.44r	M7
ACC. NO.	84201	

उदाहरण-3

(संस्था)

Social Background of Indian Nationalism

Indian Council of Histroical Research
New Delhi,
1989

OTHER INFORMATION

CALL NO.	V44:51(Y) M9
ACC. NO.	15201
Note :	• Editor of this Book is Prof. G.S. Tiwari. • ICHR Book Series No.4, Ed by Dr. A.R. Mishra.

16.6 विस्तृत अध्ययनार्थ ग्रंथ सूची

1. Ranganathan (SR): Cataloguing Practice. Ed 2. Bangalore, Sarda Ranganathan Endowment for LIbrary Science, 1994.
2. Ranganathan (S.R.) : Classified Catalogue Code. Ed 6. Bangalore, Sarda Ranganathan Endowment for Library Science, 1992.
3. Krishna Kumar : An Introduction to Cataloguing Practice, N. Delhi, 1996.
4. सूद (एस.पी.) सूचीकरण प्रक्रिया, जयपुर,आर.बी.एस.ए., 1998
5. शर्मा (बी.डी.) : अनुवर्ग प्रसूची नियमावली : एक व्यावहारिक अध्ययन, वाई.के.पब्लिशर्स, आगरा, 1999
6. वर्मा (ए.के.) : क्रियात्मक अनुवर्ग सूचीकरण, रायपुर, सेन्ट्रल बुक हाउस, 1999

इकाई - 17 : सम्मेलन कार्यवाही का सूचीकरण (Cataloguing of Conference Proceedings)

संरचना

17.0 उद्देश्य
17.1 सम्मेलन से तात्पर्य
17.2 सम्मेलन के प्रकार
17.3 सम्मेलन के शीर्षक हेतु चयन एवं उपकल्पन
17.4 सूचीकृत उदाहरण
17.5 अभ्यास हेतु उदाहरण
17.6 विस्तृत अध्ययनार्थ ग्रंथसूची

17.0 उद्देश्य

इस इकाई के निम्नलिखित उद्देश्य हैं :-

1- सम्मेलन की अवधारणा से सुपरिचित होंना।

2- सम्मेलन एवं उसके अंगों के सूचीकरण नियमों से अवगत होना।

3- सम्मेलन एवं उसके अंगों के प्रायोगिक सूचीकरण से सुपरिचित होना।

17.1 सम्मेलन से तात्पर्य

सम्मेलन से अभिप्राय एक ऐसा समागम जिसमें व्यक्तिगत अथवा विभिन्न विभागों के प्रतिनिधि एक साथ मिलकर किसी सामूहिक विषय पर विचार विमर्श करें तथा उस विषय पर विचार विमर्श के उपरान्त विषय से जुड़े अन्यान्य प्रासंगिक प्रकरणों पर कुछ ठोस निष्कर्ष निकालें। इस प्रकार के सम्मेलन की कार्यसूची (Agenda), कार्यवाहियाँ (Proceedings), निष्कर्ष (Conclusions), संस्तुतियाँ (Recommendations) उस विषय के विकास में महत्वपूर्ण विकासात्मक कार्य करते हैं। सम्मेलन के अन्य पर्यायवाची सम्बोधनों में - सभायें (Meetings), अधिवेशन (Conventions), संगोष्ठियाँ (Symposium) आदि आते हैं।

क्लासीफाइड कैटलाग कोड के नियम संख्या FC24 के अन्तर्गत सम्मेलन को

डॉ0 रंगनाथन ने निम्नलिखित प्रकार से परिभाषित किया है:-

- कुछ व्यक्तियों अथवा समष्टि निकायों द्वारा स्वेच्छापूर्ण सामान्य रूचि के विषयों पर विचार विनिमय हेतु अथवा
- निकाय के कार्य या अस्तित्व, सम्मेलन आयोजित करने तथा संचालित करने के अलावा और कोई न हो अथवा
- निकाय जिसका प्राथमिक कार्य मात्र समय-समय पर सम्मेलन बुलाना और संचालित करना हो।

उपरोक्त के अतिरिक्त क्लासीफाइड कैटलाग कोड में इस बात का भी उल्लेख है कि सम्मेलन की अवधारणा तब नहीं होती अगर सम्मेलन निम्न के द्वारा बुलाया गया हो:-

- शासन अथवा शासन के मात्र अपने कर्मचारियों या संविधान सभा द्वारा संप्रभुता सम्पन्न राज्य बनाने हेतु अथवा
- संस्था और संस्था के मात्र अपने सदस्यों की स्थापना सभा द्वारा संस्था के निर्माण हेतु अथवा
- एक या अधिक शासनों द्वारा संयुक्त रूप से मात्र उसके कर्मचारियों तक सीमित हो।
- एक से अधिक संस्थाओं द्वारा संयुक्त रूप से तथा मात्र उसके सदस्यों तक सीमिंत हो।

17.3 सम्मेलन के प्रकार

क्लासीफाइड कैटलाग कोड में सम्मेलन को निम्नलिखित दो कोटियों में विभक्त किया गया है :-

1- सावधिक सम्मेलन (Periodic Conference)

2- अनावधिक सम्मेलन (Non Periodic Conference)

1. सावधिक सम्मेलन :- ऐसे सम्मेलन जो निश्चित समय अन्तराल के पश्चात् नियमित रूप से आयोजित किये जाते हैं। इन्हें वार्षिक सम्मेलन (Annual Conference) भी कहा जाता है।

उदाहरणार्थ -

21st Annual Conference on Physiotherapy Held at Bhopal in the

year 1986.

2. अनावधिक सम्मेलन : ऐसे सम्मेलन जो कभी एक निश्चित विषय के विचार विमर्श के लिए तदर्थ रूप से आयोजित हो।

इस प्रकार के सम्मेलनों के आयोजन हेतु कोई समयावधि की बाध्यता न हो।

उदाहणार्थ -

Shimla Peace Conference.

अनावधिक सम्मेलन को पुनः तीन कोटियों में विभक्त किया गया है-

(क) विशिष्ट नाम वाले सम्मेलन

(ख) राजनयिक सम्मेलन

(ग) बिना विशिष्ट नाम वाले सम्मेलन

17.4 सम्मेलन के शीर्षक हेतु चयन एवं उपकल्पन

मुख्य संलेख के शीर्षक अनुच्छेद में सम्मेलन को निम्न प्रकार से क्रमिक रूप में उपकल्पित किया जाता है।

- सम्मेलन का नाम (पुनः स्मरणमान के उप सूत्रानुसार)

  SUBJECT (Rest-)
- स्थान का नाम (जहाँ सम्मेलन आयोजित है) अगले वृत्ताकार कोष्ठक में

  (Place)
- वर्ष (सम्मेलन घटित होने का वर्ष) अगले वृत्ताकार कोष्ठक में।

  (Year)

उदाहणार्थ -

International conference on microbiology held at New Delhi in the year 1976.का उपकल्पन निम्नानुसार होगा :-

MICROBIOLOGY (International Conference on–) (New Delhi) (1976).

सम्मेलन के अंग का उपकल्पन सम्मेलन के पश्चात् कामा (,) लगाकर उसे भी पुनः स्मरणमान के उपसूत्र (Canon of Recall value) का प्रयोग कर निम्न भाँति उपकल्पित करेंगे :-

उदाहणार्थ -

Technical session committee of the

National Conference on Biotechnology

held at Jaipur

in the year 1982

का उपकल्पन निम्नानुसार होगा :-

BIOTECHNOLOGY (National conference on –) (Jaipur) (1982), TECHNICAL SESSION (Committee).

17.5 सूचीकृत उदाहरण

उदाहरण 1

(पूर्ण संस्था)

Proceedings of the
National Conference on Moghul Architecture

Sponsored by
Department of Architecture
Delhi University, Delhi

Held on 8-9 January 1995
at University Auditorium
New Delhi

Published By
New Heights Publishing
New Delhi
1996

Other Information :

Call No :- NA44, Jp44, N95 N96

Acc No :- 2122

मुख्य संलेख (Main Entry)

	NA44, Jp44, N95 N96	
	MOGHUL ARCHITECTURE (National Conference on –) (New Delhi) (1995)	
	Proceedings	
	2123	

संकेत पत्रक (Tracing Card)

Proceedings, Moghul Architecture (National Conference on–) (New Delhi) (1995).
Conference Proceedings Moghul Architecture.
Moghul, Indian Architecture.
Indian Architecture, Architecture.
Architecture.

Moghul Architecture (National Conference on–) (New Delhi) (1995)

श्रृंखला प्रक्रिया (Chain Procedure)

वर्ग संख्या — NA44; Jp44, N95

NA	=	Architecture
NA44	=	Indian Architecture
NA44,J	=	Moghul
NA44,Jp	=	Conference Proceedings.
NA44, Jp44, N95	=	Proceedings, Moghul Architecture (Nationa Conference on–) (New Delhi) (1995)

वांछित कड़ियों की श्रृंखला अनुक्रमणिका के आधार पर वर्ग निर्देशी संलेख निम्नवत् होंगे:-

1- Proceedings, Moghul Architecture (National Conference on–) (New Delhi) (1995).
2- Conference Proceedings, Moghul Architecure.
3- Moghul, Indian Architecture.
4- Indian Architecture, Architecture.
5- Architecture.

वर्ग निर्देशी संलेख (Class Index Entry)

PROCEEDINGS, MOGHUL ARCHITECTURE
(National Conference on–) (New Delhi) (1995)
For documents in this Class and its Subdivision, see the Classified Part of the Catalogue under the Class Number.

NA44,Jp44,N95

O

CONFERENCE PROCEEDINGS, MOGHUL ARCHITECTURE
For documents in this Class and its Subdivision, see the Classified Part of the Catalogue under the Class Number.

NA44,Jp

O

MOGHUL, INDIAN ARCHITECTURE
For documents in this Class and its Subdivision, see the Classified Part of the Catalogue under the Class Number.

NA44,J

O

INDIAN ARCHITECTURE.

For documents in this Class and its Subdivision, see the Classified Part of the Catalogue under the Class Number.

NA44

O

ARCHITECTURE.

For documents in this Class and its Subdivision, see the Classified Part of the Catalogue under the Class Number.

NA

O

लेखक ग्रन्थ निर्देशी संलेख (Author Book Index Entry)

MOGHUL ARCHITECTURE (National Conference on-) (New Delhi) (1995).

Proceedings.

NA44,Jp44, N95 N96

O

महत्वपूर्ण बातें -

- क्लासीफाइड कैटलाग कोड के नियम संख्या MD21 एवं JE1 के अनुसार मुख्य संलेख का निर्माण किया गया है।
- अन्य सभी इतर संलेख नियमानुसार निर्मित है।

उदाहरण 2

(सम्मेलन एवं सम्पादक)

Future of Photography
Proceeding of the
National Conference on Photography

Held at

Ocean Hotel Bombay

from 17 ro 20 June 1985

Edited By

P. R. Tendulkar

Bombay

Nice Publishers

1996

Other Information :

Call No : - M95p44,N85 N86

Acc No : - 6124

मुख्य संलेख (Main Entry)

M95p44, N85 N86

PHOTOGRAPHY (National Conference on-)
(Bombay)(1985)

Proceedings.Ed by P R Tendulkar.

6124

○

संकेत पत्रक (Tracing Card)

Proceedings, Photography (National Conference on–) (Bombay) (1985) Conference Proceedings, Photography. Photography, Useful Arts. Useful Arts Photography (National Conference on–) (Bombay) (1985) Tendulkar (PR), Ed.

श्रृंखला प्रक्रिया (Chain Procedure)

वर्ग संख्या — M95p44, N85 N86

M	=	Useful Arts
M95	=	Photography
M95p	=	Conference Proceedings
M95p44,N85	=	Proceedings, Photography (National Conference on–) (Bombay) (1985).

वांछित कड़ियों की श्रृंखला अनुक्रमणिका (Chain Index) के आधार पर वर्ग निर्देशी संलेख निम्नवत् होंगेः-

1- Proceedings, Photography (National Conference on–) (Bombay) (1985).

2- Conference Proceedings, Photography

3- Photography, Useful Arts.

4- Useful Arts.

वर्ग निर्देशी संलेख (Class Index Entry)

PROCEEDINGS, PHOTOGRAPHY (National Conference on–) (Bombay) (1985) For documents in this Class and its Subdivision, see the Classified Part of the Catalogue under the Class Number. M95p44,N85

CONFERENCE PROCEEDINGS, PHOTOGRAPHY,

For documents in this Class and its Subdivision, see the Classified Part of the Catalogue under the Class Number.

M95p

PHOTOGRAPHY, USEFUL ARTS

For documents in this Class and its Subdivision, see the Classified Part of the Catalogue under the Class Number.

M95

USEFUL ARTS.

For documents in this Class and its Subdivision, see the Classified Part of the Catalogue under the Class Number.

M.

लेखक ग्रन्थ निर्देशी संलेख (Author Book Index Entry)

PHOTOGRAPHY (National Conference on–) (Bombay) (1985).

Future of Photography

M95p44,N85 N86

संपादक ग्रन्थ निर्देशी संलेख (Editor Book Index Entry)

TENDULKAR (PR), Ed.

Photography (National Conference on–) (Bombay) (1985) : Future of Photography.

M95p44,N85 N86

O

महत्वपूर्ण बातें -

- मुख्य संलेख का निर्माण क्लासीफाइड कैटलाग कोड के नियमानुसार किया गया है।
- इतर संलेखों का भी निर्माण नियमानुसार किया गया है।

उदाहरण 3

(सावधिक सम्मेलन)

Proceedings of the
SIXTH ANNUAL CONFERENCE ON HOTRICULTURE

Held at Agra

From Feb. 16 - 18, 1990

Delhi University, Delhi

Published By

Associated Publishers

Agra, 1991

Other Information :

Call No : - J1P44,N90 N91

Acc No : - 7293

मुख्य संलेख (Main Entry)

	J1P44,N90 N91	
		HORTICULTURE (Sixth Annual Conference on –) (Agra) (1990). Proceedings.
	7293.	

संकेत पत्रक (Tracing Card)

Proceedings, Horticulture (Sixth Annual Conference on–) (Agra) (1990)
Conference Proceedings, Horticulture.
Horticulture, Agriculture.
Agriculture.

Horticulture (Sixth Annual Conference on–) (Agra) (1990)

श्रृंखला प्रक्रिया (Chain Procedure)

वर्ग संख्या — J1p44, N90

J	=	Agriculture
J1	=	Horticulture
J1p	=	Conference Proceedings
J1p44,N90	=	Proceedings, Horticulture (Sixth Annual Conference on–) (Agra) (1990).

वांछित कड़ियों की श्रृंखला अनुक्रमणिका (Chain Index) के आधार पर वर्ग निर्देशी संलेख निम्नवत् होंगे:-

1- Proceedings, Horticulture (Sixth Annual Conference on–) (Agra) (1990).

2- Conference Proceedings, Horticulture

3- Horticulture, Agriculture.

4- Agriculture.

वर्ग निर्देशी संलेख (Class Index Entry)

PROCEEDINGS, HORTICULTURE (Sixth Annual Conference on–) (Agra) (1990).

For documents in this Class and its Subdivision, see the Classified Part of the Catalogue under the Class Number.

J1p44, N90

CONFERENCE PROCEEDINGS, HORTICULTURE.

For documents in this Class and its Subdivision, see the Classified Part of the Catalogue under the Class Number.

J1p

HORTICULTURE.

For documents in this Class and its Subdivision, see the Classified Part of the Catalogue under the Class Number.

J1

	AGRICULTURE	
	For documents in this Class and its Subdivision, see the Classified Part of the Catalogue under the Class Number. J O	

महत्वपूर्ण बातें -

- क्लासीफाइड कैटलाग कोड के नियमानुसार सम्मेलन में यदि कोई अंक है तो उसे शब्दों में परिवर्तित करके लिखा जाता है।

17.6 अभ्यास हेतु उदाहरण

उदाहरण 1

WHAT IS HISTORY ?

Proceedings of the

National Conference on Indian History

Held at Ahmedabad from Nov. 28-30, 1988

Sponsored by

Indian Council of Historical Research

New Delhi

Edited By

Prof. T. V. Rajsekharan

PENGUIN BOOKS

LONDON

1989

Other Information :

Call No : - Vp44,N88 N89

Acc No : - 14274

उदाहरण 2

Public Library Development
Perspectives and
Staffing Pattern in Libraries
and Information Centres

Proceedings of the
All India Library Conference
Held at Baroda University,
November 1–4, 1985

ILA
INDIAN LIBRARY ASSOCIATION
NEW DELHI
1985

Other Information:

Call No :- 2P44,N85 N85

Acc No :- 12985

उदाहरण 3

Variety of Plasmas

Proceedings of the 1989 International
Conference on Plasma Physics
Held at Bangalore from March 6-9, 1989

Edited by
A. SEN
P.K. KAR

Published By
INDIAN ACADEMY OF SCIENCES
BANGALORE
1991

<u>Other Information</u>:

Call No :- C2P1,N89 N1

Acc No :- 12985

17.7 विस्तृत अध्ययनार्थ ग्रंथ सूची

1. Ranganathan (SR): Cataloguing Practice. Ed 2. Bangalore, Sarda Ranganathan Endowment for LIbrary Science, 1994.
2. Ranganathan (S.R.) : Classified Catalogue Code. Ed 6. Bangalore, Sarda Ranganathan Endowment for Library Science, 1992.
3. Krishna Kumar : An Introduction to Cataloguing Practice, N. Delhi, 1996.
4. सूद (एस.पी.) सूचीकरण प्रक्रिया, जयपुर,आर.बी.एस.ए., 1998
5. शर्मा (बी.डी.) : अनुवर्ग प्रसूची नियमावली : एक व्यावहारिक अध्ययन, वाई.के.पब्लिशर्स, आगरा, 1999
6. वर्मा (ए.के.) : क्रियात्मक अनुवर्ग सूचीकरण, रायपुर, सेन्ट्रल बुक हाउस, 1999

इकाई - 18 : सामान्य सावधिक प्रकाशनों का सूचीकरण (Cataloguing of Simple Periodical Publication)

संरचना

18.0 उद्देश्य

18.1 सावधिक प्रकाशन से तात्पर्य

18.2 सावधिक प्रकाशन के संलेखों की संरचना

18.2.1 मुख्य संलेख

18.2.2 इतर संलेख

18.3 सूचीकृत उदाहरण

18.4 अभ्यास हेतु उदाहरण

18.5 विस्तृत अध्ययनार्थ ग्रंथसूची

18.0 उद्देश्य

इस इकाई के निम्नलिखित उद्देश्य हैं :-

1- सावधिक प्रकाशन की अवधारणा से अवगत होना।

2- सावधिक प्रकाशनों के विभिन्न संलेखों की संरचना एवं उनसे सम्बन्धित नियमों से सुपरिचित होना।

3- प्रायोगिक सूचीकरण हेतु सावधिक प्रकाशनों से सुपरिचित होना।

18.1 सावधिक प्रकाशन से तात्पर्य

सावधिक प्रकाशन शोध एवं अनुसंधान के मुख्य स्तम्भ होते हैं।.नवीनतम् शोध सूचना ग्रन्थों की तुलना में सावधिक प्रकाशनों में बहुत जल्दी प्रकाशित होते हैं। विशिष्ट ग्रन्थालयों के उपयोगकर्ता अपने विषय क्षेत्र में हो रहे नवीन विकास के क्रियाकलापों से परिचित होने के लिए सावधिक प्रकाशनों पर ही मुख्य रूप से निर्भर रहते हैं क्योंकि वर्तमान वैज्ञानिक युग में दिन प्रतिदिन के आविष्कारों तथा अनुसंधानों से सम्बन्धित नवीन एवं अद्यतन जानकारी सावधिक प्रकाशनों के माध्यम से ही प्राप्त होती है। उच्च शिक्षण संस्थाओं एवं शोध संस्थानों के ग्रन्थालय अपने पाठकों की शोध सम्बन्धी आश्यकताओं की पूर्ति हेतु ग्रन्थों की तुलना में सावधिक प्रकाशनों पर अपने बजट का अधिक भाग व्यय करते हैं।

डा0 रगनाथन न क्लासीफाइड कैटलाग कोड के अध्याय FF111 में सावधिक प्रकाशन की परिभाषा निम्नवत् दी है।

"सावधिक प्रकाशन का प्रत्येक खण्ड विशिष्ट एवं स्वतन्त्र अंश लेखों से युक्त होता है जो विशिष्ट विषयों से सम्बन्धित होते हैं, परन्तु किसी को धारावाहिक रूप से अभिव्यक्त नहीं करते। साधारणतः लेखक अनेक होते हैं और क्रमिक खण्डों के विषय और लेखक भिन्न हुआ करते हैं तथा सभी विषय एक ही ज्ञान से सम्बन्धित होते हैं। इसका प्रकाशन एक पूर्ण खण्ड में नहीं होता बल्कि आंशिक खण्डों में होता है जिन्हें अंक (Issue) कहते हैं।"

उपर्युक्त परिभाषा के आलोक में सावधिक प्रकाशन की निम्नलिखित विशेषतायें दृष्टिगोचर होती हैं–

- ऐसा प्रकाशन जो अनेक खण्डों में प्रकाशित होता है।
- इसमें अनेक लेखकों के निबन्ध अथवा शोध लेख होते हैं।
- विभिन्न लेखों के मध्य विषयवस्तु की दृष्टि से निरन्तरता नहीं होती।
- इसकी एक विशिष्ट आख्या (Title) होती है।
- इसका प्रकाशन अन्तराल निश्चित होता है।
- यह नियमित रूप से निश्चित समयान्तर पर विशिष्ट अंक संख्या सहित क्रमिक रूप से प्रकाशित होता है।

18.2 सावधिक प्रकाशन के संलेखों की संरचना

सावधिक प्रकाशनों की प्रकृति ग्रन्थ से भिन्न होती है। सावधिक प्रकाशनों के प्रकाशन में आने वाली जटिलताओं के कारण इनके सूचीकरण में अनेक समस्यायें आती हैं।

प्रायोगिक सूचीकरण की दृष्टि से इनके भी संलेख निम्नवत् निर्मित किये जाते हैं:-

क- मुख्य संलेख

ख- इतर संलेख

18.2.1 मुख्य संलेख की संरचना

क्लासीफाइड कैटलाग कोड के नियम संख्या PB10 के अनुसार सावधिक

प्रकाशन के मुख्य संलेख में निम्न अनुच्छेद हात हः-

1. अग्र अनुच्छेद (Leading Section)
2. शीर्षक अनुच्छेद (Heading Section)
3. आवधिकता अनुच्छेद (Periodicity Section)
4. ग्रन्थमाला टिप्पणी अनुच्छेद (Series Note Section)
5. संक्षिप्त उपलब्धता विवरण अनुच्छेद (Holding in Brief Section)
6. संकेत अनुच्छेद (Tracing Section)
7. पूर्ण उपलब्धता विवरण अनुच्छेद (Holding in full Section)

1. **अग्र अनुच्छेद (Leading Section)** - मुख्य संलेख के अग्र अनुच्छेद में केवल वर्ग संख्या का उल्लेख निम्नवत् किया जाता है :-

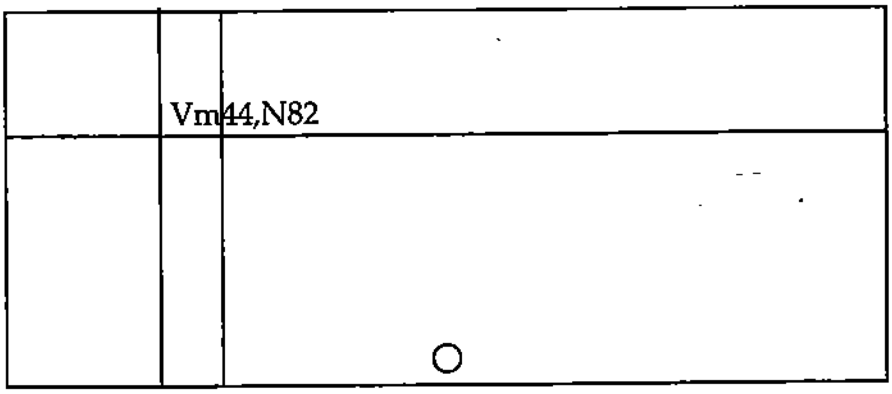

2. **शीर्षक अनुच्छेद** :- इस अनुच्छेद में सावधिक प्रकाशन के आख्या का उल्लेख किया जाता है। सावधिक प्रकाशन के शीर्षक का निर्माण आख्या के अन्तर्गत होता है। आख्या का उल्लेख निम्नवत होता है :-

   - जब सावधिक प्रकाशन के आख्या पृष्ठ पर केवल आख्या का ही उल्लेख हो, उसके प्रायोजक निकाय (Sponsoring Body) का उल्लेख न हो तो आख्या के प्रथम दो शब्द बड़े अक्षरों में (Capital Letters) में लिखे जाते हैं :-

उदाहरणार्थ -

Journal of Ancient History. का उल्लेख निम्नवत् किया जाता है–

		JOURNAL, OF ancient history

- यदि सावधिक प्रकाशन की आख्या (Title) में 'प्रायोजक निकाय (Sponsoring Body) का नाम भी जुड़ा है तो उसे आख्या से अलग कर कामा (,) के पश्चात् प्रायोजक निकाय का उल्लेख पुनः स्मरणमान के उपसूत्र (Canon of Recall Value) के अनुसार किया जाता है।

उदाहरणार्थ :-

Journal of Indian Council of Historical Research

		JOURNAL, Historical (Indian Council of– Re-search)

- यदि प्रायोजक निकाय का नाम शीर्षक के साथ न जुड़ा हो अर्थात् आख्या पृष्ठ पर अन्यत्र अलग से उल्लेख हो तो क्लासीफाइड कैटलाग कोड के नियम संख्या PB121 के अनुसार उसे शीर्षक अनुच्छेद (Heading Section) में वृत्ताकार कोष्ठक में लिखा जाता है। सबसे पहले सावधिक प्रकाशन के नाम के प्रथम दो शब्द बड़े अक्षरों (Capital letters) में लिखकर प्रायोजक निकाय के नाम को पुनः स्मरणमान के उपसूत्र (Canon of Recall Value) के अनुसार उल्लिखित किया जाता है।

उदाहरणार्थ-

History Quarterly
Official organ of Indian Council of
Historical Research

	Co	HISTORY QUARTERLY, (Historical (Indian uncil of – Research)).

3- **आवधिकता अनुच्छेद (Periodicity Section) :-**

क्लासीफाइड कैटलाग के नियम संख्या PB13 के अनुसार इस अनुच्छेद की सूचना दो भागों में होती है।

(अ) एक खण्ड कितने समय में पूर्ण होता है जैसे

1 V per year

2 V per year

(ब) खण्डों की संख्या एवं प्रकाशन के प्रारम्भ होने का वर्ष तथा प्रकाशन किस वर्ष तक चलता रहा अथवा समाप्त हो गया अथवा निरन्तर प्रकाशित हो रहा है।

उपरोक्त दोनों भागों को एक ही बड़े कोष्ठक के अन्दर द्वितीय उर्ध्वरेखा (Second Indention) से प्रारम्भ कर निम्नवत् लिखते हैं :-

- सावधिक प्रकाशन निरन्तर चल रहा है तो

[1V per year VI - ;1965–]

उपरोक्त सूचना के प्रथम भाग में उल्लिखित हैं कि प्रकाशन एक खण्ड प्रतिवर्ष प्रकाशित हो रहा है। दूसरे भाग में खण्ड 1 का प्रकाशन वर्ष 1965 हैं और सावधिक प्रकाशन निरन्तर प्रकाशित हो रहा है। VI एवं 1965 के बाद प्रदर्शित आड़ी रेखा (–) इस बात का प्रतीक है कि प्रकाशन निरन्तर प्रकाशित हो रहा है।

[1V per year. VI– ;1965–]

4. **ग्रन्थमाला टिप्पणी अनुच्छेद (Series Note Section)–** सामान्यतया सावधिक प्रकाशनों में ग्रन्थालय टिप्पणी उपलब्ध नहीं होती तथापि यदि उपलब्ध है तो यहाँ भी उल्लेख पुस्तकों की ही तरह होता है।

5. **संक्षिप्त उपलब्धता विवरण अनुच्छेद (Holding in brief section)–** यह अनुच्छेद भी द्वितीय उर्ध्व रेखा से प्रारम्भ होता है तथा इसमें सावधिक प्रकाशन के पुस्तकालय में उपलब्ध खण्डों के बारे में संक्षिप्त सूचना, प्रकाशन वर्ष के साथ दी जाती है। इस सूचना को अंकित करने के लिए सबसे पहले पद This Library has लिखकर V के बाद खण्डों की संख्या लिखकर उसके बाद सेमीकोलन (;) लगाकर ग्रन्थालय में उपलब्ध खण्डों का प्रकाशन वर्ष अंकित करते हैं अन्त में पूर्ण विराम लगाया जाता है। अन्तिम खण्ड संख्या एवं अन्तिम वर्ष को पेन्सिल से लिखते हैं उसका आशय कि पश्चात् में खण्डों के आगमन पर पेन्सिल से लिखी सूचना मिटा कर अध्यावधि उपलब्ध खण्ड संख्या एवं वर्ष का उल्लेख कर दिया जायेगा।

उदाहरणार्थ

This library has VI—10; 2001–2010

उपरोक्त वर्णित उदाहरण में रेखांकित खण्ड संख्या एवं वर्ष को पेन्सिल से लिखा जायेगा।

6. **संकेत अनुच्छेद (Tracing section)**– सावधिक प्रकाशन के लिए भी संकेत अनुच्छेद पुस्तकों की ही भाँति मुख्य संलेख के पृष्ठ भाग पर ही अवधारित किया जाता है। बस अन्तर इतना है कि सावधिक प्रकाशनों में वर्ग निर्देशी संलेखों (Class Index Entries) को ही सामान्यतया निर्मित किया जाता है।

7. **पूर्ण उपलब्धता विवरण अनुच्छेद (Holding in full section)**– क्लासीफाइड कैटलाग कोड के अनुसार इस अनुच्छेद का उल्लेख करने हेतु मुख्य संलेख से एक सतत् पत्रक (Continued card) को निर्मित किया जाता है। सतत पत्रक के अग्ररेखा (Leading line) पर सावधिक प्रकाशन के वर्ग संख्या (Class Number) का उल्लेख करते हैं। उसके पश्चात् अग्र रेखा के नीचे वाली पंक्ति पर तालिका रूप (Table Form) में उपलब्ध खण्ड संख्या (Volume Number), प्रकाशन वर्ष (Year of Publication), ग्रंथ संख्या (Book Number) तथा परिग्रहण संख्या (Accession Number) का उल्लेख किया जाता है। पत्रक में इन सूचनाओं को बाई ओर से दाहिनी ओर लिखा जाना चाहिए। सतत् पत्रक के दोनों ओर अर्थात् सम्मुख भाग एवं पृष्ठ भाग पर यह सूचना आवश्यकतानुसार अंकित की जानी चाहिए। इसके पश्चात् भी आवश्यकता पड़े तो अतिरिक्त सतत् पत्रक का प्रयोग किया जाता है, बोधगम्यता की दृष्टि से पूर्ण उपलब्धता विवरण अनुच्छेद का प्रारूप निम्नवत् है:-

प्रारूप (Sketton)

	Class Number			Continued 1
Volume Number		Year Number	Book Number	Accession Number
				Contined in the back.

18.2.2 इतर संलेख (Added Entries)

क्लासीफाइड कैटलाग कोड के अनुसार सावधिक प्रकाशन के लिए निम्नलिखित

प्रकार के इतर संलेख निर्मित किये जाते हैं :-

1- अन्तर्विषयी संलेख (Cross Reference Entry)

2- वर्ग निर्देशी संलेख (Class Index Entry)

3- ग्रन्थ निर्देशी संलेख (Book Index Entry)

18.2.2.1 अन्तर्विषयी संलेख (Cross Reference Entry)— सामान्यतया सवाधिक प्रकाशन हेतु अन्तर्विषयी संलेख नहीं बनाये जाते परन्तु यदि सावधिक प्रकाशन के किसी विशिष्ट खण्ड में मात्र एक ही अंशदान हो अथवा कोई खण्ड अभिनन्दन सामग्री (Festschrift) के रूप में या किसी अन्य अर्थ में विशिष्ट खण्ड के रूप में प्रकाशित हुआ तो ऐसी स्थिति में अन्तर्विषयी संलेख निर्मित किये जाते हैं।

18.2.2.2 वर्ग निर्देशी संलेख (Class Index Entry)— सावधिक प्रकाशन हेतु निम्न पाँच प्रकार के वर्ग निर्देशी संलेख बनाने का प्रावधान है:-

(1) विशिष्ट वर्ग निर्देशी संलेख (Specific Class Index Entry)

(2) अतिरिक्त वर्ग निर्देशी संलेख (Additional Class Index Entry)

(3) सजातीय वर्ग निर्देशी संलेख (Generic Class Index Entry)

(4) वैकल्पिक वर्ग निर्देशी संलेख (Optional Class Index Entry)

(5) साधारण वर्ग निर्देशी संलेख (Ordinary Class Index Entry)

संरचना (Structure)

1. **विशिष्ट वर्ग निर्देशी संलेख** - सावधिक प्रकाशन के वर्ग संख्या की अन्तिम कड़ी से प्राप्त शीर्षक से जो वर्ग निर्देशी संलेख निर्मित किये जाते हैं, उन्हें विशिष्ट वर्ग निर्देशी संलेख कहा जाता है इस संलेख के दो भाग होते हैं:-

   (अ) अग्र अनुच्छेद (Leading Section) :- इस अनुच्छेद के अन्तर्गत शीर्षक को अग्र रेखा पर प्रथम उर्ध्वरेखा (First Indention) से अंकित करते हैं।

   (ब) निर्देशांक अनुच्छेद (Index Number) :- इस अनुच्छेद में शीर्षक की समाप्ति के पश्चात् अगली पंक्ति पर दाहिनी ओर निर्देशांक का उल्लेख किया जाता है।

उदाहरणार्थ–

		JOURNAL, Historical (Indian Council of–Research).
		Vm44, N82

2. **अतिरिक्त वर्ग निर्देशी संलेख (Additional Class Index Entry)-** सावधिक प्रकाशन के नाम तथा प्रायोजक निकाय के नाम के स्थान को परिवर्तित कर एक अतिरिक्त संलेख निर्मित किया जाता है। इस संलेख के भी विशिष्ट वर्ग निर्देशी संलेख की भाँति दो भाग होते हैं। इनकी संरचना निम्नवत् प्रकार से होती है :

		HISTORICAL (Indian Council of–Research), Journal.
		Vm44, N82

3. **सजातीय वर्ग निर्देशी संलेख (Generic Class Index Entry) -** इस प्रकार के संलेख में अग्र रेखा पर प्रथम उर्ध्वरेखा (First Indention) से बड़े अक्षरों में आवश्यकतानुसार पद (PERIODICAL) अथवा (SERIAL) का उल्लेख किया जाता है तथा द्वितीय अनुच्छेद में सावधिक प्रकाशन का शीर्षक तथा प्रायोजक निकाय का नाम अंकित करते हैं। अंत मे दाहिनी ओर निर्देशांक का उल्लेख करते हैं।

द्वितीय अनुच्छेद में शीर्षक एवं प्रायोजक निकाय के नाम का स्थान परिवर्तित कर एक अन्य संलेख भी निर्मित करते हैं। इस प्रकार सजातीय वर्ग निर्देशी संलेख (Generic Class Index Entry) संख्या में दो बनाई जाती है।

	PERIODICAL	
		Journal, Historical (Indian Council of–Research) Vm44,N82

	PERIODICAL	
		Historical (Indian Council of–Research), Journal. Vm44,N82

उदाहरणार्थ -

4. **वैकल्पिक वर्ग निर्देशी संलेख (Optional Class Index Entry) -** सावधिक प्रकाशन के वर्ग संख्या की वह कड़ी जिससे भौगोलिक स्थान तथा सामान्य एकल का शीर्षक खुलता है। उनसे बनने वाले संलेख वैकल्पिक वर्ग निर्देशी संलेख कहे जाते हैं :-

उदाहरणार्थ :-

भौगोलिक संख्या से प्राप्त कड़ी का शीर्षक

	INDIA, PERIODICAL, HISTORY	
		For documents in this Class and its Subdivision, see the Classification Part of the catalogue under the Class Number. Vm44

सामान्य एकल से प्राप्त कड़ी का शीर्षक

PERIODICAL, HISTORY

For documents in this Class and its Subdivision, see the Classification Part of the catalogue under the Class Number. Vm

उपरोक्त विवरणानुसार वैकल्पिक वर्ग निर्देशी संलेख की संरचना पूर्णरुपेण ग्रन्थ के वर्ग निर्देशी संलेख के समान होती है।

5. **साधारण वर्ग निर्देशी संलेख (Ordinary Class Index Entry) -** सावधिक प्रकाशन के वर्ग संख्या में सामान्य एकल के बाद शेष बचे शीर्षकों से प्राप्त संलेखों को साधारण वर्ग निर्देशी संलेख कहते हैं :-

उदाहरणार्थ :-

HISTORY

For documents in this Class and its Subdivision, see the Classified Part of the catalogue under the Class Number V

18.2.2.3 ग्रन्थ निर्देशी संलेख (Book Index Entry)– क्लासीफाइड कैटलाग कोड के नियम संख्या PB50 के अनुसार सावधिक प्रकाशन हेतु किसी भी ग्रन्थ निर्देशी संलेख का निर्माण नहीं किया जाता।

18.3 सूचीकृत उदाहरण

उदाहरण - 1

(सावधिक प्रकाशन)

CHINA REPORT

Vol. No. 32 Issue No. 4 1995

Edited by

Manoranjan Mohanti

Published by

Sage Publications

New Delhi

Other Information :

Call No : -	V41m44, N64
First Published :-	1964
Frequency :-	Quarterly
Library Holding :-	Volume No. 32 (1995) onwards.

मुख्य संलेख (Main Entry)

	V41	m44, N64
		CHINA REPORT [IV per year. VI—; 1964–]. This library has V32–47; 1995 - 2010 Continued in the next card.

पूर्ण उपलब्धता - विवरण अनुच्छेद
(Holdings – in Full Section)

	V41	m44,N64 continued 1
32-47		1995–2010 N95–P010 2295–2310

श्रृंखला प्रक्रिया (Chain Procedure)

वर्ग संख्या — V41m44,N64

V	=	History
V41	=	China, History
V41m	=	Periodical, China, History
V41m44	=	India, Periodical, China, Histroy.
V41m44,N64	=	China Report

उपरोक्त वांछित कड़ियों के अनुसार निम्न वर्ग निर्देशी संलेख निर्मित होंगेः-

1- China Report — Specific Class Index Entry
2- Periodical — Generic Class Index Entry
3- India, Periodical, China, History — Optional CIE
4- Periodical, China History — Optional CIE
5- China, History — Ordinary CIE
6- History — Ordinary CIE

संकेत पत्रक (Tracing Card)

China Repprt.
Periodical
India, Periodical, China, History
Periodical, China, History.
China, History.
History.

विशिष्ट वर्ग निर्देशी संलेख (Specific Class Index Entry)

CHINA REPORT

V41m44,N64

O

सजातीय वर्ग निर्देशी संलेख (Generic Class Index Entry)

PERIODICAL

China Report

.V41m44,N64

O

वैकल्पिक वर्ग निर्देशी संलेख (Optional Class Index En-

INDIA, PERIODICAL, CHINA, HISTORY

For documents in this Class and its Subdivision, see the Classification Part of the catalogue under the Class Number. V41m44

PERIODICAL, CHINA, HISTORY

For documents in this Class and its Subdivision, see the Classification Part of the catalogue under the Class Number. V41m

साधारण वर्ग निर्देशी संलेख (Ordinary Class Index Entry)

CHINA, HISTORY

For documents in this Class and its Subdivision, see the Classification Part of the catalogue under the Class Number. V41

HISTORY

For documents in this Class and its Subdivision, see the Classification Part of the catalogue under the Class Number. V.

महत्वपूर्ण बातें -

- शीर्षक अनुच्छेद में सावधिक प्रकाशन का नाम नियमानुसार उपकल्पित किया गया है।
- अन्य इतर संलेख भी नियमानुसार बनाये गए हैं।
- संपादक के नाम का उल्लेख सावधिक प्रकाशन में नहीं होता।

उदाहरण -2

(सावधिक प्रकाशनः शीर्षक के साथ प्रायोजक निकाय)

JOURNAL OF

Indian Council of Historical Research

Vol. No. 1 1959

Published by

Historical cal Society of India

Banglore

Other Information :

Class No :- Vm44,N59

First Published :- 1959

Library Holdings :- Valume number one onwards.

मुख्य संलेख (Main Entry)

	Vm44,N59	
		JOURNAL, Historical (Indian Council of - Research). [IV per year. VI—; 1959-]. This library has VI—52; 1995—2010 Continued in the next card.

पूर्ण उपलब्धता विवरण अनुच्छेद (Holding in full Section)

	Vm44,N59			continued 1	
1–52		1959–2010	N59–P010	101–152	

श्रृंखला प्रक्रिया (Chain Procedure)

वर्ग संख्या — Vm44,N50

V	=	History
Vm	=	Periodical, History
Vm44	=	India, Periodical, History
Vm44,N59	=	Journal, Historical (Indian Council of –Research).

उपरोक्त वांछित कड़ियों के अनुसार निम्न वर्ग निर्देशी संलेख निर्मित होंगेः-

1- Journal, Historical (Indian Council – of - Research) Specific CIE

2- Historical (Indian Council of – Research), Journal – Additional CIE

3- Periodical – Generic CIE

4- Periodical– Generic CIE

5- Indian, Periodical, History – Optional CIE

6- Periodical History – Optional CIE

7– History – Ordinary CIE

संकेत पत्रक (Tracing Card)

Journal, Historical (Indian Council of–Research) Historical (Indian Concil of–Research), Journal. Periodical Periodical India, Periodical, History. Periodical, History. History. Indian Council of Historical Research

विशिष्ट वर्ग निर्देशी संलेख (Specific Class Index Entry)

JOURNAL, Historical (Indian Council of – Research) Vm44,N59

अतिरिक्त वर्ग निर्देशी संलेख

(Additional Class Index Entry)

HISTORICAL (Indian Council of – Research), Journal Vm44,N59

सजातीय वर्ग निर्देशी संलेख (Generic Class Index Entry)

PERIODICAL.
Journal, Historical (Indian Council of–Research).
Vm44,N59.

PERIODICAL.
Historical (Indian Council of–Research). Journal
Vm44,N59.

वैकल्पिक वर्ग निर्देशी संलेख (Optional Class Index Entry)

INDIA, PERIODICAL, HISTORY.
For documents in this Class and its Subdivision, see the Classification Part of the catalogue under the Class Number. Vm44

PERIODICAL, HISTORY.
For documents in this Class and its Subdivision, see the Classification Part of the catalogue under the Class Number. Vm

साधारण वर्ग निर्देशी संलेख (Ordinary Class Index Entry)

HISTORY

For documents in this Class and its Subdivision, see the Classification Part of the catalogue under the Class Number. V

नामांतर निर्देशी संलेख (Cross Reference Index Entry)

INDIAN, COUNCIL OF HISTROICAL RESEARCH

See

HISTORICAL (Indian Council of – Research).

महत्वपूर्ण बातें -

- शीर्षक अनुच्छेद में सावधिक शीर्षक एवं प्रयोजक निकाय का नाम नियम संख्या PB12 एवं उसके उपखण्डों के अनुसार उपकल्पित किया गया है।
- प्रायोजक निकाय का नाम पुनः स्मरणमान के उपसूत्र Canon of Recall Value के अनुसार किया गया है।
- पूर्ण उपलब्धता विवरण अनुच्छेद हेतु सतत् पत्रक का निर्माण किया गया है।
- अन्य इतर संलेख नियमानुसार निर्मित किये गए हैं।

उदाहरण - 3

(सावधिक प्रकाशनः प्रायोजक निकाय का नाम शीर्षक के साथ नहीं बल्कि अन्यत्र उल्लेख)

ECONOMIC REVIEW

(Official organ of Indian Society of Economists)

Vol. No. 11 1980

Other Information :

Call No :-	Xm44,N70
First Published :-	1970
Frequency :-	Monthly (one volume per year)
Library Holdings :-	Volume 12-15 not possessed by library.

मुख्य संलेख (Main Entry)

	Xm44,N70	
		ECONOMIC REVIEW, (Eonomists (Indian Society of –)) [IV per year. VI— ; 1970–]. This library has VI–11; 1970 - 1980. V16–41; 1985 – 2010. Continued in the next card.

पूर्ण उपलब्धता विवरण अनुच्छेद (Holding in full Section)

	Xm44,N70			continued 1
1–11	1970–1980		N70–N80	270 – 280
16 – 41	1985–2010		N85–Po10	285–310

श्रृंखला प्रक्रिया (Chain Procedure)

वर्ग संख्या — Xm44,N5700

X	=	Economics
Xm	=	Periodical, Economics.
Xm44	=	India, Periodical, Economics.
Xm44,N70	=	Economic Review, (Economists (Indian Society of –)).

उपरोक्त वांछित कड़ियों के अनुसार वर्ग निर्देशी संलेख निम्नवत् होंगेः-

1- Economic Review, (Economists (Indian Society of–)). — Specific CIE

2- Economists (Indian Society of –), – Additional CIE
Economic Review.

3- Periodical – Generic CIE

4- Periodical– Generic CIE

5- Indian, Periodical, Economics – Optional CIE

6- Periodical, Economics – Optional CIE

7- Economics – Ordinaty CIE

संकेत पत्रक (Tracing Card)

Economic Review, (Economists (Indian Society of–)). Economists (Indian Society of–), Economic Review. Periodical. Periodical India, Periodical, Economics. Periodical, Economics. Economics. Indian Society of Economists.

विशिष्ट वर्ग निर्देशी संलेख (Specific Class Index Entry)

ECONOMIC REVIEW, (Economists (Indian Society of–)) Xm44,N70
O

आन्तरिक वर्ग निर्देशी संलेख (Additional Class Index Entry)

ECONOMISTS (Indian Society of –), Economic Review. Xm44,N70
O

सजातीय वर्ग निर्देशी संलेख (Generic Class Index Entry)

PERIODICAL

Economic Review, (Economists (Indian Society of–)). Xm44,N70.

PERIODICAL

Economists (Indian Society of–). Economic Review. Xm44,N70.

वैकल्पिक वर्ग निर्देशी संलेख (Optional Class Index En

INDIA, PERIODICAL, ECONOMICS.

For documents in this Class and its Subdivision, see the Classification Part of the catalogue under the Class Number. Xm44

PERIODICAL, ECONOMICS.

For documents in this Class and its Subdivision, see the Classification Part of the catalogue under the Class Number. Xm

साधारण वर्ग निर्देशी संलेख (Ordinary Class Index Entry)

	ECONOMICS.	
	see	For documents in this Class and its Subdivision, the Classification Part of the catalogue under the Class Number. X
		O

नामांतर निर्देशी संलेख (Cross Reference Index Entry)

	INDIAN SOCIETY OF ECONOMISTS	
		See ECONOMISTS (Indian Society of–).
		O

महत्वपूर्ण बातें -

- मुख्य संलेख का निर्माण क्लासीफाइड कैटलाग कोड के अनुसार किया गया है।
- इतर संलेख का निर्माण भी नियमानुसार किया गया है।

18.4 अभ्यास हेतु उदाहरण

उदाहरण - 1

(सावधिक प्रकाशन)

The Indian Observer

Vol. No. 1 ISSUE NO. 12

Institute of Publiuc Administration.

New Delhi

1962

Other Information :

Call No : -	Wm 44, N 62
Acc No. :-	100 – 136
Year of Publication :-	1962
Frequency :-	Monthly
Library Holding :-	Volume number one onwards.

उदाहरण -2

(सावधिक प्रकाशन - शीर्षक के साथ प्रायोजक निकाय)

Journal of the Australian Chemical Society

Vol. No. 1 ISSUE NO. 2 1964

Published By

International Science Institute

London

1964

Other Information :

Call No : -	Em 56, N 64
Acc No. :-	1102–1105, 1202–1206
First published in :-	1964
Frequency :-	Half Yearly
Library Holding :-	Vol. No. 30 onwards.

उदाहरण -3

(सावधिक प्रकाशन - प्रायोजक निकाय का नाम शीर्षक के साथ न हो कर पुस्तक में अन्यत्र उल्लेख)

Mathematics Education

(Official organ of Indian Society for Mathematical Education)

Vol. No. 1 ISSUE NO. 4 1987

EDITED BY

J.B. PRASAD

PUBLISHED BY

SOCIETY FOR MATHEMATICAL EDUCATION

BIHAR

Other Information :

Call No : -	T:3(B)m44, N87
Acc No. :-	205–212, 145–153
First published in :-	1987
Frequency :-	Quarterly
Library Holdings :-	Volume 6–9 not Possessed by Library.

18.5 विस्तृत अध्ययनार्थ ग्रंथ सूची

1. Ranganathan (SR): Cataloguing Practice. Ed 2. Bangalore, Sarda Ranganathan Endowment for Library Science, 1994.

2. Ranganathan (S.R.) : Classified Catalogue Code. Ed 6. Bangalore, Sarda Ranganathan Endowment for Library Science, 1992.

3. Krishna Kumar : An Introduction to Cataloguing Practice, N. Delhi, 1996.

4. सूद (एस.पी.) सूचीकरण प्रक्रिया, जयपुर,आर.बी.एस.ए., 1998

5. शर्मा (बी.डी.) : अनुवर्ग प्रसूची नियमावली : एक व्यावहारिक अध्ययन, वाई.के.पब्लिशर्स, आगरा, 1999

6. वर्मा (ए.के.) : क्रियात्मक अनुवर्ग सूचीकरण, रायपुर, सेन्ट्रल बुक हाउस, 1999